लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–24

किस्सये चहार दरवेश

अमीर खुसरो

1300–1325

अंग्रेजी अनुवाद डन्कन फोर्ब्ज़ – **1857**

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-24
Book Title: Kissaye Chahar Dervesh (Tales of Four Dervesh)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of India



विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

किस्सये चहार दरवेश 7

अमीर खुसरो कौन? 9

किस्सये चार दरवेश का परिचय 14

1 पहले दरवेश के कारनामे 38

2 पहले दरवेश के कारनामे–समाप्त 75

3 दूसरे दरवेश के कारनामे 125

4 दूसरे दरवेश के कारनामे–समाप्त 166

5 आज़ाद बख्त की कहानी–पहला भाग 209

6 आज़ाद बख्त की कहानी–दूसरा भाग 274

7 तीसरे दरवेश के कारनामे 348

8 चौथे दरवेश की कहानी 389

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

किस्सये चहार दरवेश[2]

जब फोर्ट विलियम कालेज कलकत्ता ने 1800 में कुछ किस्से वाली पुस्तकों के अनुवाद का बीड़ा उठाया तो उसमें उन्होंने तीन किस्से अनुवाद कराये – जिनमें से केवल मीर अमाम देहलवी का लिखा गया किस्सा किस्सये चहार दरवेश ही साहित्यिक रूप से गम्भीर रूप से लिया गया। दूसरा निहाल चन्द का लिखा गया किस्सा था "गुले बकावली" या "मज़हबे इश्क"। इसका अंग्रेजी और फ्रैन्च भाषा में अनुवाद किया गया था। तीसरा किस्सा था "किस्सये हातिम ताई" या "आरायिशे महफिल"[3] जिसे हैदर बख्श हैदरी ने लिखा था। इसको इतनी महत्ता नहीं दी गयी।

19वीं सदी के शुरू में लिखे गये दो किस्से – एक नेमचन्द खत्री का 1836 में लिखा गया "गुलो शनोबर" था जिसे फ्रैन्च में अनुवाद किया गया था। दूसरा किस्सा रजब का "फसानाये रजब" था जिसे अली बेग सुरूर ने 1824 में लिखा। इसकी किस्मत कुछ अजीब सी रही। उर्दू बोलने वालों ने इसे एक बहुत अच्छी पुस्तक माना पर उर्दू में यह बहुत लोकप्रिय नहीं हुई बल्कि इसका हिन्दी अनुवाद "मोहिनी चरित्र" उर्दू के ऐडीशन से कहीं ज़्यादा लोकप्रिय हुआ। इसकी भी एक वजह थी कि इसका उर्दू ऐडीशन बहुत कठिन था और उसमें फारसी के शब्द बहुत ज़्यादा थे। कई बार कोशिश करने पर भी इसकी असली कहानी में कोई ज़्यादा बदलाव नहीं लाया जा सका।

किस्सये चहार दरवेश इनका सबसे अच्छा प्रकाशन है।

किस्सये चहार दरवेश फारसी में, चार दरवेश की कहानियाँ हिन्दी में और Tales of Four Derweshes अंग्रेजी में एक ऐसी पुस्तक का नाम है जो आज से 700 साल पहले, 1300 से 1325 के बीच किसी समय फारसी में लिखी गयी थी। इसको लिखने वाले का नाम है अमीर खुसरो देहलवी।

किस्सये चहार दरवेश उनकी एक बहुत ही प्रसिद्ध पुस्तक है जो इतनी पुरानी लिखी हुई जाने के बावजूद इतनी लोकप्रिय है कि जब यह प्रकाशित होनी शुरू हुई तो फिर कभी "आइट औफ प्रिन्ट" हुई ही नहीं। "दरवेश" सूफ़ी लोगों को कहते हैं। ईराक में ये लोग खानाबदोश होते हैं इधर उधर घूमते रहते हैं। ऐसे कुछ लोग ज्यू में भी पाये जाते हैं। अधिकतर ये लोग जादू टोना जानते हैं। ये सन्त किस्म के लोग होते हैं। इनको उर्दू में कलन्दर भी कहते हैं। इस तरह यह कहानी ऐसे ही चार संतों की कहानी है।

700 साल पहले की लिखी हुई, यानी 1300 और 1325 के बीच में लिखी गयी अमीर खुसरो की इस पुस्तक को भारत में पहली बार कलकत्ता में मीर अमान मुहम्मद ज़ाकिर फारसी से उर्दू में अनुवाद करा कर 1804 में दुनियाँ के सामने लाया गया था। यह अनुवाद साहित्यिक उर्दू में किया गया था जिससे साधारण लोग इसका आनन्द नहीं उठा सके।

उसके बाद 1857 में इसको डन्कन फोर्ब्ज़[4] ने अंग्रेजी में अनुवाद कर के संसार के सामने रखा। आज हम उसी अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर के उसको आप सब हिन्दी भाषा समझने वालों तक पहुँचा रहे हैं।

---

[2] Kissaye Chahar Darwesh. By Amir Khusro. 1300-1325. 5 Tales.

[3] Haidar Bakhsh Haidari, "Qissaye Hatim Tai". Edited by Athar Parvez. Delhi : Maktabah Jamiah. 1972.

[4] Bagh-O-Bahar or The Tales of Four Darweshes. Translated by Duncan Forbes from Mir Amman version of 1804. 1857. This book is available at : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/index.html#index

वैसे तो अमीर खुसरो ने बहुत कुछ लिखा है – मसनवी शायरी गजलें दोहे पहेलियॉ और उनकी सभी रचनाऐं बहुत पसन्द की जाती हैं और मिलती भी हैं पर हम यहॉ पर अपनी "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" की कड़ी में अमीर खुसरो की लिखी हुई यह पुस्तक "किस्सये चहार दरवेश" आपको बोलचाल की हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है आपको यह पुस्तक पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये उसे आज अब बोलचाल की हिन्दी भाषा में।

अमीर खुसरो कौन?

अमीर खुसरो का जन्म **1253** में हुआ था और ये **1325** में अल्लाह को प्यारे हो गये थे। ये एक बहुत ही प्रसिद्ध सूफ़ी गवैये कवि और विद्वान थे। ये निज़ामुद्दीन औलिया के एक बहुत ही प्रसिद्ध शिष्य थे। वैसे तो इनकी मुख्य भाषा फारसी थी पर कुछ इन्होंने हिन्दवी भाषा[5] में भी लिखा है।

अमीर खुसरो को लोग "हिन्दुस्तान की आवाज" या "हिन्दुस्तान का तोता" भी कहते हैं। ये "उर्दू के पिता" के नाम से मशहूर हैं।[6] इन्होंने गजल और कव्वाली संगीत भी शुरू किया।

इन्होंने संगीत में तराना नाम की शैली की भी शुरूआत की। यह कैसे हुआ इसकी बड़ी ही रोमांचक कहानी है। एक बार जब ये अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में थे तो इनका मुकाबला देवगिरि के राजा के दरबार के संगीतज्ञ गोपाल नायक से हुआ। अलाउद्दीन ने गोपाल नायक को छह शाम लगातार राग कादम्बरी गाने के लिये कहा।

कहते हैं कि अमीर खुसरो छहों शाम बादशाह के सिंहासन के नीचे लेटे रहे और वह सब बड़े ध्यान से सुनते रहे जो गोपाल नायक ने गाया। सातवें दिन उन्होंने सबको आश्चर्यचकित कर दिया जब

---

[5] Hindavi language was the mixture of Persian, Arabic and some Hindi words.

[6] Voice of India, or Parrot of India, Father of Urdu language

उन्होंने गोपाल नायक के गाये हुए को ऐसा का ऐसा ही दोहरा दिया। पर क्योंकि वह गोपाल नायक की भाषा नहीं समझ सके सो उन शब्दों की जगह उन्होंने कुछ निरर्थक शब्द प्रयोग कर दिये थे। इस तरह से तराने का जन्म हुआ। तराने में अधिकतर अर्थहीन शब्द या अक्षर ही होते हैं – तोम तानाना दारे दीन दीन आदि।

इनका जन्म उत्तर प्रदेश में एक तुर्की परिवार में एटा के पास पटियाली में **1253** में हुआ था। इनके पिता का बचपन समरकन्द में बीता जो आजकल उज़्बेकिस्तान में है। जब इनके पिता थोड़े बड़े हो गये थे तब चंगेज़ खॉ का आक्रमण हुआ था। उस समय बहुत सारे लोग तितर बितर हो गये थे। तब इनके पिता भी वहॉ से अफगानिस्तान चले गये थे।

फिर क्योंकि वह स्थान भी सुरक्षित नहीं था सो उन्होंने देहली के राजा से शरण मॉगी। उस समय हिन्दुस्तान में अल्तमश का राज्य था और क्योंकि वह भी एक तुर्क था और उसने भी यह सब सहा था तो उसने इन लोगों का केवल स्वागत ही नहीं किया बल्कि उनको ऊॅचे ऊॅचे सरकारी पद भी दिये।

1230 में इनके पिता पटियाली आ गये थे। वहॉ उन्होंने शादी की उनके चार बच्चे हुए जिनमें से एक अमीर खुसरो थे। इनका पूरा नाम अबुल हसन यामीनुद्दीन खुसरो था पर ये अमीर खुसरो देहलवी के नाम से ही जाने जाते हैं।

ये शुरू से ही बहुत अक्लमन्द थे। इन्होंने बहुत बचपन से ही यानी लगभग आठ साल की उम्र से ही लिखना शुरू कर दिया था। **1273** में इनके बाबा की मृत्यु हो गयी थी। कहते हैं कि उस समय इनके बाबा की उम्र **113** साल की थी।

हिन्दुस्तान में उस समय गयासुद्दीन बलबन का राज था सो उनकी मृत्यु के बाद ये उसकी फौज में भरती हो गये। वहॉ इनकी कला शाही दरबार में पहली बार पहचानी और सराही गयी। इनकी कविता को वहॉ कई सम्मान भी मिले।

1276 में बलबन के दूसरे बेटे ने खुसरो को सुना तो वह तो उनके पीछे पागल सा हो गया। बलबन का दूसरा बेटा **1277** में बंगाल का राजा घोषित कर दिया गया था। **1279** में खुसरो उससे मिलने गया। वहॉ से आने के बाद बलबन के सबसे बड़े बेटे ने जो मुलतान का राजा था अपने देहली के दौरे पर खुसरो को सुना तो उसने उनको **1281** में अपने दरबार में बुलाया।

मुलतान उस समय हिन्दुस्तान में आने का रास्ता था। बगदाद अरब फारस सभी जगहों से जो लोग हिन्दुस्तान आते थे वे सब वहीं से हो कर हिन्दुस्तान में घुसते थे। **1287** में वह अपने दूसरे चाहने वाले अमीर अली हातिम के साथ अवध चले गये।

1290 में जलालुद्दीन खिलजी का राज आ गया। वह कविताओं का बहुत शौकीन था। उसके दरबार में बहुत सारे कवि और गवैये थे। उसने भी खुसरो को अपने दरबार में रख लिया और

उनको "अमीर" का खिताब दे दिया। इस तरह से उनका नाम अमीर खुसरो पड़ गया।

उसी समय से उनका साहित्यिक कार्य शुरू हुआ। वे रोज गजल लिखते थे और उनकी गजलें दरबार में गाने वाली लड़कियाँ रोज उनको सुलतान के सामने गाया करती थीं। उस समय में उन्होंने बहुत कुछ लिखा। हम यहाँ उनकी हर रचना का तो नाम तो नहीं दे पा रहे हैं।

1296 में अलाउद्दीन खिलजी फिर से राजा बन गया। उसके राज में भी उनका लिखना जारी रहा। वहाँ उन्होंने पाँच मसनवी[7] लिखीं जिनकी वजह से उनका नाम कवियों की दुनियाँ में सबसे ऊपर पहुँच गया। अलाउद्दीन उनसे इतना खुश था कि उसने उनको बहुत इनाम दिया।

अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तान की सात सल्तनतें देखीं। आखीर में अमीर खुसरो की टोपी में एक और पंख –

"अगर फिरदौस बार रूए ज़मीन अस्त
हामिन अस्त ओ हामिन अस्त ओ हामिन अस्त।"

[7] Masnavi, a Persian word, means the "Spiritual Couplets" – a collection of anecdotes and stories derived from the Quran, Hadith sources and everyday tales. Stories are written to illustrate a point and each moral is discussed in detail. Some famous Masnavis are "Shahnama of Firdausi" (977-1010) and "Masnavi-e-Rumi" in Persian, "Zehar-e-Ishq" in Urdu. His Masnavis are known as "Khamsa-e-Khusro"
(1) "Matla-ul Anwar" (Rising Place of Lights) of 3310 verses completed in 15 days;
(2) Khusro Shirin of 4000 verses; (3) Laila Majnu; (4) Aina-e-SikandarI of 4500 verses; and (5) Hasht Bahisht – based on legends about Baharam V (the 15th King of Sasanian Empire, 420-438 AD).

इसका अर्थ यह है “अगर जमीन पर कहीं स्वर्ग है तो बस वह यहीं है यहीं है यहीं है।”

यह श्रीनगर के शालीमार बाग की सबसे ऊँचे छज्जे पर खुदा हुआ है। और यह केवल वहीं नहीं बल्कि मुगलों की बनवायी हुई दूसरी इमारतों पर भी लिखा हुआ है।

तो ऐसे थे अमीर खुसरो।

किस्सये चार दरवेश का परिचय

यह कहानी ऐसे सन्तों और बुद्धिमानों की कही गयी हैं जिन्होंने दुनियाँ की तरफ से अपनी पीठ फेर रखी है। इस पुस्तक में पाँच कहानियाँ हैं जो अरेबियन नाइट्स की कहानी शैली के आधार पर लिखी गयी हैं। इनको अमीर खुसरो ने 14वीं सदी के शुरू में फारसी भाषा में लिखा था। 1325 में तो ये अल्लाह को ही प्यारे हो गये था। इस पुस्तक के लिखने की कोई तारीख नहीं मिलती।

कहते तो यह हैं कि ये कहानियाँ अमीर खुसरो ने अपने गुरू निजामुद्दीन औलिया के लिये कही थी पर ये लिखी गयीं[8] खुसरो की मृत्यु के काफी बाद में।

कहते हैं कि एक बार इनके गुरू निजामुद्दीन औलिया बहुत बीमार पड़ गये थे तो उनको खुश रखने के लिये उन्होंने अरेबियन नाइट्स की शैली में ये सारी कहानियाँ कहीं।

इन कहानियों का केन्द्र एक राजा आज़ाद बख्त है जो अपने मरने के बारे में सोच कर बहुत हताश हो जाता है तो वह अपने महल से कुछ विद्वानों की खोज में निकलता है और एक कब्रगाह में आ निकलता है जहाँ वह चार दरवेशों से मिलता है। वहाँ वह उनसे उनकी कहानियाँ सुनता है।

---

[8] The word writing here not mean “as author” but here it means “pen down”. It means that “these stories were pen down after some time of his death.

जैसे ही चौथा दरवेश अपनी कहानी खत्म करता है तो राजा को पता चलता है कि उसकी एक पत्नी ने उसके एक बेटे को जन्म दिया है। वह खुशी से पागल हो जाता है और एक बड़ी दावत का हुक्म देता है।

जिन्नों के महान राजा मलिक स्यापल की सहायता से आज़ाद बख्त सब बिछड़े हुओं प्रेमियों की शादी करवा देता है। यमन के सौदागर के बेटे की डैमसिक की राजकुमारी से, फार्स के राजकुमार की बसरा की राजकुमारी से, अजाम की फ़रॉग की राजकुमारी से, निमरोज़ के राजकुमार की शादी जिन्नों के राजा की बेटी से और चीन के राजकुमार की शादी एक दरबारी की बेटी से जिसको मलिक सादिक उठा कर ले गया था। हर दरवेश खुश था।

यह कहानियाँ अमीर खुसरो ने **1325** से पहले पहले फारसी भाषा में लिखी थीं। उनके मरने के यानी **1325** के काफी बाद में इनका प्रकाशन हुआ। पहली बार इसका अनुवाद मीर हुसैन अता तहसीन ने उर्दू में **1770** के आस पास किया था जिसका नाम था नौ तरज़े मुरसा।[9]

पर उनकी भाषा क्योंकि थोड़ी साहित्यिक थी तो सामान्य जनता उसको समझ नहीं पायी। पर मीर हुसैन का यह अनुवाद आज भी उर्दू साहित्य का एक बहुत बढ़िया नमूना है।

---

[9] It was first translated by Mir Husain Ata in Urdu in 1770s. Its title was “Nau Tarz-e-Murassa – means “New Style of Adornment”.

1801 में कलकत्ता में भारतीय साहित्य के अनुवाद की एक योजना चलायी गयी थी जिसके अन्तर्गत मीर अमान को इस पुस्तक का अनुवाद उर्दू में करने को कहा गया। सो उन्होंने इसका बोलचाल की उर्दू में अनुवाद किया और उसका नाम दिया "बागो बहार"।[10] बाद में **1857** में डन्कन फोर्ब्स[11] ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।

यह पुस्तक उसी पुस्तक की कहानियों का हिन्दी में अनुवाद है।

इस पुस्तक की कुछ खासियतें हैं —

1. इसकी पहली खासियत तो यह है कि ये कहानियाँ अमीर खुसरो ने अपनी बीमार गुरू निजामुद्दीन औलिया को सुनायी थीं और उनका इनको सुनाने का उद्देश्य था उनकी तन्दुरुस्ती में सुधार लाना। ये कहानियाँ सुन कर उन्होंने इस पुस्तक को यह वरदान दिया था कि "जो कोई भी इस कहानी को सुनेगा वह दैवीय ताकत से तन्दुरुस्ती पायेगा।"

2. इसकी दूसरी खासियत हे कि इसमें हर कहानी में एक दरवेश मजबूर और बिल्कुल बिना पैसे के हो जाता है, घर से दूर हो जाता है और अजनबियों की दया पर निर्भर करता है।

3. इसकी तीसरी खासियत यह है कि हर दरवेश अपने में एक राजा है।

---

[10] Bag-O-Bahar

[11] Bagh-o-Bahar or Tales of Four Darweshes. Translated in English by Duncan Forbes from the Hindustani of Mir Amman of Dihli, in 1857. http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/index.html#index

4. इसकी चौथी खासियत यह है कि दरवेश को पहले नहलाने धुलाने खाना खिलाने कपड़े पहनाने और रहने के लिये जगह देने के बाद ही उसके आने की वजह पूछी जाती है।

परिचय

मैं अब अपनी कहानी शुरू करता हूँ। आप ध्यान दे कर सुनें। चार दरवेशों के कारनामे में जैसा कि उसके लिखने वाले ने लिखा है कि रम साम्राज्य[12] में एक राजा राज करता था। वह नौशेरवॉ की तरह न्यायशाली था और हातिम[13] की तरह दयालु था। उसका नाम था आज़ाद बख्त।[14] वह कौन्स्टैनटिनोपिल[15] या हिन्दी में कुस्तुन्तुनिया में अपने शाही महल में रहता था।

उसके राज में किसान सुखी थे। उसका खजाना भरा पूरा था। उसकी सेना सन्तुष्ट थी। गरीब लोग भी आराम से रहते थे। वे सब इतनी शान्ति और अमीरी में रहते थे कि उनको हर दिन त्यौहार लगता था और हर रात जैसे बरात की शाम लगती थी।

चोर डाकू जेब काटने वाले धोखा देने वाले जैसे सब बेईमान लोगों के लिये उसके राज में कोई जगह नहीं थी। उसने उन सबको अपने राज्य से निकाल दिया था।

रात भर घरों के दरवाजे खुले रहते थे। बाजार में दूकानें खुली रहती थीं। यात्री और आने जाने वाले सोना खनखनाते चले जाते थे चाहे वे मैदान में जा रहे हों या जंगल से हो कर या पहाड़ों पर।

---

[12] Rum was the kingdom whose Constantinople is the capital, in modern times it is Romania, or Turkey in Asia and Europe.

[13] Like Nausherwan in justice and like Hatim in generousity

[14] Azad Bakht – name of the King

[15] Constantinople is modern Istanbul in Turkey

कोई उनसे यह पूछने वाला नहीं था कि “तुम्हारे मुँह में कितने दाँत हैं?” या “तुम कहाँ जा रहे हो?”

उसके राज्य में हजारों शहर थे जिनके राजकुमार राजा को टैक्स दिया करते थे। हालाँकि वह एक बहुत बड़ा राजा था पर फिर भी एक पल के लिये भी न तो अपने कर्तव्य को भूलता था और न ही अल्लाह की पूजा करना भूलता था।

उसके पास दुनियाँ के ऐशो आराम के सारे साधन थे सिवाय एक बेटे के जो हर किसी की ज़िन्दगी का फल होता है। और उसकी किस्मत के बागीचे में एक यही फल नहीं था। इसलिये वह अक्सर बहुत उदास और दुखी रहता था।

पाँचों बार अल्लाह की पूजा कर के वह अक्सर अपने को बनाने वाले से कहता — “ओ अल्लाह। तूने अपनी अच्छाई से अपने कमजोर प्राणियों को सब आराम दे रखे हैं। पर तूने इस अँधेरे घर को कोई रोशनी नहीं दी।

यह इच्छा अकेली ही मेरी ज़िन्दगी का खालीपन है कि मेरे बुढ़ापे की कोई लाठी नहीं है और मेरे मरने के बाद कोई मेरा नाम बढ़ाने वाला भी नहीं है।

तेरे छिपे हुए खजाने में तो हर चीज़ है मेहरबानी कर के मुझे एक खेलता कूदता बेटा दे दे ताकि मेरा नाम और इस राज्य का नाम दोनों बने रहें।”

इसी आशा में राजा अपने 40वें साल में पहुँच गया।

एक दिन जब उसने अपने आईने वाले कमरे[16] में अपनी प्रार्थना खत्म की तो अपना जाप करते हुए उसने अपने कमरे के एक शीशे पर नजर डाली तो उसने देखा कि उसकी मूँछों में तो एक सफेद बाल था। वह उनमें एक चाँदी के तार की तरह चमक रहा था।

यह देख कर राजा की आँखों में आँसू आ गये। उसने एक लम्बी साँस ली और अपने आपसे बोला — "अफसोस तूने अपने इतने सारे साल बिना कुछ किये धरे गुजार दिये। केवल दुनियावी चीज़ों के लिये दुनियाँ उलट पुलट कर दी।

तूने इतने सारे देशों को जीता लेकिन उससे तुझे उससे क्या फायदा हुआ। अब कोई और दूसरे लोग यहाँ आयेंगे और इस धन सम्पत्ति को बर्बाद कर देंगे। मौत ने तो पहले ही तुझको सन्देशा भेज रखा है और अगर तू कुछ साल और रह भी गया तो क्या। तेरे शरीर की ताकत तो घटती ही जायेगी।

इसलिये ये सब हालात देखते हुए यह साफ साफ कहा जा सकता है कि मेरी किस्मत में मेरी राजगद्दी और मेरे छत्र का कोई वारिस नहीं है।

एक दिन तो मैं मर ही जाऊँगा और ये सब चीज़ें अपने पीछे छोड़ जाऊँगा इसलिये मेरे लिये ज़्यादा अच्छा तो यही होगा कि यह

[16] Translated for the words "Mirror Room". In Muslim king's palaces a room was assigned as Aaine …; such as Aaine Akbari. In Hindi it is called Shish Mahal, it is a grand apartment in all oriental palaces, the walls of which are generally inlaid with small mirrors, and their borders richly gilded. Those of Dilli and Agra are the finest in Hindustan.

सब मैं अभी ही छोड़ दूँ और अपनी ज़िन्दगी के दिन अल्लाह की पूजा में लगाऊँ।"

अपने दिल में यह तय कर के वह अपने महल के पेन बाग[17] में चला गया। उसने अपने दरबारियों को अपने पास से हटा दिया और अपने नौकरों से भी यह कह दिया कि कोई उसको तंग न करे पर सब लोग दरबारे आम[18] में आयें और अपने अपने काम करते रहें।

यह कहने के बाद राजा अपने एक प्राइवेट महल में चला गया। वहाँ उसने अपना पूजा करने वाला कालीन बिछाया और अपने दिन रात अल्लाह की पूजा में बिताने लगा। सारा समय वह अल्लाह के ही गुण गाता रहता। वह वहाँ कुछ नहीं करता बस रोता रहता और आहें भरता रहता।

इस तरह आज़ाद बख्त ने वहाँ कई दिन गुजार दिये। वह सारा दिन खाना नहीं खाता। शाम को केवल एक खजूर और तीन घूँट पानी पी कर वह अपना उपवास तोड़ता। सारा दिन वह अपने पूजा वाले कालीन पर ही पड़ा रहता।

कुछ समय बाद राजा की यह हालत जनता को पता चली। धीरे धीरे सारे राज्य में इस बात की खबर फैल गयी कि राजा ने अपने शासन से अब अपना हाथ खींच लिया है और बिल्कुल अकेले में रहता है।

---

[17] Pain Bagh – Most Royal Asiatic gardens have a Pain Bagh, means a Lower Terrace adorned with flowers to which Princes descended when they wished to relax with their courtiers.

[18] Translated for the words "Public Hall of Audience"

यह देख कर दुश्मन चारों तरफ से अपना सिर उठाने लगे। जहाँ भी गवर्नर थे वहाँ वहाँ सब अशान्ति हो गयी। चारों तरफ से अशान्ति की खबरें राजा के दरबार में पहुँचने लगीं। यह देख कर सारे दरबारी लोग और दूसरे कुलीन लोगों ने एक मीटिंग की।

उसमें उन्होंने आपस में सलाह की और फिर इस नतीजे पर पहुँचे कि "हिज़ हाइनैस का वजीर बहुत अक्लमन्द है और वह राजा के करीब भी बहुत है उस पर राजा विश्वास भी करता है। काम करने वालों में राजा के बाद वही एक काम करने वाला है।

तो हम लोगों को उसके पास जाना चाहिये और उससे सलाह करनी चाहिये कि इस बारे में वह क्या कहता है।

सो सारे लोग वजीर के पास गये और बोले — "राजा की और राज्य की हालत तो आपको मालूम ही है। पर अगर यह सब चलते चलते और ज़्यादा देर हो गयी तो यह राज्य जिसे राजा साहब ने इतनी मुश्किल से इकट्ठा किया है ऐसे ही बेकार में ही हमारे हाथ से निकल जायेगा। और इसको फिर से इकट्ठा करना बहुत मुश्किल हो जायेगा।"

राजा का वजीर एक बहुत ही बूढ़ा अक्लमन्द और वफादार वजीर था। उसका नाम था खिरदमन्द[19]। वह अपने नाम के अनुसार बहुत अक्लमन्द था।

[19] Khiradmand – name of the Vazir of the King Azad Bakht

वह बोला — “हालाँकि राजा साहब ने उनको तंग करने के लिये बिल्कुल मना किया हुआ है फिर भी तुम जाओ। मैं भी उनके पास जाऊँगा अगर अल्लाह की मेहरबानी होगी तो वह मुझको भी बुला लेंगे।”

यह कह कर वह उन सबको ले कर दरबारे आम में चला गया। वहाँ उनको छोड़ कर वह फिर दरबारे खास[20] में गया और वहाँ से एक खास नौकर[21] के हाथों यह खबर भेजी “आपका यह बूढ़ा नौकर बाहर आपका इन्तजार कर रहा है। बहुत दिनों से उसने आपको देखा नहीं है। वह आशा करता है कि वह एक बार आपको देख कर आपके कदमों को चूम कर शान्त हो जायेगा।”

राजा ने वजीर की यह विनती सुनी। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वजीर ने उसकी कितने सालों तक सेवा की है वह कितना अक्लमन्द है उसके अन्दर कितना उत्साह है वह कितना वफादार है और कितनी बार उसने उनकी सलाह मानी है उसने नौकर से कहा— “जाओ और खिरातमन्द को अन्दर भेज दो।”

जैसे ही इजाज़त मिली वजीर राजा के सामने जा पहुँचा। झुक कर उनको सलाम किया और छाती पर हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। उसने राजा की अजीब सी और बदली हुई शक्ल देखी तो

[20] Translated for the words “Private Hall of Audience”. In this hall only private problems are discussed.
[21] I have used this word for the English word “Eunuch” so as to keep some descency in language.

उसने देखा कि रोते रोते और भूख से उसकी आखें गड्ढे में धँस गयी हैं। उसके शरीर का रंग पीला पड़ गया है।

यह सब देख कर खिरातमन्द अपने आपको रोक न सका और राजा को देखते ही उसके पैरों पर गिर पड़ा। राजा ने वजीर का सिर अपने हाथों से उठाया और बोला — "लो अब तो तुमने मुझे देख लिया है अब तो तुम सन्तुष्ट हो? जाओ और अब मुझे फिर बीच में परेशान न करना। जाओ और राज काज सँभालो।"

खिरातमन्द ने रोते हुए कहा — "आपका यह गुलाम जिसको आपका इतना प्यार मिला है और आपके हालचाल ठीक रहे तो कभी भी किसी राज्य का राजा बन सकता है। पर आपके इस अकेले में रहने की वजह से यह सारा राज्य नष्ट हुआ जा रहा है। इसका अन्त कोई बहुत खुशहाली नहीं है।

आपके इस शाही दिमाग में क्या घुस गया है? अगर आप इस विरासत में मिले हुए राज्य को ठीक से सँभालेंगे तभी आपके लिये सबसे अच्छा रहेगा। आप हुक्म करें तो मैं इस राज्य को राज करने में जो अपनी नासमझी बर्ती है मैं वह आपको बताऊँ।

अगर आपने अपने गुलामों को इज़्ज़त दी है उनके काम किये हैं तो मैं उसी का वास्ता दे कर आपसे कहता हूँ कि आप आराम से रहें और आपके नौकर लोग काम करते रहेंगे। अगर आप इस तरह की परेशानी सहेंगे तो अल्लाह न करे फिर नौकरों का क्या फायदा।"

राजा बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। पर जो दुख मेरे दिल पर है उसका कोई इलाज नहीं है खिरदमन्द।"

राजा आगे बोला — "ओ खिरदमन्द सुनो। मेरी सारी उम्र निकल गयी राज्यों को जीतने में और अब मैं इस उम्र तक पहुँच गया हूँ कि अब मुझे अपने सामने केवल मौत ही दिखायी देती है।

मुझे अल्लाह का सन्देश भी मिल गया है। मेरे बाल भी सफेद हो चले हैं। एक कहावत है "हम सारी रात सोये तो क्या हम सुबह को नहीं उठेंगे?" अभी तक मेरे कोई बेटा नहीं है कि मेरे दिमाग में शान्ति हो और इसी लिये मैं बहुत दुखी हूँ।

मैंने सब कुछ छोड़ दिया है। जो कोई चाहे वह मेरा राज्य और खजाना ले सकता है। मेरे लिये उनका कोई इस्तेमाल नहीं है। वैसे भी एक न एक दिन तो मुझे इसे छोड़ना ही है और इसे छोड़ कर जंगल में और पहाड़ों पर चले जाना है। फिर मुझे अपना चेहरा भी किसी को नहीं दिखाना है।

इस तरीके से मैं अपनी ज़िन्दगी के ये थोड़े से दिन सबसे अच्छे तरीके से गुजार सकूँगा।

अगर कोई जगह मुझे अच्छी लग गयी तो मैं वहीं बैठ जाऊँगा और अपना सारा समय मैं अल्लाह की सेवा में गुजार दूँगा। शायद मेरा भविष्य और ज़्यादा खुशी देने वाला हो। यह दुनियाँ तो मैं बहुत देख चुका। मुझे इसमें कोई खुशी नहीं मिली।"

यह कह कर राजा एक गहरी साँस ले कर चुप हो गया।

खिरदमन्द इस राजा के पिता के समय से ही इस राज्य का वजीर था। और जब यह राजा उनका वारिस था तभी से वह इस राजा को बहुत चाहता था। इसके अलावा वह अक्लमन्द भी था और उसके अन्दर उत्साह भी था।

उसने राजा आज़ाद बख्त से कहा — "नाउम्मीदी तो अल्लाह की शान में हमेशा से ही एक गलती रही है। जिसने एक चुटकी में **18** हजार प्रकार के जीव पैदा किये हैं[22] वह आपको बच्चे तो बिना किसी मुश्किल के दे सकता है।

ओ ताकतवर राजा आप ऐस ख्याल अपने दिल से निकाल दीजिये वरना आपकी सब जनता भी परेशान हो जायेगी। और आपका वह राज्य भी जिसको आपने और आपके पुरखों ने कितनी मेहनत और मुश्किलों से बनाया है यह सब एक पल में नष्ट हो जायेगा। अल्लाह करे कि आपकी किसी तरह की कोई बदनामी न हो।

और इसके अलावा फिर आपको "आखिरी दिन"[23] अल्लाह को जवाब भी तो देना है। जब वह आपसे पूछेगा कि "मैंने तुझे बादशाह बना कर भेजा था अपने बहुत सारे जीव तेरी देखभाल में रखे थे पर तूने तो मेरे अन्दर का विश्वास ही खो दिया। तूने तो अपना काम छोड़ कर उन सबको दुखी किया।"

[22] The Asiatics reckon the animal species at 18,000; a number which even the fertile genius of Buffon has not attained. Yet the probability is, that the orientals arc nearer the true mark; and the wonder is, how they acquired such correct ideas on the subject.

[23] The Day of Judgment

आप इस सवाल का क्या जवाब देंगे। उस समय आपकी ये प्रार्थनाऐं और भक्ति आपके काम नहीं आयेंगी। गुलाम की इस बदतमीजी को माफ करें पर घर छोड़ कर जंगल जंगल घूमना तो जोगियों[24] का काम है राजाओं का नहीं। आपको जो काम सौंपा गया है आपके लिये वही काम करना उचित है।

अल्लाह को याद करना और उसकी भक्ति केवल जंगल और पहाड़ों तक ही सीमित नहीं है। मैं समझता हूँ कि योर मैजेस्टी ने यह कविता तो सुनी ही होगी "अल्लाह तो उसके पास है पर वह उसको बाहर ढूँढता है बच्चा तो उसकी बॉहों में है पर उसने शहर में ढिंढोरा पीटा हुआ है।

यह कहावत हिन्दी में कुछ ऐसे कही जाती है "बगल में छोरा यानी बच्चा और शहर में ढिंढोरा" यानी चीज़ तो अपने पास ही है और बाहर सब जगह उसे शोर मचा मचा कर ढूँढ रहे हो।

अगर आप न्यायपूर्वक काम करें तो इस गुलाम की सलाह मानें। ऐसी हालत में योर मैजेस्टी अल्लाह को हमेशा ही अपने दिमाग में रखें और उसकी पूजा प्रार्थना करते रहें। उसकी देहरी से कोई खाली नहीं लौटा। आप दिन में अपना राज काज देखें गरीबों और दुखियों के साथ न्याय करें इससे अल्लाह के बनाये सब जीव आपकी खुशहाली की छाया में आराम से रहेंगे।

---

[24] Translated for the word "Hermits. Literally, "Fakirs and Jogis" either term denotes "hermit," the former being applied to a Musalman, the latter to a Hindu.

रात को आप प्रार्थना करें और मुहम्मद साहब से दुआ मॉगें। साधु फ़कीर दरवेशों आदि से सहायता मॉगें। अगर अल्लाह चाहेंगे तो आपकी दिल की इच्छा जरूर पूरी होगी।

जिस दुख से आपका शाही दिल दुखी है उसे जरूर ही शान्ति पहुॅचेगी। लावारिसों को बेसहाराओं को बन्दियों को जिन मॉ बाप के बहुत सारे बच्चे हों उनको और असहाय विधवाओं को खाना खिलायें।

इन अच्छे कामों की दुआओं से आपके दिल को खुशी मिलेगी। हमेशा अल्लाह से अपने लिये दुआ मॉगें क्योंकि जो वह चाहता है एक पल में कर सकता है।"

इस तरह वजीर खिरदमन्द के वश में जो कुछ था वह उसने राजा को समझाया। राजा आज़ाद बख्त ने उसकी बात को समझा और कुछ सोच कर बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। चलो इसको भी कर के देखते हैं। और फिर अल्लाह की मर्जी तो सबसे ऊपर है ही।"

जब राजा का दिमाग कुछ शान्त हुआ तो उसने अपने वजीर से पूछा कि उसके दूसरे मन्त्री और कुलीन लोग कैसे थे और क्या कर रहे थे। वजीर ने जवाब दिया कि सभी लोग अपनी अपनी तरह से योर मैजेस्टी की ज़िन्दगी खुशहाली सलामती तन्दुरुस्ती और आपको इन दुख भरे हालात से बाहर निकलने के लिये प्रार्थना कर रहे थे।

उनको कुछ पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं और उन्हें क्या करना चाहिये। आप उनको अपने दर्शन दें ताकि उनका दिमाग थोड़ा शान्त हो सके। सो इस फैसले के अनुसार वे सब अब आपका दीवाने आम में इन्तजार कर रहे हैं।"

राजा बोला — "अगर अल्लाह की कृपा हुई तो मैं कल अपना दरबार लगाऊँगा। उनसे कह देना कि वे सब कल उस दरबार में आयें।"

राजा का यह वायदा सुन कर वजीर खिरदमन्द बहुत खुश हुआ। खुशी के मारे उसके दोनों हाथ ऊपर उठ गये। उसने राजा के लिये दुआ की कि जब तक यह धरती और आसमान हैं अल्लाह करे योर मैजेस्टी का ताज और राजगद्दी रहे।"

तब वह राजा से बाहर आ कर उसने यह खुशखबरी बाहर आ कर सब कुलीन आदमियों को सुनायी। सारे कुलीन लोग खुशदिल और सन्तुष्ट हो कर अपने अपने घरों को चले गये। यह खबर सुन कर कि राजा कल अपना दरबार लगायेंगे सारे शहर ने खुशियाँ मनायीं।

अगले दिन सुबह राज्य के सारे नौकर चाकर कुलीन और छोटे सभी दरबार में आये और अपनी अपनी हैसियत के अनुसार राजा को देखने के लिये अपनी अपनी जगह बैठ गये।

जब दिन का एक प्रहर[25] बीत गया तो एकदम से परदा उठा। राजा अपने दरबार में आये और अपनी राजगद्दी पर आ कर बैठ गये। खुशी से नौबतखाने में संगीत के वाद्य बज उठे। नजराने दिये गये। सबका आदर सत्कार किया गया। सबको उनकी हैसियत के अनुसार भेंटें दी गयीं। सब बहुत खुश थे।

दोपहर को हिज़ मैजेस्टी उठे और अपने महल में चले गये। महल में जाने के बाद थोड़ी देर तक वे वहाँ आनन्द करते रहे फिर आराम करने चले गये।

उस दिन से राजा ने अपना यह नियम बना लिया कि वह हर सुबह अपना दरबार लगाते थे और दोपहर के बाद का समय अध्ययन और अल्लाह की भक्ति में लगाते थे। उस समय वह अल्लाह से माफी माँगते और अपनी इच्छा पूरी करने के लिये प्रार्थना करते।

एक दिन कुछ पढ़ते हुए राजा ने एक जगह पढ़ा कि अगर कोई अपने दुख में इतना ज़्यादा डूबा हुआ है कि उसे कोई आदमी तसल्ली नहीं दे सकता तो उसको अपना दुख भगवान से कहना चाहिये। उसको मरे हुए लोगों के मकबरों कब्रों आदि पर जाना

---

[25] In India, even today, the day is divided into four equal portions, called Prahars or Pahar or watches, of which the second Prahar is terminated at noon; hence, do-pahar-din, mid-day. In like manner was the night divided; hence, do-pahar-raat, midnight. The first pahar of the day began at sunrise, and of the night at sunset; and since the time from sunrise to noon made exactly two pahars, it follows that in the North of India the Pahar or Prahar must have varied from three and a-half hours about the summer solstice, to two and a-half in winter, the Pahars of the night varying inversely.

चाहिये और उनके ऊपर मुहम्मद के द्वारा अल्लाह की दुआ के लिये प्रार्थना करनी चाहिये।

अपने आपको उसके आगे कुछ नहीं समझना चहिये। किसी भी आदमी की कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिये। उसको एक चेतावनी समझ कर रोना चाहिये।

अल्लाह की ताकत को समझ कर यह कहना चाहिये कि इस धरती और आसमान के बीच में कोई भी अमर नहीं है। कितने ताकतवर राजा आये और चले गये। कितने राज्य और सम्पदा जो धरती पर जन्मे वे आसमान के उनके ऊपर चारों तरफ घूमने से सब मिट्टी में मिल गये।

लेखिका का नोट —
इसी सन्दर्भ में कबीर दास जी का एक दोहा याद आता है –
चलती चाकी देख कर दिया कबीरा रोय दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय

अब अगर तुम उन हीरो को देखो तो सिवाय धूल के एक ढेर के उनका तो एक टुकड़ा भी नहीं बचा। सारे के सारे अपनी सम्पत्ति अपनी जायदाद अपने घर अपने बच्चे अपने दोस्त अपने हाथी अपने घोड़े यहीं छोड़ कर चले गये।

दुनियाँ की ये सब चीज़ें उनके किसी काम की नहीं। यहाँ तक कि आज तक कोई उनको किसी नाम से भी नहीं जानता। लोग यह भी नहीं जानते कि वे कौन थे। कब्र में उनकी क्या हालत है कोई यह भी नहीं जानता क्योंकि उनके शरीरों को चींटियाँ कीड़े मकोड़े

सॉप आदि नष्ट कर गये हैं। और किसी को यह भी क्या पता कि उनका क्या हुआ। या फिर उन्होंने अल्लाह से अपना हिसाब किताब कैसे सिलटाया।

इन शब्दों पर काफी सोचने के बाद उसको इस दुनियॉ के बारे में तो यह सोचना चाहिये कि यह सारी दुनियॉ तो झूठी है तभी उसके दिल का कमल हमेशा खिलता चला जायेगा। किसी भी हालत में कभी मुरझायेगा नहीं।”

जब राजा ने यह सब पढ़ा तो उसको अपने वजीर खिरदमन्द की सलाह याद आयी तो उसको लगा कि उसने भी यही कहा था। बस उसके दिमाग में आया कि उसको भी ऐसा ही करना चाहिये।

पर उसने यह भी सोचा कि अगर वह घोड़े पर सवार हो कर एक राजा की तरह से अपने साथ बहुत सारे आदमी ले कर जायेगा तो यह तो ठीक नहीं होगा। सो इससे पहले तो मुझे अपनी पोशाक बदलनी चाहिये और फिर उसके बाद में रात को अकेले ही कब्रिस्तान में और अल्लाह के घरों में जाना चाहिये।

वहॉ पहुँच कर मुझे सारी रात जागना चाहिये। हो सकता है कि उन पवित्र लोगों की संगत में बैठ कर मेरी इस दुनियॉ की इच्छाऐं पूरी हो जायें और मुक्ति का कोई रास्ता मिल जाये।

ऐसा सोच कर राजा ने एक रात मोटे और मैले कपड़े पहने, कुछ पैसे अपने साथ लिये और चोरी से अपने किले के बाहर निकल गया। वह मैदानों की तरफ चल दिया।

चलते चलते वह एक कब्रिस्तान में आ पहुँचा। वह अपनी प्रार्थनाऐं बराबर दिल से दोहराता हुआ चला आ रहा था। उसी समय एक बहुत तेज़ हवा का झोंका आया। उसे तूफान भी कहा जा सकता है।

अचानक राजा ने अपने सामने रोशनी देखी जो सुबह के तारे की तरह चमक रही थी। उसने सोचा इस तूफानी मौसम में और इतने ॲधेरे में यह रोशनी बिना किसी चमत्कार के ऐसे ही तो नहीं चमक सकती।

या फिर यह कोई तलिस्मान भी हो सकता है क्योंकि अगर नाइट्रो और सल्फर को दिये की बत्ती के चारों तरफ छिड़क दिया जाये तो हवा फिर कितनी भी तूफानी क्यों न हो यह रोशनी कभी बुझ नहीं सकती। और नहीं तो क्या यह दिया किसी पवित्र आदमी ने जला कर रखा है?

चलो जो कुछ भी है यह। मुझे वहाँ जा कर देखना चाहिये कि यह क्या है। क्या पता इस दिये की रोशनी से मेरे घर के दिये की रोशनी भी जल जाये। ऐसा सोच कर राजा उसी दिशा में चल दिया जिस दिशा में उसको वह रोशनी दिखायी दे रही थी।

जब वह उस रोशनी के काफी पास पहुँच गया तो उसने देखा कि वहाँ पर अजीब से दिखायी देने चार फ़कीर[26] बैठे हुए हैं।

---

[26] Fakirs are holy mendicants, who devote themselves to the expected joys of the next world, and abstract themselves from those of this silly transitory scene; they are generally fanatics and

उनके शरीर पर गेरुआ या नारंगी रंग के कपड़े हैं। उनके सिर उनके घुटनों पर झुके हुए हैं। सब बिल्कुल चुपचाप बैठे हुए हैं। उनकी सब इन्द्रियॉ उनके वश में हैं।

उनकी हालत ऐसी है जैसी कि किसी ऐसे यात्री की होती है जो अपने देश से दूर हो अपने समाज से दूर हो अपने दोस्तों से दूर अकेले हो। जैसे वे बहुत दुखी हों या जैसे उनका कुछ खो गया हो।

इस तरह से वे चारों फ़कीर वहॉ पत्थर की मूर्तियों की तरह बैठे हुए थे। उनके सामने ही रखे एक पत्थर पर उनका दिया जल रहा था। हवा उसको छू भी नहीं पा रही थी जैसे आसमान उसके लिये छतरी का काम कर रहा हो ताकि बिना किसी खतरे के वह आराम से जल सके।

यह दृश्य देख कर राजा अजाद बख्त को विश्वास हो गया कि इसकी इच्छा यहॉ जरूर पूरी होगी। उसने अपने मन में अपने आप से कहा "यहॉ अल्लाह के भेजे हुए लोगों के पैरों के निशानों की दुआ से तेरे मन की इच्छा जरूर ही पूरी होगी। तेरी आशाओं का पेड़ तो केवल उनकी एक नजर से ही हरा भरा हो जायेगा और उसमें फल आ जायेंगे।

---

enthusiasts-- sometimes mad, and often hypocrites. They are much venerated by the superstitious Asiatics, and are allowed uncommon privileges, which they naturally often abuse.

जा तू उनके पास जा और उनको अपनी कहानी सुना। उनके पास बैठ। हो सकता है कि उनको तेरे ऊपर दया आ जाये और वे तुझे कोई ऐसी प्रार्थना बता दें जिसको अल्लाह स्वीकार कर ले।

अपने दिल में इस तरह का पक्का इरादा कर के वह आगे बढ़ने ही वाला था कि उसके अपने इस फैसले को रोक लिया — "अरे पगले इतनी जल्दी मत कर। पहले ज़रा भॉप तो ले। तू उनके बारे में अभी जानता ही क्या है कि वे कौन हैं कहॉ से आये हैं और कहॉ जा रहे हैं।

तुझे यह क्या पता हो सकता है कि वे कौन हैं। क्या हो अगर वे देव[27] हों या फिर गुल[28] हों जो आदमी का रूप ले कर यहॉ बैठे हों।

फिर भी हर हाल में जल्दी में उनके पास जाना और उनको इस तरह से तंग करना ठीक नहीं है। इस समय तू ऐसा कर कि कहीं छिप जा और इन दरवेशों के बारे में जानने की कोशिश कर।"

सो राजा ने ऐसा ही किया। वह इतनी शान्ति से एक कोने में छिप गया कि उनमें किसी एक ने भी उसके पैरों की आवाज भी नहीं

---

[27] The Dev is a malignant spirit, one of the classes called jinn by the Arabs, vide Lane's "Arabian Nights," vol. i. p. 30. The jinn or genii, however, occasionally behave very handsomely towards the human race, more especially towards those of the Muhammadan faith. Dev is different from Hindu's Devta.

[28] The Ghul is a foul and intensely wicked spirit, of an order inferior to the jinn. It is said to appear in the form of any living animal it chooses, as well as in any other monstrous and terrific shape. It haunts desert places, especially burying grounds, and is said to feed on dead human bodies.

सुनी। फिर उसने ध्यान लगा कर सुनना शुरू किया कि वे आपस में क्या बातें कर रहे थे।

इत्तफाक से उनमें से एक फकीर को छींक आ गयी तो वह बोला — "अल्लाह की जय हो।"



उसकी छींक की आवाज से दूसरे तीन कलन्दरों[29] का ध्यान बॅट गया। उन्होंने दिये की लौ कुछ बढ़ायी तो रोशनी कुछ और बढ़ गयी। सब अपने अपने कालीन पर बैठे हुए थे सबने अपने अपने हुक्के जलाये और हुक्के पीने शुरू कर दिये।

इन आज़ादों[30] में से एक आज़ाद ने कहा — "दोस्तों। एक दूसरे के दर्द में साथ देने वाले, वफादारी से खानाबदोशों की तरह से सारी दुनियॉ में घूमने वाले। हम चार लोग आसमान के चारों तरफ घूमने की वजह से दिन और रात होने से अपने सिर पर हमेशा धूल लिये हुए दरवाजे दरवाजे काफी समय से घूम रहे हैं।

अल्लाह का लाख लाख शुक्र है कि अपनी अच्छी किस्मत होने की वजह से हम आज इस जगह पर मिले हैं। कल क्या होना है किसी को कुछ पता नहीं और न हमें यह पता है कि कल क्या होगा। हम लोग इकट्ठे रहेंगे या फिर अकेले ही रह जायेंगे।

---

[29] Kalandars are a more fanatic set of Fakirs. Their vow is to desert wife, children, and all worldly connexions and human sympathies, and to wander about with shaven heads.
[30] The term Azad, "free, or independent," is applied to a class of Darweshes who shave the beard, eyelashes and eyebrows. They vow chastity and a holy life, but consider themselves exempt from all ceremonial observances of the Muhammadan religion.

रात हमारे ऊपर बहुत भारी है। और इतनी जल्दी सोने जाना भी ठीक नहीं है। तो हमें अपने अपने बारे में एक दूसरे को वह सब सच सच सुनाना चाहिये जो कुछ इस दुनियाँ में हमारे साथ घटा हो।

इस तरह से हमारा यह समय बीत जायेगा। और अगर थोड़ा बहुत समय बचा तो फिर हम लोग लेट जायेंगे।"

तो दूसरे तीनों बोले — "हाँ सरदार। यह तो आप ठीक कहते हैं। जैसा आप कहें। पहले आप अपने साथ हुई घटना बताइये। उसके बाद फिर हम बतायेंगे।

1 पहले दरवेश के कारनामे[31]



सो पहला दरवेश आराम से बैठ गया[32] और अपनी यात्रा का किस्सा सुनाने लगा —

ओ अल्लाह की प्यारी ज़रा हमारी तरफ भी तो देखो
और इस बेचारे की कहानी सुनो
ध्यान से सुनो कि हमारे ऊपर क्या गुजरी
अल्लाह ने हमें कैसे उठाया और फिर कैसे गिराया
मैं अपनी वे सब बदकिस्मतियॉ बताने जा रहा हूॅ जो मैंने सही हैं
सब सुनो

ओ मेरे दोस्तों। मेरे जन्म की जगह और मेरे पुरखों का देश यमन[33] है। इस अभागे का पिता एक मलीकूत तुज्जर[34] था। उनका नाम ख्वाजा अहमद[35] था। उस समय उनके मुकाबले का कोई और सौदागर और बैंकर नहीं था।

उन्होंने अपनी फैक्टरियॉ कई शहरों में लगा रखी थीं और उनका सामान खरीदने बेचने के लिये उनके एजेन्ट्स भी चारों तरफ फैले पड़े थे। उनके खजाने में लाखों रुपये नकद थे और कई देशों का सामान था।

---

[31] Adventures of the First Darwesh (Tale No 1) - Taken from ; http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/02_firstdarvesh_a.html
[32] This is the Persian way of sitting comfortably.
[33] Yemen is the South-west Province of Arabia
[34] Malikut Tujjar means the Chief of Merchants in Persian and Arabian.
[35] Khwaja Ahmed – name of the father of the First Darwesh

उनके दो बच्चे थे – एक तो मैं जो काफ़नी और सैली[36] पहनता था और जो आज आपके सामने बैठा है और आपसे यानी पवित्र गुरूओं से बात कर रहा है। और दूसरा बच्चा था एक बेटी। यानी मेरी बहिन।

मेरे पिता ने उसकी शादी अपने जीते जी दूसरे शहर के एक सौदागर से कर दी थी। वह अपने पति के साथ परिवार में ही रहती थी। एक पिता के लिये इससे ज़्यादा खुशी की बात क्या हो सकती थी कि वह अपने पिता का अकेला बेटा था और इतना अमीर था।

मेरी शिक्षा दीक्षा मेरे माता पिता दोनों की छाया में बड़े प्यार से हुई। मैं लिखना पढ़ना सीखने लगा। विज्ञान और सैनिक शिक्षा भी लेने लगा। इसके अलावा हिसाब किताब रखना और सौदागरी का काम भी सीखने लगा।

चौदह साल की उम्र तक मेरी ज़िन्दगी बड़े आराम और खुशी से निकली। मेरे दिल को किसी की चिन्ता ही नहीं थी। पर एक बार ऐसा हुआ कि एक साल के अन्दर अन्दर मेरे माता पिता दोनों अल्लाह को प्यारे हो गये।

इस दुख से मैं इतना दुखी हो गया कि मैं कुछ भी न कह सका। मैं तो एकदम से लावारिस हो गया था। मेरे परिवार में मेरी देखभाल करने वाला मेरा कोई बड़ा नहीं था।

---

[36] Kafni and Saili – Kafni is a peculiar dress for Fakirs. And Saili or Seli is a necklace of thread worn as a badge worn as a distinction by certain class of Fakirs.

इस अचानक धक्के को मैं सँभाल नहीं सका और दिन रात रोता रहता। मेरे माता पिता के मरने के **40वें**[37] दिन उनके मरने के संस्कार करने के लिये मेरे रिश्तेदार और अजनबी सब इकट्ठा हुए।

जब मरे हुए के लिये फातिहा[38] खत्म हो गया तो उन्होंने इस तीर्थयात्री के सिर पर उसके पिता की पगड़ी बाँध दी[39]।

उन्होंने मुझे यह अच्छी तरह समझा दिया कि "इस दुनियाँ में सबके माता पिता मरते हैं और एक दिन तुम भी उनका रास्ता अपनाओगे। इसलिये दुखी मत हो बेटा धीरज रखो और अपनी घर गृहस्थी देखो भालो। अब तुम्हीं इस घर के मालिक हो। अपने सारे मामलों को ध्यान से देखो भालो – अपना नकद अपना सामान आदि।"

इस तरह से आये हुए लोग प्यार से समझा कर चले गये। मेरे पिता की फैक्टरियों के सारे मजदूर एजैन्ट्स और दूसरे लोग मेरे इन्तजार में खड़े थे। उन सबने मुझे नजराना भेंट किया और कहा — "आप अपनी आँखों से इस सब सम्पत्ति को देख कर खुश हों।

[37] The 40th day is an important period in Muhammadan rites; it is the great day of rejoicing after birth, and of mourning after death. To dignify this number still more, sick and wounded persons are supposed, by oriental novelists, to recover and perform the ablution of cure on the 40th day. The number "forty" figures much in the Sacred Scriptures, for example, "The flood was forty days upon the earth", "the Israelites forty years in the wilderness", etc.

[38] The Fatiha is the opening chapter of the Kuran, which, being much read and repeated, denotes a short prayer or benediction in general.

[39] "Pagadee Baandhna" is a ceremony to a person, normally son, after the death of the family head or father. It denotes that after the death of this family head now this person is the Head of the household.

जब मैंने अपनी इस अथाह सम्पत्ति को देखा तो मेरी ऑखें फैल गयीं। मैं तो देखता का देखता रह गया।



तुरन्त ही मैंने एक दीवानखाना[40] बनाने का हुक्म दिया। उसके फर्शों पर कालीन बिछवाये। दीवारों पर परदे लगवाये। दरवाजों पर चिकें[41] लगवायी गयीं। मैंने सुन्दर सुन्दर नौकर अपनी सेवा में रखे और उनको अपने खजाने से अच्छे मॅहगे कपड़े पहनने को दिये।

जल्दी ही यह साधु अपने मरे हुए पिता की सीट पर बैठने की जगह मुफ्त के खाने वालों से झूठे लोगों से और झूठी प्रशंसा करने वालों से घिर गया। अब वे ही सब उसके दोस्त बन गये और वह हमेशा ही उनके साथ रहता।

वे मुझे बहुत सारी जगहों के बारे में नयी नयी बातें बता कर मेरा मन बहलाते। धीरे धीरे कर के वे मेरे दिमाग में यह डालते रहते — "जवानी के इस समय में तुमको तो बहुत बढ़िया बढ़िया शराब पीनी चाहिये और सुन्दर सुन्दर लड़कियों के साथ आनन्द करना चाहिये।"

---

[40] Diwan-Khana is that part of a dwelling where male company are received.

[41] Chicks are curtains, or hanging screens, made of fine slips of bamboos, and painted and hung up before doors and windows, to prevent the persons inside from being seen from outside, and to keep out insects; but they do not exclude the air, or the light from without. If there is no light in a room, a person may sit close to the chick, and not be seen by one who is without.-- However, no description can convey an adequate idea of pardas and chicks to the mere European. A picture of Chic is shown above.

थोड़े में कहो तो बुरा विद्वान आदमी भी तो आदमी ही होता है न। उनकी ये सब बातें लगतार सुनने से मेरे विचार बदल गये।

शराब पीना नाच देखना और खेल खेलना ही मेरे जीवन का उद्देश्य हो गया। आखिर यह मामला इतना बढ़ गया कि मैं अपनी सौदागर वाली जिम्मेदारियॉ भूल गया और इस जुआ खेलने की आदत में पड़ गया।

मेरे नौकरों और मेरे साथियों ने जब मेरी इस लापरवाही की आदत को देखा तो उन्होंने मुझसे बहुत सारी बातें छिपा लीं और फिर मेरा बहुत सारा पैसा इधर उधर कर दिया। मुझे यही नहीं पता चला कि मेरा पैसा कब कहॉ से आया और कब कहॉ गया।

जब पैसा आता था तो उसे बहुत ही लापरवाही से खर्च किया जाता था। उस समय अगर मेरे पास कारूँ[42] का खजाना भी होता तो वह भी इस खर्चे के लिये काफी नहीं होता।

इस रास्ते पर चलते हुए कुछ ही सालों में मेरी ऐसी हालत हो गयी कि मेरे सिर पर केवल एक टोपी रह गयी और एक फटा कपड़ा मेरी कमर और टॉगें ढकने के लिये रह गया। मेरे वे दोस्त जो मेरे साथ खाना खाते थे आनन्द करते थे मेरे एक चम्मच खून के लिये अपना खून देने के तैयार रहते थे सब गायब हो गये थे।

---

[42] Karoon – a personage famed for his wealth, like the Croesus of the Greeks, or Kuber in Hindus, etc.

हालाँकि अगर मैं इत्तफाक से उनको सड़क पर भी मिल जाता तो भी वे शायद मुझसे आँखें चुरा लेते और अपना चेहरा मेरी तरफ से घुमा लेते।

इसके अलावा मेरे हर तरह के छोटे बड़े ऊँचे नीचे नौकर भी मुझको छोड़ कर चले गये। कोई भी मेरे साथ मेरी देखभाल के लिये नहीं रहा। यहाँ तक कि कोई यह कहने वाला भी नहीं रहा कि "अफसोस तुम आज किस हालत में पहुँच गये हो।"



मेरे पास कोई साथी ऐसा नहीं रह गया था जिसके साथ में अपना दुख बाँट सकता या उससे अपना पछतावा कह सकता। मेरे पास अब आधे फारदिंग[43] की कीमत के बराबर भी किसी अन्न का दाना नहीं रह गया था जिसको खा कर मैं पानी पी कर सन्तुष्ट हो जाता।

दो तीन बार मुझको सारा सारा दिन बिना कुछ खाये भी रह जाना पड़ा पर इसके बाद मैं भूख नहीं सह सका। एक जरूरतमन्द की तरह से बेशर्मी का परदा पहन कर मैंने अपनी बहिन के घर जाने का विचार किया।

पर यह शर्म मेरे दिमाग पर छायी रही कि अपने पिता के मरने के बाद से मैंने उससे कोई रिश्ता नहीं रखा था। यहाँ तक कि कभी

[43] A farthing was a coin of the Kingdom of England worth one quarter of a penny, 1⁄960 of a pound sterling. In those times 1 Pound = 20 Shillings, 1 Shilling = 12 Pence. Thus 1 Pound = 960 quarters of Pence. That quarter of a Pence was called Farthing. It was minted in bronze and replaced the earlier copper Farthings. See its coin above.

उसको एक लाइन भी नहीं लिखी थी। जबकि उसने मुझे अफसोस जाहिर करने के लिये **2–3** चिट्ठियाँ भी लिखी थीं पर मैंने अपनी अमीरी के नशे में उनका उसे कोई जवाब नहीं दिया था। सो अब मैं उसके पास किस मुँह से जाऊँ।

इस शर्म की वजह से मेरी उसके पास जाने की कोई हिम्मत नहीं पड़ रही थी पर उसके घर जाने के अलावा मेरे पास और कोई चारा भी नहीं था।

सबसे अच्छे तरीके से बस मैं यही कर सकता था कि मैं खाली हाथ पैदल हजारों मुसीबतें झेल कर बीच बीच में रुकते हुए उसके घर जाता। सो मैंने यही किया और एक दिन मैं उस शहर पहुँच गया जिस शहर में वह रहती थी।

मैं उसके घर पहुँच गया। मेरी बहिन ने मेरी उस बुरी हालत को देख कर बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी और मेरे लिये अल्लाह से मेरे खुश रहने की दुआ माँगी। उसने मेरे सुरक्षित वहाँ पहुँचने की खुशी में गरीबों को खैरात[44] बाँटी – जैसे तेल सब्जियाँ और छोटे छोटे सिक्के।

फिर उसने मुझसे कहा — "भैया। हालाँकि मेरा दिल तुमसे मिल कर और तुमको देख कर बहुत खुश है पर मैं तुम्हें किस हालत में देख रही हूँ।"

इस बात का मैं उसको कोई जवाब नहीं दे पाया।

---

[44] Giving alms to poor

उसने मुझे तुरन्त ही नहाने के लिये भेजा। मेरे लिये एक शानदार पोशाक सिलवायी। उसने मेरे रहने के लिये अपने घर के बराबर में ही एक घर ठीक कर लिया था।

नहाने के बाद मैंने वह पोशाक पहनी नाश्ता किया। मेरे नाश्ते में शर्बत और कई तरह की मिठाइयॉ थीं। तीसरे प्रहर के समय कई तरह के ताजे फल और मेवा थी।

दोपहर और शाम के खाने के लिये पुलाव कबाब और रोटी थी जो सब बहुत अच्छा बना था और बहुत अच्छा महक भी रहा था। उसने मुझे अपने सामने बैठ कर खाना खिलाया और हर तरह से देखभाल की।

इतने दुख झेलने के बाद अपने इस आराम के लिये मैंने अल्लाह का लाख लाख धन्यवाद किया। इस आराम में कई महीने रहा। इस बीच मैंने अपने घर से एक बार भी कदम बाहर नहीं रखा।

एक दिन मेरी बहिन जो मेरी मॉ के समान देखभाल कर रही थी मुझसे बोली — "भैया तुम मेरी ऑख के तारे हो और हमारे माता पिता की निशानी हो। तुमको यहॉ देख कर मेरा दिल बहुत खुश हुआ। जब जब मैं तुम्हें देखती हूॅ तो मेरा दिल खुशी से झूम उठता है। तुमने यहॉ आ कर मुझे बहुत खुश कर दिया।

पर अल्लाह ने आदमी को अपने रहने सहने के लिये काम करने के लिये पैदा किया है। उनको आलसी हो कर नहीं बैठना चाहिये। अगर कोई आदमी आलसी हो कर घर में बैठ जाता है तो लोग

उसके बारे में बुरा सोचने लगते है और खास कर के इस शहर में। चाहे वे बड़े हों या छोटे।

हालाँकि उनका इस बात का कोई मतलब नहीं है फिर भी वे इस बारे में बात जरूर करेंगे कि तुम मेरे पास रह रहे हो और कुछ कर नहीं रहे हो। वे यह भी कहेंगे कि इसने अपने पिता का पैसा तो ऐयाशी में उड़ा दिया और अब बहिन के टुकड़ों पर पल रहा है।

इससे हमारे गर्व को ठेस लगती है। इससे हमारी हँसी उड़ती है। इससे हमारे माता पिता को शर्मिन्दा होना पड़ता है। नहीं तो मैं तो तुम्हें अपने दिल के पास ही रखती। तुम्हारे लिये अपनी खाल के जूते भी बनवा देती और तुम्हें पहना देती।

अब मेरी सलाह यह है कि तुम यात्रा की तैयारी करो। अल्लाह की मर्जी हुई तो तुम्हारा समय बदलेगा और अभी जैसे तुम परेशान हो शर्मिन्दा हो फिर खुशी और खुशहाली तुम्हारे कदम चूमेगी।"

बहिन का यह कहना सुन कर मेरे अन्दर का अहंकार जाग उठा। मैंने उसकी सलाह मानी और बोला — "बहिन। अब तुम मेरी माँ की जगह हो। अब मैं वही करूँगा जो तुम कहोगी।"

मेरी इच्छा देख कर मेरी बहिन घर के अन्दर गयी अपनी दासियों की सहायता से **50** टोरा[45] यानी थैले बाहर ले कर आयी और मेरे सामने रख दिये।

[45] The tora is a bag containing a 1,000 pieces (gold or silver). It is used in a collective sense, like the term kisa, or "purse," among the Persians and Turks; only the kisa consists of five hundred dollars.

तभी एक कारवॉ दमिश्क[46] जाने के लिये तैयार था। उसने मुझे वे पैसे देते हुए कहा कि "ये पैसे लो और इससे कुछ सामान लो और उसे किसी भरोसे वाले सौदागर के पास रखवा दो। उससे इस सामान की रसीद लेना न भूलना। साथ में तुम खुद भी दमिश्क चले जाओ।

जब तुम वहॉ सुरक्षित पहुॅच जाओ तो उस सौदागर से अपने सामान को बेच कर आये हुए पैसे ले लेना। या फिर तुम उनको अपने आप ही बेच लेना। जैसी सुविधा हो और जैसे फायदेमन्द हो वैसा ही करना।"

मैंने बहिन से पैसे लिये बाजार गया और बेचने के लिये बहुत सारा सामान खरीदा और उस सब सामान को एक मुख्य सौदागर को सौंप दिया। उससे उस सामान की रसीद ले कर मैं सामान की तरफ से लापरवाह और सन्तुष्ट हो गया।

वह सौदागर एक जहाज़ पर चढ़ा और समुद्र के रास्ते वहॉ से चल दिया। मैंने जमीन के रास्ते से जाना ज़्यादा ठीक समझा। जब मैंने अपनी बहिन से विदा ले तो मेरी बहिन ने मुझे एक बहुत शानदार जोड़ा दिया एक बहुत बढ़िया घोड़ा दिया जिसकी जीन कीमती पत्थरों से जड़ी हुई थी।

उसने मुझे चमड़े के थैले में बहुत सारी मिठाई दी जिसको उसने मेरे घोड़े की जीन से बॉध कर लटका दिया और एक डिब्बा भर कर

---

[46] Damishk or Damascus is the capital of Syria. It is called "City of Jasmine" too.

पानी भी घोड़े से लटका दिया। उसने मेरी बॉह पर एक पवित्र रुपया बॉधा मेरे टीका लगाया और मुझे विदा किया।

उसने मुझे अपने ऑसू रोक कर कहा — “जाओ भैया। मैं तुम्हें अल्लाह की हिफाजत में रख कर भेज रही हूॅ। जिस खुशी से तुम मुझे अपनी पीठ दिखा कर जा रहे हो मैं उसी खुशी से कुछ दिनों बाद तुम्हारा चेहरा देखूॅ।”

मैंने भी अल्लाह की प्रार्थना कह कर उससे कहा — “अल्लाह तुम्हारी भी रक्षा करे बहिन। मैं तुम्हारा कहा जरूर मानूॅगा।”

यह कह कर मैं घर से बाहर निकल आया अपने घोड़े पर सवार हुआ और अल्लाह की सुरक्षा पर भरोसा कर के वहॉ से चल पड़ा। जल्दी ही मैं दमिश्क के पास आ गया।

थोड़े में कहो तो जब मैं शहर के फाटक पर आया तब रात काफी ढल चुकी थी। फाटक के चौकीदारों ने शहर का फाटक बन्द कर दिया था।

मैंने उनसे बहुत विनती की कि “मैं एक यात्री हूॅ दूर से बहुत तेज़ तेज़ यात्रा कर के आ रहा हूॅ। अगर आप मेरे लिये यह फाटक खोल देंगे तो मैं अपने लिये और अपने घोड़े के लिये कुछ खाने का इन्तजाम कर पाऊॅगा।”

उन्होंने अन्दर से ही बड़ी रुखायी के साथ जवाब दिया — “इस समय पर हमें यह फाटक खोलने की इजाज़त नहीं है। तुम इतनी देर से आये ही क्यों हो।”

जब मैंने उनका यह सीधा सा जवाब सुना तो मैं शहर की दीवार के सहारे ही अपने घोड़े पर से उतर पड़ा और अपनी चादर बिछा कर वहीं बैठ गया। पर जागने के लिये मुझे कई बार उठ उठ कर घूमना पड़ता।

जब आधी रात हुई सब कुछ बिल्कुल शान्त पड़ा था। तब मैंने क्या देखा कि एक बक्सा किले की दीवार से धीरे धीरे नीचे गिर रहा है। जब मैंने यह अजीब सा दृश्य देखा तो मैं तो चकित रह गया। यह देखते हुए कि यह क्या तलिस्मान है या फिर अल्लाह मुझ अभागे पर दया कर रहा है या फिर वह मुझे कोई खजाना देना चाहता है।

जब वह बक्सा जमीन पर उतरा तो मैं उसके पास बड़े डर से पहुँचा तो देखा कि वह तो लकड़ी का बक्सा था। अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये मैंने उसे खोला तो उसमें से एक बहुत सुन्दर स्त्री निकली जिसको देखते ही किसी भी आदमी की इन्द्रियाँ जवाब दे सकती थीं।

वह घायल थी उसके खून बह रहा था उसकी आँखें बन्द थीं और वह बड़े दर्द में लग रही थी। धीरे धीरे उसके होठ हिले और उनसे बहुत धीमी सी आवाज निकली — "ओ बेवफा नीच। ओ निर्दयी। यह काम जो तूने मेरे साथ किया है क्या मेरे प्यार का यही बदला है। तू एक बार मुझे और मार ताकि तेरा मन सन्तुष्ट हो सके। मैं तेरे और अपने लिये खुदा से इन्साफ माँगती हूँ।"

इतना कह कर उस बेहोशी की हालत में भी अपने दुपट्टे का एक छोर खींच कर अपने चेहरे पर डाल लिया। उसने मेरी तरफ देखा भी नहीं।

उसकी तरफ देखते हुए इसकी बात सुन कर मैं तो बिल्कुल पागल सा ही हो गया। मैं तो बस यही सोचता रहा गया कि ऐसा कौन सा निर्दयी हो सकता है जिसने इतनी सुन्दर स्त्री को मारा हो। उसका दिल ऐसे कैसे शैतान का दिल था जिसने उसके ऊपर हाथ उठाया जो उसे अभी भी प्यार करती है और मरते मरते भी उसको याद करती है।

मैं यह अपने आप ही बुड़बुड़ा रहा था कि लगता था कि यह आवाज उसको सुनायी दे गयी। तो उसने अपने चेहरे पर पड़ा दुपट्टा हटाया और मेरी तरफ देखा।

जैसे ही उसकी मेरी नजर से मिलीं तो मैं तो बस बेहोश सा ही हो गया और मेरा दिल बहुत ज़ोर जोर से धड़कने लगा। मैंने अपने आपको बड़ी मुश्किल से सँभाला।

बड़ी हिम्मत बटोरते हुए मैंने उससे पूछा — "तुम मुझे सच सच बताओ कि तुम कौन हो और यह जो मैं तुम्हारे साथ हुआ देख रहा हूँ वह सब कैसे हुआ। जब तक तुम मुझे इसे समझाओगी नहीं मेरा दिल शान्त नहीं हो सकता।"

इन शब्दों को सुन कर हालाँकि उसके अन्दर बोलने की बहुत कम ताकत थी फिर भी वह धीरे धीरे बोली — "तुम्हारा बहुत बहुत

धन्यवाद। मैं अपनी हालत के बारे में जो मेरे घावों ने की है जिसे तुम देख रहे हो मैं कैसे बोल सकती हूॅ। मैं तो केवल कुछ पलों की ही मेहमान हूॅ।

जब मेरी आत्मा चली जायेगी तब खुदा के लिये तुम मेरे साथ एक इन्सान की तरह से बर्तना। तुम मुझे इसी बक्से में किसी जगह गाड़ देना। उसके बाद मैं अच्छे बुरे सबसे आज़ाद हो जाऊॅगी। तुमको भी भविष्य में इसका इनाम मिलेगा।"

यह कह कर वह शान्त हो गयी। उस रात मैं उसकी कोई दवा नहीं कर सका। मैं वह बक्सा अपने पास ले आया और बाकी बची रात की घड़ियॉ गिनने लगा।

मैंने तय कर रखा था कि जैसे ही सुबह होगी मैं शहर जाऊॅगा और जो कुछ उसके लिये मुझसे बन पड़ेगा करूॅगा। थोड़े में कहूॅ तो यह रात मेरे ऊपर बहुत भारी थी जिसके बोझ से मुझे अपना दिल बैठा बैठा सा महसूस लग रहा था। मैं सारी रात बहुत बेचैन रहा।

आखिर सारी रात बेचैनी से काटने के बाद सुबह हुई। मुर्गों ने बॉग दी। अपनी सुबह की प्रार्थना के बाद मैंने वह बक्सा एक खुरदरे से कैनवास के कपड़े में बन्द किया और फिर जैसे ही शहर का फाटक खुला तो मैं अन्दर गया और मैंने हर आदमी और दूकानदार से पूछा कि मुझे कोई मकान किराये पर कहॉ मिल सकता है। काफी ढूॅढने के बाद मुझे एक अच्छा सा मकान किराये पर मिल गया और मैंने उसी को किराये पर ले लिया।

घर में घुसते ही पहला काम तो मैंने यह किया कि मैंने उस सुन्दर लड़की को बक्से से बाहर निकाला और उसको रुई के एक बहुत ही मुलायम बिछौने पर लिटाया।

फिर मैंने उसके पास एक भरोसे का आदमी छोड़ा और एक चीरफाड़ करने वाले डाक्टर की खोज में निकला। बाहर निकल कर मैंने हर एक से पूछा कि इस शहर में सबसे अच्छा चीरफाड़ करने वाला डाक्टर कौन सा है और वह कहाँ रहता है।

एक आदमी ने बताया कि वहाँ एक नाई था जो बहुत अच्छी चीरफाड़ करता था और शरीर के बारे में बहुत अच्छी तरह से जानता था। और इस कला में वह बहुत होशियार था।

अगर तुम उसके पास कोई मरा हुआ आदमी भी ले कर जाओ तो अल्लाह की दुआ से वह उसको भी ज़िन्दा कर देगा। वह यहीं पास में रहता है। उसका नाम ईसा[47] है।

इस अक्लमन्द का नाम सुन कर मैं उसकी खोज में निकला। बहुत जगह पूछताछ करने के बाद आखिर में मुझे वह उसी दिशा में मिल गया जहाँ लोगों ने उसे बताया था।

मैंने देखा कि उसके सफेद दाढ़ी थी और वह अपने दरवाजे के पास ही बैठा हुआ था। कई आदमी और स्त्रियाँ उसके लिये कुछ कुछ कूटने पीसने में लगे हुए थे।

---

[47] Isa is the name of Jesus among the Muhammadans; who all believe, (from the New Testament, transfused into the Kuran,) in the resurrection of Lazarus, and the numerous cures wrought by this Saviour. This, perhaps, induced Mir Amman to call the wonder-performing barber and surgeon 'Isa.

मैंने आदरपूर्वक उसको सलाम किया और बोला — "आपके बारे में आपकी होशियारी जान कर मैं आपसे कुछ सहायता माँगने आया हूँ। मेरा मामला यह है कि मैं दूर देश से यहाँ व्यापार करने के लिये आया था। मेरी पत्नी भी मेरे साथ आयी थी क्योंकि मैं उससे बहुत प्यार करता था।

जब मैं इस शहर के पास आया तो मैं इस शहर से कुछ दूरी पर ही रुक गया क्योंकि वहाँ मुझे शाम हो गयी थी। मैंने एक अनजाने देश में रात को यात्रा करना भी सुरक्षित नहीं समझा। सो मैं मैदान में ही एक पेड़ के नीचे रुक गया।

सुबह होने से कुछ पहले ही कुछ डाकुओं ने हमारे ऊपर हमला कर दिया। उन्होंने मुझसे मेरा सारा पैसा और जो कुछ भी मेरे पास था सब ले लिया और मेरी पत्नी को घायल कर दिया क्योंकि वह अपना गहना और कीमती पत्थर जो उसके पास थे नहीं देना चाहती थी। मैं उनको रोक नहीं सका और बची हुई रात जैसे तैसे गुजारी।

जैसे ही सुबह हुई मैं इस शहर में आया एक मकान किराये पर लिया उसको घर में छोड़ा तुरन्त ही आपको देखने यहाँ चला आया। आप इस काम में होशियार हैं मेहरबानी कर के इस अभागे यात्री के घर आ कर इसकी सहायता कीजिये।

अगर आप उसकी ज़िन्दगी बचा देंगे तो आपकी बहुत प्रसिद्धि हो जायेगी। मैं भी आपका ज़िन्दगी भर गुलाम रहूँगा।"

ईसा डाक्टर बहुत ही भला और अच्छा इन्सान था। उसको मेरे दुर्भाग्य पर बहुत दया आयी वह मेरे साथ साथ मेरे घर चला। उस लड़की के घाव देख कर उसने मुझे तसल्ली दी और आशा बँधायी — "अल्लाह की दुआ से इस स्त्री के घाव 40 दिन में ठीक हो जायेंगे। उसके बाद इसको अपने ठीक हो जाने की पूजा करानी होगी।"

थोड़े में कहो तो उसने स्त्री के घाव नीम[48] उबाले हुए पानी से अच्छी तरह से धोये। जिनको उसने सिलने के काबिल समझा उनको सिल दिया। कुछ दूसरे घावों पर उसने कुछ बूटी लगा दी और मरहम लगा दिया। फिर उसने अपना बक्सा निकाला और उन सब पर पट्टी बाँध दी।

इसके बाद उसने बड़े प्यार से कहा — "मैं सुबह शाम तुम्हें देखता रहूँगा। इसका ख्याल रखना कि यह शान्त रहे कहीं इसके घावों के टाँके न खुल जायें। इसको थोड़ा थोड़ा सा मुर्गे का पानी[49] देते रहें अक्सर गुलाबजल के साथ "बद मुश्क" देते रहें ताकि इसको ताकत मिलती रहे।"

इस तरह से ईसा इस लड़के को समझा बुझा कर वहाँ से चला गया। मैंने भी हाथ जोड़ कर उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा — "जो धीरज आपने मुझे दिया है उससे तो मेरी ज़िन्दगी ही

[48] The Neem is a large and common tree in India, the leaves of which are very bitter, and used as a decoction to reduce contusions and inflammations; also to cleanse wounds.
[49] Translated for the words "Chicken Broth"

वापस आ गयी है। नहीं तो मुझे अपनी मौत के अलावा और कुछ सूझता ही नहीं था। अल्लाह आपको सुरक्षित रखे।"

फिर मैंने उसको इत्र और पान दे कर विदा किया। उस सुन्दर स्त्री की मैं रात दिन सेवा करता रहा। मैं उसके पास हमेशा ही बैठा रहता। उस समय अपना आराम करना तो मैं बिल्कुल ही पाप समझता था। अल्लाह की देहरी पर मैं हमेशा उसके ठीक होने की प्रार्थना करता रहता।

अब हुआ यह कि जिस सौदागर को मैंने अपना सामान दिया था वह वहाँ आ पहुँचा और उसने मुझे मेरा सामान वापस दे दिया। मुझे उस पर पूरा विश्वास था कि उसने उसकी ठीक से परवाह की होगी। जब जब मुझे मौका मिला मैंने उसे बेचना शुरू कर दिया। उससे जो पैसा आता था वह मैं उसकी दवाओं पर खर्च कर देता था।

ईसा बड़े नियमित ढंग से उसे देखने आता रहा। जल्दी ही उस लड़की के घाव भर गये। उसके कुछ दिन बाद उसने अपने इलाज की पूजा की। मेरा दिल खुशी से भर गया। मैंने ईसा को एक बहुत ही कीमती खिलात[50] और बहुत सारे सोने के सिक्के दिये।

---

[50] The khil'at is a dress of honour, in general a rich one, presented by superiors to inferiors. In the zenith of the Mughal empire these khil'ats were expensive honours, as the receivers were obliged to make rich presents to the emperor for the khil'ats they received. The khil'at is not necessarily restricted to a rich dress; sometimes, a fine horse, or splendid armour etc may also form an item of it.

मैंने सुन्दर लड़की के लिये बहुत बढ़िया कालीन बिछवाये और मसनद[51] लगवा कर उसको उस पर बिठाया। इस खुशी के समय पर काफी पैसे मैंने गरीबों को दान में भी दिये। मुझे तो इतनी खुशी हो रही थी जैसे मुझे सातों लोकों का राज्य मिल गया हो।

जब वह स्त्री ठीक हो गयी तो उसके चेहरे का रंग गुलाबी हो गया और उसका चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा जैसे वह बिल्कुल असली सोने का हो।

उसकी सुन्दरता की चमक की वजह से मैं उसकी तरफ देख ही नहीं पाता था। मैं हमेशा उसकी ही सेवा में लगा रहता और वह जो कुछ भी कहती उसे बड़े उत्साह से करता।

वह कहती — "अपनी परवाह करो अगर तुम मेरी बात मानना चाहो तो। मेरा काम करते करते तुम साँस भी नहीं लेते। मैं जो भी कहती हूँ तुम उसे बिना किसी हिचकिचाहट के पूरा कर देते हो। तुम एक साँस का भी इन्तजार नहीं करते। तुम्हें पछताना पड़ेगा।"

उसकी ढंग चाल से ऐसा लगता था कि उसको यह मालूम था कि अगर उसे मेरी सेवाओं का बदला चुकाना पड़ा तो वह उसे कैसे चुकाना था। मैं भी उसकी मर्जी के खिलाफ कोई काम नहीं कर पाता था। और उसका हर हुक्म बड़ी वफादारी से बजा लाता था।

कुछ समय उसके भेद कि वह कौन थी क्या थी और मेरी सेवाओं में बीत गया। जिस किसी चीज़ की उसकी इच्छा होती मैं

---

[51] Masanad are round long thick pillows

उसको वह तुरन्त ही ला देता। जो कुछ पैसा मुझे अपना सामान बेच कर मिला था वह सब पैसा अब खत्म हो रहा था – मूल भी और ब्याज भी।

एक विदेशी जगह में जहाँ के लिये मैं बिल्कुल अनजान था मेरे ऊपर कौन भरोसा करता। आखिर मैं पैसे की तरफ से दुखी रहने लगा। यहाँ तक कि मुझे रोजमर्रा के खर्चे में भी मुश्किल पड़ने लगी। इसलिये दिल ही दिल में मुझे शर्मिन्दगी महसूस होने लगी।

मैं इस चिन्ता में रोज ही घुलता रहा। मेरे चेहरे का रंग उतरने लगा। पर मैं वहाँ किससे सहायता माँगता। जो दुख मेरे दिल को था वह तो अब मुझे ही सहना था। गरीब आदमी का दुख तो उसी की आत्मा को खाता है।

एक दिन उस सुन्दर स्त्री को अपनी ताकत से यह पता चल गया कि मैं बहुत दुखी हूँ। उसने कहा — "ओ नौजवान। तुमने जो मेरे ऊपर खर्चा किया है उसके लिये तुम दुखी न हो। तुम मुझे एक कागज का टुकड़ा ला दो और कलम और स्याही ला दो।"

जैसे ही उसने यह कहा तो मुझे लगा कि यह स्त्री किसी राजघराने की है नहीं तो यह मुझसे इतनी बहादुरी से नहीं बोलती। मैं तुरन्त ही उसके लिये एक कागज और एक कलमदान[52] ले आया और ला कर उसके सामने रख दिया।

[52] Here Kalamdan means the small tray containing pens, inkstand, a paper knife etc.

उसने अपने सुन्दर हाथों से एक सन्देश लिखा और मुझे दे कर बोली — "किले के पास ही एक तिरपौलिया[53] है। उसके बराबर से जो सड़क जा रही है उस पर एक बहुत बड़ा मकान है। उस मकान का मालिक सिद्दी[54] बहार के नाम से मशहूर है। तुम जाओ और यह नोट उसको दे देना।"

उसके हुक्म के अनुसार मैं वहॉ गया। नाम और पते से मैंने उसको जल्दी ही ढूँढ लिया। चौकीदार के हाथों मैंने अन्दर सन्देश भिजवाया कि मैं एक चिट्ठी ले कर आया हूँ। जैसे ही उसने मेरा सन्देश सुना एक सुन्दर सा नीग्रो मुझसे मिलने के लिये बाहर निकल कर आया।

उसने एक मोटी सी पगड़ी अपने सिर पर बॉध रखी थी। हालॉकि उसका रंग थोड़ा काला था पर उसके चहरे पर उसके भाव साफ दिखायी दे रहे थे।

उसने मेरे हाथ से वह नोट ले लिया पर कुछ कहा नहीं। उसने कोई सवाल भी नहीं पूछा। वह जिस तरह से बाहर आया था उसी तरह से अन्दर चला गया। थोड़ी ही देर में वह फिर बाहर आया तो वह अपने कई दासों के साथ आया जिनके सिरों पर 11 बन्द थालियॉ थीं और वे ब्रोकेड[55] के कपड़े से ठकी हुई थीं।

[53] Tirpauliya means three arched gates; there are many such which divide grand streets in Indian cities, and may be compared to our Temple Bar in London, only much more splendid.
[54] Ethiopian, or Abyssinian slaves, are commonly called Sidis. They are held in great repute for their honesty and attachment.
[55] The cloth woven with golden or silver threads

उसने अपने दासों से कहा — "जाओ इस नौजवान के साथ चले जाओ और ये थालियाँ दे आओ।"

मैंने उसको अपने तरीके से विदा कहा और वहाँ से चल दिया। उन दासों को मैं अपने घर ले आया। मैंने उनको अपने घर के दरवाजे से ही वापस कर दिया और उन सारी थालियों को खुद ही उस सुन्दर लड़की के सामने ले आया।

उनको देख कर उसने मुझसे कहा — "लो ये **11** थैले सोने के सिक्के लो और इस पैसे से घर का खर्चा ठीक से चलाओ।"

यह सब देख कर हालाँकि मुझे अपने मन में बहुत तसल्ली हुई फिर भी मेरे मन में कुछ उथल पुथल रही। मैंने अपने मन में कहा "ओ अल्लाह। यह कैसी अजीब सी बात है कि एक अजनबी जो किसी के लिये अनजान है उसके लिखे हुए एक कागज के टुकड़े पर बिना कुछ कहे सुने पूछे किसी को इतना सारा पैसा दे दे।"

मैं उस सुन्दर स्त्री से इस बात को पूछने की हिम्मत नहीं कर सका क्योंकि उसने मुझसे यह बात पूछने के लिये पहले ही मना कर रखा था। डर के मारे मेरे मुँह से तो एक शब्द भी नहीं निकला।

इस घटना के आठ दिन बाद वह सुन्दर स्त्री मुझसे बोली — "अल्लाह ने आदमी को इन्सानियत की एक ऐसी पोशाक दे रखी है जो न तो कभी मैली होती है और न फटती है। हालाँकि फटे कपड़े भी उसकी इन्सानियत को कम नहीं करते पर फिर भी जनता में वह अच्छा नहीं लगता।

इसलिये तुम इसमें से दो थैले सोने के सिक्के ले जाओ और चौक में यूसुफ व्यापारी की दूकान पर चले जाओ। वहॉ से अपने लिये दो जोड़ी बढ़िया कपड़े और कुछ गहने खरीद लो और उन्हें ले कर यहॉ आओ।"

मैं तुरन्त ही अपने घोड़े पर चढ़ा और उसी दूकान पर चला गया जो उसने मुझे बतायी थी। मैंने उस दूकान पर एक नौजवान बैठे देखा जो नारंगी रंग के कपड़े पहने बैठा था। वह एक गद्दी पर बैठा था। वह इतना सुन्दर था कि उसको देखने के लिये सारी सड़क खड़ी हो जाती थी। सारा बाजार का बाजार उसको देखता रहता।

मैं उसकी दूकान पर गया और उसे सलाम बोला। जा कर बैठ गया और उससे वे चीज़ें मॉगीं जो मुझे चाहिये थीं।

अब क्योंकि मेरे बोलने का ढंग उस शहर के रहने वालों के बोलने के ढंग से अलग था। फिर भी उस नौजवान ने बड़ी मुलायमियत से कहा — "जनाब आपको जो कुछ चाहिये वह सब तैयार है। पर क्या जनाब आप मुझे बतायेंगे कि आप कौन से देश से आये हैं। और इस नये शहर में रहने का आपका क्या मतलब है। अगर आप मुझे इस बारे में बता देंगे तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

मैं उसको अपने हालात बिल्कुल भी बताने के लिये तैयार नहीं था इसलिये मैंने उसको कोई कहानी बना कर सुना दी। फिर मैंने

उससे गहना और कपड़ा लिया, उसको पैसे दिये और उससे जाने के लिये विदा माँगी।

मेरी इस बात से मुझे वह कुछ नाखुश सा लगा। उसने कहा — "कोई बात नहीं जनाब। अगर आप नहीं बताना चाहते तो शुरू में ही आपको इतने प्यार से सलाम करने की कोई जरूरत नहीं थी। जो लोग अच्छे घरों से आते हैं उनके लिये इस तरह का सलाम करना कुछ मायने रखता है।"

उसने यह सब मुझसे इतनी अच्छी तरह से कहा कि मेरा दिल खुश हो गया। मुझे भी यह सुन कर अच्छा नहीं लगा कि उससे इतनी जल्दी और इस तरह से विदा ले कर चला जाऊँ। सो उसको खुश करने के लिये मैं थोड़ी देर वहाँ और बैठ गया।

मैंने कहा — "तुम ठीक कहते हो। मैं तैयार हूँ।"

मेरे ऐसा कहने से वह बहुत खुश हो गया। उसने मुस्कुरा कर कहा — "अगर तुम्हें मेरा गरीबखाना पसन्द आये तो तुम आज शाम को वहाँ एक छोटी सी पार्टी के लिये आओ। हम लोग वहाँ थोड़ा आनन्द करेंगे।"

जब से मैं उस सुन्दर लड़की से मिला था मैंने अभी तक उसको कभी अकेला नहीं छोड़ा था सो मुझे उसके अकेलेपन का ख्याल आया तो मैंने उसको कई बहाने बना कर टाल दिया। पर वह नौजवान मेरा कोई भी बहाना सुनने को तैयार नहीं था।

उसने मुझसे यह वचन ले ही लिया कि जैसे ही मैं घर यह सब सामान ले कर जाऊँ उसके थोड़ी ही देर बाद मैं उसके घर पहुँच जाऊँ। इसी शर्त पर उसने मुझे घर जाने की इजाज़त दी।

मैं कपड़े और गहने ले कर सुन्दर लड़की के पास चला। वहाँ पहुँचा तो उसने मुझसे सब चीज़ों की कीमत पूछी और यह भी पूछा कि व्यापारी की दूकान पर क्या हुआ। मैंने अपनी खरीदारी की सारी बातें उसको बता दीं और साथ में मैंने उसको उस पार्टी के बारे में भी बता दिया जिसके लिये उसने मुझे बुलाया था।

उसने कहा — “किसी भले आदमी के लिये उसका अपना वायदा तोड़ना ठीक नहीं है। तुम मुझे अल्लाह की रक्षा में छोड़ जाओ और अपनी बात रखो। हमारे धर्मदूत ने हमें यह सिखाया है कि अगर हमें कोई प्रेम से बुलाये तो हमें जरूर जाना चाहिये।”

मैं बोला — “मेरा मन नहीं करता कि मैं तुम्हें यहाँ अकेला छोड़ कर यहाँ से जाऊँ। पर अगर तुम्हारा यही हुक्म है और मुझे जाना ही है तो मेरा दिल जब तक मैं वापस लौट कर आता हूँ तुम्हारे पास ही रहेगा।”

उससे इतना कह कर मैं उस व्यापारी के घर चला गया जहाँ वह एक कुर्सी पर आराम से बैठा मेरा इन्तजार कर रहा था। मुझे देखते ही वह बोला — “आइये ओ भले आदमी। मैं तो आपकी राह ही देख रहा था।”

कह कर वह तुरन्त ही उठा और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने साथ ले चला। वह मुझे एक बागीचे की तरफ ले गया। वह एक सुन्दर बागीचा था जिसमें कई प्रकार के फूल लगे हुए थे नहरें बह रही थीं फव्वारे लगे हुए थे।

वहॉ बहुत तरीके के फलों से लदी डालियॉ नीचे झुकी जा रही थीं। बहुत तरीके की चिड़ियॉ पेड़ों की डालियों पर बैठी हुई थीं और अपनी मीठी आवाज में गा रही थीं। बागीचे के बीच में वहॉ एक बड़ा सा शानदार महल था जिसमें हर कमरे में वेशकीमती कालीन बिछे हुए थे।

एक नहर के किनारे हम लोग एक कमरे में बैठ गये। एक पल के बाद ही वह उठा और बाहर गया और कुछ ही पलों में कीमती कपड़े पहन कर आ गया।

उसको देख कर मैंने कहा — "अल्लाह की जय हो। खुदा करे तुम्हें किसी की बुरी नजर न लगे।"

यह सुन कर वह मुस्कुराया और बोला — "अगर तुम अपने कपड़े बदल लो तो यह बात तो तुम्हारे लिये भी ठीक है।"

उसको खुश करने के लिये मैंने भी दूसरे कपड़े पहन लिये। उस नौजवान ने मेरे लिये बहुत सारी आनन्द की चीज़ें इकट्ठी कर रखी थीं और जो भी उसके हाथ में था उसने उसका इन्तजाम कर रखा था। वह मुझसे बड़े स्नेह और तरीके से बात कर रहा था।

इसी समय एक शराब पिलाने वाला वाइन से भरी सुराही, एक क्रिस्टल का प्याला और तरह तरह के स्वादिष्ट मॉस ले कर वहॉ आया। सब कुछ सबको दिया जाने लगा।

जब तीन या चार बार शराब पी ली गयी तो चार नाचने वाले लड़के वहॉ आये। वे बहुत सुन्दर थे और उन्होंने लम्बी ढीली और चारों तरफ को उड़ती हुई सी पोशाक पहन रखी थी। वहॉ आ कर उन्होंने गाना शुरू कर दिया।

उनका गाना उनके सुर आदि सब सुनने में इतना अच्छा लग रहा था कि ऐसा लग रहा था कि जैसे उस समय वहॉ पर तानसेन[56] भी होते तो वह भी अपना आपा भूल गये होते और बैजू बावरा[57] भी उसको सुन कर पागल हो गये होते।

इस सब आनन्द के बीच नौजवान सौदागर की ऑखें अचानक ऑसुओं से भर गयीं। उसके ऑसुओं की दो तीन बूॅदें उसके गालों पर ढुलक गयीं।

वह मेरी तरफ घूमा और बोला — "अब तो हममें ज़िन्दगी भर की दोस्ती हो गयी है तो अपने दिलों के भेद एक दूसरे से छिपाना किसी भी धर्म में नहीं लिखा। आज मैं तुम्हें अपनी दोस्ती के

---

[56] Tansen was a very famous singer of Indian music. His real name was Ramtanu Pandey. He was one of the Nav-Ratna in the court of Emperor Akbar (reigned during 1556-1605). How Tansen has been referred to here. It can only be guessed that maybe the writer has added this name to this story. The author could never have mentioned it.

[57] Baiju Bawara is another musician of the Indian music world. Baiju learnt music from Swami Haridas (1512–1607). He was called **Bawra** (crazy) because he was insanely in love with a court dancer in Chanderi. Initially he was a musician at the court of the Raja of Chanderi and later in the court of Raja Mansingh Tomar. Thus he was also there during Akbar's reign.

विश्वास में बिना कुछ छिपाये हुए अपनी ज़िन्दगी का एक भेद बताता हूँ।

अगर तुम मुझे जाने की इजाज़त दो तो मैं अपनी पत्नी को यहाँ बुलाना चाहता हूँ क्योंकि उसके बिना मैं किसी भी आनन्द का आनन्द नहीं उठा सकता। उसके बिना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता।"

उसने ये शब्द इतनी गहरी इच्छा से कहे कि हालाँकि मैंने उसकी पत्नी को देखा नहीं था पर मेरी इच्छा हो आयी कि मैं उसे देखूँ।

मैंने उससे कहा कि तुम्हारी खुशी में ही मेरी खुशी है। इससे ज़्यादा अच्छी बात और क्या हो सकती है। बुलाओ उसे जल्दी से बुलाओ।

यह सच है कि प्रेमिका के बिना किसी चीज़ में आनन्द नहीं आता। नौजवान ने चिक की तरफ देख कर एक इशारा किया और उधर से एक काली स्त्री जो किसी राक्षसी जैसी भद्दी और बदसूरत थी अन्दर आयी जिसको तो देख कर ही कोई आदमी बिना अपनी मौत आये मर जाये। वह उस नौजवान के पास आयी और आ कर बैठ गयी।

मैं तो उसको देख कर ही डर गया। उसको देखते हुए मैं सोचने लगा कि क्या यह सुन्दर नौजवान इसको प्यार कर सकता है। और क्या यह वही लड़की है जिसकी वह इतनी तारीफ कर रहा था और उसके लिये प्यार दिखा रहा था।

मैंने उसके ऊपर कुछ जादू के शब्द पढ़े और चुप हो गया। इन्हीं हालातों में शराब और संगीत का यह आनन्द तीन दिन और तीन रात चला।

चौथी रात को सब बेहोश से होने लगे और नींद भी आने लगी। मैं भी कुछ भूलने की सी हालत में आ गया और सो गया। अगली सुबह नौजवान सौदागर ने मुझे जगाया और फिर से वैसे ही बेहोशी लाने वाले और सुलाने वाली शराब के प्याले पर प्याले पिलाने शुरू कर दिये।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "मेहमान को इससे ज़्यादा परेशान करना ठीक नहीं है।"

उसने मेरे दोनों हाथ पकड़े और हम दोनों उठे। मैंने उससे जाने के लिये विदा माँगी। मेरे नर्म व्यवहार से ख़ुश हो कर उसने मुझे जाने की इजाज़त दे दी। मैंने अपने पुराने कपड़े पहने और घर की तरफ चला जहाँ वह परियों जैसी स्त्री मेरा इन्तजार कर रही थी।

पर मेरे मामले में पहले ऐसा कभी नहीं हुआ कि मैं उसको अकेला छोड़ कर कहीं जाऊँ और रात रात भर बाहर रहूँ। मुझे इस बात के लिये अपने ऊपर बहुत शर्म आ रही थी कि मैं घर से तीन दिन तीन रात बाहर रहा।

मैंने घर पहुँच कर इस बात के लिये उससे कई बार माफी माँगी। उससे मैंने कहानी के सारे हालात बताये और साथ में यह भी कहा कि उसने मुझे इससे पहले आने ही नहीं दिया।

वह दुनियाँ की रीति रिवाज अच्छी तरह से जानती थी सो वह हँस कर बोली — “इससे क्या फर्क पड़ता है क्योंकि अगर मुझे अपने दोस्त पर कोई ऐहसान करना ही हो तो मैं तुम्हें तुरन्त माफ करती हूँ।

तुम्हारे ऊपर इसका कोई इलजाम नहीं है। जब कोई आदमी इस तरह से किसी आदमी के घर पार्टी में जाता है तो वह तभी लौटता है जब उसका मेजबान उसे लौटने देता है।

पर तुमने जब उसके घर इतना सब खाया पिया है तो क्या तुम उसका खा पी कर चुप बैठे रहोगे या फिर तुम भी बदले में कुछ उसे खिलाओगे पिलाओगे।

मैं समझती हूँ कि तुमको उस नौजवान सौदागर के पास जाना चाहिये और उसको तुम्हें जितनी बड़ी दावत उसने तुम्हें दी है उससे दोगुनी बड़ी दावत तुम्हें उसे देनी चाहिये। ऐसे आनन्द के लिये तुम सामान के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचना।

अल्लाह की कृपा से उसके लिये तुम्हारे पास वे सब चीज़ें आ जायेंगी जिनकी तुम्हें जरूरत होगी। और यह दावत बहुत अच्छे ढंग से होगी।”

उसकी इच्छा के अनुसार मैं उस जौहरी की दूकान पर गया और दोस्ती के नाते उससे बोला — “देखो मैंने तुम्हारी बात खुशी से रखी अब क्या तुम दोस्ती के नाते मेरी बात नहीं रखोगे।”

वह बोला — "मैं तुम्हारी बात तो अपने दिल और अपनी आत्मा से मानूँगा। बोलो।"

तब मैंने कहा — "अगर तुम अपने इस दास के घर एक बार आओगे तो वह मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी।"

उस नौजवान ने भी बहुत बहाने बनाये पर मैं भी अपनी बात छोड़ने वाला नहीं था। काफी कहने सुनने के बाद वह तैयार हो गया और मैं उसको अपने घर ले आया।

पर रास्ते में मैं अपने यह सोचने से नहीं रह सका कि "अगर मेरे पास साधन होते तो मैं अपने मेहमान को उसकी हैसियत के अनुसार ही ले कर आता। पर अब तो मैं उसको अपने साथ लिये जा रहा हूँ। देखता हूँ कि इसका क्या नतीजा निकलता है।"

इन्हीं विचारों में खोया हुआ मैं अपने घर के पास आ पहुँचा।

वहाँ आ कर तो मैं आश्चर्य में पड़ गया कि मेरे घर के सामने बहुत भीड़ थी। दरवाजे के सामने बहुत सारे लोग आ जा रहे थे। सड़कें साफ थीं उन पर पानी छिड़का हुआ था। चाँदी की गदा और डंडे लिये लोग हमारे इन्तजार में खड़े थे।

जो कुछ भी मैंने देखा तो उससे तो मैं ठगा सा खड़ा रह गया। पर मैं जानता था कि यह मेरा ही घर है सो मैं उसमें घुस गया। अन्दर घुस कर मैंने देखा कि मेरे घर में हर कमरे के अनुसार उसमें कालीन बिछे हुए हैं। और भी कई जगह वे बिछे हुए हैं।

कीमती मसनद लगे हुए हैं। पानों के डिब्बे रखे हैं। गुलाबपाश[58] रखे हैं। इत्रदान पीकदान फूलों के गुलदस्ते आदि सब बड़ी तरतीबवार लगे हुए हैं। दीवार के सहारे सहारे कई तरह के सन्तरे और रंग बिरंगे केक और बिस्किट आदि रखे हुए हैं।

साइप्रस और कमल की शक्लों के लैम्प लगे हुए हैं और वे जल रहे हैं। बड़े कमरे में कपूर की मोमबत्ती सोने के मोमबत्तीदानों में जल कर अपनी सुगन्ध फैला रही है। हर नौकर अपनी अपनी जगह खड़ा है।

रसोईघर में बर्तनों की खड़खड़ाहट सुनायी दे रही है। अब्दरखाने में पानी ठंडा किया जा रहा है। पानी के घड़े चाँदी के खाँचों पर रखे हुए हैं। घड़े सब ढके हुए हैं। पास में ही एक चबूतरा है जिस पर गिलास और चम्मचें रखी हुई हैं। वहाँ कुलफी भी है। पानी के गिलासों को बर्फ में डाल कर ठंडा किया जा रहा है।

थोड़े में कहो तो वहाँ हर किस्म की आराम की सुविधा मौजूद थी जो उसको एक राजकुमार साबित करने के लिये चाहिये थी। गाने नाचने वाले लड़के और लड़कियाँ और साज़ बजाने वाले सब वहाँ इन्तजार कर रहे थे। कुछ गा नाच भी रहे थे। मैं उस नौजवान को हाथ पकड़ कर अन्दर ले गया और उसे मसनद पर बिठाया।

---

[58] Gold or silver pots to keep the rose water to sprinkle on guests to welcome them.

मैं तो यह सब देख कर बहुत ही आश्चर्य कर रहा था कि इतने कम समय में इतनी सारी तैयारी कैसे की गयी। मैं चारों तरफ देख रहा था और घूम रहा था पर मुझे वह सुन्दर स्त्री कहीं दिखायी नहीं दी।

उसको ढूँढते ढूँढते मैं रसोईघर में पहुँचा तब वह मुझे वहाँ मिली। उसका ऊपर वाला कपड़ा उसकी गर्दन पर पड़ा था उसके जूते उसके पाँवों में थे एक सफेद रूमाल उसके सिर पर था। उसने बहुत सादा से कपड़े पहन रखे थे। उसके शरीर पर कोई गहना नहीं था।

जिसको खुदा ने इतनी सुन्दरता दे रखी थी उसको किसी गहने की जरूरत नहीं थी
देखो ज़रा वह चाँद कितना सुन्दर लग रहा है बिना किसी सजावट के

वह दावत की देखभाल में बहुत ज़्यादा व्यस्त थी। हर एक को वह किसी न किसी खाने के बारे में बता रही थी। जिस तरीके से वह वहाँ काम कर रही थी मैं उसको दुआ दे रहा था। मैंने उससे कुछ कहा तो उसको सुन कर वह नाराज हो गयी और बोली — “बहुत सारे काम तो इन्सान बन कर ही करने पड़ते हैं। वे देवदूत नहीं कर सकते। मैंने किया ही क्या है जो तुम इतने ज़्यादा आश्चर्य चकित हो रहे हो।

बस काफी हो गया। मुझे बहुत सारी बातें पसन्द नहीं हैं। पर ज़रा मुझे यह तो बताओ कि यह कहाँ का तरीका है कि तुम अपने

मेहमान को अकेला छोड़ कर यहाँ आ गये और यहाँ इनको देख देख कर आनन्द ले रहे हो।

वह तुम्हारे ऐसे व्यवहार के बारे में क्या सोचेगा। जाओ तुरन्त ही उसके पास जाओ और जा कर उसकी देखभाल करो। उसकी पत्नी को भी बुला लो और उसको उसके पास बिठाओ।"

यह सुन कर मैं तुरन्त ही बाहर अपने मेहमान के पास चला आया और उसे अपने दोस्त की तरह से घुमाया। जल्दी ही दो सुन्दर गुलाम अन्दर आये जो कीमती रत्न जड़े गिलासों में शराब ले आये थे। वह उन्होंने हमको दी।

इस बीच मैंने उसे देखा और उससे कहा कि "मैं हर तरह से तुम्हारा दोस्त की तरह से ख्याल रख रहा हूँ पर फिर भी यह और भी अच्छा होता अगर तुम्हारी पत्नी जिसको तुम इतना प्यार करते हो वह खुद यहाँ आ कर इस आनन्द में हिस्सा लेती। यह मुझे बहुत अच्छा लगता। अगर तुम ठीक समझो तो मैं एक नौकर को उसे लाने के लिये भेज दूँ।"

यह सुन कर तो वह बहुत खुश हो गया और बोला — "अरे मेरे दोस्त यह तो बहुत ही अच्छा होगा। तुमने तो मेरे दिल की बात बोल दी।"

मैंने अपना एक खास आदमी[59] उसको लाने के लिये भेज दिया। जब आधी रात बीत गयी तब वह बदसूरत बुढ़िया अपने

[59] Translated for the word "Eunuch" to keep decency in the language.

एक शानदार चौदोल[60] पर बैठ कर वहाँ आयी जैसे कोई बुरी आत्मा अचानक आ जाये।

अपने मेहमान को खुश करने के लिये मुझे उसको लाने के लिये आगे जाना पड़ा। बड़ी इज़्ज़त से मैं उसको अन्दर ले कर आया और उसको उस सुन्दर नौजवान के पास ला कर बिठा दिया। वह तो उसको देख कर इतना खुश हो गया जैसे उसको दुनियाँ भर की दौलत मिल गयी हो।

वह बदसूरत बुढ़िया उस सुन्दर नौजवान के गले से चिपक कर वहाँ बैठ गयी। सच पूछो तो उस समय उनको देख कर ऐसा लग रहा था जैसे चौदहवीं के चाँद को ग्रहण लग गया हो। वहाँ मौजूद लागों में से बहुत सारे लोगों ने यह देख कर अपने दाँतों तले उँगली दबा ली।

शायद वे भी यही कह रहे होंगे कि "यह इतना सुन्दर नौजवान ऐसी बदसूरत के प्रेम में कैसे पड़ा।" सबकी आँखें उन्हीं की तरफ घूम गयीं। वे सब अपना काम तो भूल गये और बस उसी जोड़े की तरफ देखते रहे।

कुछ लोगों ने सोचा कि "प्यार" और "तर्क" में बहुत अन्तर होता है। जो चीज़ न्याय सोच भी नहीं सकता वह यह प्यार कर

---

[60] A Choudol is a kind of palki or sedan, for the conveyance of the women of people of rank in India.

दिखाता है। लैला को मजनूँ[61] की नजर से देखो।” वहॉ मौजूद सारे लोग बोले “हॉ यह ठीक है। यह सच है।”

सुन्दर स्त्री के कहे अनुसार मैंने अपने आपको अपने मेहमानों की सेवा में लगाया। हालॉकि सुन्दर नौजवान ने मुझसे बहुत जिद की कि मैं उसके साथ ही खाऊँ और उतना ही खाऊँ जितना वह खा रहा था पर मैंने सुन्दर स्त्री के डर से ऐसा नहीं किया। पर आनन्द के लिये खाना पीना छोड़ा भी नहीं।

चौथी रात[62] को नौजवान ने मुझसे बड़े प्यार से कहा — “अब मैं तुम्हारी इजाज़त लेना चाहूँगा। मैंने तुम्हारी खुशी के लिये तीन दिन में बहुत नुकसान सहा है और तुम्हारे पास ही बैठा रहा हूँ। मेहरबानी कर के तुम भी पल भर के लिये मेरे पास बैठो और मेरा दिल खुश कर दो।”

मैंने अपने मन में सोचा “अगर इस समय मैं इसकी यह बात नहीं मानता हूँ तो यह बहुत दुखी हो जायेगा। इसको बहुत बुरा लगेगा। और यह भी जरूरी है कि मैं अपने नये दोस्त को नाराज न करूँ।”

यह सोचते हुए मैं बोला — “ओह यह तो मेरे लिये बहुत खुशी की बात होगी कि मैं तुम्हारा कहा करूँ और तुम्हें इ़ज़्ज़त दूँ। क्योंकि यह कहना तो मेहमानों की सेवा करने से भी बड़ी रस्म है।”

---

[61] Majnun, a lover famed in eastern romance, who long pined in unprofitable love for Laila, an ugly hard-hearted mistress. The loves of Yusuf and Zulaikha, Khusru and Shirin, also of Laila and Majnun, are the fertile themes of Persian romance.

[62] Mohammadans reckon their day from Sunset.

यह सुन कर उसने मुझे एक वाइन का गिलास दिया और मैंने उसे पी लिया। कि तभी वह वाइन का गिलास मेरी आँखों के सामने इतनी ज़ोर से चारों तरफ घूम गया कि मुझे लगा कि मैं जैसे बहुत पी गया कुछ समझने के लायक नहीं रहा और फिर बेहोश भी हो गया।

2 पहले दरवेश के कारनामे–समाप्त[63]

जब सुबह हुई और सूरज को निकले दो घड़ी हो गये तब मेरी आँख खुली। पर वहाँ तो मुझे कुछ दिखायी नहीं दिया – न लोग न दावत और न वह सुन्दर लड़की। वहाँ तो केवल खाली घर पड़ा था। पर बड़े कमरे के एक कोने में एक कम्बल में लिपटा कुछ रखा था।

मैंने उसे खोला तो मुझे उसमें उस नौजवान सौदागर की लाश मिली और साथ में उस काली स्त्री की भी। उन दोनों के सिर उनके शरीर से अलग हुए पड़े थे।

यह देख कर मैं फिर बेहोश हो गया। और मैं इस फैसला करने के होश में ही नहीं रहा कि यह सब क्या था और क्या हो गया। मैं अपने चारों तरफ देखे जा रहा था। और हर तरफ देख कर मुझे आश्चर्य हो रहा था।

तभी मुझे वह खास नौकर[64] दिखायी दे गया जो हमारी पार्टी में काम कर रहा था। मैंने उससे इन सब अजीब घटनाओं की सफाई माँगी तो वह बोला — "इसको सुन कर आपका क्या भला होगा कि यहाँ क्या हुआ जो आप इसे जानना चाहते हैं।"

[63] Adventures of the First Darwesh-Concluded (Tale No 1) - Taken from : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/02_firstdarvesh_b.html

[64] Translated for the word "Eunuch" to keep the descency of the language.

मैंने मन में सोचा “यह कह तो ठीक ही रहा है।” फिर भी मैंने कुछ पल रुक कर कहा — “ठीक है तुम मुझे यह सब मत बताओ पर यह तो बताओ कि वह सुन्दर लड़की है कहाँ।”

वह बोला — “अवश्य अवश्य। मैं आपको वह सब बताऊँगा जो कुछ मुझे मालूम है। पर मुझे आश्चर्य है कि एक आप जैसा आदमी जो इतना समझदार हो बिना अपनी पत्नी की इजाज़त लिये बिना डर के बिना किसी रस्म के शराब पीने में उसके साथ लग गया जिससे आपकी केवल कुछ ही दिन की जान पहचान हो। इस सबका क्या मतलब है।”

मैं अपनी इस बेवकूफी पर बहुत शर्मिन्दा था। मुझे लगा कि वह नौकर ठीक ही कह रहा था। मैं उसे इस जवाब के अलावा और कोई जवाब नहीं दे सका — “सचमुच में मुझसे गलती हो गयी। इसके लिये मुझे माफ करो।”

अब तो नौकर को अपने ऊपर घमंड हो गया उसने घमंड से उस सुन्दर स्त्री का घर मुझे दिखाया और वहाँ से चला गया। उसने खुद ही ने दोनों लाशों को दफ़न कर दिया।

अब उस अपराध को करने में मेरा कोई हिस्सा नहीं था। अब तो बस मैं अपनी उस सुन्दर स्त्री से मिलना चाहता था। बड़ी मुश्किल से ढूँढते ढूँढते शाम तक मैं उस सड़क पर पहुँचा जहाँ नौकर ने मुझे बताया था कि वह वहाँ रहती थी।

उसके घर के दरवाजे के पास एक कोने में बैठ कर मैंने सारी रात गुजारी। मैं सारी रात बहुत परेशान रहा। मुझे किसी दूसरे आदमी के कदमों की आहट भी सुनायी नहीं दी और न ही किसी ने मेरे मामलों के बारे में मुझसे कुछ पूछा।

इसी हालत में रात गुजर गयी और सुबह हो गयी। जब सूरज निकल आया तब घर के एक छज्जे की खिड़की से सुन्दर लड़की ने मेरी तरफ देखा। मेरा दिल ही जानता है कि उस समय मैं कितना खुश था। मैंने खुदा को दुआ दी।

इस बीच एक नौकर आया और बोला — "जाइये और इस मस्जिद में जा कर ठहर जाइये। हो सकता है कि वहाँ उस जगह में आपकी इच्छाऐं पूरी हो जायें।

उसकी सलाह के अनुसार मैं वहाँ से उठा और मस्जिद की तरफ चल दिया। पर मेरी आँखें उस घर के दरवाजे पर ही जमीं रहीं यह देखने के लिये कि पता नहीं भविष्य में मुझे उसके पीछे से जाने क्या दिखायी दे जाये।

मैं शाम को ऐसे लोगों का इन्तजार करता रहा जो रमज़ान के महीने में रोज़े रखते हैं।[65] आखिर शाम आयी। दिन का भारी बोझ मेरे दिल मे उतर गया।

---

[65] The month of Ramazan, consisting of thirty days, is the Lent of the Muhammadans. During that whole period, a good Musalman or "true believer," is not allowed either to eat, or drink, or smoke from sunrise to sunset. This naturally explains the anxiety they must feel for the arrival of evening; more especially in high latitudes, should the Ramazan happen in the middle of summer. Whoever keep fasts as a mere religions observance this same fast, is the most absurd, the most demoralizing, and the most hurtful to health that ever was invented by priestcraft.

मैं उस जगह से उठा जहॉ मेंने रात बितायी थी कि तभी कहीं से वही नौकर मस्जिद में आ गया जिसने मुझे सुन्दर स्त्री का पता बताया था। शाम की प्रार्थना खत्म करने के बाद वह मेरे पास तक आया। वह आदमी जो मेरे सब भेदों में मेरा साथी था उसने मुझे बहुत तसल्ली दी।

फिर उसने मुझे एक छोटे से बागीचे में बिठाया और कहा — "आप यहीं बैठिये जब तक आपकी मालकिन को देखने की इव्छ्छा पूरी नहीं हो जाती।"

फिर वह खुद मुझसे विदा ले कर चला गया – शायद मेरी इच्छा को सुन्दर स्त्री को बताने। मैं बागीचे के फूलों को देखते हुए और उनकी सराहना करते हुए और पूनम के चॉद को देखता हुआ वहीं बैठा रह गया। नहरों और फव्वारों के देखता रहा। ऐसा लग रहा था जैसे सावन भादों के महीनों में लगता है।

पर जब मैंने खिले हुए गुलाबों की तरफ देखा तो मुझे सुन्दर गुलाब के फूल जैसे देवदूत की याद आयी। और जब मैंने चमकीले चॉद की तरफ देखा तो मुझे उसके चॉद जैसे चेहरे की याद आयी।

ये सब दृश्य मेरी ऑखों में कॉटों की तरह चुभ रहे थे।

आखिर खुदा ने उसका दिल मेरे लिये मुलायम बना दिया। कुछ देर बाद ही वह सुन्दर स्त्री बागीचे के दरवाजे से पूरे चॉद जैसी बागीचे के अन्दर घुसी। वह एक बहुत ही कीमती पोशाक पहने थी मोती पहने थी और सिर से पैर तक सफेद कढ़े परदे में ढकी थी।

वह बागीचे में बने हुए रास्तों पर चल कर आ रही थी और आ कर मुझसे कुछ दूरी पर आ कर खड़ी हो गयी। जैसे ही वह बागीचे में आयी तो मेरे दिल की खुशी और बागीचे की सुन्दरता दोनों बहुत बढ़ गयीं।



बागीचे में कुछ मिनट घूमने के बाद वह उस बागीचे के एक कुंज में एक बड़े कीमती कढ़े हुए मसनद के सहारे बैठ गयी। मैं दौड़ा और जैसे रोशनी के चारों तरफ मौथ घूमती रहती है और अपनी ज़िन्दगी को उसको दे दिया। मैं उसके सामने हाथ जोड़े खड़ा था।

उसी समय उसका वह नौकर वहाँ आया और उसने मेरी तरफ से उस सुन्दर स्त्री से मेरे लिये माफी माँगी कि वह मुझे माफ कर दे। मैंने भी उसकी तरफ देखते हुए कहा — "मैं भी अपनी गलती मानता हूँ और सजा पाने के लायक हूँ जो भी सजा मेरे लिये बतायी जाये। वही सजा मुझे दी जाये।"

वह स्त्री हालाँकि यह सुन कर कुछ नाराज सी हो गयी पर फिर भी उसने घमंड से कहा — "सबसे अच्छी बात जो इसके लिये की जा सकती है वह है कि इसको 100 थैले सोने के टुकड़ों के दिये जायें। और उसको उसकी सब चीज़ें मिल जाने के बाद इसको इसके देश वापस भेज दिया जाये।"

इस बात को सुन कर तो मैं जैसे जम सा गया। उस समय अगर मेरा कोई हाथ काटता तो उसमें से कोई खून न निकलता।

यह सुन कर यह सारी दुनियाँ मुझे मेरी आँखों के सामने अँधेरी दिखायी देने लगी। मेरा दिल बिल्कुल निराश हो गया। उससे निराशा की गहरी साँसें निकलने लगीं।

मैंने हिम्मत कर के उससे कहा — "ओ बेदर्द सुन्दर स्त्री। एक पल के लिये ज़रा सोचो तो कि अगर इस बदकिस्मत के दिल में दुनियाँ की दौलत की ऐसी कुछ इच्छा होती तो उसने अपनी ज़िन्दगी और अपना सब कुछ तुमको क्यों सौंप दिया होता।

क्या यही मेरी सेवाओं का फल है। और मेरा अपनी ज़िन्दगी को तुम्हें दे देना क्या सब कुछ इस दुनियाँ से एकदम ही उठ गया कि तुमने मुझ जैसे नीच की तरफ अपनी इतनी नफरत दिखायी।

वह सब ठीक है कि मेरी ज़िन्दगी अब मेरे लिये किसी काम की नहीं, किसी बेवफा प्रेमी के सामने किसी मजबूर अधमरे प्रेमी के पास कोई सहायता नहीं होती।"

ये शब्द सुन कर तो वह बहुत बुरा मान गयी। गुस्से से काँपते हुए वह बोली — "बहुत अच्छे। क्या तुम मेरे प्रेमी हो। क्या अब मेंढकी को भी जुकाम होने लगा है। ओ बेवकूफ। तुझ जैसे के लिये जैसी हालत में तू है ऐसी कल्पना की दुनियाओं में घूमना ठीक नहीं। छोटे मुँह बड़ी बात ठीक नहीं होती।

अब इससे आगे और कुछ नहीं। बस चुप रहो। ऐसी भाषा फिर नहीं बोलना। अगर किसी और ने इस तरीके से मुझसे बर्ताव किया होता तो खुदा कसम मैंने उसके शरीर के टुकड़े कर के बटेरों

को खिला दिये होते। पर मैं क्या कर सकती हूँ। तुम्हारी सेवाऐं मुझे याद आ जाती हैं। बस अब सबसे अच्छा यही है कि तुम अपने घर चले जाओ। तुम्हारी किस्मत में मेरे घर का खाना पीना केवल अब तक का ही लिखा था।"

मैं यह सुन कर रो पड़ा और बोला — "अगर मेरी किस्मत में यही लिखा था कि मुझे मेरे दिल की चीज़ न मिले और मैं जंगलों और पहाड़ों में मारा मारा घूमता फिरूँ तब तो मेरे पास इसका कोई इलाज ही नहीं है।"

यह सुन कर वह थोड़ी सी दुखी हो गयी। वह बोली — "यह चापलूसी मुझे अच्छी नहीं लगती। यह सब तुम उसी को कहना जिनको यह अच्छी लगती हो।"

फिर वह उसी गुस्से के मूड में उठ गयी और अपने घर वापस चली गयी। मैंने उससे बहुत विनती की वह मेरी बात सुन कर तो जाये पर जो कुछ भी मैंने कहा वह उसने नहीं माना। और कोई चारा न देख कर दुखी हो कर और निराश हो कर मैंने भी वह जगह छोड़ दी।

थोड़े में कहो तो फिर मैं **40** दिन तक उसी हालत में घूमता रहा। जब मैं शहर की सड़कें नापता नापता थक गया तो फिर मैं जंगल चला गया। और जब मेरा मन वहाँ भी नहीं लगा तो मैं पागलों की तरह से शहर लौट आया।

मैं दिन में अपने खाने के बारे में नहीं सोचता और रात में सोने बारे में नहीं सोचता। मैं तो बस धोबी का कुत्ता बन कर रह गया जो घर का होता है न घाट का।[66]

इन्सान तो खाने और पीने के ऊपर ही ज़िन्दा रहता है। वह तो अनाज का कीड़ा है। मेरे शरीर के अन्दर अब ज़रा सी भी ताकत नहीं रह गयी थी। मैं बहुत कमजोर हो गया था।

मैं फिर उसी मस्जिद की दीवार के सहारे जा कर लेट गया जहाँ में उससे आखिरी बार मिला था कि एक दिन फिर वही नौकर वहाँ अपनी शुक्रवार की नमाज पढ़ने के लिये आया तो मेरे पास से गुजरा। मैं उस समय अपनी कमजोर आवाज में यह कविता गाये जा रहा था –

मेरे दिमाग को ताकत दे ताकि मैं अपने दिल की इच्छाओं को जीत सकूँ
जो कुछ भी मेरी किस्मत में लिखा है ए खुदा वह सब मेरे साथ जल्दी ही हो जाये

हालाँकि मेरी शक्ल सूरत देखने में बहुत बदल गयी थी। जिन्होंने मुझे बहुत पहले देखा था वे तो शायद अब मुझे पहचान भी नहीं सकते थे कि क्या मैं वही आदमी था। फिर भी नौकर ने मेरी आहें सुन कर मेरी तरफ देखा तो मुझे सलाम कर के मेरा ध्यान अपनी तरफ खींचा। उसने मेरे ऊपर दया दिखायी और बहुत ही

---

[66] This proverb in English is called “Kicked from pillar to post.”

नरमी से मुझसे बोला — "आखिर इस हाल में पहुँचने के लिये तुम खुद ही जिम्मेदार हो।"

मैं बोला — "जो होना था सो हो गया है। मैंने अपना सब कुछ उसके नाम कर दिया है। यहाँ तक कि अपनी ज़िन्दगी भी। उसकी यही खुशी थी। अब मैं क्या करूँ।"

यह सुन कर उसने अपना एक नौकर मेरे पास छोड़ा और मस्जिद में चला गया। जब वहाँ उसने अपनी प्रार्थना खत्म कर ली और खुतबा[67] सुन लिया तो मेरे पास आया और एक पालकी में बिठा कर मुझे उस सुन्दर स्त्री के घर ले गया और बाहर चिक के पास बिठा दिया।

हालाँकि अब मेरे अन्दर पहले जैसा तो कुछ बचा नहीं था पर क्योंकि मैं सुन्दरी के साथ बहुत दिनों तक रहा था इसलिये शायद उसने मुझे पहचान लिया होगा। पर फिर भी मुझे अच्छी तरह जानते हुए भी उसने मुझसे एक अजनबी की तरह बात की।

उसने नौकर से पूछा कि मैं कौन था। उस बढ़िया आदमी ने जवाब दिया — "यह वही अभागा बदकिस्मत नीच आदमी है जो योर हाइनैस के गुस्से का शिकार हो गया है। इसी लिये इस बेचारे की यह हालत हो गयी है।

[67] The Khutba is a brief oration delivered after divine service every Friday in which the officiating priest blesses Muhammad, his successors, and the reigning sovereign.

यह प्रेम की आग में जल रहा है। इस आग को बुझाने के लिये इस बेचारे को और कितने आँसुओं का पानी बहाना पड़ेगा। फिर भी तो वह और दुगुने ज़ोर से जला जा रहा है। कोई चीज़ उसको कोई फायदा नहीं पहुँचा रही। इसके अलावा वह अपनी गलती करने की ग्लानि से मरा जा रहा है।"

सुन्दर स्त्री ने कहा — "तू झूठ क्यों बोल रहा है। कई दिन पहले मुझे अपने खबरदारों[68] से पता चला है कि वह अपने देश में आ गया है। खुदा जाने यह कौन है जिसके बारे में तू बोल रहा है।"

तब नौकर ने हाथ जोड़ते हुए कहा — "अगर मेरी जान बख्श दी जाये तो मैं हिम्मत से कुछ कहूँ।"

सुन्दर स्त्री बोली — "तुम्हारी ज़िन्दगी सुरक्षित है बोलो।"

नौकर बोला — "योर हाइनैस तो बहुत बढ़िया जज हैं। खुदा के लिये अपने सामने से परदा उठाइये और पहचानिये इसको। तरस खाइये इसकी दुखभरी ज़िन्दगी पर। किसी का ऐहसान न मानना कोई अच्छी बात नहीं है।

जितनी भी दया तुम इसकी इस हालत के लिये महसूस करो उसका सबका स्वागत है। इससे ज़्यादा कहना योर हाइनैस की इज़्ज़त के खिलाफ होगा। जो कुछ भी योर हाइनैस इसको देंगी वही इसके लिये सबसे अच्छा होगा।"

---

[68] Khabardar means spy

नौकर की यह बात सुन कर वह स्त्री मुस्कुरायी और बोली — "ठीक है। यह जो कुछ भी है इसे वही रहने दो। इसे अस्पताल में ले जाओ और जब यह वहाँ ठीक हो जायेगा तब इसकी हालत फिर से पूछी जायेगी।"

नौकर बोला — "अगर आप अपने शाही हाथों से इसके ऊपर गुलाबजल छिड़क दें और इससे दो शब्द दया के बोल दें तो इसको अपनी ज़िन्दगी की थोड़ी बहुत आशा हो जायेगी। क्योंकि निराशा बहुत खराब चीज़ है। दुनियाँ आशा पर ही जीती है।"

इतना कहने के बाद भी सुन्दर स्त्री ने मुझसे तसल्ली के लिये कुछ नहीं कहा।

यह सुन कर अब मैं ज़िन्दगी से ऊब चुका था। मैंने निडर हो कर कहा — "मैं इन शर्तों पर और जीना नहीं चाहता। मेरे पाँव कब्र में लटक रहे हैं और मैं बहुत जल्दी मरने वाला हो रहा हूँ। मेरा इलाज तो योर हाइनैस बस अब आपके ही हाथों में है। अब आप चाहे तो मेरा इलाज करें या नहीं यह आप ही जानती हैं।"

आखिर अल्लाह ने उस पत्थर दिल का दिल कुछ मुलायम किया। उसके चहरे पर कुछ चमक आयी और वह बोली — "जाओ जल्दी से शाही डाक्टरों को बुलाओ।"

जल्दी ही वे सब वहाँ आ गये। उन्होंने मेरी नाड़ी देखी मेरा पेशाब टैस्ट किया और काफी देत तक सोचने विचारने के बाद इस फैसले पर पहुँचा गया कि इस आदमी को किसी से प्यार हो गया है

और इसका कोई और इलाज नहीं है कि इसको इसके प्रेमी से मिलवा दिया जाये। जब इसका प्रेमी इसको मिल जायेगा तब यह ठीक जायेगा।

डाक्टरों का यह कहना मेरे कहने से मेल खाता था सो सुन्दर स्त्री ने कहा — "इसको ले जा कर गर्म पानी से नहलाओ। नहला धुला कर इसको बढ़िया कपड़े पहनाओ और फिर मेरे पास लाओ।"

वे तुरन्त ही मुझे नहलाने के लिये ले गये। मुझे ठीक से नहलाया धुलाया अच्छे कपड़े पहनाये और फिर वे मुझे उस सुन्दर स्त्री के सामने ले गये।

तब सुन्दरी ने दया से कहा — "तुमने मुझे बराबर और बेकार में ही बेइज़्ज़त किया है। अब बताओ तुम मुझसे इससे ज़्यादा और क्या चाहते हो। जो भी तुम्हारे दिल में है मुझसे साफ साफ बताओ।"

सो ओ दरवेशों। उस समय मेरे मन में ऐसी भावनाऐं उठ रही थीं कि मुझे लगा कि मैं तो खुशी के मारे मर ही जाऊँगा। मैं तो अपनी पोशाक में से बाहर ही निकला पड़ रहा था। मेरी तो शक्ल ही बदल गयी थी।

मैंने खुदा को धन्यवाद दिया और उस स्त्री से कहा — "इस समय तुम्हारे ही हाथों में सारी कला रखी है जो तुमने मुझ जैसे मरे हुए आदमी के शरीर में केवल एक शब्द से ज़िन्दगी डाल कर उसको

जिला लिया। तुम्हारी मेहरबानी दिखाने से देखो न मेरे हालात कितने बदल गये हैं।"

कह कर मैंने उसके तीन चक्कर काटे और फिर उसके सामने खड़े हो कर मैंने उससे कहा — "तुम्हारा यह हुक्म कि मैं तुमसे वह कहूँ जो मेरे दिल में है यह तो तुम्हारे गुलाम के लिये सात राज्यों से भी ज़्यादा कीमती है।

तो मेरे ऊपर मेहरबान हो और मुझ नीच को अपनी सेवा में रख लो। मुझे अपने कदमों में जगह दे कर मुझे ऊपर उठा लो।"

यह सुन कर वह कुछ पलों के लिये विचार में पड़ गयी फिर बोली — "नीचे बैठ जाओ। तुम्हारी सेवाऐं और तुम्हारी वफा इतनी ज़्यादा है कि जो कुछ भी तुम कहते हो वही होगा। वह सब मेरे दिल पर खुदा हुआ है। मैं तुम्हारी बात मानती हूँ।"

उसी दिन उस खुश घड़ी में शुभ तारे में काज़ी ने बिना किसी शोर शराबे के हमारी शादी करा दी। इतने दुखों और तकलीफों के बाद अल्लाह ने मुझे यह खुशी का दिन दिखाया जब मेरे दिल की इच्छा पूरी हुई।

पर उसी उत्साह में जब मेरे दिल ने उस देवदूत को अपना बनाना चाहा तो उसने महसूस किया कि वह भी उसी तरह से यह जानने के लिये बेचैन था कि उस दिन जो ये सब अजीब घटनाऐं हुईं थीं उनका क्या असर होगा।

क्योंकि उस समय तक मुझे भी यह पता नहीं था कि वह कौन थी उसके साथ वाला वह कत्थई नीग्रो कौन था जिसने केवल एक कागज का एक टुकड़ा देख कर सोने से भरे इतने सारे थैले दे दिये थे। और कैसे उस शाही दावत और आनन्द का इन्तजाम केवल एक प्रहर समय में ही हो गया था।

और वे दो भोले भाले लोग आनन्द करने के बाद क्यों मार दिये गये। फिर उसने मेरी सेवाओं और भला करने के बदले में मेरे ऊपर गुस्सा क्यों किया और इस सबके बाद फिर इस नीच को खुशी की इतनी ऊँचाई पर क्यों उठा दिया। थोड़े में कहो तो यह सब कुछ मेरी समझ में ही नहीं आ रहा था बल्कि और उलटे शक पैदा कर रहा था।

शादी की रस्मों के आठ दिन बाद तक उसको बहुत प्यार करने के बावजूद मैं उसको छू भी नहीं सका। मैं बस रात को उसके पास सोता और सुबह को उठ जाता जैसे कुछ हुआ ही न हो।

एक सुबह मैंने एक नौकर से चाहा कि वह मेरे नहाने के लिये पानी गर्म कर दे। राजकुमारी मुस्कुरायी और बोली — "गर्म पानी कराने की क्या जरूरत है।"

मैंने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया चुप ही रहा। पर वह मेरे इस व्यवहार से परेशान हो गयी। इसके अलावा उसकी ऑखों में उसका गुस्सा साफ झलक रहा था।

वह इतना ज़्यादा गुस्सा थी कि एक दिन उसने मुझसे कहा — "तुम तो वास्तव में बड़े ही अजीब आदमी निकले। एक तरफ तो तुम बड़े प्यार से व्यवहार करते हो दूसरी तरफ बोलते भी नहीं। ऐसे व्यवहार को लोग क्या कह कर पुकारेंगे। अगर तुम्हारे अन्दर आदमी जैसा व्यवहार नहीं है तो फिर तुमने मुझसे ऐसी बेवकूफी भरी इच्छा ही प्रगट क्यों की।"

मैंने निडर हो कर जवाब दिया — "मेरी प्यारी। किसी भी आदमी के लिये न्याय एक धर्म है। किसी को भी न्याय के धर्म से डिगना नहीं चाहिये।"

वह बोली — "अब और कौन सा न्याय रह गया है। जो कुछ होना था वह तो सब हो ही गया है।"

मैंने उसको सच ही कहा जो मेरे दिल के अन्दर से इच्छा थी पर मेरा दिल शक और बेचैनी से भरा हुआ था और जिस आदमी के दिमाग में शक और चिन्ताऐं भरी रहती हैं वह कुछ कर नहीं सकता और दूसरे प्राणियों से अलग हो जाता है।

इसलिये मैंने अपने मन में पक्का इरादा कर लिया था कि इस शादी के बाद जो कि मेरी बहुत ज़्यादा इच्छा थी मैं योर हाइनैस से इन छोटी मोटी चीज़ों के बारे में जो मेरी समझ में नहीं आ रही थीं और जिनकी मैं कोई वजह नहीं ढूँढ पा रहा था उनकी वजह शायद मैं तुम्हारे होठों से साफ साफ समझ सकूँ। और तब मेरे दिल को कुछ तसल्ली मिल सके।"

सुन्दर स्त्री ने गुस्से में भर कर कहा — "यह कैसे ठीक हो सकता है कि रीति रिवाज के खिलाफ तुम मेरी प्राइवेट बातों में दखल दो।"

मैंने हॅसते हुए कहा — "अब जब तुमने मेरी और बड़ी बड़ी गलतियों को माफ कर दिया है तो मेरी इस गलती को भी माफ कर दो।"

उस सुन्दरी ने अपने चेहरे के प्यार के भाव बदलते हुए और उस पर अंगार लाते हुए कहा — "तुम अपने आप ही बहुत कुछ सोच लेते हो। जाओ तुम अपना काम देखो। तुम्हें इसकी सफाई सुन कर क्या मिलेगा।"

मैंने कहा — "सबसे ज़्यादा शर्मिन्दगी की बात तो इस दुनियॉ में यह है कि जबकि हम उसी बारे में एक दूसरे से बात करते रहते हैं उसी समय लोग अपना स्वभाव दिखा देते हैं। इसलिये जैसा कि तुमने सोचा कि कुछ घटनाऐं तुमने मेरे साथ साझा बॉटी तो फिर ये दूसरी घटनाऐं मुझसे क्यों छिपा रही हो।"

उसकी समझ अच्छी थी। उसने मेरा इशारा समझ लिया। वह बोली — "यह सच है। पर मुझे डर है कि अगर मैंने तुम्हें अपने भेद बता दिये तो बहुत बड़ी मुसीबत आ सकती है।"

मैं बोला — "ऐसे तुम्हारे पास कौन से भेद हैं। मेरे बारे में तुम ऐसा मत सोचो। तुम जो कुछ भी मुझे बताओगी मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूॅ कि वे बातें मेरे दिल में से निकल कर मेरे होठों पर कभी

नहीं आयेंगी। और जब मैं उनको कभी कहूँगा ही नहीं तो फिर दूसरे के कानों तक पहुँचेंगी कैसे। तुम बेधड़क हो कर मुझसे अपनी सब बातें मुझसे कह सकती हो।"

जब उसको यह लगा कि जब तक वह मेरी उत्सुकता को शान्त नहीं कर देगी तब तक उसको चैन नहीं पड़ेगा और उसके पास कोई और चारा न बचा तो वह बोली —

"बहुत सारी बुराइयाँ इन मामलों की सफाई जानने में लगी रहती हैं पर तुमने तो जिद ही पकड़ रखी है। ठीक है मुझे तुम्हें खुश करना ही चाहिये इसी लिये मैं तुम्हें अपनी पुरानी ज़िन्दगी के बारे में बता रही हूँ। ख्याल रखना। इनको दुनियाँ से छिपा कर रखना तुम्हारे लिये भी उतना ही जरूरी है जितना यह मरे लिये था। मैं इसी शर्त पर में तुम्हें यह बताने जा रही हूँ।"

थोड़े में कहो तो काफी कहने सुनने के बाद उसने अपनी ज़िन्दगी के बारे में बताना शुरू किया — "यह अभागी नीच जो तुम्हारे सामने बैठी है यह दमिश्क के राजा की बेटी है। वह कई राजाओं के राजा हैं। उनके मेरे सिवा और कोई बच्चा नहीं था। जिस दिन से मैं पैदा हुई तो मुझे बड़े लाड़ प्यार से पाला गया। मैं हमेशा हँसी खुशी में पली। मेरे माता पिता मुझे बहुत प्यार करते थे।

जब मैं बड़ी हुई तो मैं बहुत सुन्दर स्त्रियों से भी अधिक आकर्षित हो गयी। सो मैं अपने साथ अमीर और कुलीन घराने की

सुन्दर सुन्दर लड़कियों को रखने लगी। अपनी नौकरानियों को भी मैंने अपनी ही उम्र वाली सुन्दर लड़कियों को रखा। मैं हमेशा नाच गाने में लगी रहती। दुनियॉ की अच्छाइयों और बुराइयों से मेरा कोई मतलब नहीं था। मैं बस अल्लाह की प्रार्थना करती और किसी की भी परवाह नहीं करती।

अब ऐसा हुआ कि एक बार मेरे विचार अचानक ही कुछ ऐसे बदले कि अब मुझे किसी दूसरे का साथ अच्छा नहीं लगता था। यहॉ तक कि वे लड़कियॉ भी अब मुझे वह खुशी नहीं देतीं जो वे मुझे पहले दिया करती थीं। अब मेरी किसी से बात करने की भी इच्छा नहीं होती।

मेरी यह हालत देख कर मेरी साथिनें बहुत दुखी हुईं और मेरे कदमों पर गिर पड़ीं और मेरे इस दुख की वजह जानने की जिद करने लगीं।

मेरा यह नौकर जो बहुत पहले से मेरे सारे भेदों को जानता है और जिससे मेरा कोई भी काम छिपा नहीं है बोला — "अगर राजकुमारी जी इसमें से थोड़ा सा लैमनेड[69] पी लेंगी तो शायद राजकुमारी जी का यह खराब मूड ठीक हो जाये और उनका दिल खुश हो जाये।"

[69] Called warku-l-khiyal; it is made from the leaves of the charas, a species of hemp; it is a common inebriating beverage in India; the different preparations of it is called ganja, bhang, etc.

उसने उसकी इतनी तारीफ की कि मेरे दिल में उसे पीने की इच्छा हो आयी और मैंने उसको बनाने का तुरन्त ही हुक्म दे दिया। वह नौकर उसको बनाने के लिये बाहर चला गया और कुछ देर बाद एक नौजवान लड़के को साथ ले कर लौटा।

मैंने उसे पी लिया और देखा कि जैसा उसने कहा था वह वैसा ही ताजा कर देने वाला निकला। उसकी इस सेवा पर मैंने उस नौकर को एक खिलात[70] दी और उससे कहा कि वह वैसा ही एक गिलास मुझे रोज शाम को दे जाया करे। सो उस दिन से वह काम उसके रोजमर्रा के काम में शामिल हो गया।

अब वह नौकर रोज उस लड़के के साथ आता। वह लड़का मेरे लिये उसका एक गिलास लाता और मैं उसको पी लेती। जब उसका नशा मुझ पर चढ़ जाता तो मैं उसको उस लड़के के साथ हॅसी मजाक में इस्तेमाल करती। और इस तरह से समय बर्बाद करती।

जब उसकी झिझक खत्म हो गयी तब वह मुझसे बहुत अच्छी अच्छी बातें करने लगा। उसने मुझे बहुत सारे मजेदार किस्से सुनाये। इसके अलावा वह आहें भी भरता। उसका चेहरा बहुत सुन्दर और देखने लायक था। मैं उसे हद से कहीं ज़्यादा प्यार करने लगी।

[70] Literally a "weighty khilat," owing to the quantity of embroidery on it. The perfection of these oriental dresses is, to be so stiff as to stand on the floor unsupported.

मैं अपने दिल से उसका मजाक और हॅसी पसन्द करती और उसको रोज ही कुछ न कुछ इनाम देती। पर वह नीच मेरे सामने रोज वही कपड़े पहन कर आता जिनको पहनने का वह आदी था। यहॉ तक कि वे गन्दे और मैले भी हो गये थे।

एक दिन मैंने उससे कहा — "तुमको तो खजाने से बहुत सारे पैसे मिल चुके हैं पर तुम बहुत ही गरीब आदमी की तरह से यहॉ आते हो। इसकी क्या वजह है। तुमने यह सारा पैसा खर्च कर दिया है या फिर इकट्ठा कर रहे हो।"

जब लड़के ने ये उत्साह भरे शब्द सुने तो उसने सोचा कि मैं उससे उसके हालात जानने की कोशिश कर रही हूॅ तो वह रोते हुए बोला — "जो कुछ आपने इस गुलाम को दिया है मेरे गुरू ने मुझसे वह सब ले लिया है। उसने मुझको मेरे लिये उनमें से एक पैसा भी नहीं दिया है। तो मैं कपड़े कहॉ से बनवाऊॅ और आपके सामने अच्छी पोशाक पहन कर कैसे आऊॅ। इसमें मेरी कोई गलती नहीं है और न इसमें मैं कुछ कर सकता हूॅ।"

उसकी यह विनम्रता भरी बात सुन कर मुझे उस पर बहुत दया आयी। मैंने तुरन्त ही अपने नौकर से कहा कि वह उस लड़के की जिम्मेदारी ले ले। वह देखे कि वह लड़का ठीक से पढ़ रहा है और उसको अच्छे कपड़े दे। वह उसको दूसरे बच्चों के साथ न खेलने दे और न पढ़ाई से बचने दे।"

मेरी इच्छा यह थी कि उसको अच्छे ढंग की शिक्षा दिलवायी जाये और उसको अच्छे ढंग का व्यवहार सिखवाया जाये ताकि वह मेरे यहॉ शाही नौकरी में काम कर सके और मेरे लिये रहे।

मेरे नौकर ने मेरा हुक्म माना और यह देखते हुए कि मैं उसके लिये क्या चाहती थी उसकी देखभाल की।

कुछ ही समय में आराम से और अच्छे ढंग से रहने की वजह से उसका रंग ऐसे खिल गया जैसे किसी सॉप ने अपनी पुरानी केंचुली उतार फेंकी हो।

मैंने उसकी तरफ से अपना रुझान बहुत रोकने की कोशिश की पर उस सुन्दर रोग ने मेरे ऊपर न जाने कौन सा ऐसा जादू डाल दिया था कि वह मेरे दिल पर खुद गया था कि मुझे उसे अपने सीने से लगा कर रखना बहुत अच्छा लगता था। मैं एक पल को भी अपनी ऑखें उससे हटाना नहीं चाहती थी।

आखिर मैंने उसको अपने साथ ही रख लिया। मैं उसको बहुत तरीकों के कीमती कपड़े पहनने को देती बहुत तरीकों के गहने पहनने को देती मैं उसको बहुत देर तक घूरती रहती।

थोड़े में कहो तो जब तक वह मेरे साथ रहता तब तक मेरी सब इच्छाऐं पूरी रहतीं। मेरे दिल को आराम रहता। मैं उसका हर कहा मानती। पर आखीर में मेरी हालत इतनी खराब हो गयी कि पर अगर किसी भी जरूरत के समय वह एक पल को भी मेरे साथ नहीं होता या मेरी नजर से दूर होता तो मैं बहुत बेचैन हो जाती।

कुछ साल बाद वह जवान हो गया। उसके दाढ़ी मूँछ आने लगे। उसका शरीर भरने लगा तब हमारे दरबारी लोग हमारे बारे में बात करने लगे। सब तरह के चौकीदार अब उसको अन्दर आने जाने से मना करने लगे। आखिरकार उसके महल में आने जाने के सब दरवाजे बन्द हो गये।

उसके बिना मैं बहुत बेचैन रहने लगी। उसका एक पल के लिये भी मुझसे अलग रहना मुझे ऐसा लगता जैसे बरसों बीत गये हों। जब मुझे यह निराशा बहुत सताने लगी तो मुझे ऐसा लगा जैसे "न्याय का दिन"[71] आ पहुँचा हो।

मेरी हालत ऐसी हो गयी कि मैं अपनी बात कहने के लिये एक शब्द भी नहीं बोल सकी और न ही उसके बिना रह सकी। मुझे किसी तरह भी आराम नहीं था। ऐसी हालत में मैंने अपने उसी नौकर को बुलाया जो मेरे सारे भेदों को जानता था।

मैंने उससे कहा — "इस नौजवान को मैं अपने पास रखना चाहती हूँ। असल में मेरा यह प्लान है कि तुम इसको **1000** सोने के सिक्के दे कर इसको चौक में एक जौहरी की दूकान खुलवा दो ताकि वह इस काम की कमाई पर ठीक से जी सके।

वह मेरे घर के पास अपने लिये एक बड़ा सा घर बनवा ले। फिर अपने लिये कुछ गुलाम खरीद ले। बँधी हुई तनख्वाह पर कुछ नौकर रख ले। इस तरह से वह हर तरीके से आराम से रह सके।"

[71] Translated for the words "The Day of Judgment"

मेरे नौकर ने उसके लिये ऐसा ही कर दिया। उसने उसके लिये एक घर बनवा दिया उसके लिये एक जौहरी की दूकान खोल दी ताकि लोग उसके पास आते जाते रहें। और उसके लिये उसने वह सब कुछ तैयार कर दिया जो कुछ भी उसे चाहिये था।

बहुत जल्दी ही उसकी दूकान इतनी चल निकली कि जो भी कीमती खिलात और बढ़िया वाले जवाहरात किसी राजा को चाहिये थे वे केवल उसी की दूकान पर मिलते थे।

धीरे धीरे उसकी दूकान इतनी बढ़ने लगी कि हर देश का वेशकीमती सामान उसकी दूकान पर मिलने लगा। उसकी दूकान पर आने जाने वालों की संख्या बढ़ने लगी। यहाँ तक कि दूसरे जौहरी अब दूकानों पर खाली बैठे नजर आते।

थोड़े में कहो तो अब कोई भी उसके साथ अपना मुकाबला नहीं कर सकता था – न तो अपने शहर में और न दुनियाँ में।

उसने इस दूकान से बहुत पैसा[72] बनाया पर उसका न होना मुझे बहत खलता रहा। मेरी दिमागी और शारीरिक हालत बहुत खराब होती जा रही थी। कोई भी चीज़ मेरा दिल नहीं बहला पा रही थी।

मुझे कोई ऐसा तरीका नहीं दिखायी दे रहा था जिससे मैं उससे मिल सकती। मेरे पास कोई ऐसा प्लान नहीं था जो मैं उस नौजवान को एक पल को भी देख सकती या मेरे धीरज को बाँधे रखता।

[72] Literally, "lakhs of rupees." In India money accounts are reckoned by hundreds, thousands, lakhs and crores, instead of hundreds, thousands, and millions, as with Western world.

अब केवल यही एक तरीका रह गया था कि मैं उसके घर से अपने महल तक एक सुरंग खुदवा दूँ और उसकी सहायता से उससे जब चाहे मिल सकूँ। मैंने फिर अपने भरोसे वाले नौकर को बुलाया और अपनी यह इच्छा उसे बतायी।

कुछ ही दिनों में सुरंग बन कर तैयार हो गयी। अब मेरा नौकर हर शाम को उसको उसी सुरंग से चुपचाप छिपा कर मेरे पास ले कर आता। हम सारी रात खाते पीते आनन्द करते। मैं उससे मिल कर बहुत खुश थी। वह भी मेरे साथ बहुत खुश था।

जब सुबह का तारा निकलता मुवाज़ीन[73] सुबह की प्रार्थना की आवाज लगाता तब मेरा नौकर उसको उसी रास्ते से उसके घर वापस छोड़ आता। किसी चौथे आदमी को इस बात का पता नहीं था सिवाय मेरे नौकर के और दो आयाओं के जिन्होंने मुझे दूध पिलाया था और मुझे पाला पोसा था।

इस तरह भी काफी समय निकल गया। पर एक दिन ऐसा हुआ कि जब मेरा नौकर उसको उसके घर से लाने के लिये जा रहा था तो जैसा कि वह रोज करता था उसने देखा कि नौजवान कुछ दुखी और उदास बैठा है।

[73] The muwazzin is a public crier, who ascends the turret or minaret of a mosque and calls out to the inhabitants the five periods of prayers; more especially the morning, noon and evening prayers.

नौकर ने उससे पूछा — “क्या बात है आज सब ठीक है न। तुम इतने दुखी क्यों हो। चलो राजकुमारी के पास चलो उन्होंने तुम्हें बुला भेजा है।”

नौजवान ने इस बात का न तो कोई जवाब दिया और न अपनी जबान ही हिलायी। नौकर वैसा ही चेहरा ले कर वापस आ गया और मुझे उस नौजवान की हालत बतायी।

अब लगता था जैसे कि शैतान मुझे बर्बाद करने के लिये मेरे ऊपर चढ़ने को था तो मैं उसका यह व्यवहार जानते हुए भी उसे अपने दिल से न निकाल सकी। अगर मैं जानती कि मेरा प्यार एक ऐसे नीच के लिये है तो मैं शायद बदनाम हो जाना ज़्यादा पसन्द करती। मैं अपने आपको बदनाम कर लेती और अपनी इज़्ज़त खो देती।

वह पल मुझे कम से कम यहाँ तक तो न पहुँचाता। मैं शायद प्रायश्चित ही पर लेती। मुझे अब यह नाम न तो अपने मुँह से निकालना चाहिये और ना ही ऐसे बेशर्म आदमी को अपना दिल देना चाहिये। लेकिन ऐसा तो होना ही था।

क्योंकि मैंने उसके खराब व्यवहार और उसके न आने की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। मैंने सोचा कि वह उसका प्यार है और उसका गर्व महसूस करने का ढंग है जो अक्सर उन लोगों में हो जाता है जो प्यार करने के लायक होते हैं और जो अपने आपको ऐसा समझते भी हैं।

अफसोस कि उसका नतीजा मैं अब भुगत रही हूँ और अब तुमको बता रही हूँ जिसने कभी उनको देखा नहीं कभी सुना नहीं। नहीं तो कहाँ तुम होते और कहाँ मैं होती। खैर अब तो जो होना था वह हो गया ये सब तो पुरानी बातें हैं।

उस गधे की बातों पर विचार न करते हुए मैंने एक बार फिर अपने नौकर को उसके पास यह कहते हुए भेजा कि "अगर तुम अभी मेरे पास नहीं आओगे तो फिर किसी तरह मैं तुम्हारे पास आऊँगी। पर मेरे वहाँ आने में बहुत गड़बड़ है। क्योंकि अगर यह भेद किसी पर खुल गया तो उसकी वजह तुम होगे।

इसलिये किसी तरह से ऐसा कोई व्यवहार न करना जिसका बदनामी के अलावा और कोई रास्ता न हो। इसलिये सबसे अच्छा तो यही है कि तुम मेरे पास जल्दी से जल्दी आ जाओ नहीं तो मैं तुम्हारे पास आती हूँ।"

जब उसे यह सन्देश मिला तो उसे पता चला कि मेरा प्यार उसके लिये कितना ज़्यादा है तो वह तुरन्त ही उदास चेहरा लिये मेरे पास चला आया।

जब वह मेरे पास बैठ गया तो मैंने उससे पूछा — "आज तुम्हारे इस ठंडेपन और नाराजी की वजह क्या है। तुम इससे पहले तो मेरा इस तरह से कभी अपमान नहीं किया। तुम तो मेरे बुलाने पर हमेशा ही चले आया करते थे।"

वह बोला — "मैं तो बिना नाम का एक नीच आदमी हूँ। आपकी कृपा से और आपकी सहायता से आज मैं इतना ऊँचा पहुँच सका हूँ। और इस अमीरी में दिन काट रहा हूँ। मैं हमेशा आपकी ज़िन्दगी और खुशहाली की दुआ करता हूँ।

मैंने जो यह गलती की है वह अपनी पूरी समझ से की है और योर हाइनैस इस भरोसे पर की है कि वह मुझे माफ कर देंगी। मैं आपसे माफी की आशा रखता हूँ।"

अब क्योंकि मैं उसको अपने पूरे दिल और जान से चाहती थी सो मैंने उसको माफ कर दिया। मैंने उसकी माफी भी स्वीकार कर ली। और बल्कि न उसकी इस गलती को माफ किया बल्कि उससे बड़े प्यार से फिर से यह भी पूछा कि उसको क्या परेशानी है जो वह खुद इतना परेशान हो गया है। वह बताये तो सही उसकी सारी परेशानी दूर कर दी जायेगी।

थोड़े में बड़ी नम्रता से उसने बताया — "मेरे लिये हर चीज़ मुश्किल हो गयी है। आपके लिये ओ हर हाइनैस सब कुछ आसान हो सकता है पर मेरे लिये नहीं।"

आखीर में उसके बताने से मुझे पता चला कि एक शानदार बागीचा उस बागीचे में एक शानदार घर जिसमें पानी के तालाब फव्वारे और कुँए भी थे और जिसकी बिल्डिंगें बहुत ही होशियारी से बनायी गयी थीं यह सब बिकाऊ था। यह जगह उसके घर के पास शहर में थी। इसके साथ साथ एक दासी भी जो उसको बेची जा

रही थी। यह दासी बहुत सुरीला गाती थी और बहुत अच्छी गायिका मानी जाती थी।

पर उसको दोनों एक साथ खरीदने पड़ रहे थे न कि बागीचा अकेला ही खरीदा जाये जैसे कोई बिल्ली ऊँट की गरदन से बँधी हो।[74]

सो जो कोई भी बागीचा खरीदेगा उसको वह दासी भी खरीदनी पड़ेगी। और उसकी सबसे अच्छी बात यह थी कि वह बागीचा तो 5000 रुपयों का ही था जबकि वह दासी 500 हजार रुपयों की थी।

सो बात थोड़े में कहो, तो वह बोला — "आपके इस वफादार गुलाम के पास तो इतना पैसा है नहीं।"

मैंने देखा कि वह उनको खरीदने के लिये बिल्कुल तैयार था पर क्योंकि उसको पास पैसे नहीं थे इसलिये वह उदास था। हालाँकि वह मेरे पास ही बैठा था पर वह बहुत ही उदास और दुखी था।

क्योंकि मुझे उसकी खुशी बहुत प्यारी थी तो मैंने अपने नौकर को अगले दिन ही उस बागीचे और दासी की कीमत तय करने के लिये कह दिया। उसके बेचने के कागज आति सब देखभाल कर उसको पैसे देने को कह दिया।

---

[74] This is a proverb, founded on a short story, viz.: "A certain Arab lost his camel; he vowed, if he found it, to sell it for a dinar, merely as a charitable deed. The camel was found, and the Arab sorely repented him of his vow. He then tied a cat on the camel's neck, and went through the city of Baghdad, exclaiming, 'O, true believers, here is a camel to be sold for a dinar, and a cat for a thousand dinars; but they cannot be sold the one without the other.'"

यह हुक्म सुन कर उस नौजवान ने मुझे धन्यवाद दिया। उसकी ऑखों में खुशी के ऑसू आ गये थे। उसके बाद हमने वह रात पहले की तरह से हॅसी खुशी बितायी। सुबह को वह चला गया।

मेरे नौकर मेरे हुक्म के अनुसार उस बागीचे का सौदा कर के वह बागीचा और दासी खरीद ली और शाही खजाने से उनका पैसा दे दिया गया।

नौजवान ने पहले की तरह से अपना महल आना जारी रखा।

एक दिन जब वसन्त का मौसम था और सारी जगह बहुत खुश नजर आ रही थी बादल नीचे तैर रहे थे कभी कभार रिमझिम हो जाती थी बिजली भी चमक जाती थी ठंडी हवा पेड़ों में से हो कर बह जाती थी। सब कुछ बहुत अच्छा लग रहा था।

कि मेरी निगाह ताक[75] पर पड़ी तो मैंने वहॉ कई रंगों की शराब शानदार बोतलों में सजी रखी देखीं। उन्हें देख कर मेरे दिल में पीने की इच्छा जाग उठी। मैंने उनमें से **2–3** प्याले शराब पी ली। उसको पीने के बाद में मेरे दिमाग में आया कि जो नया वाला बागीचा खरीदा गया है थोड़ी देर उसमें घूम कर आया जाये।

जब दुर्भाग्य आने को होता है तो वह वैसी ही इच्छा जगा देता है और फिर उसको दबाना भी अपने काबू में नहीं होता। बस मैंने अपनी एक नौकरानी को साथ लिया और मैं नौजवान के बागीचे की

[75] Taks are small recesses in the walls of apartments in Asia, for holding flower-pots, phials of wine, fruits, etc. Especially in Northern India these empty spaces in walls or protruding stone pieces in wall also in corners also (in or on something can be kept) are very common.

तरफ अपने रास्ते से चल दी। और फिर वहॉ से मैं बागीचे की तरफ चल दी।

वहॉ जा कर मैंने देखा कि वह बागीचा तो वाकई ऐलीशियन के मैदान[76] जैसा सुन्दर है। तभी तभी बारिश हो कर चुकी थी सो उसकी ताजा बूँदें पेड़ों के ताजा पत्तों पर पड़ी हुई थीं। वे ऐसी लग रही थीं जैसे पन्ने में जड़े मोती लगते हैं।

उस बारिश के दिन लाल कार्नेशन के फूल ऐसे लग रहे थे जैसे सूरज छिपने के बाद लाल आसमान। वहॉ की नदियों तालाबों आदि का पानी ऐसा लग रहा था जैसे कि साफ शीशा जिसके ऊपर छोटी छोटी लहरें उठ रही हों।

थोड़े में कहो तो मैं उस बागीचे में चारों तरफ को घूम रही थी कि तभी मुझे लगा कि दिन खत्म हो गया है और रात उतर आयी है। उसी समय नौजवान भी अपने बागीचे में घूमने के लिये उस बागीचे में आ गया।

उसने मुझे वहॉ देखा तो वह बड़ी इज़्ज़त और प्रेम के साथ मेरे पास आया और मेरा हाथ पकड़ कर अपने घर ले गया। जब मैं उसके घर में घुसी तो वहॉ का शानदार दृश्य देख कर तो मैं उसके बागीचे की सुन्दरता ही भूल गयी।

उसके कमरे की चमक धमक और शान शौकत चारों तरफ दिखायी दे रही थी झाड़फानूस की शक्लों में कई तरह के लैम्पशेड

[76] Field of Elysian

की शक्लों में। यह सब इतनी रोशनी फैला रहे थे कि शबरात[77] की चाँदनी भी इसके सामने अँधेरी लगने लगती। एक ओर हर तरह की आतिशबाजी हो रही थी।

इस बीच बादल छँट गये और चमकीला चाँद निकल आया जैसे कोई शानदार स्त्री गुलाबी कपड़ों में सजी बजी अचानक निकल आये।

यह तो बहुत ही अच्छा मनलुभावना दृश्य था। जैसे ही चाँद निकला नौजवान ने कहा — "चलो बाहर छज्जे पर चल कर बैठते हैं। वहाँ से बागीचा अच्छा दिखायी देता है।"

मैं उसमें इतनी खो गयी थी कि उस नीच ने जो कुछ कहा मैंने वहीं मान लिया। वह इस तरह से नाचा कि वह मुझे घसीटते हुए ले कर छज्जे तक चलता चला गया।

बिल्डिंग बहुत ऊँची थी कि वहाँ से शहर का बाज़ार बागीचा सड़कें आदि सब उस बिल्डिंग की तली में दिखायी दे रहे थे। मुझे वहाँ से सारा दृश्य बहुत अच्छा लग रहा था। मेरी बाँहें उसके गले में पड़ी हुई थीं।

इसी बीच एक बहुत ही बदसूरत काली स्त्री जिसकी कोई शक्ल दिखायी नहीं दे रही थी वहाँ आयी जैसे वह किसी चिमनी में से निकल कर आ रही हो। उसके हाथ में वाइन की एक बोतल थी।

---

[77] The Shabarat is a Mahommedan festival which happens on the full moon of the month of Shaban; illuminations are made at night and fire-works displayed; prayers are said for the repose of the dead, and offerings of sweetmeats and viands made to their manes. A luminous night-scene is therefore compared to the Shabrat. Shaban is the eighth Mahomedan month.

उस समय उसके अचानक वहाँ आ जाने से मैं बहुत नाखुश हुई। जब मैंने उसकी तरफ देखा तो मैं डर गयी।

मैंने नौजवान से पूछा — "यह कीमती बुढ़िया कौन है। इसे तुम कहाँ से उठा लाये हो।"

हाथ जोड़ कर वह बोला — "यही तो वह दासी है जो इस बागीचे के साथ आयी थी और जिसे मैंने तुम्हारी सहायता से खरीदा था।"

मैंने जान लिया था कि नौजवान उसको बड़ी उत्सुकता से खरीद कर ले कर आया था। शायद उसका दिल उस पर आया हुआ था।

इस वजह से मैं अपना गुस्सा अपने दिल में ही रोक कर चुप हो गयी। पर मेरा दिमाग उसी पल से बहुत परेशान हो गया और इस नाखुशी ने मेरे स्वभाव पर बहुत असर डाला। केवल इतना ही नहीं उस नीच ने इस वेश्या को हमारा साकी[78] बनाने की भी सोचा।

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपना ही खून पी रही होऊँ। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे एक तोते को एक कौए के साथ एक ही पिंजरे में बन्द कर दिया गया हो। मेरे पास वहाँ से भागने का कोई मौका नहीं था और मैं वहाँ ठहरना नहीं भी चाहती थी।

कहानी लम्बी न हो इसलिये थोड़े में, उसकी शराब भी बहुत तेज़ थी इतनी कि उसको पी कर कोई भी आदमी जानवर बन जाये। उसने नौजवान को **2–3** प्याले जल्दी जल्दी पिला दिये। मैंने

[78] Translated for the word "Cup bearer" – means who offers drinks to people.

भी बड़ी मुश्किल से आधा प्याला उस जलती हुई शराब का पी लिया।

आखिरकार वह वेश्या खुद भी वह शराब पी कर धुत हो गयी और उस नौजवान के साथ बेशर्मी का व्यवहार करने लगी। वह नीच बेशर्म नौजवान भी शराब के नशे में बिना किसी की परवाह किये हुए बिना किसी की इज़्ज़त का ख्याल किये हुए गन्दे तरीकों से व्यवहार करने लगा।

उनको उस तरीके से तो केवल व्यवहार करते देख कर ही मुझे अपने आप पर इतनी शर्म आ रही थी कि मैंने सोचा कि "यह धरती अगर फट जाये तो मैं इसमें समा जाऊँ।" पर उसको प्यार करने की वजह से मैं वहाँ से आने के बाद भी उसी की रौ में बह गयी।

वह एक बहुत ही नीच नौजवान था। उसने मेरे प्यार को नहीं समझा। नशे में धुत होने के कारण वह दो प्याले शराब और पी गया। इससे उसके अन्दर जो कुछ बचा खुचा होश था वह भी चला गया।

बिना किसी शर्म के उसने मेरे सामने ही उस स्त्री के साथ अपनी इच्छा पूर्ति की और अशिष्ट व्यवहार की सीमा लाँघ गया। और वह स्त्री भी मेरे सामने उससे कुछ ज़रा ज़्यादा ही अशिष्ट व्यवहार करती रही। दोनों की आँखों में कोई शर्म नहीं थी किसी की कोई इज़्ज़त नहीं थी।

जैसे आत्माऐं देवदूत की तरह होती हैं।[79] मेरा दिमाग उस समय इस तरह का हो रहा था जैसे संगीत ने अपनी लय स्वर और ताल बिल्कुल छोड़ दिये हों और वह बिना स्वर और ताल के गा रहा हो।

मैं हर पल अपने आपको कोस रही थी जब मैंने वहाँ आने के लिये सोचा था। मुझे अपनी बेवकूफी का यह अच्छा नतीजा भुगतना पड़ रहा था। आखिर मैं उसको कब तक सहती। मेरे सारे शरीर में सिर से ले कर पैर तक आग लगी हुई थी।

मूझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं जलते हुए कोयलों पर लोट रही हूँ। अपने गुस्से में मुझे वह कहावत याद आयी कि "वह बैल नहीं है जो कूदता है वह तो उसका थैला कूदता है।" ऐसा दृश्य किसने देखा होगा और उसे कौन बरदाश्त कर सकता है। ऐसा सोच कर मैं वहाँ से चली आयी।

उस नशे में धुत पियक्कड़ ने सोचा कि अगर अब इसको यह सब अच्छा नहीं लग रहा होगा तो पता नहीं कल यह मेरे साथ क्या व्यवहार करेगी और क्या क्या सवाल उठायेगी। सो जब तक मैं उसके कब्जे में थी उसने मुझे खत्म कर देने की सोची।

उस बदसूरत स्त्री की सलाह पर अपने दिमाग में ऐसा सोच कर उसने अपना पटका[80] अपने गले में डाला और आ कर मेरे पैरों में

---

[79] A proverb meaning that people or things are well matched; as the soul, at the hour of death, is committed to the charge of good or evil angels, according to its desert.

[80] The patka is a long and narrow piece of cloth or silk, which is wrapped round the waist; among the rich a shawl is the general patka. The act of throwing one's patka round the neck and prostrating one's self at another's feet, is a most abject mark of submission.

पड़ गया। फिर उसने अपनी पगड़ी अपने सिर से उतारी और उसको मेर कदमों में रख कर मुझसे बहुत विनम्रता से माफी माँगने लगा।



मेरा दिल अभी भी उसी से लगा हुआ था। वह जिधर घूमता मैं भी उधर ही घूम जाती। हाथ की चक्की की तरह से मैं पूरी तरह से उसके कब्जे में थी। मैं उसकी हर इच्छा को मन से पूरी करती।

खैर किसी न किसी तरीके से उसने मुझे शान्त कर दिया। मुझसे जिद की कि मैं अभी वहीं बैठूँ। उसने फिर से उसी जलती शराब के **2–3** प्याले पिये। साथ में उसने मुझसे भी पीने के लिये कहा।

गुस्से में तो मैं पहले से ही भरी थी दूसरे उसमें इतनी ज़्यादा तेज़ शराब पीने के बाद तो बहुत जल्दी ही अपने होश खो बैठी। मुझे कुछ याद नहीं रहा। तब उस बेदर्द बेवफा नीच ने अपनी तलवार से मुझे कोंचा। वह तब तक इस तरह से मुझे कोंचता रहा जब तक उसको यह नहीं लगा कि मैं मर गयी हूँ।

उस समय मेरी ऑख खुलीं और मैं बोली — "मैंने तो जो किया उसका फल पाया पर तू भी बिना किसी वजह के मेरा खून बहाने के लिये बच नहीं पायेगा।"

तुम कभी ऐसा मत होने देना कि कोई मुसीबत तुम पर आ जाये
तुम अपने दामन से मेरा खून धो लेना जो हो गया सो हो गया

यह भेद भी किसी को बताना भी नहीं। मैंने यह कभी नहीं चाहा कि तुम मर जाओ।"

इस तरह उसको मैं खुदा की देखभाल में सौंप कर काफी खून बह जाने की वजह से फिर बेहोश हो गयी। उसके बाद मुझे पता नहीं फिर क्या हुआ।

शायद यह सोच कर कि मैं मर गयी हूँ उस कसाई ने मुझे एक बक्से में बन्द कर दिया और उसे किले की दीवार से नीचे उतार दिया। और वही तुमने देखा।

मैंने किसी का बुरा नहीं चाहा पर शायद ये सब बदकिस्मती मेरी किस्मत में लिखी थी और किस्मत की लकीरों को कोई नहीं मिटा सकता। इसी लिये मेरी ऑखों को ये सब मुसीबतें देखनी पड़ीं।



अगर मुझे सुन्दर लोगों को देखने की इच्छा नहीं होती तो वह मेरी गरदन पर बैलों के जूए[81] की तरह से न रखा होता। पर खुदा ने कुछ इस तरह से मेरी जान बचायी कि उस समय तुम वहॉ आ गये और तुम मेरी ज़िन्दगी की वजह बने।

इतना अपमान होने के बाद भी और इतनी शर्मिन्दगी के साथ भी मैं आज यह कह सकती हूँ कि मुझे अभी भी जीने की इच्छा है।

[81] Jooaa means Yoke. See the white colored wooden log kept on both the bulls' neck in the picture above.

मैं किसी को मुॅह नहीं दिखा सकती पर मैं क्या करूॅ मरना भी तो अपने हाथ में नहीं है।

खुदा ने ही मुझे मारा और फिर खुदा ने ही तुम्हें मेरे पास भेज कर मुझे ज़िन्दगी दी। अब देखना यह कि उसने मेरी किस्मत में भविष्य में क्या लिखा हुआ है। तुम्हारी मेहनत और उत्साह हर तरीके से मेरे काम आया। इसी से मेरे घाव ठीक हो सके।

तुम मेरी इच्छाओं को पूरा करने के लिये अपनी ज़िन्दगी और सम्पत्ति सब देने को तैयार हो। इसके अलावा और जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसको भी तुम मुझे देने का तैयार हो।

उन दिनों तुमको इतना गरीब और दुखी देख कर मैंने एक नोट अपने खजांची सिद्दी बहार को लिखा। उस नोट में मैंने उसे लिखा कि “मैं एक ऐसी जगह हूॅ जहॉ मैं तन्दुरुस्त और सुरक्षित हूॅ। यह बात मुझ बदकिस्मत की बहुत अच्छी मॉ को बता देना।” बस सिद्दी बहार ने तुम्हारे हाथों मेरे लिये इतना सारा सोना भिजवा दिया।

और जब मैंने तुमको खिलात और गहने खरीदने लिये यूसुफ़ की दूकान पर भेजा तो मुझे पूरा विश्वास था कि वह नीच जो हर एक से दोस्ती करने के लिये हमेशा तैयार रहता था तुमको एक अजनबी समझ कर तुमसे भी दोस्ती बढ़ाना चाहेगा। अपने घमंड की वजह से तुमको खाने पर मौज मस्ती करने के लिये बुलाना चाहेगा।

मेरा यह सोचना भी ठीक ही रहा। उसने उसी तरह किया जैसा मैंने उसके बारे में सोचा था। और जब तुमने उससे यह वायदा

किया कि तुम वापस जाओगे और तुम मुझसे उसकी जिद के बारे में पूछने आये तो मैं इस बात से बहुत खुश हुई।

क्योंकि मैं जानती थी कि अगर तुम उसके घर खाना खाने जाओगे तो बदले में तुम उसको अपने घर भी बुलाओगे। वह भी तुम्हारे घर आने के लिये बहुत इच्छुक होगा इसलिये मैंने तुमको बहुत जल्दी ही भेज दिया।

तीन दिन के बाद जब तुम उसके यहाँ आनन्द मना कर और बहुत आश्चर्य में लौटे और इतने समय घर से बाहर रहने के लिये मुझसे बहुत देर तक माफी माँगते रहे।

तो तुम्हारे दिमाग को शान्त करने के लिये मैंने तुमसे कहा — "कि यह कोई तरीका नहीं है कि जब उसने तुम्हें विदा किया तो तुम बिना किसी तौर तरीके के वहाँ से वापस लौट आओ। तुमको किसी का कर्जा इस तरह से बिना वापस दिये नहीं रखना चाहिये।

तुम जाओ और ऐसी ही दावत के लिये उसको भी अपने घर बुला कर लाओ। और उसको केवल बुला कर ही नहीं बल्कि अपने साथ ले कर आओ।

जब तुम उसको बुलाने के लिये चले गये तो मैंने देखा कि इतनी कम देर में तो हमारे घर में एक मेहमान के लायक कोई भी तैयारी नहीं हो सकती थी। और अगर वह तुरन्त ही आ जाता तो मैं क्या कर सकती थी।

लेकिन खुशकिस्मती से क्या हुआ कि, पता नहीं कब से, इस देश में यह रिवाज चला आ रहा था राजा लोग साल में आठ महीने बाहर रहा करते थे। इस समय में वे अपने देश के प्रान्तों के मामले देखा भाला करते थे और साथ में आमदनी इकट्ठी करते थे।

बचे हुए बारिश के चार महीने वे अपने शानदार महलों में गुजारते थे। सो इत्तफाक से इस बदकिस्मत के पिता राजा अपने प्रान्तों की देख भाल करने के लिये बाहर गये हुए थे।

जब तुम उस नौजवान व्यापारी को लाने के लिये उसके घर गये हुए थे तो सिद्दी बहार ने मेरे हालात रानी को बता दिये। दोबारा अपनी गलती पर शर्मिन्दा होते हुए मैं रानी जी के पास गयी और जो कुछ मेरे साथ हुआ था वह सब उनको बताया।

हालाँकि माँ के प्यार से और बात को बना कर रखने के लिये उन्होंने मेरी इतने दिनों की गैरहाजिरी को यह कहते हुए छिपा लिया — "खुदा जानता है इसका क्या नतीजा निकलेगा। उस समय उन्होंने इस खबर को मेरी बदनामी की वजह से सबको बताना ठीक नहीं समझा और मेरे लिये उन्होंने मेरे सारे राज़ अपने अन्दर ही छिपा कर रख लिये। पर वह सारा समय मुझे ढूँढती ही रहीं।

जब उन्होंने मुझे इस हाल में देखा और मेरी बदकिस्मती का सारा हाल सुना तो उनकी आँखों में आँसू भर आये। वह बोलीं — "ओ बदकिस्मत नीच। तूने शाही गद्दी की इज़्ज़त और शान में जान

बूझ कर बट्टा लगाया है। तेरे ऊपर खुदा की लाख लाख कृपा है कि तू अभी तक मर नहीं गयी है।

अगर तेरी जगह मैं एक पत्थरों का बिस्तर खरीद लाती तो शायद ज़्यादा अच्छी रहती। हालॉकि पछताने के लिये अभी भी कोई देर नहीं हो गयी है। जो कुछ भी तेरी बदकिस्मती से हो गया है वह हो गया है। अब यह बता कि इसके आगे तू क्या करेगी। तू ज़िन्दा रहेगी या फिर मर जायेगी।"

मैं बहुत ही शर्मिन्दगी से बोली कि इस बेकार की नीच की किस्मत में यही लिखा हुआ है कि यह इतनी शर्मिन्दगी में भी इतने खतरों में से निकल कर भी जिये।

वह तो खैर ज़्यादा ही अच्छा होता अगर मैं मर गयी होती क्योंकि मेरे माथे पर कलंक का टीका तो लग ही गया है पर फिर भी मैं किसी ऐसे काम के लिये अपराधी नहीं हूॅ जिससे मेरे माता पिता की बदनामी हो।

मेरा प्लान यह है जैसा कि मैं समझती हूॅ कि वे दोनों नीच मेरी ऑखों के सामने से दूर हो जायें। अपने अपराधों की सजा का आनन्द दोनों एक दूसरे के साथ मिल कर ही भोगें जैसे मैंने उनके हाथों सहा है। यह बड़े दुख की बात है कि मैं उन्हें सजा देने के लिये कुछ नहीं कर सकती।

पर एक बात की तो मैं आपसे आशा कर ही सकती हूॅ कि आप आज की शाम अपने एक नौकर के हाथों मेरे घर में मेरे

मेहमान के लिये एक दावत और आनन्द का इन्तजाम कर दें। ताकि मैं उन नीचों को आनन्द के बहाने उनके कामों की सजा दे सकूॅ और खुद खुश हो सकूॅ।

उसी तरह से जिस तरह से उसने अपना हाथ मेरे ऊपर उठाया था और मुझे घायल किया था। मैं भी उनके शरीरों के टुकड़े टुकड़े काट सकूॅ तभी मेरे मन को शान्ति मिलेगी। नहीं तो मैं इस आग में जलती ही रहूॅगी और आखीर में जल कर राख हो जाऊॅगी।"

बेटी की यह बात सुन कर मॉ अपने ममता भरे स्वभाव से कोमल बन गयी और मेरी सब गलतियॉ अपने दिल में छिपा लीं। मेरे उसी नौकर के हाथों जो मेरे सारे भेद जानता था उन्होंने दावत की सारी चीज़ें भेज दीं। जितने और नौकरों की जरूरत थी वे भी सब आये। सब अपने अपने काम में होशियार थे।

शाम को जब तुम हमारे उन नीच मेहमानों को ले कर आये तो मेरी इच्छा हुई उसके साथ वह वेश्या भी आये। इसी वजह से मैंने तुमसे कहा कि तुम उसको भी बुला भेजो। जब वह आ गयी तब और मेहमान भी आने शुरू हुए।

सब लोग वाइन पी पी कर नशे में धुत हो गये। तुम भी उनके साथ ही नशे में बेहोश से हो गये और मरे हुए के समान लेट गये। तब मैंने एक किल्माकिनी[82] से कहा कि वह अपनी तलवार से उन

---

[82] The Mughal princes in the days of their splendour had guards of Kalmuc, or Kalmuk, or Kilmak, women for their seraglios; they were chosen for their size and courage, and were armed; other Tartar women were likewise taken, but they all went by the general name of Kilmakini. That is why in Orient tales Kalmuk and Tartar tales are mentioned – read the two books (1) Folktales and Legends: Orient.

दोनों के सिर काट दे और उनके शरीरों पर उन्हीं का खून मल दे। उसने तुरन्त ही अपनी तलवार निकाली और दोनों के सिर काट दिये और उनके शरीरों पर उन्हीं का खून मल दिया।

तुम पर मेरे गुस्सा होने की वजह यह थी कि मैंने तुम्हें आनन्द करने की इजाज़त दी थी उनके साथ वाइन पीने की नहीं जिनको तुम केवल कुछ ही दिनों से जानते थे।

तुम्हारी यह बेवकूफी कुछ भी थी पर मुझे खुशी नहीं दे सकी क्योंकि जब तुमने जब तक पिया जब तक तुम धुत नहीं हो गये तो मैं तुमसे क्या सहायता लेती। बल्कि तुम्हारी सेवाओं ने मेरी गर्दन को ऐसे जकड़ रखा था कि तुम्हारे इस व्यवहार के बाद भी मैंने तुमको माफ कर दिया।

देखो अब मैंने तुम्हें अपनी सारी कहानी शुरू से आखीर तक सुना दी है। क्या तुम्हारे दिल में कुछ और जानने की इच्छा है।

अपने उसी पुराने तरीके से जो मेरा है मैंने तुम्हारी सब इच्छाओं को पूरा कर दिया है। अब क्या तुम भी इसी तरीके से मेरी इच्छाओं को पूरा करोगे। इस मौके पर मेरी सलाह यह है कि इस समय हम दोनों का इस शहर में रहना ठीक नहीं है। आगे तुम्हारी इच्छा।"

इतना कहने के बाद पहले दरवेश ने दूसरे तीनों दरवेशों से कहा — "ओ खुदा की सेवा में रहने वालो। राजकुमारी केवल इतना कह

---

by Wilhelm Hauff. Translated in HIndi by Sushma Gupta; and (2) The Oriental Story Book. Translated in Hindi by Sushma Gupta.

कर चुप हो गयी। जैसा कि मेरा स्वभाव था मैंने भी उसकी सलाह को सबसे ऊँचा दर्जा दिया और उसके प्यार के धागे में बँध कर बोला — "जैसा तुम ठीक समझो मेरे लिये वही सबसे अच्छा है और मैं बिना किसी हिचक के वैसा ही करूँगा।"

जब राजकुमारी ने देखा कि मैं उसकी हर बात मानूँगा और उसका नौकर बन कर रहूँगा तब उसने मुझे हुक्म दिया कि मैं शाही घुड़साल से बहुत बढ़िया जीन कसे हुए दो घोड़े अपने घर पर ला कर तैयार रखूँ।

जब रात कुछ घंटे ही बाकी रह गयी तो राजकुमारी ने आदमियों वाले कपड़े पहने पाँचों हथियार[83] अपने साथ लिये एक बढ़िया से घोड़े पर चढ़ी मैं भी अपने हथियार लिये दूसरे घोड़े पर सवार हुआ। हम दोनों एक ही दिशा में चल दिये।

जब रात बीत गयी दिन निकलने लगा तो हम लोग एक झील के किनारे पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर हम अपने अपने घोड़ों से उतरे। हाथ मुँह धोये जल्दी जल्दी नाश्ता किया फिर अपने अपने घोड़ों पर चढ़े और आगे चल दिये।

कभी कभी राजकुमारी बोलती — "मैंने केवल तुम्हारे लिये ही अपना नाम सम्पत्ति इज़्ज़त देश अपने माँ बाप छोड़े अब तुम ऐसा

[83] In Indian settings "taking five weapons" means taking five weapons along with – these five weapons are – Talwar (sword), the Pesh-Kabz (dagger = a big knife), Tabar (battle axe), Barachhi (lance = bhaalaa), and the last one is Teer Kamaan (Bow and arrow).

मत होने देना कि कहीं तुम भी मेरे साथ उस जंगली बेवफा की तरह से व्यवहार करो।"

कभी यात्रा को आरामदेय बनाने के लिये मैं कुछ और विषयों पर या फिर उसकी बात का जवाब देने के लिये भी कुछ बात करता। मैं उससे कहता — "राजकुमारी जी सारे आदमी एक से नहीं होते। वैसे लोगों के माता पिताओं में ही कुछ गड़बड़ी होती होगी तभी तो वे ऐसे काम करते हैं।

पर मैंने अपनी सारी धन दौलत और ज़िन्दगी तो आपको दे दी है और आपने भी मेरी बहुत अच्छे से इज़्ज़त की है। मैं तो आपका अब बेदाम का गुलाम हूँ। अगर आप मेरी खाल का जूता बनवा कर भी अपने पैर में पहनना चाहें तो पहन सकती हैं। मैं कोई शिकायत नहीं करूँगा।"

इस तरह से हम लोगों के बीच इसी तरह की बातें होती चली जा रही थीं। दिन रात आगे बढ़ते रहना ही हमारा काम हो गया था। अगर कभी हम थकान की वजह से कहीं रुकते भी थे तो उस समय में जंगली जानवरों का शिकार कर लेते थे।

हम उनको कानून के अनुसार ही मारते थे। फिर उनको नमक लगाते थे उसके बाद चकमक पत्थर से आग जला कर उनको भूनते थे तब खाते थे। घोड़ों को हम घास खाने के लिये खुला छोड़ देते थे जो उनको वहाँ पेट भर कर मिल जाती थी।

एक दिन हम लोग एक बहुत बड़े सपाट मैदान में पहुँचे जहाँ कोई नहीं रहता था। किसी आदमी का चेहरा देखने के लिये नहीं था।

अब क्योंकि राजकुमारी मेरे साथ थी तो मुझे सब कुछ बहुत अच्छा लग रहा था। दिन त्यौहार जैसे थे और रातें खुशी से कट जाती थीं। आगे बढ़ने पर हम एक बहुत बड़ी नदी पर आ गये जिसको देख कर पत्थर का दिल भी पिघल जाता।

हम लोग उसके किनारे खड़े इधर उधर चारों तरफ देख रहे थे तो दूसरे पार की जमीन कहीं दिखायी नहीं दी रही थी और न कहीं उसे पार करने का कोई रास्ता ही दिखायी दे रहा था।

उसको देखते ही मेरे मुँह से निकला — "ए खुदा। अब हम पानी के इस अथाह सागर को कैसे पार करेंगे।"

हम वहाँ उसके किनारे पर खड़े हुए इस बारे में सोच ही रहे थे कि मेरे दिमाग में एक विचार आया कि मैं राजकुमारी को वहीं छोड़ दूँ और कहीं से एक नाव ढूँढ कर ले कर आऊँ। जब तक मैं कोई नाव ढूँढ कर ले कर आता हूँ राजकुमारी को भी आराम मिल जायेगा।

ऐसा सोच कर मैंने यह बात राजकुमारी से कही। मैं बोला — "अगर राजकुमारी जी मुझे इजाज़त दें तो मैं इधर उधर जा कर कहीं से कोई नाव ढूँढ कर लाता हूँ।"

राजकुमारी बोली — “मैं बहुत थक गयी हूँ और मुझे भूख और प्यास भी लगी है। मैं यहाँ तब तक थोड़ी देर आराम करती हूँ जब तक तुम इस पानी को पार करने का कोई तरीका ढूँढ कर लाते हो।”

उस नदी के पास ही एक बहुत बड़ा घना छायादार पीपल का पेड़ खड़ा था। वह इतना बड़ा घना और छायादार पेड़ था कि अगर उसके नीचे **1000** घुड़सवार भी खड़े हो जाते तो वे धूप और बारिश से बच जाते।

सो राजकुमारी को वहाँ छोड़ कर मैं चारों तरफ कुछ ऐसी चीज़ ढूँढता रहा जिससे हम वह नदी पार कर जायें या फिर कोई आदमी। मैंने काफी कुछ इधर उधर ढूँढा पर कुछ नहीं मिला।

आखिर निराश हो कर मैं वापस लौट आया पर उस पेड़ के नीचे मुझे वह राजकुमारी नहीं मिली। मैं अपने दिमाग की हालत आप सबको बता नहीं सकता कि मैं कितना परेशान था। मेरी सारी इन्द्रियों ने काम करना बन्द कर दिया था और मैं परेशान हो गया था।

कभी कभी तो मैं पेड़ पर चढ़ कर उसके हर पत्ते में हर शाख में राजकुमारी को ढूँढता। ऐसा करते करते मैं कभी कभी पेड़ से गिर भी जाता। और फिर उसको मैं जड़ों में ढूँढता। मुझे लगता जैसे उन्हीं ने उसको कहीं छिपा दिया है। कभी कभी मैं रोता और चीखता।

थोड़े में कहो तो मैंने उसको हर जगह छान मारा पर मुझे अपना वह कीमती जवाहरात नहीं मिला। आखिर मुझे लगा कि मैं अब उसे और नहीं ढूँढ सकता तो मैं फिर से रोने और अपने सिर पर धूल फेंकने लगा।

फिर मेरे दिमाग में यह विचार आया कि शायद कोई जिन्न उसको ले गया हो और उसी ने मुझे यह घाव दिया हो। या फिर किसी ने उसका उसके देश से पीछा किया हो और यहाँ उसको अकेले पा कर उसको दमिश्क जाने के लिये जिद की हो या फिर उसे जबरदस्ती वहाँ ले गया हो।

यह सब इधर उधर का सोचते हुए मैंने अपने कपड़े उतार कर फेंक दिये और एक नंगा फकीर बन गया।

मैं सुबह से शाम तक सीरिया राज्य में इधर उधर घूमता रहता और रात को किसी पेड़ के नीचे लेट जाता। इस तरह से मैं सारे राज्य में घूमा पर अपनी राजकुमारी के बारे में कुछ पता नहीं चला सका। न उसके बारे में किसी से कुछ सुन ही सका और न उसके गायब हो जाने की वजह ही जान सका।

तब मेरे दिमाग में यह विचार आया कि क्योंकि मैं अपनी प्यारी को सब जगह ढूँढ चुका था और मुझे उसका कोई पता नहीं चला था तो मैं अपनी ज़िन्दगी से भी थक चुका था कि एक दिन मुझे एक अकेली जगह में एक पहाड़ दिखायी दे गया।

बस मैं उस पहाड़ पर चढ़ गया और उसकी चोटी से नीचे कूदने ही वाला था ताकि मैं अपनी इस बदकिस्मत ज़िन्दगी को खत्म कर दूँ। मैं इन पत्थरों पर अपने सिर के बल गिर कर अपनी जान दे दूँ ताकि यह इन सब दुखों से आज़ाद हो जाये।

यह इरादा कर के मैं पहाड़ से कूदने के लिये नीचे की तरफ झुका ही था और अपना एक पैर भी उठा लिया था कि किसी ने मेरी बाँह पकड़ ली।

इस बीच मुझे कुछ होश आया तो मैंने अपने चारों तरफ देखा तो एक घुड़सवार को देखा जो हरे कपड़े पहने हुआ था और उसके चेहरे पर परदा पड़ा हुआ था।

वह बोला — "अरे तुम अपनी ज़िन्दगी दे देने पर क्यों उतारू हो। खुदा की दुआ से निराश होना पाप है। जब तक इन्सान के अन्दर साँस तब तक आस है। आने वाले समय में तीन दरवेश तुमसे रम[84] के राज्य में आ कर मिलेंगे जो सब तुम्हारी तरह से ही दुखी हैं। तुम्हारी तरह की ही मुसीबत में फँसे हुए हैं। वे तुम्हारे से थोड़ी सी ही छोटी परेशानी में उलझ गये थे।

उस देश के राजा का नाम आज़ाद बख्त है। वह भी बड़ी मुसीबत में है। जब वह तुमसे मिलेगा और बाकी के तीन दरवेश भी तुम्हारे साथ होंगे तब तुम सबके दिलों की सब इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी।"

---

[84] Rum

मैंने इस देवदूत के पैर पकड़ लिये और बोला — "ओ खुदा का सन्देश लाने वाले। तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है।"

उसने कहा — "मेरा नाम मुरतज़ा अली[85] है। और मेरा काम यह है कि जो लोग किसी परेशानी या खतरे में फॅस जाते हैं मैं उनकी सहायता करने के लिये तुरन्त ही हाजिर रहता हूॅ।" इतना कह कर वह वहॉ से गायब हो गया।

थोड़े में कहो तो मेरे आध्यात्मिक गुरू यानी परेशानियों में से निकालने वाले ने मेरी उदासी को खुशी में बदल दिया। उसके बाद मैंने कौन्सटैनटिनोपिल[86] जाने का प्रोग्राम बना लिया। रास्ते भर मैंने इस आशा में कि मेरी राजकुमारी मुझे मिल जायेगी वे सब दुख सहे जो मेरी किस्मत में लिखे हुए थे।

अल्लाह की दुआ से अब मैं यहॉ हूॅ और अपनी खुशकिस्मती से आप लोगों से आ कर मिल गया हूॅ। जो मीटिंग मुरतज़ा अली ने बतायी थी वह मीटिंग तो अब हो ही चुकी है। हमने एक दूसरे के साथ आनन्द भी किया है।

अब बस यही बाकी रह गया है कि राजा आज़ाद बख्त यहॉ आ कर हमको देखें। हमें पूरा यकीन है कि उसके बाद हमारे सबके दिलों की इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी।

---

[85] Murtaza Ali. Murtaza 'Ali, the son-in-law of the prophet; one of his surnames is Mushkil-kusha, or "the remover of difficulties." The Saiyids, who pretend to be descended from 'Ali, wear green dresses, which is a sacred colour among the Muhammadans.

[86] Constantinople – the capital of Turkey

क्या तुम लोगों को भी अल्लाह की कृपा में विश्वास है तो तुम लोग "आमीन" कहो। ओ पवित्र रास्ता दिखाने वालो। इस तरह की आफतें मुझ घूमने वाले पर आ कर पड़ी थीं जो मैंने तुम सब लोगों को सुनायीं।

अब हमको उस पल का इन्तजार करना चाहिये जब मेरी परेशानियाँ और दुख सब दूर हो कर खुशी और सन्तोष में बदल जायेंगे। मेरी राजकुमारी मुझे मिल जायेगी।

आज़ाद बख्त जो चुपचाप खड़ा हुआ पहले दरवेश की कहानी बड़े ध्यान से सुन रहा था पहले दरवेश की कहानी सुन कर बड़ा खुश हुआ। तब वह दूसरे दरवेश की कहानी सुनने के लिये तैयार हो गया।

3 दूसरे दरवेश के कारनामे[87]

जब दूसरे दरवेश के अपने कारनामे सुनाने की बारी आयी तो वह भी आराम से बैठ गया[88] और बोला —

ओ दोस्तो कुछ इस फ़कीर की कहानी भी सुनो
जो अब मैं तुमसे कहता हूँ शुरू से ले कर आखीर तक
कोई डाक्टर उसका इलाज नहीं कर सकता मेरा दर्द तो लाइलाज है, सुनो

ओ दल्क के कपड़े पहनने वालो। यह अभागा नीच फारस राज्य का राजकुमार है। वहाँ हर तरह की जानकारी वाले लोग पैदा हुए हैं। इसलिये वहाँ की एक कहावत बहुत मशहूर है "इस्फ़ाहान निस्फ़ी जहान" यानी "इस्फ़ाहान तो आधी दुनियाँ है।" और वह इसी नाम से मशहूर है।

सातों द्वीपों में उसके जैसा कोई देश नहीं है। उस देश का तारा सूरज है। पुराने देशों में से इसके जैसा देश और कोई नहीं है। सातों लोकों में[89] इसका नक्षत्र ही सबसे बड़ा है। इसकी जलवायु बहुत खुशी देने वाली है। इसमें रहने वाले बहुत ज्ञानी हैं और इसकी संस्कृति भी बहुत ऊँची है।

---

[87] Adventures of the Second Darwesh (Tale No 2) – Taken from : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/03_seconddarvesh_a.html
This anecdote of Hatim is founded on Arabian history.

[88] The phrase *char-zanu ho-baithna*, signifies "to sit down with the legs crossed in front as our tailors do when at work." It is the ordnary mode of sitting among the Turks.

[89] The Muhammadans divide the world into seven climes, and suppose that a constellation presides over the destiny of each clime.

मेरे पिता जो इस देश के राजा थे उन्होंने मुझे राजनीति के सब नियमों को समझाने के लिये बहुत अच्छे टीचर रखे जो बहुत कुछ जानते थे। वे मुझे बचपन से ही पढ़ा लिखा रहे थे। सो हर चीज़ में पूरी शिक्षा लेने के बाद अब मैं सबमें होशियार हो गया।

अल्लाह की कृपा से जब मैं **14**वें साल में पहुँचा तब तक मेंने सारा विज्ञान विनम्रता से बातचीत करना अच्छे ढंगचाल आदि सब सीख लिये थे जो कि एक राजा को आने जरूरी थे।

इसके अलावा दिन रात मेरी यही इच्छा रहती कि मैं होशियार लोगों के पास बैठूँ और हर देश का इतिहास जानूँ। मशहूर राजाओं और ऊँची ऊँची इच्छाऐं रखने वाले राजकुमारों के बारे में जानूँ।

एक दिन मुझे एक बहुत ही विद्वान आदमी मिला जिसे इतिहास बहुत अच्छा आता था और जिसने काफी दुनियाँ देखी थी मुझसे बोला — "हालाँकि किसी भी आदमी को अपनी ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं है फिर भी उनमें कुछ बहुत ही बढ़िया गुण पाये जाते हैं जिनकी वजह से वे बहुत मशहूर हो जाते हैं और जिनकी वजह से वह पीढ़ी दर पीढ़ी और जजमैंट डे तक मशहूर रहते हैं।"

मैंने उससे विनती की कि वह मुझे ऐसे कुछ लोग बताये जिनके साथ ऐसा हुआ है ताकि मैं उनके बारे में सुन सकूँ और उनके जैसे कामों को कर सकूँ। तब उस आदमी ने मुझे हातिम ताई[90] की ज़िन्दगी की कई घटनाओं में से यह घटना सुनायी —

---

[90] Hatim Tai

हातिम के समय में अरब का एक राजा था नौफाल। उसकी हातिम से बहुत बड़ी दुश्मनी थी क्योंकि हातिम बहुत मशहूर था। सो एक बार वह बहुत सारी सेना ले कर उससे लड़ने गया। हातिम एक बहुत ही अच्छा आदमी था और वह खुदा से डरता था।

उसको ऐसा लगा "अगर मैं भी इसी तरह लड़ने की तैयारी करूँ तो खुदा के बहुत सारे प्राणी मारे जायेंगे और बहुत खून खराबा होगा। जिसका नतीजा स्वर्ग में मेरे खिलाफ लिखा जायेगा।"

ऐसा सोच कर उसने अकेले ही केवल अपनी पत्नी को ही साथ लिया और भाग कर पहाड़ों में एक गुफा में जा कर छिप गया।

जब हातिम के भाग जाने की खबर अरब के राजा नौफाल को मिली तो उसने हातिम की सारी जायदाद और उसका रहने का घर सब जब्त कर लिया और यह घोषणा करवा दी कि जो कोई भी हातिम को ढूँढ कर पकड़ कर लायेगा उसको शाही खजाने से **500** सोने के सिक्के दिये जायेंगे।

जब लोगों ने यह घोषणा सुनी तो हर किसी के मन में यह लालसा जागी कि वह यह काम करे और हातिम को पकड़वा कर **500** सोने के सिक्के ले ले। सो हर एक ने हातिम की खोज शुरू कर दी।

एक दिन एक बूढ़ा और उसकी पत्नी अपने **2–3** छोटे बच्चों को साथ ले कर लकड़ी चुनने गये तो घूमते घूमते उसी गुफा की तरफ निकल गये जिसमें हातिम अपनी पत्नी के साथ रहता था।

उसी जंगल में पहुँच कर उन्होंने लकड़ी चुनना शुरू कर दिया। बुढ़िया बोली — "अगर हमारे कुछ दिन अभी अच्छे रह गये हैं तो हम लोगों को हातिम का पता लग जाना चाहिये ताकि हम उसको पकड़ कर राजा के पास ले जा सकें।

वह हमको **500** सोने के सिक्के देगा और हम आराम से रह पायेंगे। हमको इस तरह का काम करने से भी छुट्टी मिल जायेगी।"

बूढ़ा लकड़हारा बोला — "यह आज तुम कैसी बात कर रही हो। यह तो हमारी किस्मत में लिखा है कि हम लोग रोज लकड़ियाँ चुनें उन्हें अपने सिर पर लादें और उन्हें बाजार बेच कर आयें। उससे आये पैसों से रोटी नमक खरीदें।

फिर एक दिन कोई चीता आयेगा और हमको पकड़ कर ले जायेगा। शान्त रहो और अपना काम देखो। हातिम बेचारे को हमारे फन्दे में क्यों फँसाती हो ताकि हमें राजा से उसके लिये पैसा मिल जाये।"

बुढ़िया एक ठंडी साँस भरते हुए चुप रह गयी।

हातिम ने इन दोनों बूढ़ों की बातें सुन लीं तो उसको लगा कि इन बूढ़ों को तो पैसे की बहुत जरूरत है और इनसे अपने आपको छिपाना तो इन्सानियत नहीं है कि इनके दिलों की इच्छाऐं पूरी न हो पायें। सच तो यह है कि बिना दयावान बने तो कोई इन्सान इन्सान ही नहीं है। और वह आदमी जिसके दिल में भावनाऐं ही न हों तो वह तो कसाई है कसाई।

आदमी तो दया दिखाने के लिये ही पैदा किया गया था
वरना देवदूतों को भक्ति की कोई जरूरत नहीं थी

थोड़े में कहो तो हातिम की इन्सानियत इस बात की गवाही नहीं दे रही थी कि जो कुछ उसने अपने कानों से सुना था उसको सुन कर वह उनसे छिपा बैठा रहे।

वह तुरन्त ही अपनी गुफा से बाहर निकल कर आया और बूढ़े से बोला — "मैं हातिम हूँ। तुम मुझे नौफाल के पास ले चलो। मुझे देख कर वह तुमको उतने पैसे दे देगा जितने उसने मुझे लाने वाले को देने का वायदा किया है।"

बुढ़िया बोली — "यह सच है कि मेरी भलाई और फायदा तो इसी में है कि मैं यह करूँ पर यह कौन जानता है कि वह आपके साथ कैसा व्यवहार करेगा। अगर उसने आपको मरवा दिया तो मैं क्या करूँगी।

मेरे लिये यह ठीक नहीं होगा कि मैं आपको आपके दुश्मन को केवल इसलिये सौंप दूँ कि मुझे अपने लालच की वजह से उससे पैसे मिल जायेंगे। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकती।

उन पैसों का क्या है वे तो मैं कुछ ही दिनों में खर्च कर दूँगी। और फिर मेरी ज़िन्दगी ही कितनी है। आखिर मैं तो मर ही जाऊँगी तो मैं अल्लाह को जा कर क्या जवाब दूँगी।"

हातिम ने उससे बहुत विनती की — “तुम मुझे अपने साथ ले चलो। यह मैं तुमसे अपनी खुशी के लिये कह रहा हूँ। मेरी हमेशा से ही यह इच्छा रही है कि मेरी ज़िन्दगी और सम्पत्ति किसी दूसरे के काम आये तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।”

पर बूढ़े को किसी तरह से भी हातिम को उसके दुश्मन को सौंपने के लिये और उसको उसे दे देने का इनाम लेने के लिये नहीं मनाया जा सका।

जब वह सब तरफ से निराश हो गया और बूढ़ा भी किसी तरह से नहीं माना तो हातिम बोला — “अगर तुम मुझे जिस तरह से मैं चाहता हूँ वैसे मुझे वहाँ नहीं ले जाओगे तो मैं राजा के पास खुद चला जाऊँगा और कहूँगा कि “इस आदमी ने मुझे पहाड़ों में एक गुफा में छिपा रखा था।”

बूढ़ा हँसा और बोला — “अगर मुझे भलाई करने का बुरा फल मिलता है तब तो मेरी किस्मत ही खराब है।”

जब ये सब बातें चल रही थीं तो वहाँ कुछ और लोग इकट्ठा हो गये। भीड़ जमा हो गयी। उन्होंने हातिम ताई को वहाँ देखा तो तुरन्त ही उसे पकड़ लिया और उसको अपने साथ ले गये।

य्ह देख कर बूढ़ा कुछ दुखी हो गया पर चुपचाप वह उनके पीछे चल दिया। जब वे लोग हातिम को नौफाल के पास ले गये तो उसने पूछा — “इसे यहाँ कौन पकड़ कर ले कर आया है।”

उस भीड़ में से एक बेकार के निर्दयी आदमी ने कहा — "ऐसा काम और कौन कर सकता है। इसे मैं पकड़ कर लाया हूँ। यह शान का झंडा आसमान में मैंने गाड़ा है।"

एक और आदमी बोला — "मैंने इसको जंगलों बहुत दिनों तक ढूँढा और आखिरकार पकड़ ही लिया। अब मैं इसको यहाँ ले आया हूँ। कम से कम मेरी मेहनत की तो इज़्ज़त करें और मुझे वह दें जो आपने देने का वायदा किया है।"

इस तरह से सोने के सिक्के लेने के लिये हर एक ने कहा कि वह हातिम को पकड़ कर लाया है। पर बूढ़ा चुपचाप एक कोने में बैठा रहा और उन सबके शान बघारने के किस्से सुनता रहा और हातिम के लिये रोता रहा।

जब हर आदमी अपना अपना किस्सा सुना चुका तब हातिम बोला — "अगर तुम सच जानना चाहते हो तो वह यह है, यह बूढ़ा जो सबसे अलग खड़ा हुआ है, यही मुझे यहाँ ले कर आया है। अगर तुम उसकी शक्ल से कुछ अन्दाजा लगा सकते हो तभी इस बात को तय करो कि मुझे कौन पकड़ कर लाया हो सकता है।

मुझे पकड़ने के लिये अपना घोषित किया हुआ इनाम इसी को दो क्योंकि सारे शरीर के सब हिस्सों में ज़बान ही सबसे पवित्र हिस्सा है। किसी भी आदमी के लिये यह बहुत जरूरी है कि वह वही करे जो उसने कहा है। दूसरे कामों के लिये अल्लाह ने जीभ बनायी है

जो खूँख्वार जानवरों के पास भी है। इसलिये समझो कि ज़बान और जीभ में क्या अन्तर है।"[91]

यह सुन कर नौफाल ने बूढ़े लकड़हारे को अपने पास बुलाया और उससे पूछा — "तुम बताओ कि हातिम को यहाँ पकड़ कर कौन लाया है।"

उस ईमानदार आदमी ने उसे शुरू से आखीर तक उसको सब सच सच बता दिया और कहा — "सरकार हातिम मेरे लिये यहाँ खुद अपनी मर्जी से आये हैं।"

नौफाल ने जब हातिम के इस इन्सानियत के काम के बारे में यह सब सुना तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके मुँह से निकला — "दूसरों के लिये यह तुम्हारी कितनी बड़ी दिलदारी[92] है। तुमने तो इस आदमी के लिये अपनी जान की भी परवाह नहीं की।

दूसरे लोग जिन्होंने झूठे दावे किये थे राजा ने उनके हाथ उनकी पीठ पीछे बाँधने का हुक्म दिया और उनको बजाय **500** सोने के सिक्के देने के उसने हर एक के सिर पर **500** जूते इस तरह मारने के लिये कहा ताकि वे कुछ ही देर में गंजे हो जायें।

---

[91] Here a distinction is drawn between the words zaban and jibh. Although both signify 'tongue,' but the word zaban in Persian and Hindustani means both the fleshy member of the body, called the tongue, and also language or speech, just like word "tongue" in English which has both significations. Jibh, in Hindi and Hindustani, means the tongue only in the sense of the member of the body, never in the sense of speech; hence it is equally applicable to man or brute. Ask any physician who has practised in India the Hindustani for "show the tongue," he will tell you jibh dikhao, or zaban dikhao; and if he was a man of discernment, he would use jibh with a Hindu, and zaban with a Musalman; but still he would be perfectly understood by either party.

[92] I am sorry that I had to use this word because I could not find any appropriate Hindi word for the word "Liberality".

सच तो यह है कि झूठ बोलना तो इतना बड़ा जुर्म है कि इससे बड़ा जुर्म तो कोई और है ही नहीं। खुदा सबको इस तरह के जुर्म से बचा कर रखे और उनके दिल में झूठ बोलने की इच्छा पैदा न करे।

बहुत सारे लोग झूठ बोलना चाहते हैं पर अगर उनका झूठ पकड़ा जाता है तो उनको उसका इनाम मिलना ही चाहिये।

थोड़े में कहो तो नौफाल ने सबको उनके व्यवहार के अनुसार इनाम दिये। जबकि उसने हातिम को इसका उलटा करने का सोचा।

हातिम जैसे आदमी के इन्सानियत के व्यवहार को देख कर जिसके लिये उसके दिल में दुश्मनी भरी हुई थी और जिसको देख कर बहुत सारे लोग खुश थे उसने न केवल उसकी ज़िन्दगी बख्श दी बल्कि वह खुद भी अल्लाह के नियमों का पालन करने लगा।

उसने दोस्ती और प्यार से हातिम का हाथ पकड़ा और कहा — "ऐसा ही क्यों नहीं होना चाहिये। जैसे आदमी तुम हो ऐसा आदमी तो कोई भी काम कर सकता है।"

फिर राजा ने हातिम को बड़े आदर के साथ अपने पास बिठाया और तुरन्त ही उसकी सारी सम्पत्ति जायदाद आदि और उसका सब कुछ उसको लौटा दिया।

उसको ताई जनजाति का नया सरदार बना दिया। बूढ़े को उसने **500** सोने के सिक्के दे कर विदा किया। बूढ़ा भी राजा को दुआऐं देता हुआ अपने घर चला गया।

जब मैंने हातिम के कारनामे की यह सारी कहानी सुनी तो मेरे दिमाग में उससे जलन की एक भावना मेरे दिल में उठ आयी।

कि "हातिम तो केवल एक ऐसा अकेला सरदार था जो अपनी जाति का सरदार था। उसने अपने एक अच्छे दिलदारी के काम से इतना नाम कमा लिया था। जबकि मैं अल्लाह की दया से सारे ईरान का शाह होते हुए भी मैं इतनी सब सम्पत्ति से वंचित रहूँगा।

यह तो निश्चित है कि इस दुनियाँ में दिलदारी और दया से बढ़ कर और कोई गुण नहीं है चाहे उसके पास दुनियाँ भर की सारी दौलत ही क्यों न हों। क्योंकि उसको केवल उन्हीं का बदला दूसरी दुनियाँ में मिलता है। अगर कोई आदमी एक बीज बोता है तो वह उसकी पैदावार से कितना पा सकता है।

जब ऐसा मेरे दिमाग में आया तो मैंने अपने सबसे बड़े इमारत बनाने वालों को बुलवाया और उनसे जल्दी से जल्दी शहर के बाहर एक शानदार महल बनाने के लिये कहा जिसमें 40 बहुत बड़े और ऊँचे फाटक हों।[93]

कुछ ही समय में जैसी मेरी इच्छा थी इतना शानदार महल बन कर तैयार हो गया और मैं उसमें बैठ कर दिन रात सुबह से शाम

---

[93] It is related by grave historians, that Hatim actually built an alms-house of this description. On Hatim's death, his younger brother, who succeeded him, endeavoured to act the generous in the above manner. His mother dissuaded him, saying, "Think not, my son, of imitating Hatim: it is an effort thou canst not accomplish;" and in order to prove what she said, the mother assumed the garb of a faqir, and acted as above related. When she came to the first door the second time, and received her son's lecture on the sin of avarice; she suddenly threw off her disguise, and said, "I told thee, my son, not to think of imitating Hatim. By him I have been served three times running, in this very manner, without ever a question being asked."

तक गरीबों और जरूरतमन्दों को सोने के सिक्के बॉटता रहा। जिस किसी ने जो कुछ भी मुझसे मॉगा मैंने उसे वही दिया और उसकी जरूरत से ज़्यादा ही दिया।

थोड़े में कहो तो बहुत सारे जरूरतमन्द लोग चालीसों दरवाजों से अन्दर आने लगे और जो उनको चाहिये था वह उनको मिलने लगा।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि महल के सामने के दरवाजे से एक फ़कीर मेरे पास आया और मुझसे कुछ दान मॉगा। मैंने उसको सोने का एक सिक्का दिया। वह सिक्का ले कर चला गया। पर फिर वही फ़कीर दूसरे दरवाजे से मेरे पास आया और उसने मुझसे दो सिक्के मॉगे।

हालॉकि मुझे पता चल गया था कि यह वही फ़कीर है जो अभी महल के सामने वाले फाटक से मेरे पास आया था और मैंने उसको एक सिक्का दिया था फिर भी मैंने इस बात को नजरअन्दाज कर के उसको दो सिक्के दे दिये।

इस तरह से वह महल के सारे दरवाजों से हो कर मेरे पास आया और हर बार अपनी मॉग में एक सिक्के की बढ़ोत्तरी कर देता और मैं जान बूझ कर उसको नजरअन्दाज कर के उसे इतने ही सिक्के देता रहा जितने वह मॉगता रहा।

सो जब वह 40वें फाटक से आया तो उसने मुझसे 40 सिक्के मॉगे। उस बार भी मैंने उसको 40 सिक्के देने के लिये कहा और उसको 40 सिक्के दे दिये गये।

पर इतना पैसा लेने के बावजूद वह फिर से महल के पहले वाले दरवाजे से अन्दर आया और फिर से दान मॉगा।

इस बार मुझे उसका व्यवहार कुछ अच्छा नहीं लगा सो मैं बोला — "ओ लालची आदमी। तू यह किस तरीके का फ़कीर है जो इन तीन अक्षरों का मतलब भी नहीं समझता जो "फ़क्र"[94] से बनते हैं। फ़कीर को उस शब्द का मतलब समझते हुए ही रहना चाहिये।"

वह बोला — "ओ दयालु आत्मा। आप खुद मुझे इसका मतलब समझायें।"

मैंने कहा — "अरबी में "फ़" का मतलब है फ़ाका यानी उपवास रखना, "क़िनात" का मतलब है सन्तुष्ट रहना[95] और "र" का मतलब है "रियाज़त" यानी भक्ति। जिस आदमी के अन्दर ये तीन गुण नहीं होते वह फ़कीर नहीं होता।

यह जो कुछ भी तुमने मुझसे लिया है उससे खाओ पियो। और जब यह पैसा खत्म हो जाये तो मेरे पास फिर आ जाना और तुम्हें जितना चाहिये फिर ले जाना। यह दान जो तुम्हें दिया गया है यह

[94] Faqr, in Arabic, means poverty.

[95] Translated for the word "Contentment"

तुम्हारी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिये दिया गया है न कि इकट्ठा कर के रखने के लिये।

ओ लालची तूने महल के **40** फाटकों से अन्दर आ कर एक सिक्के से ले कर **40** सिक्कों तक इकट्ठे कर लिये हैं। ज़रा हिसाब लगा कर देख तूने कितने सिक्के इकट्ठे कर लिये हैं। और केवल इतने ही नहीं इतना इकट्ठा करने के बाद भी तेरा लालचीपना तुझे महल के पहले फाटक से फिर मेरे पास माँगने के लिये ले आया है।

तुम इतना सारा पैसा इकट्ठा कर के क्या करोगे। एक सच्चे फ़कीर को आने वाले कल की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। अगला दिन तुम्हें अल्लाह खाने के लिये फिर देगा।

अब तुम कुछ शर्म करो और भलमनसाहत दिखाओ, धीरज रखो, सन्तुष्ट रहो। यह किस तरह की फ़कीरी तुम्हारे गुरू ने तुम्हें सिखायी है।"

अपना यह अपमान सुन कर वह नाखुश और गुस्सा हो गया और वे सारे सिक्के नीचे जमीन पर डाल दिये जो उसने मुझसे लिये थे। वह बोला — "बस काफी है। आप इतने गर्म न हों। आप अपने ये सिक्के वापस ले लें और इन्हें अपने पास रख लें। और आगे से आप कभी अपने आपको दानी न कहें।

दानी होना कोई आसान काम नहीं है। आप दानी होने का बोझ सॅभालने के लायक नहीं हैं। आपको उस तरह का होने में अभी बहुत समय लगेगा। आप अपनी मंजिल से अभी बहुत दूर हैं।

अरबी शब्द सख्य या उर्दू शब्द सखी[96] भी तीन अक्षरों से बना हुआ शब्द है। पहले इन तीन अक्षरों से बने हुए शब्द का पालन कीजिये तभी आप दरियादिल बन पायेंगे।"

यह सुन कर मैं थोड़ा बेचैन हो गया और फ़कीर से कहा — "ओ पवित्र तीर्थयात्री। पहले तुम मुझे इन तीन अक्षरों का मतलब समझाओ।"

फ़कीर बोला — "अरबी भाषा में "स" सीन अक्षर से "समायी" निकला है जिसका मतलब होता है "सहना"। अरबी भाषा के "ख" अक्षर से है "खौफ़े इलाही" यानी अल्लाह से डरना। और अरबी भाषा के "य" यानी "ये" अक्षर से बना है "याद" – यानी जन्म और मौत की याद।

जब तक कि किसी में ये गुण न हों तब तक किसी को दरियादिल या दयालु कहने का अधिकार नहीं है। दयालु कहलवाने का अधिकार उसको भी है जिसमें अगर दूसरे गुण न भी हों तो भी वह अपने दयालु होने के गुण की वजह से अपने बनाने वाले का प्यारा होता है।

मैं बहुत सारे देश घूमा हूॅ पर मैंने इससे पहले कभी इतना दयालु आदमी नहीं देखा जितनी कि वह बसरा की राजकुमारी। अल्लाह ने दया तो उसके रोम रोम में भर रखी है। बाकी सब नाम तो चाहते हैं पर उसके जैसे काम नहीं करते।"

---

[96] Arabic word Sakhya, or Urdu word Sakhi, means Generous

यह सुन कर मैंने उस फ़कीर से उस सब अपमान की माफी माँगी जो मैंने उसका किया था और विनती की कि उसे जो चीज़ जितनी चाहिये ले जाये। पर वह किसी तरह भी मेरी कोई भी भेंट लेने के लिये तैयार नहीं हुआ।

बल्कि वह ये शब्द दोहराता हुआ वहाँ से चला गया — "अब चाहे आप मुझे अपना पूरा राज्य भी क्यों न दे दें मैं तो अब उसके ऊपर थूकूँगा भी नहीं और न ही मैं ... ।"

सो इतना कह कर वह तीर्थयात्री तो वहाँ से चला गया पर बसरे की राजकुमारी के बारे में सुन कर मेरे दिल में चैन कहाँ। उससे मिलने का कोई आसान सा रास्ता भी सुझाई नहीं दे रहा था। मेरे दिल में बस यही इच्छा उठ रही थी कि किसी भी तरह से मुझे बसरा पहुँचना चाहिये और उसे देखना चाहिये।

इस बीच मेरे पिता राजा मर गये और मुझे वहाँ का शाह बना दिया गया। मुझे अब राज्य तो मिल गया था पर मेरे दिल में से बसरा जाने की इच्छा कहीं नहीं गयी थी।

मैंने अपने वजीर और कुलीन लोगों से सलाह की जो शाह का सहारा थे जो राज्य की नींव थे कि मैं बसरा जाना चाहता हूँ। आप लोग अपनी अपनी जगह पर ठीक से बने रहें। अगर मैं तन्दुरुस्त रहा तो वहाँ का रास्ता मेरे लिये छोटा ही रहेगा और मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगा।

मेरे इस इरादे से कोई भी खुश नहीं लग रहा था। अपनी मजबूरी की वजह से मेरा दिल उदास और और उदास रहने लगा। और फिर एक दिन मैं बिना किसी से पूछे मैंने अपने एक प्राइवेट भरोसेदार वजीर को बुलवाया उसको युवराज बनाया अपनी गैरहाजिरी में अपने सारे अधिकार सौंपे और उसको अपनी राज्य का सबसे ऊँचा ओहदा सौंप कर वहाँ से चल दिया।

मैंने गेरुआ कपड़े पहने तीर्थयात्री फ़कीर का वेश रखा और बसरा की सड़क पर अकेला ही चल पड़ा। कुछ ही समय में उसकी सीमा तक जा पहुँचा और बराबर मुझे यही दृश्य दिखायी देता रहा।

जहाँ भी मैं रात को रुकता राजकुमारी के नौकर हमेशा ही मेरा स्वागत करने के लिये तैयार रहते और फिर मुझे आलीशान घरों में ठहराते। वे मुझे वहाँ मुझे बहुत ही बढ़िया खाना खिलाते और सारी रात मेरी सेवा में खड़े रहते। अगले दिन मैं फिर जहाँ रुका वहाँ भी मुझे ऐसा ही स्वागत मिला।

ऐसी सुख सुविधाओं में मैं कई महीने यात्रा करता रहा। आखिर मैं बसरा की सीमा में घुसा। जैसे ही मैं बसरा में घुसा कि बढ़िया कपड़े पहने हुए एक तमीजदार सुन्दर नौजवान मेरे पास आया। देखने से वह एक अक्लमन्द आदमी लग रहा था।

उसने बड़ी मीठी बोली में मुझसे कहा — “मैं तीर्थयात्रियों की देखभाल करता हूँ। मैं हमेशा ऐसे ही यात्रियों की खोज में रहता हूँ

तो फिर वे चाहे तीर्थयात्री हो या फिर कोई भी यात्री जो इस शहर में आता है मैं उसको अपने घर ले जाता हूँ।

किसी अजनबी के लिये मेरे घर के सिवा यहाँ ठहरने की कोई और जगह ही नहीं है सो ओ पवित्र आदमी आप मेरे साथ आइये। मेरे घर आ कर मेरा और मेरे घर का मान बढ़ाइये।"

मैंने उससे पूछा — "आप भले आदमी नाम क्या है।"

वह बोला — "सारे लोग मुझे बेदर बख्त[97] कह कर पुकारते हैं।"

उसके अच्छे गुणों और तौर तरीकों को देख कर मैं उसके साथ चला गया और उसके घर आया। मैंने देखा कि उसका घर तो एक बहुत शानदार महल था जो शाही ढंग से सजा हुआ था। वह मुझे एक बहुत बढ़िया कमरे में ले गया और वहाँ बिठाया।

फिर उसने गर्म पानी मँगवाया और अपने नौकरों से मेरे हाथ पैर धुलवाये। फिर दस्तरख्वान[98] बिछवाया। नौकर ने मेरे सामने कई प्रकार के खाने लगाये और बहुत सारे फल और केक और बिस्किट लगाये।

---

[97] Bedar Bakht

[98] "Dastar-khwan" literally signifies the "turband of the table". How they manage to make such a meaning out of it is beyond ordinary research; and when done, it makes nonsense. They forget that the Orientals never made use of tables in the good old times. The dastar-khwan is, in reality, both table and table-cloth in one. It is a round piece of cloth or leather spread out on the floor. The food is then arranged thereon, and the company squat round the edge of it, and, after saying Bism-Illah, fall to, with what appetite they may; hence the phrase dastar-khwan par baithna, to sit on, (not at,) the table.

अपना इतना शानदार स्वागत देख कर तो मेरी तो आत्मा तक तृप्त हो गयी। मैंने एक एक कौर हर तरह के खाने में से खाया और फिर अपना हाथ खींच लिया।

नौजवान बार बार मुझसे जिद करता रहा — "जनाब आपने खाया ही क्या है। यह तो ऐसा लग रहा है जैसे यह खाना केवल रखने के लिये हो खाने के लिये नहीं। आप बिना किसी हिचक के कुछ और लें।"

मैंने कहा — "खाने में क्या शर्म। अल्लाह तुम्हारे घर में बढ़ोत्तरी करे। मैंने पेट भर कर खा लिया है। तुम्हारे खाने की बड़ाई करने के लिये मेरे पास शब्द काफी नहीं हैं। अभी तक मेरी जबान पर तुम्हारे खाने का स्वाद चढ़ा हुआ है। मेरी हर डकार के साथ तुम्हारे खाने की खुशबू आ रही है। बस अब इसे वापस ले जाओ।"

जब दस्तरख्वान हटा लिया गया तो फिर वहाँ काशानी मखमल[99] का कालीन बिछाया गया। नौकर लोग हाथ धुलाने वाला जग और तसला और खुशबूदार साबुन और गरम पानी ले कर आये ताकि मैं अपने हाथ धो सकूँ। फिर उसने एक जवाहरात जड़े सोने के डिब्बे में सुपारी और कई तरह की मुखवास[100] पेश की।

---

[99] Kashani Velvet

[100] Oriental people use several kinds of good scented things for chewing after the food to freshen their mouth, such as betelnut, betel leaf, peppermint etc.

जब भी कभी मैंने पानी माँगा तो नौकर लोग हमेशा बर्फ से ठंडा किया हुआ पानी ले कर आये। शाम को शीशे के बर्तनों से ढकी हुई कपूर मिली हुई मोमबत्तियाँ जलायी गयीं। उसके बाद वह नौजवान मेरे पास बात करने के लिये आ कर बैठ गया और मेरा दिल बहलाने लगा।

जब एक प्रहर रात बीत गयी तो वह मुझसे बोला — "आप यहाँ इस पलंग पर सोइये जिसके चारों तरफ मसहरी[101] लगी हुई है।"

मैंने कहा — "हम तीर्थयात्रियों के लिये तो एक चटाई या हिरन की खाल ही काफी है। यह सुख और आराम तो आप दुनियाँ वालों के लिये हैं।"

वह बोला — "ये सब चीज़ें तो तीर्थयात्रियों के लिये ही हैं। इसमें मेरी कोई चीज़ नहीं है।"

जब उसने काफी जिद की तो मैं जा कर उस पलंग पर लेट गया। वह बिस्तर तो उसका इतना मुलायम था जितना कि कोई फूलों का बिस्तर भी नहीं होगा।

उसके दोनों तरफ गुलाब के गमले रखे थे और फूलों की टोकरियाँ महक रही थीं। मैं जिस तरफ भी करवट लेता उस तरफ ही एलो की खुशबू सूँघने को मिलती। इस तरह खुशबुऐं सूँघता सूँघता मैं पता नहीं कब सो गया।

---

[101] Masahri means Mosquito net

जब सुबह हुई तो नौकर मेरे लिये नाश्ता ले आये। नाश्ते में बादाम पिस्ता अंगूर अंजीर नाशपाती अनार और खजूर थे और इनके साथ फलों से बना शर्बत था। इस तरह के आराम में मैंने तीन दिन तीन रात वहाँ काटीं।

चौथे दिन मैंने उससे विदा माँगी तो नौजवान ने हाथ जोड़ कर कहा — "ऐसा लगता है कि मैं आपकी तरफ पूरा ध्यान नहीं दे पाया इसलिये आप नाराज हो गये हैं।"

मैंने आश्चर्य से कहा — "खुदा के लिये यह तुम क्या कह रहे हो। मेहमानदारी तो केवल तीन दिन की होती है। और वे तीन दिन अब पूरे हो गये हैं। इससे ज़्यादा यहाँ रुकना ठीक नहीं है। इसके अलावा मैं तो यात्रा के लिये निकला हूँ अगर मैं केवल एक जगह पर ही रह गया तो भी यह मेरे लिये ठीक नहीं होगा। इसी लिये मैं अब यहाँ से जाना चाहता हूँ।

दूसरे तुम्हारी मेहमाननवाजी तो इतनी अच्छी थी कि मेरा दिल तुमसे बिछड़ने के लिये नहीं कर रहा।"

वह फिर बोला — "आपकी जैसी इच्छा हो वैसा कीजिये पर ज़रा ठहरिये। मैं ज़रा राजकुमारी जी से मिल कर आता हूँ और अब आप क्योंकि जा रहे हैं तो आपको यह भी मालूम होना चाहिये कि आपके सारे पहनने के कपड़े बिस्तर सोने चाँदी के बर्तन इस कमरे के सब जवाहरात जड़े बर्तन अब आपके हैं।

इनको यहॉ से ले जाने के लिये आप मुझे जो भी करने के लिये कहेंगे मैं उसका इन्तजाम कर दूँगा।"

मैंने कहा — "ऐसी बातें करना छोड़ो। मैं तो एक तीर्थयात्री हूँ न कि कोई घूमता फिरता भाट[102]। अगर मेरे मन में ज़रा सा भी लालच होता तो मैं तीर्थयात्री ही क्यों बनता। और फिर मेरी इस दुनियावी ज़िन्दगी की बुराइयॉ कैसे जातीं।"

वह मेहरबान नौजवान बोला — " अगर राजकुमारी जी ऐसा सुनेंगी तो वह तो मुझे नौकरी ही से निकाल देंगी। और अल्लाह ही जानता है कि फिर और क्या क्या सजा मुझे मिलेगी।

अगर आप इन सबको अपने साथ नहीं ले जाना चाहते तो इन सबको एक कमरे में बन्द करवा दीजिये और उसका दरवाजे पर अपनी सील लगा दीजिये। उसके बाद फिर उसका जो चाहें और जब आप चाहें तब वह कीजियेगा।"

मैं उसकी इस सलाह को भी मानने वाला नहीं था और वह भी मेरी बात को नहीं मान रहा था तो आखिर में यही तय पाया गया कि उन सबको मैंने एक कमरे में बन्द कर दिया और दरवाजे पर मैंने अपनी सील लगा दी। अब मैं बेसब्री से उससे विदा लेने का इन्तजार कर रहा था।

---

[102] Who praises others describing their forefathers, especially of kings etc.

इस बीच एक खास नौकर[103] वहाँ आया। उसके सिर पर पगड़ी थी और कमर के चारों तरफ एक छोटा सा कपड़ा लिपटा हुआ था। उसके हाथ में जवाहरातों से जड़ी हुई सोने की एक गदा थी। उसके साथ और भी बहुत सारे ऊँचे ओहदे वाले नौकर थे।

इस शानो शौकत के साथ वह खास नौकर मेरे पास आया। उसने मुझसे इतनी नम्रता और कोमलता से कहा जिसे मैं बता नहीं सकता — "जनाब। अगर आप मुझ पर मेहरबान हों तो मेहरबानी कर के मेरे घर आने की कृपा करें तो मैं बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।

अगर राजकुमारी जी को भी यह पता चला कि यहाँ एक तीर्थयात्री आया था और वह जैसे आया था वैसे ही चला गया किसी ने उसका ठीक से स्वागत नहीं किया खातिरदारी नहीं की तो मुझे पता नहीं कि वह मुझे क्या क्या सजा देंगी और वह मुझसे कितनी गुस्सा हो जायेंगी। और हाँ यह मेरी ज़िन्दगी पर भी असर डालेगा।"

मैंने उसकी इस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया पर वह जिद करता रहा और मुझसे जीत गया। वह मुझे एक और घर में ले गया जे पहले वाले घर से ज़्यादा अच्छा था। पहले मेज़बान की तरह से उसने भी मेरी उसी तरह से दिन में दो बार तीन दिन और तीन रात

[103] Translated for the word "Eunuch". I am sorry I have not used the proper word for it because of decency of the language.

तक मेहमाननवाजी की। सुबह और तीसरे पहर में फल और शर्बत भिजवाता था।

चलते समय उसने भी मुझसे यही कहा कि मैं वहाँ पर रखी हर चीज़ का मालिक था और मैं उसका वही करूँ जो मैं चाहूँ।

ऐसे अजीब सी बातें सुन कर मैं तो भौंचक्का रह गया। मैंने प्रार्थना की कि ओ खुदा मुझे इस शहर से किसी तरह बचा। खास नौकर को लगा कि मैं शायद कुछ परेशान हो रहा हूँ।

वह बोला — "ओ अल्लाह के बन्दे। जो भी आपकी इच्छाऐं हों वे आप मुझे बताऐं तो मैं उनको राजकुमारी जी को जा कर बताऊँगा।"

मैंने उससे कहा — "मैं एक तीर्थयात्री हूँ। दुनियाँ की किसी भी ऐसी चीज़ को हासिल करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है जो तुम पूरी करना चाहते हो।"

वह फिर बोला — "दुनियावी चीज़ों की इच्छा किसी का दिल नहीं छोड़ती। वह तो हमेशा बनी ही रहती है। इसी लिये किसी कवि ने ये लाइनें लिखी हैं —

मैंने साधुओं को देखा है बिना नाखून काटे हुए
मैंने दूसरों को देखा है जटाऐं रखे हुए
मैंने जोगियों को देखा है अपने कान काटे हुए
अपने शरीर पर भस्म लगाये हुए

मैंने मुनि देखे हैं जो कभी नहीं बोलते
मैंने सेवरस[104] देखे हैं अपने सिर के बाल मुँडाये हुए
मैंने लोग देखे हैं बन खंडी के जंगल में शिकार खेलते हुए
मैंने बहादुर भी देखे हैं मैंने हीरो भी देखे हैं
मैंने बहुत सारे अक्लमन्द भी देखे हैं और बेवकूफ भी देखे हैं

मैंने वे भी देखे हैं जिनको यही पता नहीं है कि उन्हें करना क्या है
अपनी खुशहाली में सब कुछ भूल कर बैठे हैं
मैंने वे भी देखे हैं जो हमेशा खुश रहे हैं
और मैंने वे भी देखे है जो जन्म से ही दुखी हैं
पर मैंने ऐसे आदमी कभी नहीं देखे जिनके मन में लालच नहीं होता

ये लाइनें सुन कर मैं बोला — "तुमने अभी जो कुछ भी कहा है वह ठीक कहा है पर मुझे वास्तव में कुछ नहीं चाहिये। पर अगर तुम मुझे इजाज़त दो तो क्या मैं एक नोट लिख सकता हूँ जिसमें मेरी इच्छाऐं लिखी होंगी और उस नोट को तुम जब राजकुमारी जी से मिलो तो उनको दे सकते हो। यह मेरे ऊपर तुम्हारा बड़ा एहसान होगा और मुझे लगेगा कि मुझे दुनियाँ का सारा खजाना मिल गया है।"

खास नौकर बोला — "मैं आपका यह काम बड़ी खुशी से कर दूँगा। इसमें तो कोई मुश्किल ही नहीं है।"

सो मैंने तुरन्त ही एक नोट लिखा जिसमें मैंने लिखा। सबसे पहले तो मैंने उसमें अल्लाह को धन्यवाद दिया। फिर यह कहते हुए

---

104 Jain mendicants

अपने हालात बताये कि “मैं अल्लाह का यह बन्दा कुछ दिन से इस शहर में आया हुआ है और आपकी सरकार से मुझे बहुत अच्छा व्यवहार और खातिरदारी मिली है।

जैसा कि मैंने आपकी सरकार में आपके लोगों से आपके बारे में सुना है तो मुझे आपको देखने की इच्छा जाग उठी है। मुझे लगता है कि वे गुण जो आपके लोगों ने आपके बारे में बताये हैं उनसे चार गुना कहीं ज़्यादा वे गुण आपमें होने चाहिये।

आपके कुलीन लोगों ने मुझे यह इजाज़त दे दी है कि मैं अपनी इच्छाओं को आपके सामने रख सकूँ इस वजह से मैं बिना किसी रस्मो रिवाज के आपके सामने अपनी इच्छाऐं रखना चाहता हूँ।

मुझे इस दुनियाँ का कोई भी खजाना नहीं चाहिये। मैं अपने देश का राजा हूँ। मेरी यहाँ इतनी मेहनत कर के इतनी दूर आने की बस एक ही वजह है। वह है आपसे मिलने की मेरी तीव्र इच्छा। वही एक उद्देश्य मुझे वहाँ से यहाँ इस तरह अकेले खींच लाया है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मेरे ऊपर यह कृपा करके मेरे दिल की इच्छा को पूरा करेंगी। उसके बाद मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा। और कोई दूसरे ऐहसान अगर आप मेरे ऊपर करना चाहें तो वे आपकी खुशी के ऊपर हैं।

पर अगर इस अभागे की यह विनती स्वीकार न हुई तो यह बन्दा इसी हालत में आप के लिये जो इसके मन में भावनाऐं हैं उनको अपने मन में दबाये हुए मुसीबतों को झेलता हुआ अपनी

बेचैन ज़िन्दगी को बर्बाद करते हुए इधर उधर घूमता रहेगा। और मजनूँ और फ़रहाद की तरह से किसी जंगल या फिर पहाड़ पर अपनी जान दे देगा।"[105]

इस तरह की इच्छाऐं लिख कर मैंने वह नोट उस खास नौकर को दे दिया। वह उसको राजकुमारी जी के पास ले गया। कुछ देर बाद ही वह लौट आया और मुझे शाही हरम[106] के दरवाजे तक ले गया।

वहॉ पहुॅच कर मैंने एक बड़ी सी उम्र वाली स्त्री को देखा। उसने बहुत सारे जवाहरात पहन रखे थे और वह एक सोने के स्टूल पर बैठी थी। बढ़िया कपड़े पहन कर बहुत सारे खास नौकर और दूसरे नौकर उसके सामने अपने हाथ अपने दूसरे कन्धे पर रखे वहॉ खड़े हुए थे।

मैंने उसको यह सोचते हुए कि यह राजकुमारी के मामलों की देखभाल करने वाली होगी और उसे एक इज़्ज़तदार स्त्री समझते हुए झुक कर सलाम किया।

उस बड़ी स्त्री ने पलट कर मेरे सलाम का जवाब दिया और बोली — "आओ बैठो। यहॉ तुम्हारा स्वागत है। सो वह तुम हो जिसने राजकुमारी जी को इतना प्यारा सा नोट लिख कर भेजा था।"

---

[105] Majnun is a mad lover of Eastern romance, who pined in vain for the cruel Laili. Farhad is equally celebrated as an unhappy amant who perished for Shirin.

[106] Harem – place to live for women only in Ottoman Empire

यह सुन कर शर्म से मैंने सिर झुका लिया और चुपचाप बैठा रहा। कुछ देर बाद वह बोली — "ओ नौजवान। राजकुमारी जी ने आपको अपना सलाम भेजा है और कहा है कि —

"मुझे शादी करने में कोई ऐतराज़ नहीं है जैसा कि आपने अपने नोट में लिखा है पर आपके राज्य के बारे में मुझे कहना यह है कि आपको इस भिखारी की हालत में देख कर आपको एक राजा सोचना और आपको राजा बनने का गर्व होना यह सब मेरी समझ से बाहर है।

इसी लिये सब लोग एक बराबर हैं हालाँकि उनमें से कुछ लोग मुहम्मद साहब को मानने वाले होने की वजह से ऊँचे हो सकते हैं। मुझे भी काफी समय से यह इच्छा है कि मैं शादी करूँ।

और क्योंकि जैसे आपकी दुनियावी सम्पत्ति में कोई रुचि नहीं है उसी तरह से अल्लाह ने मेरी रुचि भी कुछ ऐसी ही बनायी है। लेकिन एक शर्त है कि आप पहले मेरी शादी का हिस्सा[107] यानी "मेहर" यानी राजकुमारी की भेंट इकट्ठा कर लें।"

वह बड़ी उम्र वाली स्त्री ने आगे जोड़ा — "और वह मेहर है मेरा एक काम जिसे अगर आप कर सकें तो।"

[107] Translated for the wotds "Marriage Portion". The marriage portion here alluded to is "Mehar" which denotes a present made to, or a portion settled on, the wife at or before marriage.

मैं बोला — "मैं हर काम के लिये तैयार हूँ। आपके काम को पूरा करने के लिये मैं अपनी सारी सम्पत्ति और जान तक भी लगा सकता हूँ। आप मुझे बताऐं कि वह काम क्या है।"

वह स्त्री बोली — "आप यहाँ आज और कल ठहरें। मैं आपको वह काम बाद में बताऊँगी।"

मैंने खुशी से उसकी बात मान ली और उससे विदा ले कर मैं वहाँ से चला आया।

इस बीच दिन तो बीत गया और फिर आयी रात। रात को एक खास नौकर मुझे बुलाने के लिये आया और वह मुझे हरम में ले गया।

वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि वहाँ बहुत सारे कुलीन लोग अक्लमन्द लोग गुणी लोग और अल्लाह को जानने वाले संत लोग मौजूद थे। मैं भी उन सबके साथ वहाँ जा कर बैठ गया।

इस बीच खाने के लिये दस्तरख्वान बिछाया गया। मीठे और नमकीन बहुत सारे तरीके के खाने वहाँ लाये गये। उन सबने खाना शुरू कर दिया। उन्होंने मुझसे भी खाना खाने के लिये कहा तो मैंने भी उनके साथ खाना खाया।

जब खाना खत्म हो गया तब हरम के अन्दर से एक दासी आयी और बोली — "बहरावर[108] कहाँ है। उसे बुलाओ।"

---

[108] Bahrawar

जो नौकर वहाँ खड़े थे वे उसको ले कर तुरन्त ही वहाँ आ गये। वह देखने में एक बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी लग रहा था। उसकी कमर से सोने और चाँदी की कई चाभियाँ लटकी हुई थीं। मुझे सलाम कर के वह मेरे पास ही बैठ गया।

उसी दासी ने फिर कहा — "ओ बहरावर। जो कुछ तूने सुना वह सब ठीक ठीक इनको बता।"

बहरावर मेरी तरफ घूमा और बोला — "ओ दोस्त। हमारी राजकुमारी के पास हजारों दास हैं पर मैं उनका सबसे प्यारा पुश्तैनी दास हूँ। वह उनको लाखों रुपये का व्यापार करने के लिये बहुत सारा सामान ले कर अलग अलग देशों को भेजती हैं जिसको वे अपनी देखभाल में ले जाते हैं।

जब ये लोग अपने अपने उन देशों से व्यापार करके वापस आते हैं जिन जिन देशों को इन्हें भेजा गया है तब राजकुमारी जी खुद उन सबसे जहाँ जहाँ वे व्यापार करने के लिये गये थे उन उन देशों के रीति रिवाजों के बारे में पूछताछ करती हैं और उनको ध्यान से सुनती हैं।

एक बार ऐसा हुआ कि यह सबसे नीच दास व्यापार करने के लिये नीमरोज़ शहर[109] गया। यह देख कर कि वहाँ सारे लोग काले कपड़े पहने घूम रहे हैं और बराबर रो रहे हैं और आहें भर रहे हैं

---

[109] Nimroz is that part of Persia which comprehends the Provinces of Sijistan and Mikran, towards the south-east.

तो मुझे ऐसा लगा कि उनके ऊपर कोई बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ी है। मैंने बहुतों से इस माहौल की वजह पूछी पर कोई मेरे किसी सवाल का जवाब नहीं देता था।

एक दिन जैसे ही सुबह हुई शहर के सारे लोग चाहे वे छोटे थे या बड़े ऊँचे थे या नीचे गरीब थे या अमीर शहर के बाहर गये और आपस में एक मीटिंग करने लगे। वहाँ के देश का राजा भी अपने घोड़े पर सवार हो कर अपने कुलीन लोगों को साथ ले कर वहाँ पहुँचा हुआ था। उन सबने एक लाइन बना रखी थी और वे सब एक लाइन में खड़े हुए थे।

मैं भी उनके साथ ही उस अजीब दृश्य को देखने के लिये खड़ा हुआ था। क्योंकि उस तरह से खड़े होने के ढंग से मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वे वहाँ किसी का इन्तजार कर रहे थे।

करीब एक घंटे बाद एक देवदूत जैसा सुन्दर नौजवान जो करीब **15–16** साल का रहा होगा बहुत ज़ोर की आवाज करता हुआ भूरे बैल पर सवार हो कर एक हाथ में कुछ पकड़े हुए दूर से आता हुआ दिखायी दिया। वह हमारे पास आ कर खड़ा हो गया।

फिर वह बैल पर से उतर गया और नीचे पालथी मार कर बैठ[110] गया। उसके एक हाथ में घोड़े की लगाम थी और दूसरे में नंगी तलवार। एक गुलाबी रंग का सुन्दर सा नौकर उसके साथ था।

---

[110] Sitting cross-legged.

नौजवान लड़के ने उसके हाथ में कुछ दिया जिसको ले कर उसने शुरू से आखीर तक सबको दिखाया पर वह कोई ऐसी चीज़ थी जिसको जिसने भी देखा वह बहुत ज़ोर से रोया।

इस तरह उसने उस चीज़ को एक के बाद हर एक को दिखाया और हर एक को रुलाया। फिर इसको बाद वह लाइन के शुरू में चला गया और फिर अपने मालिक के पास चला गया।

जैसे ही वह उसके पास गया तो वह नौजवान उठ कर खड़ा हो गया और अपनी तलवार से उस नौकर का सिर उसके धड़ से अलग कर दिया।

अपने बैल पर चढ़ कर वह फिर से उसी दिशा में चला गया जिधर से वह आया था। वहाँ खड़े सारे लोग उसको जाते देखते रह गये। शहरी लोग सब वापस आ गये।

मुझे यह सब बहुत अजीब लगा तो मैं उत्सुकता से सबसे पूछने लगा कि यह अजीब घटना कैसी थी। इस बात की सफाई जानने के लिये मैंने उनको पैसे का लालच भी दिया, उनसे विनती भी की, उनकी चापलूसी भी की कि वह नौजवान कौन था, उसने यह काम क्यों किया, वह कहाँ से आया था और फिर कहाँ चला गया। पर कोई मुझे ज़रा सी भी बात नहीं बता रहा था। न मैं ही कुछ समझ सका।

जब मैं घर वापस आया तो मैंने इस घटना के बारे में राजकुमारी जी को बताया जो मैंने देखी थी। उस दिन से राजकुमारी जी भी

परेशान हैं। वह भी इस बात को जानने के लिये बहुत चिन्तित हैं कि उसकी वास्तविक वजह क्या है।

इसी लिये उन्होंने इसी बात का पता लगाने के लिये अपनी मेहर की यह शर्त रखी है कि जो कोई आदमी उस घटना की सच्ची कहानी पता कर के लायेगा वह उसी से शादी करेंगीं। वही उनका, उनके देश का और उनकी सारी सम्पत्ति का मालिक होगा।"

बहरावर ने अन्त में कहा — "आपने उस घटना का पूरा हाल सुन लिया। आप विचार कर लीजिये कि अगर आप उस नौजवान के बारे में सारी खबर ला सकते हैं या नहीं। अगर हॉ तो आप नीमरोज़ जाने की जल्दी से तैयारी कीजिये और नहीं तो मना कर दीजिये और घर वापस चले जाइये।"

मैंने जवाब दिया — "अगर अल्लाह मुझसे खुश हुआ तो मैं इस मामले की सारी खोज कर के राजकुमारी जी के पास जल्दी ही लौटूँगा। और अगर मेरी किस्मत ने साथ नहीं दिया तो फिर इसका कोई इलाज नहीं है। पर राजकुमारी जी को मुझसे वायदा करना होगा कि वह अपने वायदे से मुकरेंगी नहीं।

इसके अलावा अब मेरे दिल में एक बेचैन सा विचार उठ रहा है। अगर राजकुमारी जी मुझको एक बार अपने सामने बुला लें और मुझे परदे के बाहर बैठने की इजाज़त दें और मुझे अपने सामने यह विनती करने की इजाज़त दें ताकि वह उसे अपने कानों से सुन लें और उसे सुन कर अपने होठों से जवाब दें तभी मेरे दिल को शान्ति

मिलेगी। और उसके बाद में ही मैं अपने काम में सफल हो पाऊँगा।"

मेरी यह विनती दासी ने जा कर राजकुमारी को बतायी तो उसने मुझे अपने सामने लाने का हुक्म दिया। वही दासी फिर लौट कर आयी और मुझे राजकुमारी के कमरे तक ले गयी जहाँ वह बैठी हुई थी।

मैंने देखा वाह वहाँ क्या दृश्य था। वहाँ काल्मुक, तुर्किस्तान, अबिसीनिया, उज़बक, टारटरी और काशमीर की सुन्दर दास दासियाँ और हथियारबन्द सुन्दर लड़कियाँ दो लाइनों में खड़े हुए थे। सभी ने कीमती गहने पहन रखे थे और सभी अपने सीने पर अपनी एक बाँह को दूसरी बाँह पर रखे खड़े हुए थे।

ऐसे दरबार को मैं क्या कहूँ – क्या इन्द्र का दरबार? या फिर ये सब परियों के देश से आये थे। इनको देख कर मेरे दिल से एक आह सी निकल गयी और मेरा दिल धड़कने लगा। पर मैंने उसको जबरदस्ती दबा कर रखा हुआ था।

उन सबके सामने थोड़ा झुकते हुए मैं आगे बढ़ा पर मेरे पैर तो जैसे 100–100 मन[111] भारी हो गये थे। जब भी मैं किसी लड़की की तरफ देखता तो मेरा दिल उसकी तरफ बढ़ने के लिये मना करने लगता।

---

[111] A Man (or Mound) used to be of 40 Seers and was used in India and around as a weighing measure of dry material and liquid before the metric measurements were introduced in 1950. One Seer is a little less than the Kilogram or about two pounds.

कमरे के एक तरफ एक परदा लटका हुआ था और उसके पास ही जवाहरातों से जड़ा हुआ एक स्टूल रखा हुआ था। इसके अलावा वहाँ चन्दन की लकड़ी की एक कुर्सी भी रखी हुई थी।

दासी ने मुझे जवाहरातों से जड़े हुए स्टूल पर बैठने का इशारा किया तो मैं उस पर बैठ गया। वह खुद चन्दन की लकड़ी की कुरसी पर बैठ गयी। फिर वह मुझसे बोली — "अब आपको जो कुछ कहना हो वह दिल से और साफ साफ कहो।"

मैंने सबसे पहले तो राजकुमारी जी के गुणों का न्याय का और उनकी दरियादिली का बखान किया। फिर मैंने उनसे कहा — "जबसे मैं इस देश के अन्दर आया हूँ मैंने अपने हर पड़ाव पर यात्रियों के लिये रहने की जगह और बड़ी बड़ी इमारतें देखी हैं। उनमें हर तरह के नौकर चाकर और दूसरी जरूरतों के लोग उन यात्रियों की सेवा के लिये रखे हुए हैं।

मैंने यहाँ अपने हर पड़ाव पर तीन दिन गुजारे हैं और जब मैं चौथे दिन वहाँ से चलने के लिये होता हूँ तो भलमनसाहत में कोई यह नहीं कहता कि "आप जाइये।" बल्कि जो भी चीज़ और फर्नीचर मैंने वहाँ इस्तेमाल किया हुआ होता है वे उसके लिये कहते हैं कि वह सब मेरा है।

मैं उन्हें चाहे ले जाऊँ या बेच जाऊँ या फेंक जाऊँ और या फिर उन्हें अपने भविष्य में इस्तेमाल करने के लिये सोचने तक के

समय के लिये किसी कमरे में बन्द कर जाऊँ और फिर जब चाहे जब आ कर ले जाऊँ। यह सब मेरी खुशी पर है।

मैंने ऐसा ही किया पर आश्चर्य की बात तो यह है कि अगर कोई अकेला मेरे जैसा तीर्थयात्री को ऐसा स्वागत मिले तब तो हजारों यात्री आपके राज्य में आ जायेंगे और आपकी उन जगहों में रहेंगे।

और अगर हर आदमी को इसी तरह का स्वागत मिलता रहा तब तो बहुत पैसा खर्च हो जायेगा। इतना सारा पैसा आयेगा कहाँ से जहाँ से उसे इस पर खर्च किया जायेगा। और उस खर्च का नाम क्या होगा। इसके लिये तो कारूँ का खजाना[112] भी कम पड़ जायेगा।

और अगर हम राजकुमारी जी के राज्य को देखें तो साफ दिखायी देता है कि उनके राज्य की आमदनी तो इसके रसोईघर के लिये भी काफी नहीं है दूसरे खर्चों की तो बात ही छोड़ दो।

राजकुमारी जी अगर आप अपने मुँह से इस बात पर थोड़ी रोशनी डाल सकें तो शायद मेरा दिमाग कुछ शान्त हो। उसके बाद मैं नीमरोज़ चला जाऊँगा और किसी तरह वहाँ पहुँच कर उस अजीबोगरीब घटना के बारे में पूरी जानकारी ले कर आपकी सेवा में हाजिर होता हूँ।

---

[112] Treasure of Karun – like Hindus' Kuber's treasury.

अगर अल्लाह ने मेरी जान बख्श दी तो मैं राजकुमारी जी के पास लौट कर आता हूँ और अपने दिल की इच्छा पूरी करता हूँ।"

यह सुन कर राजकुमारी खुद बोली — "ओ नौजवान। अगर तुम्हारी यह इच्छा बहुत ज़्यादा है कि तुम इन हालातों को पूरी तरीके से जानो तो तुम्हें यहाँ आज और रुकना पड़ेगा। मैं तुम्हें शाम को बुलाऊँगी और अपने इस बड़े खजाने का राज़ तुम्हें बिना कुछ भी छिपाये बताऊँगी।"

इससे सन्तुष्ट हो कर मैं वहाँ से चला गया और यह सोचते हुए बड़ी बेचैनी से शाम का इन्तजार करने लगा कि कब शाम आयेगी और कब राजकुमारी के खजाने के बारे में जानने की मेरी उत्सुकता शान्त होगी।

इस बीच में एक खास नौकर कुछ ढकी हुई थालियाँ कुछ लोगों के सिर पर लदवा कर वहाँ ले कर आया और उनको मेरे सामने ला कर रख दिया और बोला — "राजकुमारी जी ने आपके लिये अपनी मेज से यह खाना भेजा है।[113] मेहरबानी कर के आप इसे खायें।" जब उसने उन थालियों को खोला तो उनमें से माँस की नशीली खुशबू मेरे दिमाग में बस गयी और मेरी तो आत्मा तक सन्तुष्ट हो गयी।

---

[113] Literally, "her own leavings." In the East it considered a very high compliment on the part of a person of rank to present his guest with the remnants of his own dish. In fact it does not mean that the Princess had sent the food from her very own plate after finishing her eating; but it means that "when she had eaten, she has sent the remaing food or dishes from her table."

मैंने खूब पेट भर कर खाया और बाकी बचा हुआ खाना मैंने राजकुमारी जी को धन्यवाद के साथ वापस भेज दिया।

आखिर जब सारे दिन का यात्री सूरज थक कर अपने घर चला गया और चॉद अपने साथियों के साथ अपने महल से बाहर निकला तब एक दासी मेरे पास आयी और बोली — “आइये राजकुमारी जी आपको बुला रही हैं।”

मैं उसके साथ चल दिया। वह मुझे राजकुमारी जी के अपने कमरे में ले गयी। वहॉ हो रही रोशनी का कुछ ऐसा असर था कि उसके सामने शबे–कद्र भी हल्की पड़ रही थी।

कीमती कालीन पर सोने के काम किये गये कपड़े चढ़े मसनद रखे हुए थे। जवाहरात जड़े हुए ब्रोकेड के कपड़े से ढके हुए तकिये भी रखे हुए थे। उन पर मोतियों की झालरें लटकी हुई थीं।

मसनदों के सामने ही जवाहरातों से जड़े हुए और उन्हीं के फूल पत्ते लगे हुए नकली पेड़ खड़े थे। वे पेड़ देखने में ऐसे लग रहे थे जैसे असली हों। वे सोने की क्यारियों में लगे हुए थे।

दॉये और बॉये हाथ को कई दास और दासियॉ हाथ जोड़े खड़े हुए थे। उनकी ऑखें नीची थीं और वे सब बड़ी इज़्ज़त से खड़े थे। गाने नाचने वाली लड़कियॉ तैयार साज़ों के साथ तैयार खड़ी थीं। यह दृश्य देख कर तो मेरी सारी इन्द्रियॉ सुन्न पड़ने लगीं।

मैंने अपने साथ आयी हुई दासी से कहा — “यहॉ तो दिन में भी इतनी खुशी का दृश्य है और रात को भी कितना शानदार दृश्य

रहता है कि हर दिन ईद का दिन होता है और हर रात शबे–बरात होती है।

इसके अलावा अगर कोई दुनियाँ भर का भी राजा हो तो इतनी शानो शौकत से नहीं रह सकता। क्या राजकुमारी जी का दरबार हमेशा ही ऐसा रहता है।"

दासी बोली — "राजकुमारी जी के दरबार में हमेशा ही ऐसी ही शानो शौकत दिखायी देती है जैसी कि आप अभी देख रहे हैं। इसमें कोई भेद नहीं होता सिवाय इसके कि कभी कभी वह अधिक बड़ा हो जाता है। आप यहाँ बैठिये। राजकुमारी जी दूसरे कमरे में हैं। मैं उन्हें जा कर बताती हूँ कि आप यहाँ बैठे हैं।"

यह कह कर दासी अन्दर चली गयी पर जल्दी ही लौट आयी। आ कर बोली "आइये। राजकुमारी के पास चलें।"

जब मैं राजकुमारी जी के कमरे में घुसा तो मैं तो आश्चर्य से दंग रह गया। मुझे तो यही पता नहीं चला कि दरवाजा कहाँ है और दीवारें कहाँ हैं क्योंकि वे सब अलैप्पो के शीशों से ढके हुए थे।

वे सब आदमी की ऊँचाई वाले थे और जिनके फ्रेमों में हीरे और मोती जड़े हुए थे। एक की परछाँई दूसरे पर पड़ रही थी जिससे ऐसा लग रहा था मानो सारा कमरा जवाहरातों से जड़ा हुआ हो।

एक तरफ को एक परदा लटका हुआ था जिसके पीछे राजकुमारी बैठी हुई थी। परदे के पास ही दासी बैठ गयी। उसने

मुझे भी बैठने के लिये कहा। फिर उसने राजकुमारी की इजाज़त से यह कहना शुरू किया —

"सुनो ओ अक्लमन्द नौजवान। इस देश का सुलतान एक बहुत ही ताकतवर राजा था। इस घर में उसके सात बेटियाँ थीं। एक दिन उसके घर में कोई त्यौहार था और उसकी सातों बेटियाँ उसके सामने बहुत बढ़िया बढ़िया कपड़े पहने खड़ी थीं। वे सब **16–16** जवाहरात पहने थीं **12–12** गहने पहने थीं और अपने बालों में हाथी दाँत पहने थीं।

उनको उस तरह खड़े देख कर राजा के दिमाग में कुछ आया और वह अपनी बेटियों से बोला — "अगर तुम्हारा पिता एक राजा न हुआ होता और तुम लोग किसी गरीब आदमी के घर पैदा हुई होतीं तब तुम्हें राजकुमारी कौन कहता। इसके लिये तुम लोग अल्लाह को धन्यवाद दो कि तुम राजकुमारी कहलाती हो। तुम्हारी सारी खुशकिस्मती मेरी ही वजह से है।"

उसकी छह बेटियों का दिमाग एक जैसा चलता था वे बोली — "योर मैजेस्टी ठीक कहते हैं। हमारी सारी खुशियाँ केवल आप ही की वजह से हैं।"

पर उसकी सातवीं बेटी जो उम्र में तो सबसे छोटी थी पर समझदारी और अक्ल में उन सबमें बड़ी थी चुपचाप खड़ी रही। उसने अपनी बहिनों की तरह से जवाब नहीं दिया क्योंकि जो वह कहना चाहती थी वह कहना ठीक नहीं था।

राजा को उसको चुपचाप खड़ी देख कर कुछ गुस्सा सा आ गया। वह उससे बोला — "बेटी तुमने कुछ नहीं कहा इसकी क्या वजह है।"

तब राजकुमारी ने अपने दोनों हाथ एक रूमाल से बाँध लिये और नम्रतापूर्वक जवाब दिया — "अगर योर मैजेस्टी से मैं अपनी जान की बख्शीश पाऊँ और अपनी बात की माफी पाऊँ तो यह दासी आपके ऊपर अपना दिल खोल सकती है।"

राजा बोले — "बोलो क्या बोलना चाहती हो।"

राजकुमारी बोली — "ओ ताकतवर राजा। आपने सुना होगा कि सच हमेशा कड़वा होता है उसकी वजह से अपनी ज़िन्दगी की परवाह न करते हुए मैं आपसे यह कहने की हिम्मत करती हूँ कि उस बड़े लिखने वाले ने जो कुछ भी मेरी किस्मत में लिख दिया है उसे कोई नहीं टाल सकता।

उसको बदलने के लिये चाहे हम अपने आप ही अपने पैर क्यों न घायल कर लें और चाहे कालीन में सिर गड़ा गड़ा कर प्रार्थना क्यों न कर लें जो कुछ भी किसी की किस्मत में लिखा हुआ है वह तो हो कर ही हेगा।

वह सारी ताकतों का मालिक जिसने आपको राजा बनाया है उसी ने मुझे भी राजकुमारी बनाया है। उसके पास अपनी इतनी ताकत है कि उसके राज्य में किसी और को कोई ताकत नहीं है। आप मेरे राजा हैं और मेरा भला करने वाले हैं।

अगर मैं आपके पैरों के नीचे की धूल का अपनी आँखों में सुरमा बना कर लगाऊँ तो वह मेरा हो जायेगा पर किस्मत तो हर एक की अपनी अपनी होती है और उसी के साथ रहती है।"

राजा उसकी यह बात सुन कर बहुत गुस्सा हुआ। उसका जवाब उसको बहुत नाखुश करने वाला था।

वह गुस्से में बोला — "तुम्हारे इतने छोटे से मुँह से इतने बड़े शब्द निकल रहे हैं। इसके लिये अब तुम्हारी यही सजा है कि तुम अपने ये सारे जवाहरात और गहने निकाल दो और हम तुम्हें एक कुरसी पर बठा कर जंगल में ऐसी जगह बिठा दें जहाँ न कोई आदमी हो न कोई आदमज़ाद। तब हम देखेंगे कि तुम्हारी किस्मत में क्या लिखा है।"

4 दूसरे दरवेश के कारनामे–समाप्त[114]

"राजा के हुक्म के अनुसार उसी दिन आधी रात को जब अँधेरा गाढ़ा हो गया तो राजकुमारी को जिसको इतने नाज़ों से पाला गया था जिसने अपने महल के अलावा और कुछ देखा नहीं था राजा के नौकर एक कूड़ा ले जाने वाली गाड़ी में बिठा कर ऐसी जगह ले गये जहाँ कोई चिड़िया भी पर नहीं मारती थी आदमी के वहाँ होने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

उन्होंने उसको वहाँ छोड़ा और लौट आये। राजकुमारी का दिल तो यह सब देख कर इतना बैठ गया कि वह तो कुछ सोच ही नहीं सकी। वह क्या थी और अब क्या हो गयी थी। उसने अल्लाह की देहरी पर अपनी प्रार्थना कहनी शुरू की —

"ओ अल्लाह तू तो इतना ताकतवर है कि तू जिस चीज़ की इच्छा करता है वह हो जाती है और जो तू चाहेगा वह तू कर सकता है। अब तू मेरे बारे में जो भी इच्छा करेगा वह हो जायेगा। जब तक मेरी साँस चल रही है तब तक मुझे तेरी कृपा का विश्वास रहेगा। मैं निराश नहीं होऊँगी।"

[114] Adventures of the Second Darwesh-Conclusion (Tale No 2) – taken from : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/03_seconddarvesh_b.html

यही सोचते सोचते वह सो गयी। सुबह हुई तो राजकुमारी की आँख खुली। आदत के अनुसार सुबह उठते ही उसने अपनी साफ सफाई के लिये पानी माँगा।

कि तभी उसको पिछली रात की याद आयी। उसने अपने मन में कहा — "तू कहाँ है और मैं किससे बोल रही हूँ।" यह सोच कर वह उठी और उसने तयम्मुम[115] की। फिर प्रार्थना की और अपने बनाने वाले को धन्यवाद दिया।

ओ नौजवान। राजकुमारी के दुखी दिल की हालत तो सोच कर ही दम घुटने लगता है। ज़रा उस भोले भाले दिल से पूछो जिसको यह महसूस हो रहा होगा। वह अल्लाह के ऊपर भरोसा कर के वहीं बैठी रही और गाती रही —

जब मेरे दाँत नहीं थे तब तूने मुझे दूध दिया
जब तूने मुझे दाँत दिये तो तूने मुझे खाना दिया
जो हवा में उड़ती चिड़ियों की परवाह करता है
धरती के सब जानवरों की देखभाल करता है वही तेरी भी देखभाल करेगा
तू क्यों दुखी होती है ओ अच्छे दिमाग वाली दुखी हो कर तुझे कुछ नहीं मिलेगा
जो बेवकूफों को अक्लमन्दों को सारी दुनियाँ को देता है
उसी तरह से वह तुझको भी देगा

और यह सच है। जब किसी चीज़ का कोई साधन नहीं रह जाता तब अल्लाह को याद किया जाता है। नहीं तो हर आदमी

[115] It is incumbent on good Mussulmans to wash the hands and face before prayers. Where water is not available, this ceremony, called Tayammum is performed by using sand instead.

अपने तरीके से अपने आपको हकीम लुकमान[116] या बू अली सीना[117] समझता है।

अब आप अल्लाह के तरीके सुनिये। इसी तरीके से तीन दिन गुजर गये। इस बीच राजकुमारी जी के मुँह में अन्न का एक दाना भी नहीं गया था।

उनका फूलों जैसा शरीर कॉटों जैसा सूखा हो गया था। उनका रंग जो कभी सुनहरा हुआ करता था अब हल्दी की तरह पीला पड़ गया था। उनका मुँह अकड़ गया था। उनकी ऑखें पथरा गयी थीं। पर अल्लाह की दुआ से उनकी सॉस अभी आ जा रही थी। और जब तक सॉस है तब तक आस है।

चौथे दिन सुबह एक साधु वहॉ आया। उसका चेहरा खिज्र[118] की तरह से रोशनी से चमक रहा था। राजकुमारी को इस हालत में देख कर वह बोला — "बेटी। हालॉकि तेरा पिता एक राजा है फिर भी ये दुख भोगने तो तेरी किस्मत में लिखे थे। अब इस साधु को तू अपना नौकर जान और हमेशा अल्लाह के बारे में सोचा कर। वह हमेशा ठीक करेगा।"

---

[116] Hakim Luqman Luqman was a wise man for whom Surah Luqman, the thirty-first sura of the Qur'an, was named. Luqman is believed to be from Ethiopia. There are many stories about Luqman in Persian, Arabic and Turkish literature.

[117] Bu 'Ali Sina is the famous Arab physician and philosopher, by medieval writers erroneously called Avicenna.

[118] Khizr or Khwaja Khizr is the name of a saint or prophet, of great notoriety among the Muhammadans. The legends respecting his origin and life are as numerous as they are absurd and contradictory. Some say he was grand Vizir to Solomon, others to Alexander the Great. They all agree, however, that he discovered the water of immortality, and that in consequence of having drunk thereof, he still lives and wanders about on the earth.

जो कुछ थोड़ा बहुत खाना साधु के थैले में पड़ा था वह उसने राजकुमारी के सामने रख दिया। उसके बाद वह राजकुमारी के लिये पानी ढूँढने चला गया। उसको एक कुँआ तो दिखायी दे गया पर उसको कहीं कोई घिर्री और बालटी नहीं दिखायी दी जिससे वह पानी निकाल सकता।

उसने एक पेड़ से कुछ पत्तियाँ तोड़ीं और उनसे एक प्याला सा बना लिया। उसके पास एक रस्सी थी सो उसने उसे प्याले में बाँध दिया और थोड़ा सा पानी कुँए से खींच लिया और राजकुमारी को दे दिया।

कुछ ही देर में वह होश में आ गयी। उसको बिना किसी सहायता के और अकेला देख कर उसे काफी तसल्ली दी और उसका दिल खुश करने की कोशिश की पर ऐसा करते समय वह खुद रो पड़ा।

राजकुमारी ने जब उसको अपने दुख से दुखी देखा और उसकी तसल्ली सुनी तो वह कुछ आराम सा महसूस करने लगी। उस दिन से उस साधु ने अपना यह नियम बना लिया कि वह सुबह को भीख माँगने जाता था और सारे दिन में उसे जो कुछ भी उसको मिलता था वह उसे ला कर राजकुमारी को दे दिया करता था।

इस तरह कुछ दिन बीत गये। एक दिन राजकुमारी ने अपने बालों में तेल लगाने की सोचा सो जैसे ही उसने अपनी चोटी खोली तो उसके बालों में से एक चमकदार मोती नीचे गिर पड़ा।

राजकुमारी ने वह मोती साधु को दे दिया और उससे कहा कि वह उसको बाजार में बेच दे और उसका पैसा ला कर उसको दे दे। उसने उसको बाजार में बेच दिया और उससे मिला पैसा ला कर राजकुमारी को दे दिया।

फिर राजकुमारी की इच्छा हुई कि वह उसी जगह अपने रहने के लिये कोई घर बनवा ले। साधु ने कहा — "बेटी तू अपने घर की नींव रखने के लिये जमीन खोद और कुछ मिट्टी इकट्ठी कर। फिर मैं कुछ पानी इकट्ठा कर के लाऊँगा उसे मिट्टी में मिलाऊँगा और फिर उससे तेरे लिये एक कमरा बनाऊँगा।"

उसकी यह सलाह सुन कर राजकुमारी ने वहाँ जमीन खोदनी शुरू की। जब वह करीब तीन फीट जमीन खोद चुकी तो लो वहाँ उसे क्या दिखायी दिया? एक बहुत बड़ा कमरा जो सोने और जवाहरातों से भरा हुआ था।

उसने उसमें से **4–5** मुट्ठी सोना निकाल लिया और उसे वहीं का वहीं बन्द कर दिया। उसने उसके ऊपर मिट्टी डाल कर उसे सपाट कर दिया। इस बीच साधु वापस आ गया।

राजकुमारी ने उससे कहा — "आप राज मजदूर ले कर आइये और कई तरह के कारीगर भी जो अपने काम में बहुत होशियार हों ताकि एक ऐसा शानदार महल बनवाया जा सके जैसा कसरा[119] का

[119] Kasra is the title of the King of Persia, hence the Greek forms Cyrus and Chosroes, and most probably the more modern forms Caesar, Kaisar, and Czar. The form Kisra used in the text is generally applied to Naushirwan.--Vide *Introduction, note 3*.

है और नीमान[120] के महल से बढ़िया हो। शहर को किले जैसा मजबूत बनवाया जाये। उसमें एक किला हो एक बागीचा हो एक कुँआ हो और एक ऐसी सराय[121] हो जिसकी सानी की कोई सराय कहीं नहीं हो।

पर सबसे पहले इस सबका कागज पर एक प्लान बनाइये और उसे मेरे पास मेरी जॉच के लिये ले कर आइये।"

साधु बहुत सारे चतुर होशियार अक्लमन्द कारीगर ले कर आया और उनको तैयार कर के रखा। राजकुमारी जी की मर्जी के अनुसार अलग अलग तरह की इमारतें बनने का काम शुरू हो गया। अलग अलग तरीके का काम सँभालने के लिये अलग अलग चतुर और भरोसे वाले लोग चुने गये।

इतनी सुन्दर इमारतों के बनने की खबर धीरे धीरे अल्लाह के साये यानी राजा के पास पहुँची। अब राजा तो राजकुमारी का अपना पिता ही था। यह खबर सुन कर वह तो आश्चर्य में पड़ गया। उसने हर एक से पूछा कि यह कौन है जिसने इतनी शानदार इमारतें बनानी शुरू की हैं।

---

[120] Ni'man, also Nu'man, the name of an ancient king of Hirat, in Arabia.

[121] Sara,e, sera,i, or caravanserai, or Sarayay are buildings for the accommodation of travellers, merchants, etc in cities, and on the great roads in Asia. Those in Upper Hindustan, built by the emperors of Dilli, are grand and costly; they are either of stone or burnt bricks. In Persia, they are mostly of bricks dried in the sun. In Upper Hindustan they are commonly sixteen to twenty miles distant from each other, which is a manzil or stage. They are generally built of a square or quadrangular form with a large open court in the centre, and contain numerous rooms for goods, men, and beasts.

अब इस बारे में किसी को कुछ पता नहीं था सो कोई भी राजा को कुछ नहीं बता सका। सबने हाथ खड़े कर के कहा — "आपके नौकरों में से किसी को नहीं पता कि ये इमारतें कौन बना रहा है।"

इस पर राजा ने अपने एक कुलीन आदमी को इस सन्देश के साथ भेजा कि "मैं ये इमारतें देखना चाहता हूँ और यह जानना चाहता हूँ कि तुम कौन से देश की राजकुमारी हो और किस परिवार की हो। क्योंकि मेरी यह इच्छा है कि मैं इन सब बातों को जानूँ।"

राजकुमारी ने जब यह सन्देश सुना तो वह अपने दिमाग में बहुत खुश हुई और जवाब में राजा को लिखा "दुनियाँ की खुशहाली की रक्षा करने वाले। योर मैजेस्टी के मेरे महल में आने की खबर सुन कर मुझे बहुत खुशी हुई। यह मेरे लिये, आपकी दासी के लिये, बहुत इज़्ज़त और शान की बात है।

यह उस जगह के लिये कितनी खुशकिस्मती की बात है जहाँ योर मैजेस्टी के कदम पड़ें और उन रहने वालों के लिये भी जिनके ऊपर आपकी खुशहाली का साया पड़े। अल्लाह करे दोनों को आपका प्यार मिलता रहे।

यह दासी आशा करती है कि कल बृहस्पतिवार को बहुत अच्छा दिन है और यह दिन मेरे लिये भी नौरोज़ के दिन[122] से भी ज़्यादा कीमती होगा। योर मैजेस्टी तो सूरज की तरह से हैं उनका बहुत बहुत स्वागत है।

---

[122] The first day of the new year, which is celebrated with great splendour and rejoicings.

आपने यहाँ आने की सोच कर हम तुच्छ कण को खुश हो कर अपनी रोशनी और अपनी शान दी है तो जो कुछ भी आपकी यह तुच्छ दासी आपको दे सकती है उसको आप स्वीकार कर के मुझे पर कृपा करें।

योर मैजेस्टी के लिये तो यह केवल मामूली मेहमानदारी होगी। इससे ज़्यादा कुछ कहना तो योर मैजेस्टी की इज़्ज़त में सीमा से आगे गुजर जाना होगा।"

जो कुलीन आदमी राजा का सन्देश ले कर आया था उसे उसने कुछ भेंटें दीं और यह सन्देश दे कर उसे विदा किया।

राजा ने राजकुमारी जी का सन्देश पढ़ा और उसको जवाब में लिखा — "हम आपका न्यौता स्वीकार करते हैं। हम जरूर आयेंगे।"

राजकुमारी ने अपने सब नौकरों को राजा के स्वागत के लिये तुरन्त ही सब जरूरी तैयारियाँ करने का हुक्म दे दिया। आनन्द मनाने के लिये भी सब इन्तजाम किये गये उसकी दावत का खास ध्यान रखा गया ताकि राजा जब आये और यह सब देखे और खाये पिये तो खुश हो जाये।

इसके अलावा जो कोई राजा के साथ आये बड़ा या छोटा उसका भी खास ख्याल रखा जाये ताकि वह भी अपने घर सन्तुष्ट हो कर जाये।

राजकुमारी जी की यह खास हिदायत थी कि हर तरह का खाना, नमकीन हो या मीठा जो भी बनाया जाये वह सब इतना स्वादिष्ट बनाया जाये कि अगर उसे कोई ब्राह्मण की बेटी चख ले तो वह भी मुसलमान हो जाये।

जब शाम हुई तो राजा राजकुमारी जी के महल गया तो वह एक बिना ढकी राजगद्दी पर बैठी हुई थी उसके पास उसकी दासियाँ खड़ी हुई थीं। वह वहाँ से उठ कर राजा का स्वागत करने गयी।

जब उसने राजा के सिंहासन की तरफ देखा तो इतनी इज़्ज़त के साथ उसको शाही सलाम किया कि राजा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि वह उसी इज़्जत से उसको राजगद्दी की तरफ भी ले गयी। उसने राजा के लिये उनका सिंहासन जवाहरात जड़ा हुआ बनवाया था।

उसने चाँदी का एक चबूतरा भी बनवाया था जो एक लाख पच्चीस हजार चाँदी के टुकड़ों से और 101 थाली भर कर जवाहरात और सोने से बनाया गया था।[123]

इसके अलावा गर्म कपड़े, शाल, मलमल, सिल्क, ब्रोकेड, दो हाथी और 10 ईराक और यमन के घोड़े जिनके साज़ सब

[123] The common mode to present large sums in specie to princely visitors, is to form a platform with the money, spread the Masnad on it, and place the visitor on the rich seat. Mr. Smith states that he had himself seen Asafu-d-Daula, the then Nawwab of Lucknow, receiving a lakh of rupees in this way from Almas, one of his eunuchs.
[My Note : Almas name is very common in Ethiopians. If this Almas was some Ethiopian, then it means that some Ethiopian was present in UP, India in those times. It is strange. If not, then who was he?]

जवाहरातों से जड़े हुए थे शाह को देने के लिये तैयार किये गये थे। सो उसने वे सब राजा को दिये और उनके सामने हाथ जोड़ कर खड़ी हो गयी।

राजा ने बहुत खुश हो कर उससे पूछा — "तुम किस देश की राजकुमारी हो और यहाँ किसलिये आयी हो?"

राजकुमारी राजा को सिर झुकाया और बोली — "यह दासी वह अपराधिनी है जिसको शाही गुस्से की वजह से जंगल भेज दिया गया था। और ये सब चीज़ें जो योर मैजेस्टी यहाँ देख रहे हैं यह सब अल्लाह का करिश्मा है।"

यह सुन कर राजा के खून ने ज़ोर मारा और वह उठ कर खड़ा हो गया और प्यार से राजकुमारी को गले लगा लिया। उसका हाथ पकड़ कर उसने उसको उस कुर्सी पर बिठाया जिसे उसने राज सिंहासन के पास रखी हुई थी।

फिर भी राजा ने जो कुछ वहाँ देखा उसे देख कर वह बहुत आश्चर्यचकित था।

फिर उसने हुक्म दिया कि उसकी रानी और उसकी दूसरी बेटियों को भी तुरन्त ही वहाँ लाया जाये। जब वे वहाँ आयीं तो वे बेटी और बहिन को देख कर पहचान गयीं। उन्होंने सबने उसको गले लगाया और उसके गले लग कर खूब रोयीं। फिर सबने अल्लाह का लाख लाख धन्यवाद दिया।

राजा ने सबको अपने पास बिठा कर साथ साथ खाना खाया जो उनके लिये तैयार किया गया था। जब तक राजा ज़िन्दा रहा समय ऐसे ही गुजरता रहा। कभी राजा राजकुमारी से मिलने के लिये आता रहा और कभी राजकुमारी को अपने साथ अपने महल ले जाता रहा।

जब राजा मर गया तो उसका राज्य इसी राजकुमारी के हाथ में आ गया क्योंकि इस राजकुमारी के अलावा कोई और दूसरा आदमी राजा बनने के लायक ही नहीं था।

ओ नौजवान। राजकुमारी का यही इतिहास है जो आपने अभी सुना। अन्त में खुदा की दी हुई सम्पत्ति कभी धोखा नहीं देती पर उसके लिये आदमी के इरादे अच्छे होने चाहिये।

खुदा की दी हुई इस दौलत में से कितना भी खर्च कर लिया जाये उतना ही बढ़ जाता है। खुदा के मामलों पर शक करना किसी भी धर्म में नहीं बताया गया है।"

दासी यह सब कह कर बोली — "क्या आप अभी भी नीमरोज़ देश जाना चाहते हैं क्या आप अभी भी यह सोचते है कि आप वहॉ से वह खबर ला सकते हैं जिसको लाने के लिये आपने भेजा जा रहा है तो आप जल्दी से चले जाइये।"

मैं बोला — "मैं अभी जाता हूॅ। अगर अल्लाह की मेहरबानी हुई तो मैं बहुत जल्दी वापस आऊॅगा।" आखीर में राजकुमारी जी

से विदा ले कर और अल्लाह पर भरोसा कर के मैं नीमरोज़ की तरफ चल दिया।

एक साल तक ठोकरें खाता हुआ और मुश्किलें झेलता हुआ मैं नीमरोज़ शहर पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि चाहे कोई कुलीन आदमी हो या मामूली आदमी हो सभी काले कपड़े पहन कर घूम रहे हैं। जो कुछ भी मैंने सुना उसे मैंने ठीक से समझा।

कुछ दिनों बाद दोयज की शाम[124] आयी तो महीने के पहले दिन शहर के सारे छोटे और बड़े लोग बच्चे और कुलीन लोग राजकुमार और स्त्रियाँ एक बड़े मैदान में इकट्ठे हुए।

मैं भी यह देख कर चकित रहा गया और कुछ बेचैनी महसूस करने लगा। मैं भी उन सबके साथ एक तीर्थयात्री के वेश में वहीं चला गया अपने देश और सम्पत्ति से अलग। यह दृश्य देखने के लिये मैं भी वहाँ खड़ा हुआ इन्तजार कर रहा था कि देखूँ कि अब मुझे वहाँ क्या देखने को मिलता है।

इतने में मुँह से झाग निकालते हुए बैल पर सवार एक नौजवान चीखते चिल्लाते गरजते जंगल की तरफ से वहाँ आ पहुँचा।

मैं दुखी था कि इस घटना को देखने के लिये जिसके लिये मैंने इतनी तकलीफें सही थीं और कितने खतरों को पार किया था केवल उसका हाल जानने के लिये मैं वहाँ आया था फिर भी मैं उस

---

[124] Chand-rat, is applied to the night on which the new moon is first visible, which night, together with the following day till sunset, constitutes the Pahli Tarikh , or ghurra, that is the first say of the lunar month.

नौजवान को देख कर भौंचक्का रह गया और आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रह गया।

उस नौजवान ने अपने रोजमर्रा के रीति रिवाज के अनुसार वही किया जो वह करता था और फिर जंगल की तरफ चला गया। और शहर वालों की भीड़ भी अपने अपने घरों को वापस चली गयी।

जब मैं होश में आया तो मैं पछताया "यह तुमने क्या किया। अब यह मौका पाने के लिये तुमको रमज़ान के महीने[125] की तरह से एक एक दिन गिन गिन कर एक महीने का इन्तजार करना पड़ेगा।

अब और कोई रास्ता नहीं था यह सोच कर मैं भी सबके साथ वहाँ से चला आया। मैंने वह महीना रमज़ान के महीने की तरह से एक एक दिन गिन गिन कर काटा। आखिर फिर अमावस्या आयी तो मुझे लगा जैसे मेरे लिये ईद आ गयी हो।

महीने के पहले दिन वहाँ का राजा और सब रहने वाले फिर से उसी मैदान में आ कर इकट्ठे हुए। उस दिन मैंने पक्का इरादा कर लिया कि जो होना है वह हो ले पर मैं इस मामले की छानबीन कर के ही रहूँगा।

अचानक वह नौजवान फिर से हर बार की तरह से अपने पीले बैल पर सवार हो कर चीखता चिल्लाता गरजता वहाँ आ पहुँचा।

[125] Ramazan is the ninth Muhammadan month, during which they keep Lent.

बैल से उतर कर वह नीचे जमीन पर बैठ गया। उसके एक हाथ में नंगी तलवार थी और दूसरे हाथ में बैल हॉकने वाला कोड़ा।

उसने बर्तन अपने नौकर को दिया उसने हमेशा की तरह से उसको सबको दिखाया और फिर वापस ले जा कर अपने मालिक को दे दिया। भीड़ उस बर्तन को देख कर रो पड़ी। नौजवान ने वह बर्तन तोड़ दिया और नौकर की गर्दन पर एक ऐसा घूँसा मारा कि उसका सिर उसके धड़ से अलग हो गया। वह खुद अपने बैल पर फिर से चढ़ा और जंगल की तरफ भाग गया।

मैंने अपनी पूरी गति से उसका पीछा किया पर शहर के रहने वालों ने मुझे मेरा हाथ पकड़ कर रोक लिया — "यह तुम क्या करने जा रहे हो? जानते बूझते तुम अपने आपको क्यों मारना चाहते हो? और अगर तुम अपनी ज़िन्दगी से इतना ही थक गये हो तो मरने के और बहुत तरीके हैं जिनसे तुम अपने आपको मार सकते हो।"

मैंने उनसे कितनी विनती की कि वे मुझे जाने दें बहुत ज़ोर भी लगाया ताकि मैं उनकी पकड़ से निकल कर भाग सकूँ पर मैं अपने आपको उनकी पकड़ से न छुड़ा सका। तीन चार आदमी मुझसे इस तरह चिपक कर खड़े हुए थे कि मुझे वहाँ से निकलने का रास्ता ही नहीं मिला। वे मुझे पकड़ कर शहर की तरफ ले गये।

मैंने एक महीना फिर से इस अशान्ति में काटा।

जब उस महीने का आखिरी दिन खत्म हो गया तो अगले दिन सुबह शहरी लोग फिर काले कपड़े पहन कर उसी मैदान की तरफ चल दिये।

पहले की तरह से मैं भी उनसे अलग रह कर अपनी सुबह की प्रार्थना के समय उठ गया और उन लोगों के जंगल तक पहुँचने से पहले ही वहाँ जा कर उसी सड़क के पास छिप गया जिससे वह नौजवान आता था। क्योंकि वहाँ से मुझे उसका पीछा करने से कोई नहीं रोक सकता था।

हर बार की तरह से वह नौजवान अपने बैल पर सवार हो कर वहाँ आया अपने वही काम किये जो वह पहले करता था बैल पर चढ़ा और वापस जाने लगा। मैंने उसका पीछा किया और बहुत ज़ोर से भागा। मैं उसके पास तक आ गया।

मेरे पैरों की आवाज से उसे पता चल गया कि कोई उसका पीछा कर रहा था। तुरन्त ही उसने अपने बैल का कोड़ा घुमाया एक बहुत ज़ोर की आवाज की और मुझे धमकी दी। मैं तभी भी नहीं रुका तो उसने अपनी तलवार खींच ली और मेरी तरफ बढ़ा।

वह मुझे मारने ही वाला था कि मैं बड़ी इज़्ज़त के साथ नीचे झुक गया और उसको सलाम किया और हाथ जोड़ कर उसके सामने चुपचाप खड़ा हो गया।

लगता था कि उसके अन्दर आदमी को समझने की ताकत थी सो उसने अपना तलवार उठाया हाथ नीचे कर के कहा — “ओ

तीर्थयात्री तुम मेरे हाथ से बेकार ही मारे जाते पर अब तुम बच गये हो। तुम्हारी उम्र भी लम्बी हो गयी है। अब तुम यहॉ से चले जाओ। तुम कहॉ जा रहे हो?"

उसके बाद उसने अपनी कमर में बॅधे फुॅदने से लटका हुआ जवाहरात जड़ा एक बड़ा चाकू निकाला और मेरी तरफ फेंक दिया और बोला — "इस समय तुम्हें देने के लिये मेरे पास कोई पैसा नहीं है। तुम यह चाकू राजा के पास ले जाओ। इससे तुम्हें जो तुम चाहोगे वह तुम्हें मिल जायेगा।"

मैं उससे इतना डर गया था कि काफी देर तक तो मेरी बोलने की हिलने की ताकत ही चली गयी। मेरा गला रुॅध गया था और मेरे पैर बहुत भारी हो गये थे।

यह कह कर वह बहादुर नौजवान फिर आगे बढ़ गया। पहले तो मैंने सोचा "जो कुछ हो रहा है वैसा ही होने दो।" पर फिर मैंने सोचा मेरी इस हालत में अभी पीछे रहना बेवकूफी होगी क्योंकि हो सकता कि अपना काम करने काम यह मौका मुझे बार बार न मिले।

इसलिये अपनी ज़िन्दगी की चिन्ता न करते हुए मैं फिर से उसके पीछे भाग लिया। वह फिर पीछे मुड़ा और उसने अपने पीछे न आने की फिर से धमकी दी और फिर मारने के लिये तैयार हो गया।

मैंने अपनी गर्दन उसके सामने कर दी और उसको हर पवित्र चीज़ की कसम देते हुए उससे कहा — "ओ फारस के आजकल के

रुस्तम।[126] मुझे इस तरह से मारो कि मेरा शरीर साफ तरीके से दो हिस्सों में बॅट जाये। कोई एक धागा भी जुड़ा न रहे। और इस तरह से मुझे अपनी इस गन्दी घूमने वाली ज़िन्दगी से आज़ाद कर दो। मैं तुम्हें अपने खून से आज़ाद करता हूॅ।"

वह बोला — "ओ राक्षस के चेहरे वाले। तू अपना खून मेरे सिर पर बेकार में ही क्यों डालता है और मुझे अपराधी बनाता है। जा चला जा जहॉ तुझे जाना हो। तुझे अपनी ज़िन्दगी में क्या तकलीफ है। यह ज़िन्दगी तेरे ऊपर बोझ क्यों है।"

जो कुछ उसने कहा मुझ पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। मैं फिर भी आगे बढ़ता ही रहा। उसने जानते बूझते हुए भी मेरी बात नहीं मानी और मैं आगे बढ़ता ही रहा।

दो कोस और आगे जाने के बाद जंगल खत्म हो गया और एक वर्गाकार इमारत आ गयी। वह नौजवान उसके दरवाजे तक गया और भयानक चीख मारी। उसका दरवाजा अपने आप खुल गया। वह उसके अन्दर चला गया और मैं बाहर ही खड़ा रह गया।

मैंने सोचा "अब मैं क्या करूॅ।"

मैं तो सोचता ही रह गया। पर कुछ ही देर में एक दास बाहर निकल कर आया और एक सन्देश ले कर आया "आइये अन्दर आइये। उन्होंने आपको अन्दर बुलाया है। शायद मृत्यु दूत[127]

---

[126] Rustam, a brave and famous hero of Persia, whose Herculean achievements are celebrated in the Shah-Nama [written by Firdosee, the Homer of Persia].

[127] Angel of Death

आपके सिर पर मॅडराना चाहता है। पता नहीं आपके ऊपर कौन सी बदकिस्मती आ पड़ी है।"

मैंने जवाब दिया — "यह तो मेरी खुशकिस्मती है।"

यह कह कर निडर हो कर मैं उस इमारत के अन्दर घुस गया और एक बागीचे में आ निकला। वह दास मुझे एक महल की तरफ ले चला जहॉ वह नौजवान एक मसनद के सहारे अकेला बैठा हुआ था। उसके सामने एक सुनार के कुछ औजार रखे हुए थे। उसने अभी अभी एक पन्ने की डाली तैयार कर के रखी हुई थी।

जब उसके उठने का समय आया तो उसके सारे दास जो उसके आस पास खड़े थे वे सब अलग अलग कमरों में जा कर छिप गये। मैं भी डर के मारे एक छोटे से कमरे में छिप गया।

नौजवान उठा उसने सारे कमरों के ताले लगाये और बाहर बागीचे के एक कोने में चला गया। वहॉ उसने अपने उस बैल को पीटना शुरू कर दिया जिस पर सवार हो कर वह उस शहर में आया करता था।

जानवर के चीखने की आवाज मेरे कानों में पड़ी तो मेरा दिल डर के मारे धड़कने लगा। पर क्योंकि मैं इस भेद को जानने के लिये ऐसे कई खतरों से जूझ चुका था सो मैंने डर से कॉपते हुए भी दरवाजा जबरदस्ती खोल दिया और एक पेड़ के तने के पीछे से खड़ा हो कर देखने लगा कि वहॉ क्या हो रहा था।

नौजवान ने वह डंडा फेंक दिया जिससे वह बैल को मार रहा था और एक कमरा खोल कर उसमें घुसा। तुरन्त ही वह उसमें से बाहर भी निकल आया और बैल की पीठ को अपने हाथ से सहलाने लगा। उसने उसका मुँह चूमा फिर उसको दाना और घास दे कर मेरे पास आया। यह देख कर मैं वहाँ से भागा और डर के मारे एक कमरे में आ कर छिप गया।



उसने आ कर सब कमरों की जंजीरें खोलीं और उसके बाद उसके सारे दास कमरों से बाहर निकल आये। उनके हाथों में एक छोटा कालीन था और हाथ धुलाने के लिये एक पानी का बर्तन और हाथ धोने के लिये एक तसला था।

हाथ मुँह धोने के बाद वह प्रार्थना के लिये खड़ा हो गया। प्रार्थना खत्म कर के उसने पुकारा — "वह तीर्थयात्री कहाँ है?"

अपना नाम सुन कर मैं कमरे से निकल कर उसकी तरफ भागा और उसके सामने जा कर खड़ा हो गया। उसने मुझे बैठने के लिये कहा तो मैंने उसको सलाम किया और बैठ गया। खाना लगाया गया। उसने उसमें से कुछ खाया और बाकी मुझे दिया। मैंने भी खाना खाया।

जब वहाँ से खाने के बर्तन हटा लिये गये तो हमने हाथ धोये। उसके बाद उसने अपने नौकरों को वहाँ से भेज दिया। अब उस कमरे में केवल हम दोनों ही रह गये। अब वह मुझसे बोला।

उसने मुझसे पूछा — "दोस्त तुमको ऐसी कौन सी परेशानी है तुम्हारे ऊपर ऐसी कौन सी आफत टूट पड़ी है कि तुम अपनी मौत ढूँढते फिर रहे हो।"

तब मैंने उसको शुरू से ले कर आखीर तक अपनी सारी कहानी बतायी और बाद में कहा — "तुम्हारी मेहरबानी से मुझे लग रहा है कि मेरी इच्छा पूरी हो जायेगी।"

मेरी यह बात सुन कर उसने एक गहरी साँस भरी और पागल सा हो कर बोला — "ओ अल्लाह तुम्हारे सिवा प्यार का दर्द और कौन जान सकता है। जिसकी फटी न पैर बिवाई वह क्या जाने पीर परायी।[128] इसका दर्द तो केवल वही जानता है जिसने प्यार को महसूस किया हो।

प्यार का दर्द तो प्यार करने वाले से पूछो
उससे नहीं जो बहाने बनाता है बल्कि उससे जो सच्चा प्रेमी है

कुछ मिनटों में जब वह कुछ होश में आया उसने फिर से एक आह भरी। उसकी आह सारे कमरे में गूँज गयी। तब मैंने महसूस कि वह भी प्यार में ऐसे ही दुखी था जैसे मैं।

जब मुझे यह पता चला तो मेरी हिम्मत कुछ बढ़ गयी। मैंने उससे कहा — "मैंने तुम्हें अपनी सारी कहानी बता दी तो मेरे ऊपर

[128] This sentence has been translated from the original written as "He whose chilblain has not yet broken out, how can he know the pains of others?"

यह मेहरबानी भी करो कि तुम मुझे अपनी ज़िन्दगी की पुरानी घटनाऐं बता दो।

फिर सबसे पहले जो कुछ भी मुझसे हो सकेगा मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम्हारे दिल की इच्छा पूरी करने के लिये मैं अपनी सारी कोशिशें लगा दूँगा।"

थोड़े में कहो तो उसको लगा कि मैं उसका सच्चा साथी था सो उसने मुझे अपनी ज़िन्दगी की घटनाऐं सुनानी शुरू कर दीं।

वह बोला — "सुनो ओ दोस्त। जिसके दिल में दर्द की आग जल रही है वह इस नीमरोज़ देश का राजकुमार है। राजा यानी मेरे पिता ने मेरे जन्म पर बहुत सारे भविष्य बताने वालों को बहुत सारे ज्योतिषियों को और कई विद्वानों को इकट्ठा किया और उनसे मेरी जन्म कुंडली बनाने के लिये कहा ताकि मेरी ज़िन्दगी में पल पल पर क्या होने वाला है यह जान सकें।

पल पल पर ही नहीं बल्कि हर घंटे हर प्रहर हर दिन हर सप्ताह हर महीने हर साल क्या हो रहा है। राजा के हुक्म से सब लोग इकट्ठा हुए।

सबने आपस में सलाह कर के अपने अपने ज्ञान का इस्तेमाल कर के मेरी जन्मपत्री बनायी और फिर उसके हिसाब से मेरी ज़िन्दगी के बारे में बताया।

उन्होंने बताया कि अल्लाह की दुआ से राजकुमार इतने शुभ मुहूर्त में पैदा हुआ है कि राज्य के मामले में वह अलैक्ज़ैन्डर[129] के बराबर होगा और न्याय करने वालों में वह नौशेरवाने आदिल की तरह होगा।

वह हर तरह के ज्ञान में होशियार होगा और भी जो वह जानना चाहेगा वह पूरी तरीके से जान लेगा। दया और दान में वह इतना बड़ा होगा कि दुनियाँ हातिम ताई और रुस्तम[130] को भूल जायेगी।

पर जब तक वह **14** साल का होगा तब तक के लिये उसके ऊपर एक खतरा है। उस समय तक अगर उसने सूरज या चाँद को देख लिया तो वह एक वहशी राक्षस बन सकता है। बहुत सारे लोगों का खून बहा सकता है। वह समाज में रह कर बेचैन हो जायेगा और जंगल में भाग जायेगा। जंगल जा कर वह चिड़ियों और जानवरों के साथ रहेगा।

इसलिये उस समय इस बात पर उसका खास रखने की जरूरत है कि वह **14** साल की उम्र तक सूरज और चाँद नहीं देखे। बल्कि यहाँ तक कि वह आसमान की तरफ भी नहीं देखे। अगर **14** साल का यह समय बिना किसी खतरे के सुरक्षित रूप से निकल जाता है तो फिर यह ज़िन्दगी भर शान्ति से खुशहाली में राज्य करेगा।

---

[129] Alexander, The Great – Ruler of Greece, born in 356 BC.

[130] Hatim Tai and Rustam

यह सुन कर राजा ने यह बागीचा बनवाया। इसमे कई तरह के कमरे बनवाये। उन्होंने मेरे लिये यह हुक्म भी दिया कि मुझे एक बन्द कमरे में बड़ा किया जाये जिसकी दीवारों पर फ़ैल्ट[131] लगी हो ताकि उसमें दिन में सूरज और रात को चॉद की एक किरन भी अन्दर न आ सके।

मेरी देखभाल के लिये एक आया थी जो मुझे अपना दूध पिला कर पालती थी। उसके अलावा और भी कई दासियॉ और नौकरानियॉ भी मेरे पास थीं जो मेरी दूसरी जरूरतों का ख्याल रखती थीं।

इस तरह से मैं इस शानदार महल में रह कर बड़ा हुआ। मेरे लिये एक पढ़ा लिखा मास्टर रखा गया जो मुझे यह सिखाता था कि जनता से कैसे व्यवहार करना है। उसने मुझे सात तरह की लिखाई के ढंग और हर विज्ञान और कला भी सिखायी।

मेरे पिता हमेशा ही मेरी देखभाल करते थे। मेरे साथ किस समय क्या हो रहा है मेरे पिता को मेरे हर हाल का हर समय पता रहता था।

मुझे लगता था कि बस मेरी भी सारी दुनियॉ वही थी। मैं अपने खिलौने और फूलों से ही खेलता रहता था। मुझे वहॉ हर तरह के बढ़िया बढ़िया खाने खाने के लिये मिलते थे – जो भी मैं चाहता मुझे वही मिल जाता।

---

[131] Felt is a kind of woolen thick cloth from which any kind of light is impossible to penetrate.

जब मैं **10** साल का हुआ तो मुझे कई तरह की विद्याऐं आ गयी थीं और मैं अब बहुत सारे काम अपने आप कर लेता था।

एक दिन उस गुम्बद के एक रोशनदान से एक अजीब किस्म का फूल प्रगट हुआ। मुझे उसे देखने में रुचि हुई तो मैं उसकी तरफ देखने लगा। जब मैं उसकी तरफ देख रहा था तो मैंने देखा कि वह तो साइज़ में बढ़ रहा है।

मैंने उसको अपने हाथ में पकड़ना चाहा। मैंने उसकी तरफ हाथ बढ़ाया तो वह ऊपर की तरफ उठ गया। यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ सो मैं उसी पर नजर जमाये रहा कि मुझे कहीं से हॅसने की आवाज सुनायी दी।

आवाज सुन कर मैंने ऊपर देखने के लिये अपना चेहरा ऊपर उठाया तो देखा कि चॉद जैसा चेहरा फ़ैल्ट का कपड़ा फाड़ कर अन्दर आ रहा है।

उसे देखने पर मेरे दिमाग और इन्द्रियों ने काम करना बन्द कर दिया। जब मैं कुछ होश में आया तो मैंने फिर ऊपर देखा तो देखा कि कुछ परियॉ अपने कन्धों पर जवाहरातों से जड़े हुए एक सिंहासन को ला रही थीं।

उस सिंहासन पर एक स्त्री बैठी हुई थी जिसके सिर पर जवाहरात जड़ा एक ताज रखा था। वह बहुत बढ़िया कपड़े पहने हुई थी। उसके एक हाथ में लाल का एक गिलास था जिसमें से वह शराब पी रही थी।

सिंहासन बहुत धीरे धीरे उतर रहा था। उतर कर वह नीचे जमीन पर बैठ गया। तब परी ने मुझे बुलाया और अपने पास अपने सिंहासन पर बिठाया। फिर उसने मुझसे प्यार दिखाते हुए मेरे होठों को चूमा। उसने मुझे गुलाबी शराब का एक गिलास पिलाया।

वह बोली — "यह आदमी की जात बहुत बेवफा है पर मेरा दिल तुझे प्यार करता है।"

जो कुछ भी वह कह रही थी वह सब इतना प्यारा और इतना अच्छा लग रहा था कि मुझे लग रहा था जैसे दुनियाँ भर का आनन्द मुझे मिल गया हो। और इस तरह मुझे लगा जैसे मैं पहली बार आनन्द की दुनियाँ में घुसा था।

उसका नतीजा मेरी यह आज की हालत है पर दुनियाँ में किसी ने ऐसा नशीला आनन्द न ही कहीं सुना होगा या न कहीं देखा होगा। उस उत्साह में हमारे दिल बिल्कुल शान्त थे हम दोनों बैठे हुए थे कि अचानक हमारा आनन्द टूट कर चूर चूर हो गया।

अब तुम उन हालात को सुनो जिसमें ऐसा हुआ। चार परियाँ आसमान से नीचे उतरीं और उन्होंने मेरी प्यारी के कान में फुसफुसा कर कुछ कहा जिसको सुन कर उसके चेहरे का रंग बदल गया।

उसने मुझसे कहा — "ओ मेरे प्यारे। मुझे तुम्हारे साथ कुछ पल बिताने में बहुत अच्छा लग रहा था। इससे मेरा दिल बहुत खुश हो रहा था। मैं इसी तरह से तुम्हारे पास बार बार आती या फिर तुम्हें अपने साथ ले जाती।

पर हमारी किस्मत हम दोनों को इस तरह से शान्ति और खुशी से एक साथ रहने की इजाज़त नहीं देती। इसलिये विदा मेरे प्यारे। अल्लाह तुम्हारी रक्षा करे।"

ये शब्द सुन कर मेरी इन्द्रियों ने तो फिर से काम करना बन्द कर दिया और मेरे हाथों के तोते उड़ गये।

मैं चिल्लाया — "ओ मेरे ऊपर जादू डालने वाली। हम दोबारा कब मिलेंगे इतने भयानक शब्द तुमने मुझसे कैसे कह दिये। अगर तुम जल्दी ही लौटोगी तभी तुम मुझे ज़िन्दा पाओगी नहीं तो तुम्हें देर से आने का अफसोस रहेगा। नहीं तो मुझे अपना नाम और पता बता कर जाओ ताकि उसके सहारे मैं तुमको ढूँढ सकूँ और तुम्हारे पास पहुँच सकूँ।"

यह सुन कर वह बोली — "अल्लाह करे कि शैतान इस बात को न सुने और तुम्हारी उम्र 120 साल की हो। अगर हम ज़िन्दा रहे तो फिर मिलेंगे। मैं जिन्न के राजा की बेटी हूँ और काफ़ पहाड़[132] पर रहती हूँ।"

यह कह कर उसने अपना सिंहासन ऊपर की तरफ उड़ा दिया। वह उसी ढंग से ऊपर उड़ गया जैसे वह नीचे आया था।

---

[132] The mountain of Qaf (or Koh-Kaf), is the celebrated abode of the jinns, parees (fairies), and divs (devis), and all the fabulous beings of oriental romance. The Muhammadans, as of yore all good Christians, believe that the Earth is a flat circular plane; and on the confines of this circle is a ring of lofty mountains extending all round, serving at once to keep folks from falling off, as well as forming a convenient habitation for the jinns, aforesaid. The mountain, (I am not certain on whose trigonometrical authority) is said to be 500 farasangs or 2000 English miles in height.

जब तक सिंहासन दिखायी देता रहा तब तक हम दोनों की ऑखें एक दूसरे को देखती रहीं। जब वह मेरी ऑखों से दूर चला गया तो मेरी हालत ऐसी हो गयी जैसे उस परी की छाया मेरे ऊपर पड़ गयी हो।

एक अजीब सी उदासी मेरे दिल पर छा गयी। मेरी सोच और समझ दोनों ने मेरा साथ छोड़ दिया। मेरी ऑखों के सामने ॲधेरा छा गया। अब मेरा मन नहीं लगता था और मेरी समझ में नहीं आता था कि मैं क्या करूॅ।

मैं बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। मेरा खाने पीने में मन नहीं लगता था। मैं अच्छे बुरे की चिन्ता भी नहीं करता था।

यह प्यार क्या क्या बुरे काम नहीं करवाता
दिल टूट जाता है और मन बेचैन हो जाता है

मेरी इस बदकिस्मती का पता मेरी आया और मास्टर को लग गया था। डर के मारे कॉपते हुए वे राजा के पास गये और उनसे कहा कि दुनियॉ के लोगों के राजकुमार की ऐसी ऐसी हालत है।

हमें नहीं पता कि कि यह घटना कैसे हो गयी। यह आफत उसके ऊपर अचानक कैसे टूट पड़ी। उसको न भूख लगती है न प्यास। न उसको नींद आती है और न आराम।”

यह दुख भरी खबर सुन कर राजा तुरन्त ही बागीचे में आये जिसमें मैं रहता था। उनके साथ वजीर अक्लमन्द लोग कुलीन लोग

ज्योतिषी डाक्टर अक्लमन्द मुल्ला भक्त लोग संत लोग आये थे। मेरी ऐसी रोती हुई हालत देख कर वह खुद भी रो पड़े और रो कर अपनी छाती से लगा लिया। उन्होंने तुरन्त ही मेरे इलाज का हुक्म दिया।

डाक्टरों ने मेरे दिल को मजबूत करने के लिये और दिमाग को ठीक करने के लिये अपने अपने नुस्खे लिखे। पवित्र मुल्लाओं ने अपनी अपनी जादू की चीज़ें बतायीं।

कुछ और लोगों ने झाड़ फूॅक वाली प्रार्थनाऐं पढ़ीं। कुछ ने मेरे लिये गंडे ताबीज़ बनाये – कुछ निगलने के लिये कुछ शरीर पर पहनने के लिये।

यह सब कर के उन्होंने मेरे ऊपर फूॅक मारनी शुरू की। ज्योतिषियों ने कहा कि "इसकी यह हालत कुछ तारों की जगह इधर उधर हो जाने की वजह से हुई है। उनकी शान्ति के लिये कुछ दान दो।

हर एक ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार सलाह दी पर मेरे अन्दर क्या चल रहा था यह तो बस मैं ही जानता था। किसी दूसरे की सहायता या दवा मेरी बदकिस्मती का कुछ नहीं कर सकती थी।

मेरा पागलपन रोज ब रोज बढ़ता जा रहा था। मेरा शरीर बिना खाने के बहुत ही कमजोर होता जा रहा था। मैं दिन रात बस चीखता रहता और आहें भरता रहता।

इसी हालत में तीन साल गुजर गये। चौथे साल में एक सौदागर जो घूमता रहता था राजा के पास आया और देश विदेश से कुछ बहुत मुश्किल से मिलने वाली चीज़ें ले कर आया। उसका बड़ी शान से स्वागत किया गया।

राजा ने उसके ऊपर बहुत मेहरबानियाँ दिखायीं। उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में पूछने के बाद राजा ने उससे पूछा — "तुमने बहुत सारे देश घूमे हैं क्या तुमने कहीं कोई बहुत बढ़िया चतुर डाक्टर देखा है या फिर उसके बारे में कहीं कुछ सुना है?"

सौदागर बोला — "ओ ताकतवर राजा। आप ठीक कहते है मैं कई देशों में घूमा हूँ। हिन्दुस्तान में गंगा नदी के बीच में एक छोटा सा पहाड़ है उस पर एक जटाधारी गोसॉई[133] रहता है। वहाँ उसने महादेव का एक बड़ा सा मन्दिर बनाया है। उसके साथ ही पूजा करने की एक बहुत बड़ी जगह भी है और एक बहुत सुन्दर बागीचा भी है।

उसी पहाड़ी टापू पर वह रहता है और उसका तरीका यह है कि हर साल शिवरात्रि के दिन वह अपने रहने की जगह से बाहर निकल कर आता है नदी में तैरता है।

नहाने के बाद जब वह अपने रहने की जगह लौट रहा होता है तो कई देशों के बीमार और दुखी लोग चाहे वे पास के हों या दूर के

[133] The Jata-dhari Gusayin is a sect of fanatic Hindu mendicants, who let their hair grow and become matted, and go almost naked.

उसके दरवाजे के पास इकट्ठा रहते हैं। यह एक बहुत बड़ी भीड़ होती है।

वह संत गोसॉई जिसे आजकल का प्लैटो[134] भी कहा जा सकता है सबका पेशाब देखता है और नब्ज़ देखता है और उसके अनुसार दवा देता है। अल्लाह ने उसे इलाज की ऐसी ताकत दी है कि उसकी दवाऐं लेने पर बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है और बीमार बहुत जल्दी ठीक हो जाता है।

यह सब मैंने अपनी ऑखों से देखा है और अल्लाह की ताकत को जाना और माना है कि अल्लाह ने कैसे कैसे आदमी पैदा किये हैं। अगर योर मैजेस्टी मुझे हुक्म दें तो मैं दुनियॉ के लोगों के राजकुमार को वहॉ ले जा सकता हूॅ और उन्हें वहॉ दिखा सकता हूॅ। मुझे पूरा भरोसा है कि राजकुमार बहुत जल्दी ठीक हो जायेंगे।

इसके अलावा यह इलाज इसलिये भी बहुत फायदेमन्द है कि क्योंकि बजाय इस कमरे की बन्द हवा में सॉस लेने के दूसरी जगहों की हवा में सॉस लेने से और वहॉ का खाना खाने से जहॉ जहॉ से भी हम गुजरेंगे राजकुमार का दिमाग खुशी से भरेगा।"

राजा को सौदागर की सलाह बहुत ठीक लगी। वह यह सुन कर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा — "शायद सौदागर के कहे

[134] Plato is supposed by the Muhammadans to have been not only a profound philosopher, but a wise physician too. In short, it is too general an idea with them, that a clever man must be a good doctor.

अनुसार यह इलाज अपना असर करेगा और मेरे बेटे के दिमाग के ऊपर जो यह बोझा है वह हट जाये।"

राजा ने अपने भरोसे का एक कुलीन आदमी जिसने दुनियॉ देखी थी और जिसकी सलाह को उसने कई मौकों पर जॉचा भी था और उस सौदागर को मेरी देखभाल का जिम्मा दे दिया। इन्होंने मेरे लिये सारा सामान जो मुझे जरूरत पड़ सकती थी इकट्ठा कर दिया।

हमको हमारे सामान के साथ कई तरह की नावों पर सवार करा कर उन्होंने हमें विदा किया। धीरे धीरे हम उस जगह की तरफ बढ़ने लगे जहॉ वह गोसॉई संत रहता था। खाने और हवा पानी के बदलाव से मेरा दिमाग कुछ बदला कुछ शान्त हुआ।

पर मेरी शान्त रहने की आदत अभी भी बनी हुई थी। मैं अक्सर रोता रहता था। उस सुन्दर परी की याद मेरे दिमाग से एक पल को भी नहीं हटी थी। अगर मैं कुछ बोलता तो बस यही लाइनें दोहराता —

मुझे नहीं मालूम कि कौन सी परी ने मुझे देखा
पर उससे पहले मेरा दिल मजबूत था शान्त था

आखिर **2–3** महीने गुजर गये। करीब करीब चार हजार बीमार और दुखी लोग उस पहाड़ पर आये हुए थे। सब लोग यही कह रहे थे कि अगर अल्लाह ने चाहा तो गोसॉई संत जल्दी ही अपने घर में

से बाहर आयेगा और हमें अपनी सलाह देगा और हम बिल्कुल ठीक हो जायेंगे।

थोड़े में कहो तो वह दिन आ गया जिस दिन वह लोगों का इलाज करता था। सुबह सुबह गोसॉई संत अपने घर में से बाहर निकला।



वह गंगा में नहाया तैरा और फिर अपने घर वापस लौटा। फिर उसने गाय के गोबर की राख अपने शरीर पर मली अपने माथे पर चन्दन का टीका लगाया अपनी लॅगोटी[135] बॉधी एक तौलिया अपने कन्धे पर लटकाया अपने बाल बॉधे मॅूछों में बल दिये खड़ाऊॅ पहनी।

उसकी शक्ल से लग रहा था कि उसको लिये दुनियॉ की किसी चीज़ की भी कोई कीमत नहीं थी। उसने लिखने के लिये एक छोटी सी नीची जवाहरात जड़ी मेज अपनी बगल में दबायी और हर बीमार आदमी को देखते हुए और उनको दवा बताते हुए वह मेरे पास आया।

जब हमारी ऑखें आपस में मिलीं तो वह मूर्ति की तरह से खड़ा रह गया। वह एक पल रुका और फिर मुझसे अन्दर आने के लिये कहा। मैं उसके साथ अन्दर चला गया। जब वह सबसे निपट लिया तो वह मुझे बागीचे में ले गया। वहॉ वह मुझे एक साफ सजे हुए

[135] Langoti is a strip of cloth to be tied around waist. See its picture above.

कमरे में ले गया और बोला — "आप यहीं ठहरिये।" और फिर अपने घर चला गया।

जब 40 दिन निकल गये तो वह मेरे पास आया। उसने मेरी हालत में पहले से सुधार पाया। वह मुस्कुराया और बोला — "आप इस बागीचे में टहल कर इसका आनन्द लें और जो फल आपको अच्छा लगे वह फल खायें।"

फिर उसने मुझे एक चीनी का बर्तन भर कर माजूँ[136] दिया और कहा "इसमें से रोज छह माशा[137] सुबह को कुछ खाने से पहले खायें।"

मैंने उसकी बात मानी। मेरे शरीर में रोज ब रोज ताकत आने लगी और मेरा दिमाग भी थोड़ा शान्त रहने लगा पर ताकतवर प्यार अभी भी जीत रहा था। वह परी अभी भी मेरी ऑखों के सामने चक्कर काटती रहती।

एक दिन मुझे दीवार में बने एक छेद में एक किताब दिखायी दी। मैंने उसे वहॉ से उठाया और देखा कि भविष्य जानने की सारी विद्या उसमें लिखी हुई थी। जैसे सुमद्र किसी कटोरे में समा गया हो। मैं उस किताब को रोज पढ़ने लगा। मैंने उस विद्या में काफी जानकारी हासिल कर ली थी। मुझे जादू की ताकत वाले काढ़ों का भी पता चल गया।

[136] Majun is the extract from the intoxicating plant called charas or bhang, a species of hemp; it is mixed with sugar and spices to render it palatable. The inebriation it produces fills the imagination with agreeable visions, and the effects are different from those of wine or spirits.

[137] About 5 grams

इस तरह से एक साल निकल गया और वही खुशी का दिन फिर आ गया जिस दिन फिर से बहुत सारे लोगों को ठीक होना था। गोसॉई फिर से अपने पूजा की मुद्रा से उठा और अपने घर से बाहर निकला।

मैंने उसको सलाम किया। उसने मुझे अपना लिखने का सामान दिया और कहा — "आओ मेरे साथ आओ।" सो मैं उसके साथ चल दिया। जब वह फाटक से बाहर निकला तो एक बहुत बड़ी भीड़ ने उसका स्वागत किया।

मुझे उसके साथ देख कर कुलीन आदमी और सौदागर उसके पैरों पर गिर पड़े और उसको बहुत दुआऐं देने लगे। उन्होंने कहा — "आप ही की मेहरबानी से कम से कम इनको इतना फायदा तो हुआ है।"

गोसॉई जी नहाने के लिये घाट[138] की तरफ गये और जैसा कि उनका तरीका था उन्होंने उसमें नहाया पूजा की और अपने घर लौटे। लौटते समय उन्होंने सब रोगियों को देखा।

अब ऐसा हुआ कि पागलों के साथ एक बहुत ही सुन्दर नौजवान खड़ा हुआ था जिससे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। उसने गोसॉई का ध्यान खींच लिया। गोसॉई ने मुझसे कहा — "इसको अपने साथ ले कर आओ।"

[138] Man-made protected place made on the bank of a river to take bath in it. In India these Ghats are very commom and popular.



बाकी सबको दवाओं के नुस्खे दे कर वह अपने प्राइवेट कमरे में गया। वहाँ उसने उस पागल नौजवान की खोपड़ी थोड़ी सी खोली और अपनी सँड़ासी से एक सैन्टीपैड पकड़ने की कोशिश की जो उसकी खोपड़ी में चल रहा था।

यह देख कर मेरे दिमाग में एक विचार आया और मैं बोला — "अगर आप इस सँड़ासी को थोड़ा सा आग में गर्म कर लेंगे और फिर उससे सैन्टीपैड को पकड़ेंगे तो उससे उसे ज़्यादा अच्छी तरह से पकड़ पायेंगे क्योंकि फिर वह अपने आप ही आपकी सँड़ासी की तरफ खिंचा चला आयेगा।

पर अगर आप इस तरह से उसको निकालने की कोशिश करेंगे तो वह खोपड़ी पर से अपनी पकड़ नहीं छोड़ेगा और मरीज की ज़िन्दगी को खतरा रहेगा।"

यह सुन कर गोसाँई आश्चर्य से मेरी तरफ देखने लगा। वह चुपचाप उठा और बिना एक शब्द बोले बाहर बागीचे के एक कोने की तरफ चला गया। वहाँ से उसने एक पेड़ पकड़ा और अपने एक लम्बे बाल का फन्दा बनाया और उसको अपने गले में डाल कर उस पेड़ से लटक गया।

मैं उसके पीछे पीछे गया भी पर जब तक मैं पहुँचा तब तक तो अफसोस वह मर गया था। मैं इस अजीब से दृश्य को देख कर बहुत दुखी हुआ। पर अब तो मैं मजबूर था। मैंने उसी हालत में उसको दफन करने का सोचा।

जैसे ही मैंने उसके शरीर को पेड़ से नीचे उतारने की कोशिश की तो उसके बालों से दो चाभियाँ नीचे गिर पड़ीं। मैंने उन दोनों चाभियों को उठा लिया और उस खजाने यानी गोसाँई के शरीर को मिट्टी में दबा दिया।

मैंने वे दोनों चाभियाँ उठायीं और उनको उसके घर में हर जगह लगा कर देखा। इत्तफाक से उन दोनों चाभियों से मैं उसके घर के दो कमरे खोल सका। मैंने देखा कि वे दोनों कमरे फर्श से ले कर छत तक जवाहरातों से भरे पड़े हैं।

एक जगह एक कमरे में एक आलमारी रखी हुई थी जो मखमल से ढकी हुई थी और उसका ताला सोने का था। मैंने उसको खोला तो मैंने देखा कि उसमें तो एक किताब रखी हुई थी उसमें बहुत अजीब अजीब से नाम लिखे हुए थे।[139]

उसमें जिनी को बुलाने का परियों को बुलाने का आत्माओं से बात करने का और उनको किस तरह काबू में किया जाये इन सबका तरीका भी लिखा हुआ था। यहाँ तक कि सूरज का ताबीज बनाने का भी।

वह खजाना देख कर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने वे सब जादू कर करके देखने शुरू कर दिये। मैंने बागीचे का दरवाजा खोला और अपने साथ आये कुलीन आदमी से और जो मेरे साथ आये थे

[139] The Ism-i Azam, or the "Most Mighty Name" [of God] is a magic spell or incantation which the acquirer can apply to wonderful purposes. God has, among the Muhammadans, ninety-nine names or epithets; the Ism-i Azam is one of the number, but it is only the initiated few who can say which of the ninety-nine it is.

उन सबसे कहा कि वे उन सब नावों को बुलवायें जो हमें ले कर आयी थीं। अब हम वापस जायेंगे।

वे सब नावें मैंने जवाहरात मसाले व्यापार करने के लिये सामान किताबें आदि से भरवायीं मैं एक छोटी नाव में चढ़ा और हम वहाँ से चल दिये।

चलते चलते जब हम अपने देश के पास पहुँचे तो यह खबर मेरे पिता के पास पहुँची तो वह अपने घोड़े पर सवार हुए और हमसे मिलने के लिये आये। बहुत प्यार से उन्होंने मुझे अपने गले लगाया। मैंने उनके पैर चूमे और कहा — "मेहरबानी कर के मुझे अपने पुराने वाले बागीचे में रहने की इजाज़त दी जाये।"

राजा बोले — "बेटे वह बागीचा तो मुझे कुछ शुभ नहीं लगता इसलिये मैंने उसको रखने से भी सोचना छोड़ दिया। वह जगह तो अब लोगों के रहने के लिये भी ठीक नहीं है। तुम किसी और जगह जा कर रहो जहाँ तुम्हारी इच्छा करे।

अच्छा हो अगर तुम कोई जगह किले में ही चुन लो और मेरी आँखों के सामने ही रहो। हम उसी में तुम्हारे लिये वैसा ही बागीचा बनवा देंगे जैसा तुम चाहोगे। तुम वहाँ उसमें अपनी इच्छा अनुसार घूम सकोगे और मन बहला सकोगे।"

मैंने किसी और जगह रहने के लिये काफी ज़ोर दे कर मना किया और जबरदस्ती उसी बागीचे को फिर से ठीक कराने के लिये कहा। उसको स्वर्ग बनाने के बाद मैं उसमें रहने चला गया।

जब मैं आराम से उस महल में रहने लगा। तब जब मुझे सुविधा हुई तब मैंने जिन्न को वश में करने के लिये 40 दिन का उपवास रखा। मैने अपने ये काम ज़िन्दा आदमियों के ऊपर करने छोड़ दिये और इनको जिन्नों की दुनियॉ तक सीमित कर लिया।

चालीस दिन पूरे हो जाने के बाद एक रात इतना भारी तूफान आया जिसमें मजबूत से मजबूत इमारतें गिर गयीं। पेड़ जड़ से उखड़ कर चारों तरफ गिर गये और परियों की एक सेना प्रगट हुई।

ऊपर से एक सिंहासन उतरा जिस पर एक शानदार आदमी बैठा हुआ था। उसने बहुत कीमती कपड़े पहने हुए थे। उसके सिर पर मोतियों का ताज था। उसको देख कर मैंने उसे बड़ी इज़्ज़त के साथ सलाम किया।

उसने मेरे सलाम का जवाब देते हुए कहा — "दोस्त तूने बेकार में ही हमें यहॉ क्यों बुलाया है। तुझे मुझसे क्या चाहिये।"

मैं बोला — "यह अभागा बहुत दिनों से आपकी बेटी के प्रेम में पड़ा है। और उसके लिये यह अभागा कहॉ कहॉ नहीं घूमा है। मैं देखने में ज़िन्दा दिखायी देता हूॅ पर मैं मरे हुए से ज़्यादा नहीं हूॅ। मैं अपनी ज़िन्दगी से थक गया हूॅ इसलिये मैंने अपनी ज़िन्दगी इस काम को करने पर जुए पर लगा दी है जो मैंने अभी अभी किया है।

अब मेरी सारी उम्मीदें केवल आपकी मेहरबानी पर ही हैं कि आप इस अभागे घूमने वाले को उबार लेंगे और मेरी ज़िन्दगी मुझे दे

देंगे यानी आप आप मुझे अपनी बेटी दे देंगे। यह काम आपके लिये एक बहुत ही पुन्य का काम होगा।"

मेरी इच्छा सुन कर उसने कहा — "आदमी मिट्टी का बना होता है और हम लोग आग से बने हुए होते हैं। इस तरह की दो चीज़ों में आपस में सम्बन्ध होना बहुत मुश्किल है।"

मैंने कसम खा कर कहा कि मैं उसको केवल देखना चाहता हूँ। और मेरा उससे कोई मतलब नहीं है। परियों का राजा फिर बोला — "आदमी के वायदे का कोई मतलब नहीं होता। वह अपना वायदा नहीं निभाता। जब उसको जरूरत होती है तब वह वायदे कर तो लेता है पर निभाते समय वह उनको याद नहीं रखता।

इसलिये मैं तेरी ही भलाई के लिये कहता हूँ कि कभी तू अगर कोई और इच्छा करे तो वह और तू दोनों मर जायें और जो कुछ हुआ है वह सब बेकार हो जाये। इसके अलावा तेरी ज़िन्दगी भी खतरे में पड़ जाये।"

यह सब सुनने के बाद भी मैंने अपनी कसमें दोहरायी और कहा जो कुछ भी हम दोनों की ज़िन्दगी को नुकसान पहुँचायेगा मैं वह काम कभी नहीं करूँगा। मैंने बस उससे यही इच्छा प्रगट की कि मैं उसको कभी कभी देखना चाहता था।

जब हम लोग ये बातें कर रहे थे तो अचानक ही वह परी जिसके बारे में हम बातें कर रहे थे वहाँ अपनी पूरी शान के साथ

सजी हुई प्रगट हो गयी। और राजा का सिंहासन वहॉ से ऊपर उठ कर चला गया।

मैंने उत्सुकता से परी को गले लगा लिया और कहा —

तुम ओ कमान जैसी भौंहों वाली क्यों मेरे घर नहीं आतीं
जिसके लिये मैंने 40 दिन का उपवास किया है

हम दोनों इस खुशी के साथ बागीचे में रहे। मैं तो डर के मारे किसी दूसरी खुशी के बारे में सोच भी नहीं सका। मैं तो अभी तक केवल उसके होठ ही चूम सका था पर मैं हमेशा उसकी सुन्दरता की तरफ देखता रहता।

वह प्यारी सी परी यह देखते हुए कि मैं अपनी कसम का कितना पक्का हूॅ अन्दर ही अन्दर बहुत आश्चर्य करती।

वह कभी कभी कहती — "प्रिय। तुम तो वाकई अपने कसम के बड़े पक्के हो। पर मैं तुम्हें अपनी दोस्ती के नाम पर तुमको एक सलाह देती हूॅ। तुम अपनी जादू वाली किताब की ठीक से देखभाल करना क्योंकि जैसे ही कभी तुम्हारा ध्यान भटका तो जिन्न लोग तुम्हारी उस किताब को चुरा लेंगे।"

मैं बोला — "मैं उसको अपनी जान से भी ज़्यादा सॅभाल कर रखॅूगा।"

और बस फिर एक दिन क्या हुआ कि एक रात को शैतान ने मुझे भटका दिया। काबू करने के शौक में मैंने अपने मन में कहा — "जो होता है होता रहे। मैं कब तक अपने आपको काबू में रखूँ।"

सो मैंने उस प्यारी सी परी को अपने गले से लगा लिया और उसके साथ कुछ पल आनन्द से बिताने की कोशिश की। कि तभी एक आवाज आयी — "मुझे वह किताब दो क्योंकि उसमें अल्लाह के नाम लिखे हुए हैं। उसका अपमान न करो।"

उस समय मैं अपनी भावनाओं में कुछ इस तरह बह रहा था कि मैंने अपने सीने से लगी हुई उस किताब को दे दिया। उस समय मुझे यह भी पता नहीं चला कि वह किताब मैंने किसको दी। और अपने प्यार के सागर में डूब गया।

मेरा यह बेवकूफी भरा व्यवहार देख कर वह सुन्दर परी बोली — अफसोस ओ स्वार्थी आदमी। तूने आज अपनी सीमा पार कर दी और मेरी चेतावनी भी नहीं सुनी।"

यह कह कर वह बेहोश हो गयी और मैंने एक जिन्न को उसके सिर के पास खड़ा देखा जिसने अपने हाथों में वह किताब पकड़ रखी थी।

मैंने उसे पकड़ने की कोशिश की और उसको पीटा भी उस किताब को उससे छीनने की भी बहुत कोशिश की पर इस बीच एक और जिन्न वहाँ प्रगट हो गया और उसके हाथ से किताब छीन कर वहाँ से भाग गया।

मैंने वे लाइनें बोलीं जो मैंने याद कर के रखी थीं सो वह जिन्न जो अभी भी मेरे पास खड़ा था एक बैल में बदल गया। पर अफसोस प्यारी परी को होश नहीं आ सका और उसकी यह बेहोशी की हालत चलती ही रही।

इससे मेरा दिमाग कुछ बदल गया। मेरी सारी खुशियाँ कड़वाहट में बदल गयीं। उस दिन से मुझे आदमी से कुछ नफरत सी हो गयी। मैं इस बागीचे के एक कोने में रहने लगा। मैंने पन्ने का यह फूलदान बनाया इसमें ये फूल सजाये।

मैं हर महीने इस आशा में उसी बैल पर सवार हो कर मैदान जाता हूँ यह फूलदान तोड़ता हूँ एक दास को मारता हूँ ताकि मैं अपने दिमाग को कुछ शान्ति दे सकूँ।

मैं चाहता हूँ कि मेरी यह दुखी ज़िन्दगी वहाँ के सब लोग देखें कि शायद वहाँ कोई आदमी मेरे ऊपर रहम खा कर मेरे लिये प्रार्थना कर दे कि मैं अपने दिल की इच्छा को फिर से पा सकूँ।

ओ मेरे दोस्त यही मेरी कहानी है जो मैंने तुम्हें सुनायी – मेरे पागलपन की दुख भरी कहानी।"

मैं उसकी कहानी सुन कर रो पड़ा। कुछ सँभलने पर बोला — "ओ राजकुमार तुमने तो सचमुच में बहुत कुछ सहा है। पर मैं अल्लाह की कसम खा कर कहता हूँ कि मैं अपनी इच्छाओं को छोड़ दूँगा और अब मैं जंगलों और पहाड़ों में तुम्हारे काम के लिये घूमूँगा

और तुम्हारी परी को पाने के लिये जो कुछ भी मुझसे हो सकेगा वह करूँगा।"

राजकुमार से यह वायदा कर के मैं वहाँ से चल दिया और पाँच साल तक रेगिस्तान में उसकी रेत छानते हुए एक पागल की तरह से घूमता रहा पर मुझे उसकी परी का कहीं पता नहीं चला।

आखिर सफलता न मिलने से निराश हो कर मैं अपने आपको खत्म करने के इरादे से जिससे मेरी कोई हड्डी पसली साबुत न बचे एक पहाड़ पर चढ़ गया और अपने आपको नीचे गिराने वाला ही था कि...

वही परदे वाला घुड़सवार वहाँ आया जिसने तुम्हें मरने से बचाया था और मुझसे बोला — "तुम यहाँ से कूद कर अपनी जान मत दो। कुछ ही दिनों में तुम्हारे दिल की इच्छाऐं पूरी होने वाली हैं।"

सो ओ पवित्र दरवेश। अब मैंने तुम्हें पा लिया है। अब मुझे पूरी आशा है कि हँसी खुशी अब हमारी किस्मत में होगी। और हम सब लोग जैसे अब दुखी हैं अब अपनी इच्छाऐं पूरी होते देख सुखी हो सकेंगे।

5 आज़ाद बख्त की कहानी–पहला भाग[140]

जब दूसरे दरवेश ने अपनी कहानी कह ली तो रात खत्म हो गयी। सुबह होने ही वाली थी। राजा आज़ाद बख्त चुपचाप अपने शाही महल की तरफ बढ़ गया। महल पहुँच कर उसने अपनी पार्थना की। फिर वह नहाने के लिये हमाम गया। लौट कर बढ़िया कपड़े पहने और दीवाने आम की तरफ चला गया।

वहॉ जा कर वह अपने सिंहासन पर बैठा और एक नौकर से बोला — "तुम जाओ और बड़ी इज़्ज़त के साथ उन चारों दरवेशों को हमारे पास ले आओ जो फलॉ फलॉ जगह ठहरे हुए हैं।"

हुक्म के अनुसार नौकर जब राजा की बतायी जगह पहुँचा तो उसने देखा कि चारों दरवेश अपना रोज का काम निपटा कर हाथ मुँह धो कर कहीं और जाने की तैयारी कर रहे हैं।

नौकर ने उनसे जा कर कहा — "जनाब। राजा साहब ने आप चारों को बुलवाया है। मेहरबानी कर के मेरे साथ चलिये।"

यह सुन कर चारों दरवेश एक दूसरे की तरफ देखने लगे फिर नौकर से कहा — "बेटा। हम अपने दिल के बादशाह खुद हैं। हमें इस दुनियॉ के राजा से क्या लेना देना।"

---

[140] The Tale of Azad Bakht-Part One (Tale No 3) – taken from : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/04_azadbakht_a.html

नौकर बोला — "ओ पवित्र लोगों। इसमें कोई नुकसान नहीं है पर अच्छा हो अगर आप चलें।"

तब चारों दरवेशों को याद आया कि मौला मुरतज़ा[141] ने उनसे क्या कहा था। लगता है अब वही उनके साथ होने जा रहा है। यह याद कर के वे बहुत खुश हुए और उस नौकर के साथ चल दिये।

जब वे किले पहुँचे तो राजा के सामने गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने राजा को आशीर्वाद दिया — "बेटा। अल्लाह करे तुम्हारे साथ सब कुछ अच्छा रहे।"

उसके बाद राजा दीवाने खास चले गये। वहाँ उन्होंने अपने दो तीन कुलीन लोगों को बुलाया फिर चारों दरवेशों को वहाँ लाने का हुक्म दिया। जब वे राजा के पास पहुँचे तो उसने उनको बिठाया और उनसे उनकी यात्रा का हाल पूछा।

उसने पूछा — "आप लोग कहाँ से आ रहे हैं और कहाँ जाने का इरादा है। आप लोग कहाँ के रहने वाले हैं।"

वे बोले — "अल्लाह करे आपकी उम्र और दौलत हमेशा बढ़ती रहे। हम लोग दरवेश हैं। हम अपना घर अपने कन्धों पर लिये घूमते हैं।

एक कहावत है कि किसी यात्री का घर वहीं होता है जहाँ वह रात को रुकता है। और जो कुछ हम लोगों ने इस दुनियाँ में देखा है वह यहाँ बताने के लिये बहुत ज्यादा है।

[141] The veiled horseman who rescued the first and second Darweshes from self-destruction.

आज़ाद बख्त ने उन्हें पूरा भरोसा दिलाया और उनको प्रोत्साहन दिया। उसने उनके लिये नाश्ता मॅगवाया और अपने सामने ही खिलवाया।

जब उनका खाना खत्म हो गया तो राजा ने उनसे कहा — "मेहरबानी कर के आप मुझे अपनी यात्रा का पूरा हाल सुनाइये। कुछ भी छिपाइये नहीं। जो भी सेवा मैं आपकी कर सकूँगा जरूर करूँगा कोई कसर नहीं छोड़ूँगा।"

दरवेश बोले — "जो कुछ हमारे साथ हुआ है हम वह आपको बताने के काबिल नहीं हैं। और न उनको सुनने से राजा को कोई आनन्द आयेगा इसलिये आप हमें माफ करें तो अच्छा है।"

तब राजा मुस्कुराया — "जब आप लोग कल अपने अपने गद्दों पर बैठ कर एक दूसरे को अपना हाल सुना रहे थे तब मैं वहीं मौजूद था। मैंने आपमें से दो दरवेशों की यात्राओं के हाल तो सुन लिये हैं। अब मेरी इच्छा यह है कि दूसरे दो दरवेश भी अपनी अपनी यात्रा का हाल बतायें।

आप मेरे ऊपर पूरा भरोसा कर के कुछ दिन मेरे साथ रुकें क्योंकि दरवेशों के पैरों की आवाज सुन कर ही बुराई भाग जाती है।"

राजा के मुँह से यह सुन कर दरवेश लोग तो डर के मारे कॉप गये। अपना सिर लटका कर वे चुप रहे। वे कुछ बोल ही नहीं पा रहे थे।

जब आज़ाद बख्त ने देखा कि डर के मारे उनकी इन्द्रियाँ ही काम नहीं कर रहीं तो उनकी इन्द्रियों में जान डालने के लिये उसने उनसे कहा — "इस दुनियाँ में कोई आदमी ऐसा नहीं है जिसके साथ कोई अजीब घटना न घटी हो।

हालाँकि मैं राजा हूँ तो भी मैंने ऐसी कुछ अजीब चीज़ें देखी हैं जो मैं सबसे पहले आप लोगों को आपका डर दूर करने लिये और भरोसे को बढ़ाने के लिये बताऊँगा। मेहरबानी कर के आप अपने दिमाग में शान्ति रख कर उसे सुनिये।

दरवेश बोले — "अल्लाह करे आपको शान्ति मिले। यह तो हम दरवेशों के लिये आपकी बड़ी मेहरबानी है। आप बतायें।"

आज़ाद बख्त ने अपनी कहानी शुरू की —

सुनो ओ यात्रियों एक राजा की कहानी
जो भी मैंने देखा या सुना वह आप सुनें
मैं आपको सब बताऊँगा शुरू से ले कर आखीर तक
आप मेरी कहानी ध्यान लगा कर सुनें

जब मेरे पिता चल बसे तो उनकी जगह मैं राजा बन गया। वो मेरी नौजवानी के दिन थे और रम का यह पूरा राज्य मेरे अधिकार में था।

एक साल ऐसा हुआ कि बदाख्शान देश[142] से एक सौदागर बहुत सारा सामान ले कर मेरे राज्य में आया। मेरे खबरियों ने मुझे खबर

---

[142] Badakhshan is a part of the grand province of Khurasan, and the city of Balkh is its metropolis, to the eastward of which is a chain of mountains celebrated for producing fine rubies.

दी कि यहाँ कोई सौदागर आया हुआ है और वैसा सौदागर वहाँ पहले कभी नहीं आया था। तो मैंने उसे बुला भेजा।

वह आया तो वह बहुत सारे देशों से वहाँ की बहुत सारी कीमती और मुश्किल से मिलने वाली चीजें ले कर आया था। वे सब सचमुच में मुझे भेंट में देने के लायक थीं। जो भी चीज़ खोल कर वह मुझे दिखाता उसकी कीमत मुझे आँकनी मुश्किल होती।



उसकी दिखाने वाली सब चीज़ों में सबसे अच्छा एक लाल था जो उसने मुझे एक डिब्बा खोल कर दिखाया। उस लाल का रंग बहुत अच्छा था बहुत चमकदार था और शक्ल सूरत और साइज़ में बिल्कुल ठीक था। तौल में वह पाँच मिस्कल[143] था।

हालाँकि मैं राजा था पर मैंने ऐसा लाल कभी नहीं देखा था और न कभी किसी और आदमी से ऐसे लाल के बारे में सुना ही था। मैंने उस लाल को स्वीकार कर लिया और सौदागर को बहुत सारी भेंटें और इज़्ज़त दीं सड़कों पर घूमने की इजाज़त दी कि कोई भी उससे सड़क पर पर टैक्स न माँगे।

सब उसके साथ प्रेम से बर्ताव करें और जहाँ भी वह जाये वहीं उसको सहायता दी जाये। उसकी सुरक्षा के लिये कुछ पहरेदार रहें।

[143] A Miskal is four and a half Maashaas; our ounce contains 24 Maashaas. As the ruby weighed five Miskals, so it weighed almost an ounce, 5 x 4.5 = 22.5 Maashaa

उसका अगर कुछ नुकसान हो तो वे उसको अपना नुकसान ही समझें कह कर मैंने उसे विदा किया।

उसने आम सभा में भी हिस्सा लिया तो उससे लगता था कि वह शाही सभाओं में बैठने लायक सब तौर तरीके जानता है। उसके बात करने का ढंग भी सुनने लायक था।

मैं अपने जवाहरातों के घर से वह लाल रोज मँगवाया करता था और जब मैं आम जनता के सामने बैठता था तो उसके सामने उसको देखता था।

एक दिन मैं दीवाने आम में बैठा हुआ था। कुलीन और औफीसर लोग सब अपनी अपनी जगह बैठे हुए थे। दूसरे राज्यों के ऐम्बैसैडर जो मुझे मेरे राजा बनने पर बधाई देने के लिये आये हुए थे वे भी सब अपनी अपनी जगह बैठे हुए थे।

मैंने उस समय अपने लाल को बुलवा भेजा। रिवाज के अनुसार मेरा जवाहरातों की देखभाल करने वाला उसे ले कर मेरे पास आ पहुँचा। मैंने उसको हाथ में लिया और उसकी बड़ाई करने लगा। फिर मैंने उसको फ्रैंक्स के ऐम्बैसैडर को देखने के लिये दे दिया।

उसको देख कर वह मुस्कुराया और कुछ मजाक सा उड़ाते हुए उसकी बड़ाई की और उसे दूसरे को दे दिया। इसी तरह से मजाक बनते बनते वह एक के बाद एक के हाथ में जाता रहा और हर आदमी उसको देख कर यही कहता रहा कि “योर मैजेस्टी की

खुशनसीबी से ही यह उनको मिला है नहीं तो आज तक किसी राजा के पास भी ऐसा रत्न नहीं था।"

उसी समय मेरे पिता के समय का वजीर जो बहुत अक्लमन्द था और मेरे नीचे था और उस समय मेरे पास ही खड़ा हुआ था उसने सिर झुका कर मुझसे कुछ कहने की इजाज़त माँगी अगर उसकी जान बख्शी जाये तो। मैंने उसको बोलने की इजाज़त दे दी।

वह बोला — "ओ ताकतवर राजा। आप राजा हैं और आपको इन राजाओं के सामने एक पत्थर की इतनी ज़्यादा तारीफ करना कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। हालाँकि इसका अपना एक अलग रंग है अपनी एक अलग क्वालिटी और वजन है फिर भी है तो यह एक पत्थर ही न।

इस समय यहाँ बहुत सारे देशों के ऐम्बैसैडर और लोग बैठे हुए हैं। जब ये लोग अपने अपने घर चले जायेंगे तब ये लोग वहाँ जा कर इस घटना को जरूर बतायेंगे।

वे कहेंगे — "यह किस तरह का राजा है जिसने कहीं से एक लाल पा लिया है और उसको इतनी शान से दिखा रहा है। वह उसको रोज मँगवाता है। फिर पहले खुद उसकी तारीफ करता है और फिर जो यहाँ मौजूद होता है उन सबको दिखाता है।"

इसके बाद जो भी राजा यह घटना सुनेगा वह भी अपने दरबार में हँसेगा।

जनाब। नायशापुर[144] में एक बहुत ही मामूली सा जौहरी रहता है उसके पास 12 लाल हैं। उसका हर लाल सात मिस्कल[145] भारी है। जिनको उसने एक कौलर पर सिल रखे हैं और उस कौलर को अपने कुत्ते की गर्दन में बाँध रखा है।"

यह सुन कर मैं बहुत गुस्सा हो गया। गुस्से में भर कर मैंने कहा इस वजीर को मार दो।

फाँसी लगाने वालों ने तुरन्त ही वजीर को उसके हाथों से पकड़ा और उसको फाँसी लगाने के लिये ले कर जा ही रहे थे कि फ्रैंक्स के राजा के ऐम्बैसैडर बड़ी नम्रता से दोनों हाथ जोड़ते हुए मेरे सामने खड़ा हो गया।

मैंने उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये।"

तो वह बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि मुझे पता होना चाहिये कि वजीर का अपराध क्या है।"

मैंने जवाब दिया — "किसी वजीर का इससे बड़ा अपराध और क्या हो सकता है कि वह झूठ बोले, खास कर के राजाओं के सामने।"

वह बोला — "पर जनाब उसका झूठ अभी तक साबित नहीं हुआ है। यह भी हो सकता है कि जो वह कह रहा हो वह सच ही

---

[144] Naishapur

[145] Seven Miskal means 7 x 4.5 Maashaa = 31.5 Maashaa – a little more thans an Ounce

हो। किसी भी आदमी को जो अपराधी न हो उसको सजा देना ठीक नहीं है।"

मैंने इसके जवाब में उससे कहा — "इस बात में कोई तर्क ही नहीं है कि एक सौदागर जो केवल अपने फायदे के लिये शहरों शहरों देशों देशों घूमता है और जो बचता है उसे इकट्ठा कर लेता है **12** लाल जिनका हर एक का वजन एक औंस से भी ज़्यादा हो अपने कुत्ते के गले में लटका ले।"

ऐम्बैसैडर ने इस बात का जवाब दिया — "अल्लाह की ताकत के आगे सब कुछ मुमकिन है। उसके साथ शायद कुछ ऐसा ही मामला हो। ऐसी मुश्किल से मिलने वाली चीज़ें अक्सर यात्रियों और सौदागरों के हाथों पड़ जाती हों क्योंकि ये दो तरह के लोग अक्सर जगह जगह जाते रहते हैं।

योर मैजैस्टी से यह प्रार्थना है कि इस समय वजीर को जेल में बन्द करवा दिया जाये। और जैसा कि आप समझते हैं अगर वह अपराधी है तो वजीर तो राजा लोगों के खबरी होते हैं इसलिये इस मामले में राजा का इस तरह से व्यवहार करना ठीक नहीं है।

जब यह साबित हो जाये कि वह ठीक बोल रहा है या झूठ तब उसको कोई भी सजा दी जा सकती है। अगर वह झूठ बोल रहा हो तो उस समय उसकी ज़िन्दगी भर की वफादारी भूली जा सकती है।

ओ ताकतवर राजा। पुराने लोगों ने जेल इसी लिये बनवा रखे थे कि जब कभी राजा या सरदार लोग बहुत गुस्से में हों तो उनका

गुस्सा ठंडा हो जाने तक अपराधी को जेल में बन्द रखा जा सके। और जब उनका गुस्सा ठंडा हो जाये और अपराधी का अपराध साबित हो जाये तभी उसको सजा मिले।

इस तरह से जजमैन्ट के दिन राजा अल्लाह को किसी भले आदमी का खून बहाने का जवाब देने से बच जायेगा।"

हालॉकि मैं वजीर को सजा देना चाहता था पर फ्रैंक्स[146] के ऐम्बैसैडर ने मुझे ऐसे ऐसे तर्क पेश किये कि फिर मैं चुप हो गया।

मैं बोला — "ठीक है जो कुछ तुम कह रहे हो मैं उन्हें मानता हूॅ और उसकी ज़िन्दगी बख्शता हूॅ पर वह जेल में बन्द रहेगा। अगर एक साल के अन्दर अन्दर उसके कहे गये शब्द सच निकले यानी कि वे लाल उसके कुत्ते के गले के कौलर में जड़े लगे निकले तो उसको छोड़ दिया जायेगा नहीं तो उसको बहुत तकलीफ के साथ मार दिया जायेगा।"

मैंने वजीर को जेल में बन्द करने के हुक्म दे दिया। यह हुक्म सुन कर ऐम्बैसैडर ने मेरी इज़्ज़त में सिर झुकाया अैर वहॉ से जाने के लिये सलाम किया।

जब यह खबर वजीर के परिवार तक पहॅुची तो वहॉ तो रोना पीटना मच गया। वह तो एक दुखी आदमी का घर बन गया। वजीर के एक बेटी थी जो **14–15** साल की थी। वह बहुत सुन्दर

---

[146] The term Farang, vulgarly Frank, was formerly applied to Christian Europe in general, with the exclusion of Russia.
[My Note : In India also these people were called "Firangee".]

थी और सब कामों में बहुत होशियार थी। लिखने पढ़ने में भी वह बहुत तेज़ थी।

वजीर उसे बहुत प्यार करता था। इतना कि उसने अपने दीवानखाने के पीछे उसके लिये एक बहुत ही शानदार महल बनवा रखा था। उसके साथ के लिये कुलीनों की बेटियॉ थीं। उसकी सेवा के लिये सुन्दर सुन्दर दासियॉ रखी हुई थीं। इस तरह से वह अपना समय हॅसी खुशी उस महल में गुजारा करती थी।

अब हुआ यह कि जिस दिन वजीर को जेल भेजा गया उस दिन वह लड़की अपनी साथिनों के साथ बैठी हुई थी और बच्चों वाले खेल खेल कर खुश हो रही थी। वह अपनी गुड़िया का ब्याह रचा रही थी।



एक छोटे से ढोल और एक तम्बूरीन के सहारे रात के पहरे की तैयारी कर रही थी। एक कढ़ाई आग पर रख कर वह मिठाई बना रही थी कि उसकी मॉ अचानक ही रोती चिल्लाती छाती पीटती घर में घुसी। उसके बाल बिखरे हुए थे वह नंगे पैर थी।

उसने अपनी बेटी के सिर पर एक थप्पड़ मारा और बोली — “काश अल्लाह ने मुझे तुझे देने के बजाय मुझे एक अन्धा बेटा दिया होता तब मेरे दिल को तसल्ली मिलती क्योंकि तब वह अपने पिता का दोस्त तो होता। उसके साथ तो खड़ा होता।”

वजीर की बेटी ने भोलेपन से पूछा — "तूने यह क्या बात कही मॉ। पर अन्धे बेटे का तू क्या करती। वह तेरे किस काम आता। जो वह करता वह मैं भी कर सकती हूँ।"

तब उसकी मॉ ने जवाब दिया — "बेटी तेरे पिता ने कहा था कि नायशापुर शहर में एक जौहरी है जिसने अपने कुत्ते के कौलर में बहुत ही मुश्किल से मिलने वाले बहुत ही कीमती **12** लाल लगा रखे हैं। राजा ने उनका विश्वास ही नहीं किया और उनको जेल में डाल दिया।

अगर आज हमारे एक बेटा होता तो किसी भी तरह से कितनी भी कोशिश कर के इस मामले की सच्चाई को साबित कर देता। राजा से माफी का हकदार हो जाता और मेरे पति को जेल से छुड़ा लाता।"

वजीर की बेटी जवाब में बोली — "मॉ हम लोग किस्मत से तो नहीं लड़ सकते। किसी भी आदमी को अगर अचानक किसी मुश्किल का सामना कर पड़ जाये तो उसको धीरज रखना चाहिये और अपनी आशा अल्लाह के ऊपर छोड़ देनी चाहिये।

वह बहुत दयालु है और किसी को बहुत समय तक मुश्किल में नहीं रखता। इसके लिये रोना धोना ठीक नहीं है। अल्लाह न करे कि हमारे दुश्मन हमारे ऑसुओं का कोई दूसरा मतलब निकाल कर राजा को बता दें। और ऐसी कहानियॉ बना कर बताने वाला हमको बदनाम करे और फिर कोई और मुसीबत खड़ी कर दे।

सो इस सबके बजाय हमको राजा की कुशलता के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। हम लोग उसके पैदायशी गुलाम हैं और वह हमारे मालिक हैं। जैसे वह हम पर गुस्सा हुए हैं वैसे ही वह हमारे ऊपर दया भी जरूर करेंगे।"

इस तरह उस समझदार लड़की ने अक्लमन्दी से अपनी मॉ को समझाया। इससे वह कुछ शान्त सी हो गयी और चुपचाप अपने महल को लौट गयी।

जब रात हो गयी तो वजीर की बेटी[147] ने अपने माने हुए पिता[148] यानी अपनी आया के पति को बुलवाया और उसके पैरों पर गिर कर उससे प्रार्थना की और रोते हुए बोली — "आज मैंने एक बीड़ा उठाया है कि मेरी मॉ ने जो मेरा अपमान किया है उसको मुझे अपने ऊपर से हटाना है ताकि मेरे पिता राजा की जेल से आज़ाद हो सकें।

अगर आप मेरे साथ चलें तो मैं नायशापुर जाना चाहती हूॅ और उस सौदागर से मिल कर यह देखना चाहती हूॅ कि उसने क्या सचमुच में **12** लाल अपने कुत्ते के गले के कौलर में सिले हुए हैं। मुझसे जितना होगा मैं अपने पिता को जेल से आज़ाद करवाने के लिये वह सब करूॅगी।"

---

[147] Later we will call her "Young Merchant" – Naujawaan Saudaagar, as she will disguise herself as a young merchant.

[148] Translated for the words "Foster Father"

पहले तो उस आदमी ने कुछ बहाने बनाये पर आखिरकार काफी कुछ कहने सुनने के बाद वह उसकी बात मान गया।

तब वजीर की बेटी बोली — "आप चुपचाप छिपा कर यात्रा की तैयारी करें। कुछ ऐसी चीज़ें खरीद लें जो राजा को भेंट में देने लायक हों। इसके अलावा जितने दासों या नौकरों की जरूरत हो वे भी इकट्ठे कर लें। पर किसी भी हालत में इस बात का किसी को पता नहीं चलना चाहिये।"

माने हुए पिता ने उसकी सब बातें मान लीं और यात्रा की जरूरी तैयारियाँ करने के लिये चला गया। जब सब सामान तैयार हो गया तो उसने उसे ऊँटों और खच्चरों पर लादा और वे दोनों यात्रा के लिये चल दिये। वजीर की बेटी ने एक आदमी की पोशाक पहन रखी थी वह भी उसके साथ चल दी।

घर में यह बात किसी को पता नहीं चली। जब सुबह हुई तब वजीर के परिवार में यह बात फैली कि वजीर की बेटी तो गायब हो गयी है और किसी को यह पता नहीं है कि वह कहाँ गयी है।

इधर तो माँ ने अफवाहों से बचने के लिये अपनी बच्ची के गायब होने की बात को छिपा लिया उधर वजीर की बेटी ने अपने आपको नौजवान सौदागर घोषित कर दिया।

आगे चलते चलते धीरे धीरे वे नायशापुर आ पहुँचे और खुशी खुशी एक सराय में जा कर ठहर गये। उन्होंने अपना सब सामान ऊँटों और खच्चरों पर से उतारा। वजीर के बेटी रात को वहीं

रही। सुबह को वह नहाने गयी और रम में रहने वालों जैसी एक कीमती पोशाक पहनी और शहर घूमने चली गयी।

चलते चलते वह चौक पहुँची और वहाँ जा कर खड़ी हो गयी जहाँ चारों सड़कें आपस में मिलती थीं। उसने एक तरफ देखा तो उसको वहाँ एक जौहरी की दूकान नजर आयी जिसमें बहुत सारे कीमती जवाहरात बेचने के लिये रखे हुए थे। उस दूकान के नौकर बहुत कीमती पोशाकें पहने वहाँ घूम रहे थे।

एक आदमी जो उनका सरदार लग रहा था और करीब करीब **50** साल का रहा होगा। उसने भी अमीर आदमियों जैसे कपड़े पहन रखे थे – जैसे छोटी बाँह वाली जैकेट और वहाँ बैठा हुआ था। उसके पास और बड़े बड़े लोग भी बैठे हुए थे। कुछ लोग स्टूलों पर बैठे थे और आपस में बात कर रहे थे।

वजीर की बेटी जिसने अपने आपको सौदागर का बेटा घोषित किया हुआ था जौहरी को देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ और यह सोचते हुए बहुत खुश हुआ कि "अल्लाह मेरी बात सच करना हो सकता है कि यही वह जौहरी हो जिसके बारे में मेरे पिता ने राजा से कहा हो। ओ अल्लाह मुझे इस मामले में रोशनी दिखा।"

ऐसा सोच कर उसने अपने इधर उधर देखा तो उसको एक और दूकान दिखायी दी जिसमें दो लोहे के पिंजरे लटक रहे थे और उनमें दो आदमी बन्द थे।

वे दोनों देखने में मजनूँ लगते थे। केवल उनकी खाल और हड्डी ही दिखायी देती थी। उनके सिर के बाल और नाखून बहुत बढ़े हुए थे। वे अपनी छाती पर हाथ बाँधे बैठे थे। दो बदसूरत हथियारबन्द नीग्रो दोनों पिंजरों के दोनों तरफ खड़े हुए था।

नौजवान सौदागर उनके इस हालत में देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसके मुँह से निकला — "अल्लाह हम पर दया करो।"

और जब उसने दूसरी तरफ देखा तो उसे उधर भी एक दूकान दिखायी दी। उस दूकान में कालीन बिछे हुए थे जिस पर एक हाथीदाँत का स्टूल रखा हुआ था जिस पर मखमल की गद्दी लगी हुई थी और उस पर बैठा था एक कुत्ता।

कुत्ते के गले में एक कौलर था जिसमें कीमती पत्थर लगे हुए थे और उसको सोने की जंजीर से बाँधा हुआ था।



दो सुन्दर नौजवान उसकी सेवा में खड़े हुए थे। एक उसके ऊपर मोरछल[149] हिला रहा था। मोरछल में सोने का डंडा लगा हुआ था जिसमें रत्न जड़े हुए थे और दूसरे के हाथ में एक कढ़ा हुआ रूमाल था जिससे वह कभी कभी कुत्ते का मुँह और पैर साफ कर देता था।

[149] Morchhals are fly-flaps, to drive away flies and mosquitoes away. They are of several types with different names. The best kind is made of the fine white long tail of the mountain cow and is called "Chanwar", the other one is made from long feathers from the peacock's tail – this is called Morchhal as it is made of peacock's feathers. The other type is the odoriferous roots of a species of grass called Khas. It gives a sweet smell too when sprinkled with water.

नौजवान सौदागर ने उसे बड़े ध्यान से देखा तो उसने देखा कि जैसा कि उसने सुना था वहाँ तो सचमुच में ही **12** बड़े बड़े लाल उसके कौलर में जड़े हुए थे। यह देख कर उसने अल्लाह की बड़ाई की और सोचने लगी "मैं किस तरह से इन लालों को राजा के पास ले कर जाऊँ और इनको उन्हें दिखा कर अपने पिता को जेल से छुड़वाऊँ।"

वह अपने ख्यालों में इतनी डूब गयी कि वह यह भूल गयी कि वह कहाँ खड़ी है। इतने में चौक के लोग और सड़कों पर चलने वाले लोग सब उसकी सुन्दरता और आकर्षण देख कर चकित रह गये और वहीं खड़े खड़े उसे देखते रह गये।

वे सब तो बस एक दूसरे से यही कहते रह गये — "हमने इतना सुन्दर और इतनी अच्छी शक्ल का आज तक कोई नहीं देखा।"

ख्वाजा यानी उस दूकान के मालिक ने भी उसको देखा तो एक दास को उसके पास भेजा कि वह उसको उसके पास ले कर आये। दास उसके पास गया और उसको अपने मालिक का सन्देश दिया कि — "अगर आप मेहरबान हों तो मेरे मालिक की इच्छा है कि आप उनसे मिल कर उनकी इज़्ज़त बढ़ायें।"

नौजवान सौदागर तो यही चाहता था सो वह बोला — "ठीक है इसमें क्या मुश्किल है।" और उसके साथ चल दिया। जैसे ही वह

ख्वाजा के पास पहुँचा और ख्वाजा ने उसे ऑख भर कर देखा तो उसके प्यार का तीर उसकी छाती में जा कर लगा।

वह उसके स्वागत के लिये अपनी जगह से उठा पर उसकी इन्द्रियाँ बिल्कुल काम नहीं कर रही थीं। नौजवान सौदागर ने भी महसूस किया कि यह सौदागर अब मेरी सुन्दरता के जाल में फँस गया है।

उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया। ख्वाजा ने नौजवान सौदागर का माथा चूमा और उसको अपने पास बैठने के लिये कहा।

उसने उससे बड़ी नर्मी से पूछा — "आप अपना और अपने पिता का नाम बतायें। आप कहाँ से आ रहे हैं और किधर जाने का इरादा रखते हैं।"

नौजवान सौदागर बोला — "यह नाचीज़ रम देश का रहने वाला है और मेरे पुरखे बहुत समय से कौन्सटैन्टीनोपिल में रहते आये हैं। मेरे पिता एक व्यापारी हैं। क्योंकि वह अब बड़ी उम्र के हो गये हैं और देश देश की यात्रा नहीं कर सकते हैं इसलिये अब उन्होंने मुझे यह काम सिखाने के लिये बाहर भेजा है।

अब तक मैंने कभी अपना कदम अपने दरवाजे से बाहर भी नहीं रखा है। यह यात्रा मैं पहली बार कर रहा हूँ। मुझमें इतनी

हिम्मत नहीं थी कि मैं समुद्री यात्रा कर सकूँ[150] इसलिये मैंने धरती पर यात्रा करना ठीक समझा।

पर आपकी तारीफ और आपका नाम तो अजामों[151] की इस जगह में इतने मशहूर हैं कि मैं तो केवल आपसे मिलने की खुशी हासिल करने के लिये ही यहाँ इतनी दूर चला आया।

अल्लाह की मेहरबानी से आज मैं आपके सामने बैठा हुआ हूँ और मैंने देखा कि आपका नाम और गुण तो जितने फैले हुए है वे तो कुछ नहीं आप तो उनसे कहीं ज़्यादा गुणी और नाम वाले हैं।

आज मेरे दिल की इच्छा पूरी हुई। अल्लाह आपको सुरक्षित रखे अब मैं यहाँ से वापस जाऊँगा।"

नौजवान सौदागर के आखिरी शब्द सुन कर जौहरी के दिमाग और इन्द्रियों ने तो काम करना बिल्कुल ही बन्द कर दिया। वह बोला — "बेटे तुम ऐसी बातें मेरे साथ मत करो। मेरे छोटे से घर में कुछ दिन मेरे साथ रहो। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे बताओ तुम्हारा सामान कहाँ है और तुम्हारे नौकर चाकर कहाँ हैं।"

नौजवान सौदागर बोला — "यात्रियों की जगह तो सराय[152] में होती है सो उन सबको सराय में छोड़ कर मैं आपसे मिलने आया हूँ।"

---

150 The city of Naishapur being some 270 miles inland, it would not be easy for the young merchant to reach it by sea. Asiatic story-tellers are not at all particular in regard to matters of geography.

151 Ajam means, in general, Persia; the Arabs use it in the same sense as the Greeks did the word "barbarian;" and all who are not Arabs they call 'Ajami; more especially the Persians.

152 Sarae, serai, or caravanserai, or Saraay are buildings for the accommodation of travellers, merchants, etc in cities, and on the great roads in Asia. Those in Upper Hindustan, built by the

ख्वाजा बोला — "नहीं नहीं यह ठीक नहीं लगता कि तुम्हारे जैसा कोई आदमी सराय में ठहरे। आखिर इस शहर में मेरी अपनी भी तो कोई इज़्ज़त है। लोग मुझे बहुत मानते हैं। तुम अपना सब सामान तुरन्त मँगवा लो। मैं तुम्हारे सामान रखने के लिये एक घर ठीक करा देता हूँ।

मैं भी देखना चाहता हूँ कि तुम क्या क्या सामान ले कर आये हो। मैं उनके बेचने का कुछ इस तरह से इन्तजाम कर दूँगा कि तुम्हें उनको बेच कर ज़्यादा से ज़्यादा फायदा हो सके।

इसके अलावा तुमको भी आराम और शान्ति मिलेगी और तुम थकान से भी बच जाओगे। अगर तुम मेरे घर रहोगे तो मैं तुम्हारा बड़ा एहसानमन्द होऊँगा।"

नौजवान सौदागर ने पहले तो कुछ बहाने बनाये पर ख्वाजा ने उसका कोई बहाना नहीं सुना। उसने अपने नौकरों को फिर से हुक्म दिया कि वे उसका सारा सामान सराय से जा कर तुरन्त ले आयें और उस सबको फलॉ फलॉ जगह रख दें।

नौजवान सौदागर ने अपना भी एक आदमी भेजा जो उसका सामान वहॉ से लेता आता। शाम होने तक वह खुद ख्वाजा के पास ही रहा। जब बाजार का काम खत्म होने वाला हो गया तब दूकान बन्द कर दी गयी और ख्वाजा अपने घर की तरफ जाने लगा।

---

emperors of Dilli, are grand and costly; they are either of stone or burnt bricks. In Persia, they are mostly of bricks dried in the sun. In Upper Hindustan they are commonly 16 to 20 miles distant from each other, which is a manzil or stage. They are generally built of a square or quadrangular form with a large open court in the centre, and contain numerous rooms for goods, men, and beasts.

उसी समय कुत्ते के पास जो दो नौकर खड़े थे उनमें से एक ने कुत्ते को अपनी बगल में दबाया और दूसरे ने स्टूल और कालीन उठाया।

दूसरे दो नीग्रों ने दोनों पिंजरों को अपने नौकरों के ऊपर लदवाया और खुद ने अपने अपने पाँचों हथियार उठाये और उनके साथ साथ चले। ख्वाजा ने नौजवान सौदागर का हाथ अपने हाथ में पकड़ा और उससे बात करते हुए अपने घर तक पहुँच गया।

नौजवान सौदागर ने देखा कि ख्वाजा का घर तो बड़ा शानदार है, इतना शानदार कि वह तो राजाओं के रहने लायक है। एक छोटी सी नदी के किनारे कालीन बिछे हुए थे। ख्वाजा और नौजवान दोनों वहाँ जा कर बैठ गये।

ख्वाजा ने बिना किसी रस्मोरिवाज के नौजवान सौदागर को कुछ वाइन पेश की। दोनों ने पीना शुरू किया। जब वे दोनों खूब मस्त हो गये तब ख्वाजा ने खाना मँगवाया। दोनों के सामने दस्तरख्वान बिछाया गया और उस पर खाने की बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें परोसी गयीं।

सबसे पहले उन्होंने एक तश्तरी में माँस रखा फिर उसको सोने के वर्क से ढकने के बाद वे उसको उस कुत्ते के पास ले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने उसको एक कढ़ाई की गये दस्तरख्वान पर रखा।

कुत्ता अपने स्टूल से उतरा और जितना उसे खाना था उतना उसने खाया। फिर सोने के कटोरे से उसने पानी पिया और वापस जा कर अपने स्टूल पर बैठ गया।

नौकरों ने रूमाल से उसका मुँह पोंछा और उसके पैर पोंछे फिर उन दोनों बर्तनों को यानी प्लेट और कटोरे को दोनों कैदियों के पास ले गये। ख्वाजा से उन्होंने उन दोनों पिंजरों के खोलने के लिये चाभियाँ माँग कर पिंजरे खोले। पिंजरे में बन्द दोनों आदमियों को निकाला। पहले तो उनको डंडियों से खूब मारा फिर उनको वही खाना पानी खाने पीने के लिये दिया जो कुत्ते की जूठन बची थी।

खाना खिलाने के बाद उन्होंने फिर से उन दोनों आदमियों को उन्हीं पिंजरों में बन्द कर दिया और चाभियाँ ला कर मालिक को दे दीं।

जब यह सब खत्म हो गया तो ख्वाजा दस्तरख्वान पर आ कर खुद खाना खाने बैठ गया। नौजवान सौदागर को यह सब देखने में अच्छा नहीं लग रहा था। उससे तो खाना छुआ भी नहीं गया। ख्वाजा ने उससे कितना कहा पर वह उस खाने को हाथ भी नहीं लगा सका।

जब ख्वाजा ने उससे इस बात की वजह पूछी — "तुम खाना क्यों नहीं खा रहे।"

तो वह बोला — "मुझे आपका यह व्यवहार बहुत ही बेइज़्ज़ती वाला लगा क्योंकि इन्सान अल्लाह के बनाये हुए प्राणियों में सबसे

अच्छा प्राणी है और कुत्ता तो सबसे खराब ही माना जाता है। तो आप ज़रा मुझे यह बताइये कि सबसे खराब प्राणी की जूठन सबसे अच्छे प्राणी को खिलाना किस धर्म में लिखा है।

क्या आप केवल यह सोच कर ही सन्तुष्ट नहीं हैं कि दोनों ही आपके बन्दी हैं नहीं तो वे और आप बराबर हैं। यह देख कर मुझे शक होता है कि आप मुसलमान हैं। कौन जानता है कि आप क्या हैं। शायद आप कुत्ते की पूजा करते हैं।

जब तक मेरा शक दूर नहीं हो जाता मुझे आपके घर का खाना खाने में नफरत होती है।"

ख्वाजा बोला — "मेरे बेटे। तुम जो कह रहे हो उससे मैं इसलिये राजी नहीं हूँ क्योंकि इस शहर के रहने वालों ने मेरा नाम कुत्ते की पूजा करने वाला रख दिया है। और वे मुझे पुकारते भी इसी नाम से हैं। उन्होंने बाहर भी मेरा यही नाम फैला रखा है। पर अल्लाह उन अपवित्रों और बेवफाओं का बुरा करे।"

यह कह कर ख्वाजा ने दोबारा कलमा पढ़ा और नौजवान सौदागर के दिमाग को तसल्ली दी। तब नौजवान सौदागर बोला — "अगर आप दिल से मुसलमान हैं तो मेहरबानी कर के मुझे बताइये कि इस सबसे आपका क्या मतलब है और इस तरह का काम कर के आप क्यों बदनाम होते हैं।"

ख्वाजा जवाब में बोला — "मेरा नाम समाज से निकाला हुआ है। मैं इस शहर में दोगुना टैक्स केवल इसलिये देता हूँ ताकि मेरे इस नीच व्यवहार की वजह का लोगों को पता न चले।

यह एक बड़ा अजीब सा मामला है जिसे जो कोई भी कहता है या सुनता है तो बड़े दुख से कहता सुनता है। तुमको भी इसी तरह से मुझे इस बात को बताने के लिये माफ कर देना चाहिये नहीं तो मैं तुम्हें उसे नहीं बता पाऊँगा। न तुम शान्त दिमाग से सुन पाओगे।"

नौजवान सौदागर ने अपने मन में सोचा "मुझे क्या मुझे तो अपने काम से काम रखना है तो मैं क्यों उसको आगे इस बात के लिये जिद करूँ कि वह मुझे इस बात को सुनाये ही सुनाये।"

इसलिये उसने ख्वाजा से कहा — "अगर आप बताना ठीक नहीं समझते तो आप मुझे उसे न बतायें।"

फिर उसने खाना खाना शुरू कर दिया। उसने पहला कौर उठाया और खाना शुरू कर दिया।

इस तरह नौजवान सौदागर को वहाँ रहते दो महीने बीत गये। वह वहाँ कुछ इस तरीके से रहा कि किसी को यह पता नहीं चला कि वह लड़की है। सबने यही सोचा कि वह एक लड़का है।

इस बीच ख्वाजा का प्यार नौजवान सौदागर के लिये दिनों दिन बढ़ता ही गया। इस प्यार की वजह से वह उसको अपनी नजर के सामने से एक पल को भी दूर नहीं होने देता था।

एक बार दोनों पी रहे थे तो नौजवान सौदागर रो पड़ा। यह देख कर ख्वाजा ने उसको तसल्ली दी और अपने रूमाल से उसके आँसू पोंछने की कोशिश करने लगा। उसने उससे उसके रोने की वजह भी पूछी।

वह बोला — "ओ अब्बा। मैं आपको क्या बताऊँ। काश मैं आपसे न मिला होता और आपने मेरे साथ इतनी मेहरबानी न दिखायी होती जो आप मेरे साथ दिखा रहे हैं।

मैं इस समय में दो मुश्किलों में फँसा हुआ हूँ। पहली बात तो यह है कि मेरा दिल यहाँ से जाने के लिये नहीं करता और दूसरी बात यह कि मैं यहाँ रह भी नहीं सकता। अब मुझे यहाँ से जाना ही होगा पर आपसे बिछड़ने के बाद मुझे अपनी ज़िन्दगी की आशा नहीं है।"

नौजवान सौदागर के ये शब्द सुन कर ख्वाजा तो इतनी ज़ोर से रो पड़ा कि उसका गला रुँध गया। पल दो पल बाद वह जब सँभला तब बोला — "ओ मेरी आँखों की रोशनी। क्या तुम अपने पुराने दोस्त से इतना थक गये हो कि उसे दुखी छोड़ कर जाना चाहते हो। यहाँ से जाने का तो विचार ही छोड़ दो। जब तक मैं ज़िन्दा हूँ तब तक तुम मेरे पास ही रहो।

मैं तो तुम्हारे बिना किसी भी तरह एक दिन भी नहीं रह पाऊँगा। अपना समय आने से पहले ही मर जाऊँगा। फारस के इस

राज्य की जलवायु बहुत अच्छी है उसमें तुम खूब तन्दुरुस्त रह पाओगे।

इससे अच्छा तो यह है कि तुम अपने एक निजी नौकर को भेज कर अपना माता पिता और सामान सबको बुलवा लो। इस काम के लिये मैं तुम्हें जो कुछ भी सामान गाड़ियॉ आदि चाहिये वह मैं सब तुम्हें दे दूॅगा। जब तुम्हारे माता पिता और सामान यहॉ आ जाये तब तुम यहॉ से अपना काम सॅभाल लेना।

मैं भी अपनी ज़िन्दगी में बहुत मुश्किलों से गुजरा हूॅ बहुत देशों में घूमा हूॅ। मैं अब बूढ़ा भी हो गया हूॅ और मेरे कोई बच्चा नहीं है। मैं तुम्हें अपने बेटे से भी ज़्यादा प्यार करता हूॅ। मैं आज ही से तुमको अपना वारिस और मैनेजर घोषित करता हूॅ।

पर तुम मेरे मामलों की तरफ ठीक से ध्यान देना और उनके प्रति सावधान रहना। जब तक मैं ज़िन्दा हूॅ तब तक तुम मुझे रोटी खिलाते रहना और जब मैं मर जाऊॅ तब मुझे दफ़ना देना। उसके बाद सब कुछ तुम्हारा है।"

यह सुन कर नौजवान सौदागर बोला — "यह तो सच है कि आपने मेरे साथ मेरे पिता से भी इतना ज़्यादा प्यार भरा व्यवहार किया है कि मैं तो अपने माता पिता को भी भूल गया हूॅ। पर मुझ बेचारे अपराधी के पिता ने मुझे केवल एक साल का ही समय दिया था।

अगर मैं उससे ज़्यादा समय खर्च करता हूँ तो मेरा बूढ़ा पिता तो मेरे लिये रोता रोता ही मर जायेगा। पिता का दर्जा तो अल्लाह से भी ऊँचा होता है। और अगर मेरे पिता मुझसे नाखुश हो गये तो मुझे डर है कि वे मुझे शाप दे देंगे। फिर मैं इस दुनियाँ में भी और दूसरी दुनियाँ में भी अल्लाह की मेहरबानियों से वंचित रह जाऊँगा।

अबकी बार यह आपकी मेहरबानी है कि आप मेरा मेरे पिता के प्रति कर्तव्य निभाने और पिता के हुक्म का पालन करने की इजाज़त दें। जब तक मैं ज़िन्दा हूँ आपकी मेहरबानियों का बोझ मेरे सिर पर हमेशा रहेगा। मैं हमेशा आपका ऋणी रहूँगा।

अगर मैं इतना खुशकिस्मत हुआ कि मैं अपने माता पिता तक पहुँच सका तो वहाँ भी मैं आपकी अच्छाइयों और मेहरबानियों को दिल और आत्मा से याद करता रहूँगा। अल्लाह ही सब वजहों की वजह है। हो सकता है कि भविष्य में फिर से ऐसी कोई वजह बन जाये जिससे मुझे आपको इज़्ज़त देने का मौका मिल जाये।"

थोड़े में कहो तो नौजवान सौदागर ने अपने मीठे शब्दों से ख्वाजा को विनती कर के मना ही लिया कि बेचारे ख्वाजा को कोई और रास्ता न देख कर उसको घर जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

इसके अलावा वह उस लड़के से इतना प्रभावित था सो उसने जवाब दिया — "अगर तुम यहाँ नहीं रहते तो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। मैं तुम्हें अपनी ज़िन्दगी की तरह समझता हूँ तो अगर मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे साथ चली गयी तो फिर इस बेजान शरीर का क्या

फायदा। अगर तुमने जाने का पक्का ही कर लिया है तो जाओ और मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

कह कर ख्वाजा ने उस लड़के के साथ अपने जाने की भी तैयारी कर ली। उसने अपने नौकरों को यात्रा की तैयारी के लिये हुक्म दे दिया।

जब ख्वाजा के जाने की खबर चारों तरफ फैली तो शहर के दूसरे सौदागरों ने उसको सुन कर अपनी भी उसके साथ ही जाने की तैयारियाँ कर लीं। कुत्ते को पूजने वाले ख्वाजा ने अपने साथ बहुत सारे जवाहरात ले लिये।

दास और नौकर भी नहीं गिने। कीमती मुश्किल से मिलने वाली बहुत सारी चीज़ें ले लीं जो केवल एक राजा के पास ही हो सकती थीं।

वह सब इकट्ठा कर के ख्वाजा ने अपने तम्बू शहर के बाहर लगवा दिये। दूसरे सौदागर भी अपनी अपनी हैसियत के अनुसार अपने अपनी चीज़ें ले कर ख्वाजा के साथ आ गये। वे सब मिल कर तो खुद ही अपनी एक सेना लगने लगे।

एक दिन एक शुभ मुहूर्त देख कर वे सब अपनी यात्रा पर चल पड़े। सैकड़ों ऊँटों पर सामान से भरे हुए कैनवास के थैले लदे हुए थे। खच्चरों पर उनके जवाहरात लदे हुए थे। कारवाँ के साथ 500 दास कपचक के स्टैप्स के ज़ॉग के और रम[153] के थे और ये

[153] 500 slaves from the Steppes of Kapchak, Zang and Rum, means Tartar, African and Turkish slaves.

सब पूरी तरीके से हथियारबन्द थे। तलवार से लड़ने वाले अरबी टारटरी और ईराकी घोड़ों पर सवार थे।

सबसे पीछे ख्वाजा और नौजवान सौदागर थे। वे बहुत कीमती कपड़े पहने हुए थे। पालकी में सवार थे। एक ऊँट पर एक बक्सा लदा था जिसमें ख्वाजा का शानदार कुत्ता एक गद्दी पर बैठा हुआ था। दोनों बन्दियों के पिंजरे एक ऊँट के दोनों तरफ लटके हुए थे। इस तरह से वे सब आगे बढ़े चले जा रहे थे।

हर पड़ाव पर जब वे पहुँचते तो सारे सौदागर ख्वाजा का इन्तजार करते और उसके दस्तरख्वान से उसका खाना खाते और वाइन पीते। ख्वाजा अल्लाह को उस खुशी के लिये बहुत बहुत धन्यवाद देता जो उसको नौजवान सौदागर के साथ यात्रा करने में मिल रही थी। इस तरह वे पड़ाव पर पड़ाव डालते हुए अपनी यात्रा पर बढ़े चले जा रहे थे।

आखिर वे सुरक्षित रूप से कौन्सटैनटिनोपिल के आस पास तक पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने शहर के बाहर ही अपना डेरा डाल दिया।

नौजवान सौदागर ने ख्वाजा से कहा — "अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं अपने माता पिता को देख आऊँ और आपके लिये एक घर की तैयारी कर आऊँ। फिर जब आपको अच्छा लगे तब आप शहर में चले जाइयेगा।"

ख्वाजा बोला — “अब तक मैं यहाँ केवल तुम्हारी वजह से आया था। जाओ जल्दी चले जाओ और अपने माता पिता से मिल कर मेरे पास वापस आओ।”

सो नौजवान सौदागर अपने घर गया। वजीर के सारे घरवाले उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गये और चिल्लाये — “अरे देखो तो यह कौन आदमी हमारे घर में घुस आया है।”

इस पर नौजवान सौदागर जो वजीर की बेटी थी अपनी माँ के पैरों पर गिर पड़ी और बोली — “माँ मैं तुम्हारी बेटी हूँ।”

यह सुन कर वजीर की पत्नी ने उस डाँटना शुरू किया — “ओ ऊधमी लड़की। तूने अपने आपको बहुत बदनाम किया है। तूने अपना भी मुँह काला किया है और अपने परिवार को भी शर्मिन्दा किया है। हमने तो समझा था कि तू मर गयी है और तेरे लिये रोने धोने के बाद हमने सोचा कि अब तू हमारे लिये नहीं रही। सो अब तू जा यहाँ से।”

तब वजीर की बेटी ने अपनी पगड़ी अपने सिर से उतार कर फेंक दी और बोली — “माँ मैं किसी भी गलत जगह पर नहीं गयी और मैंने कोई गलत काम भी नहीं किया है। मैंने यह प्लान केवल अपने पिता को राजा साहब की कैद से छुड़ाने को लिये बनाया था।

अल्लाह की मेहरबानी है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं की वजह से तुम्हारी बेटी ने अपना सारा उद्देश्य पूरा कर लिया है। अब मैं वापस आ गयी हूँ।

मैं नायशापुर से उस सौदागर और उसके उस कुत्ते को भी अपने साथ ले आयी हूँ जिसके गले में नौ लाल वाला कौलर पड़ा हुआ है और मैं उतनी ही पवित्र हूँ जितनी पवित्रता तुमने मुझे दी थी।

माँ मैंने एक सौदागर का वेश केवल यात्रा के लिये बनाया था। अब बस केवल एक दिन का काम रह गया है। उसे करने के बाद मैं अपने पिता को जेल से छुड़वा लूँगी और घर वापस आ जाऊँगी।

अगर तुम मुझे इजाज़त दो तो मैं एक दिन के लिये वापस जा कर बाहर और रहना चाहती हूँ। उसके बाद मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी।"

जब उसकी माँ ने यह समझ लिया कि उसकी बेटी ने एक आदमी की तरह से काम किया है और हर तरह से अपनी इज़्ज़त बचा कर रखी है तो उसने अल्लाह को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपनी बेटी को गले लगा कर चूम लिया।

उसने उसके लिये भी अल्लाह से प्रार्थना की और उसको जाने की इजाज़त दे दी। जो तू अच्छा समझे बेटी वह कर। मुझे तेरे ऊपर पूरा भरोसा है।

वजीर की बेटी ने फिर से नौजवान सौदागर का रूप बनाया और कुत्ते की पूजा करने वाले ख्वाजा के पास लौट आयी। ख्वाजा भी उसकी गैरहाजिरी में उसके बिना कुछ उदास बैठा था। जब उसका धीरज जवाब दे गया तो वह अपने डेरे से उठा और बाहर निकल गया।

अब ऐसा हुआ कि जब नौजवान सौदागर शहर से बाहर जा रहा था तो ख्वाजा दूसरी तरफ से उधर आ रहा था। वे लोग बीच सड़क पर मिले। उसको देख कर ख्वाजा चिल्लाया — "ओह मेरे बच्चे। तुम इस बूढ़े को अकेला छोड़ कर कहाँ चले गये थे।"

नौजवान सौदागर बोला — "मैं आपकी इजाज़त ले कर अपने घर गया था पर आपको देखने की इच्छा ने मुझे घर में ही नहीं टिकने दिया और मैं वापस लौट आया।"

उन्होंने शहर के फाटक के पास समुद्र के किनारे एक छायादार बागीचा देखा तो उन्होंने वहीं अपने तम्बू लगा लिये और अन्दर आ गये। ख्वाजा और नौजवान सौदागर दोनों एक साथ बैठ गये और कबाब खाने लगे और वाइन पीने लगे।

जब शाम हो गयी तो वे अपने तम्बुओं से बाहर निकले और एक ऊँची जगह बैठ कर शहर देखने निकले।

अब ऐसा हुआ कि जब ये लोग शहर देख रहे थे तो एक शाही सिपाही उधर से गुजर रहा था। वह उनके ढंग चाल और बागीचे में कैम्प लगा देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसने अपने मन में सोचा कि शायद किसी देश का ऐम्बैसैडर यहाँ आया हुआ है। वह एक जगह खड़ा रह कर उस दृश्य का आनन्द लेता रहा।

उधर ख्वाजा के एक आदमी ने उसको बुलाया और उससे पूछा "तुम कौन हो।"

उसने जवाब दिया — "मैं राजा के सिपाहियों का सरदार हूँ।"

ख्वाजा के नौकर ने जा कर ख्वाजा को बताया तो ख्वाजा ने अपने एक नीग्रो नौकर को बुलाया और उससे कह दो कि "हम लोग यात्री हैं। और अगर वह यहाँ आना चाहे तो शौक से आये कौफी और हुक्का[154] दोनों ही यहाँ मौजूद हैं।

जब सिपाहियों के सरदार ने सौदागर का नाम सुना तो वह तो और ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया सो वह उस नीग्रो दास के साथ ख्वाजा के पास आ गया। उसने वहाँ चारों तरफ देखा तो देखा कि वहाँ तो चारों तरफ अमीरी झलक रही थी। वहाँ सिपाही थे दास थे।

उसने उनके पास आ कर ख्वाजा और नौजवान सौदागर को सलाम किया। कुत्ते की हालत और शान देख कर उसकी तो सारी इन्द्रियों ने काम करना बन्द कर दिया और वह एक पत्थर की मूर्ति बना खड़ा रह गया।

ख्वाजा ने उसको बैठने के लिये कहा और पीने के लिये उसे कौफी दी। सिपाहियों के सरदार ने ख्वाजा से उसका नाम और ओहदा पूछा। जब वह वहाँ से चलने लगा तो ख्वाजा ने उसको कुछ कपड़ों के टुकड़े दिये और उसे कुछ और भेंटें भी दीं और विदा किया।

[154] The coffee and pipe are always presented to visitors in Turkey, Arabia, and Persia, and they are considered as indispensable in good manners. [In India this is not the case. Sometimes hot rose-water with sugar are given in the three former countries.]

अगले दिन जब सिपाहियों का सरदार राजा के दरबार में पहुँचा तो उसने उसे ख्वाजा के बारे में बताया। धीरे धीरे यह बात मेरे कानों तक भी पहुँची तो मैंने भी उसे बुलाया और सौदागर के बारे में पूछा।

उसने वह सब कुछ बताया जो कुछ उसने देखा था। कुत्ते को इतनी ऊँची जगह पहुँचते देख कर तो मुझे बहुत गुस्सा आया और बोला कि इस नीच बदमाश सौदागर को तो मौत मिलनी चाहिये।

मैंने अपने कुछ फाँसी लगाने वालों को बुलवाया और उनसे कहा कि वे तुरन्त ही उस नीच आदमी को मार कर उसका सिर ला कर उसे दें।

इत्तफाक की बात फ्रैंक्स का वही ऐम्बैसैडर उस दिन भी वहीं मौजूद था। यह सुन कर वह मुस्कुराया और मैं और ज़्यादा गुस्सा हो गया। मैं बोला — "ओ अपमान करने वाले। राजाओं के सामने बेकार में ही दाँत दिखाना अच्छे ढंगों में नहीं आता। अगर किसी को अच्छे ढंग नहीं आते तो हँसने से ज़्यादा अच्छा तो यही है कि वह रोये।"

ऐम्बैसैडर बोला — "ओ ताकतवर राजा। असल में मेरे दिमाग में कुछ ऐसे विचार आये कि मुझे हँसी आ गयी। पहला विचार तो यह था कि वजीर ने सच बोला था और अब उसको जेल से छोड़ देना चाहिये।

दूसरा विचार यह कि योर मैजेस्टी अब अल्लाह के सामने उस सौदागर के खून के धब्बे के बिना ही रहेंगे। और तीसरी बात दुनियॉ को सुरक्षा देने वाले जहॉपनाह ने फिर एक बार बिना किसी वजह या गलती के सौदागर को मौत की सजा सुना दी।

इन्हीं सब बातों पर मुझे आश्चर्य हो रहा था कि बिना किसी जॉच पड़ताल के आपने एक भले आदमी को मौत की सजा सुना दी। केवल अल्लाह ही जानता है कि उस सौदागर का असली मामला क्या है।

आप उसको अपने शाही दरबार में बुलायें और उसकी इन हरकतों के बारे में जानने की कोशिश करें। अगर वह दोषी पाया जाये तो योर मैजेस्टी मालिक हैं उसके साथ जैसा भी बर्ताव करना चाहें करें।"

जब उस ऐम्बैसैडर ने मुझे यह बात समझायी तब मुझे याद आया कि मेरे वजीर ने क्या कहा था। सो फिर मैंने सौदागर को उसके बेटे कुत्ते और दोनों पिंजरों के साथ तुरन्त ही अपने दरबार में आने के लिय कहा।

मेरे नौकर तुरन्त ही गये और कुछ ही देर में उन सबको ले आये। मैंने उनको अपने सामने बुलाया। पहले ख्वाजा और उसका बेटा यानी नौजवान सौदागर आये। दोनों ने बहुत अच्छे कपड़े पहन रखे थे।

नौजवान सौदागर की इतनी सुन्दरता देख कर वहाँ बैठे सब लोग बहुत आश्चर्यचकित रह गये। उसके हाथ में एक सोने की थाली थी जिसमें बहुत सारे कीमती पत्थर भरे हुए थे जिसका हर एक पत्थर कमरे में रोशनी फैला रहा था। उसने वह थाली मेरे पैरों के पास रख दी सिर झुकाया और फिर एक तरफ को खड़ा हो गया।

ख्वाजा ने भी जमीन चूम कर मेरी खुशहाली के लिये प्रार्थना की। वह इतने मीठे शब्दों में बोल रहा था जैसे बुलबुल अपनी मीठी आवाज में गा रही हो।

मुझे उसके बोलने का ढंग बहुत अच्छा लग रहा था पर अपने चेहरे पर गुस्सा लाते हुए मैंने कहा — "ओ आदमी के रूप में शैतान। यह तूने क्या जाल फैला रखा है और तूने अपने ही रास्ते में यह कैसा गड्ढा खोद रखा है।

तेरा धर्म क्या है और यह कौन सा संस्कार है जो मैं देख रहा हूँ। तू किस धर्मदूत को मानने वाला है। अगर तू बेवफा है तो भी तेरे इस व्यवहार का क्या मतलब है। तेरा नाम क्या है जो तू इस तरीके से व्यवहार करता है।"

ख्वाजा ने बड़ी शान्ति से जवाब दिया — "अल्लाह करे कि योर मैजेस्टी की उम्र और खुशहाली दोनों हमेशा बढ़ती रहें। इस गुलाम का धर्म यह है कि अल्लाह एक है और उसके बराबर का कोई नहीं है। मैं असली मुसलमान धर्म को मानता हूँ।

अल्लाह के बाद मैं **12** इमाम को अपना गुरू मानता हूँ और मेरी रस्म यह है कि मैं दिन में पाँच बार नमाज पढ़ता हूँ। मैं उपवास रखता हूँ। मैंने तीर्थयात्रा भी की है। मैं अपनी आमदनी का पाँचवा हिस्सा दान में देता हूँ। मैं मुसलमान हूँ।

पर एक वजह है जिसे मैं किसी को बता नहीं सकता जिसकी वजह से मेरे अन्दर वे बुरी बातें है जिनकी वजह से योर मैजेस्टी गुस्सा हैं और जिसकी वजह से अल्लाह का बनाया हुआ हर प्राणी मेरी बुराई करता है।

हालाँकि मैं कुत्ते की पूजा करने वाले के नाम से जाना जाता हूँ मैं दोगुना टैक्स देता हूँ। मैं यह सब करता हूँ पर मैंने अपने दिल के भेद किसी के साथ नहीं बाँटे।"

यह बहाना सुन कर तो मेरा गुस्सा और भी बढ़ गया। मैं बोला — "यह कह कर तू मुझे बहका रहा है। मैं इस बात पर विश्वास नहीं करूँगा जब तक तू मुझे यह नहीं बता देगा कि तू धर्म के रास्ते से क्यों हटा। ताकि मेरे दिमाग को उस बात की सच्चाई का पता चले।

तभी तेरी ज़िन्दगी बच सकती है। नहीं तो जो कुछ तूने किया है उसकी सजा में तेरा पेट फड़वा दूँगा। ताकि इस तरह की सजा दूसरों को मुहम्मद का धर्म तोड़ने के लिये डरा सके।"

ख्वाजा बोला — "ओ राजा चाहे आप इस नीच की सारी सम्पत्ति ले लीजिये जो मेरे पास है और जो मैं और मेरा बेटा आपको

देने के लिये तैयार हैं पर मेरा खून मत बिखेरें। मेरी जान बख्श दीजिये।"

मैं मुस्कुराया और बोला — "बेवकूफ क्या तू मुझे अपनी सम्पत्ति का लालच दे रहा है। तुझे किसी तरह भी नहीं छोड़ा जा सकता जब तक तू सच नहीं बोलता।"

यह सुन कर ख्वाजा की ऑखों में ऑसू आ गये। उसने अपने बेटे की तरफ देखा और एक लम्बी उसॉस भरी और उससे बोला — "बेटा मैं राजा की ऑखों में एक अपराधी हूँ। मुझे मार दिया जायेगा। अब मैं क्या करूॅ। मैं तुझे किसको दे कर जाऊॅ।"

अबकी बार मैंने उसे धमकी दी — "ओ छल करने वाले। रुक जा। तूने मुझसे कई बहाने बनाये हैं। पर अब जो कुछ तुझे कहना है जल्दी से कह।"

तब वह आदमी आगे बढ़ा और मेरे सिंहासन के पास आया। उसने मेरे सिंहासन का पाया चूमा मेरी बहुत बड़ाई की फिर बोला — "ओ राजाओं के राजा। पर ज़िन्दगी तो सबसे ऊपर होती है। अगर मुझे मरने की सजा न दी जाती तो मैं इस बात को छिपाने के लिये हर तकलीफ सह लेता पर यह बात मैं कभी नहीं बताता।

पर ज़िन्दगी तो सबके ऊपर होती है। अपनी इच्छा से कुॅए में कोई नहीं कोई कूदता। ज़िन्दगी की रक्षा करना हमारा सही काम है और जो सही है उसे छोड़ना अल्लाह की मर्जी के खिलाफ है।

अगर यही आपकी खुशी है तो आप इस बूढ़े की पुरानी कहानी सुनें। पहले आप वे दोनों पिंजरे जिनमें दो आदमी बन्द हैं यहाँ मँगवाइये और उन्हें अपने सामने रखवाइये। तब में अपनी कहानी सुनाऊँगा।"

ऐसा ही किया गया और तब ख्वाजा ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की — "अब मैं आपको अपनी कहानी सुनाता हूँ। अगर मैं कोई बात झूठ बोलूँ तो मुझे सजा दी जाये नहीं तो मेरे साथ न्याय किया जाये।"

मैंने उसकी बात मान ली। उसके दोनों पिंजरों को बुलवा लिया दोनों आदमियों को बाहर निकाल कर ख्वाजा के पास ही बिठा दिया।

अब ख्वाजा बोला — "ओ राजा यह आदमी जो मेरे दाँये खड़ा है यह मेरा सबसे बड़ा भाई है और यह जो मेरे बाँये खड़ा है यह मेरा दूसरे नम्बर का भाई है। मैं इन सबमें छोटा हूँ।

मेरे पिता फारस के राज्य में एक सौदागर थे। जब मैं **14** साल का हुआ तब वह अल्लाह को प्यारे हो गये। उनके दफन की रस्म होने के बाद तीसरे दिन उनके शरीर पर से फूल हटा दिये गये।

एक दिन मेरे दोनों भाइयों ने मुझसे कहा कि आओ पिता की सम्पत्ति बाँट लेते हैं जो कुछ भी उनके पास था और फिर जिसके मन में जो आये उस सम्पत्ति का वह वही कर सकता है।

उनकी यह बात सुन कर मैंने कहा — "यह आप क्या कह रहे हैं। मैं तो आपका नौकर हूँ और एक भाई के अधिकार भी नहीं माँग रहा। इसके अलावा अब हमारे पिता तो नहीं हैं पर उनकी जगह आप तो ज़िन्दा हैं।

मुझे तो ज़िन्दगी काटने के लिये और आपकी सेवा करने के लिये बस सूखी रोटी मिल जाये वही मेरे लिये काफी है। मुझे इस बँटवारे से क्या लेना देना। मैं तो आपकी जूठन पर ही ज़िन्दा रह लूँगा पर मैं आपके पास ही रहना चाहता हूँ।

मैं तो एक लड़का हूँ। मुझे तो लिखना पढ़ना भी नहीं आता। मैं क्या कर सकता हूँ। मौजूदा हालतों में तो बस आप मुझे रास्ता दिखाते रहिये।"

यह सुन कर वे बोले — "तू यह चाहता है कि तेरे साथ साथ हम भी बर्बाद हो जायें और भीख माँगते फिरें।"

मैं चुप हो गया और एक कोने में बैठ गया। फिर मैंने सोचा और अपने आपको समझाया कि "आखिर ये लोग मेरे बड़े ही तो हैं जो कुछ भी वह मुझसे कह रहे है मेरी भलाई के लिये ही कह रहे हैं मेरी शिक्षा के लिये कह रहे हैं कि मैं कोई खाने कमाने के लिये कोई काम सीख जाऊँ।"

यही सोचते सोचते मैं सो गया। सुबह को काज़ी से एक आदमी आया और मुझे अदालत ले गया। मैंने देखा कि मेरे दोनों भाई वहाँ मेरा इन्तजार कर रहे थे।

काज़ी ने मुझसे पूछा — "तुम अपने पिता की जायदाद में से अपना हिस्सा क्यों नहीं ले रहे।"

मैंने उनको भी वही कह दिया जो घर में मैंने अपने भाइयों से कहा था। काज़ी बोला — "जब यह इतनी सब बातें दिल से कर रहा है तो हमें इसे इस बॅटवारे से आज़ादी का कागज दे देना चाहिये कि आज से अपने पिता की सम्पत्ति पर इसका कोई अधिकार नहीं है।"

तब भी मैंने यही सोचा कि क्योंकि ये लोग मेरे बड़े भाई हैं और इन्होंने मेरी भलाई के लिये ही सोचा है। सो उनकी इच्छानुसार मैंने उस कागज पर अपने दस्तखत कर दिये। काज़ी ने उस पर अपनी सील लगा दी। वे लोग सन्तुष्ट थे और मैं घर वापस आ गया।

इसके अगले दिन मेरे भाई मेरे पास आये और मुझसे बोले — "भाई हमें तुम्हारा घर चाहिये जिसमें तुम रहते हो। तुम अपने रहने के लिये कोई दूसरी जगह किराये पर ले लो और वहॉ जा कर रहो।"

मुझे तब महसूस हुआ कि वे इस बात से भी खुश नहीं थे कि मैं अपने पिता के मकान में रहूँ भी। मेरे पास इस बात का कोई इलाज नहीं था सो मैंने उस घर को छोड़ दिया।

ओ दुनियॉ की रक्षा करने वाले। जब मेरे पिता ज़िन्दा थे तो जब भी वह अपनी यात्राओं से वापस लौटते थे तो दूसरे देशों से वहॉ की अनमोल चीज़ें लाया करते थे और मुझे दे देते थे क्योंकि

सबसे छोटा बच्चा घर में सबको सबसे ज़्यादा प्यारा होता है। कभी कभी मैं इन चीज़ों को बेच कर अपने लिये अपनी सम्पत्ति बना लेता था सो उसको ले कर मैं वहाँ से चल दिया।

एक बार मेरे पिता मेरे लिये एक टारटरी दासी ले कर आये। एक बार वह कुछ घोड़े ले कर आये तो उनमें से एक बहुत अच्छा घोड़े का बच्चा उन्होंने मुझे दे दिया। मैं उसे अपने जमा किये हुए पैसों से खिलाया पिलाया करता था।

आखिर अपने भाइयों की यह अमानवीयता देख कर मैंने एक घर खरीद लिया और उसी घर में जा कर रहने लगा। यह कुत्ता भी मेरे साथ ही गया और यह भी मेरे साथ ही रहा।

मैंने घर गृहस्थी का जरूरी सामान खरीदा घर की देखभाल के लिये दो दास खरीदे और फिर जो पैसा मेरे पास बचा उससे मैंने अल्लाह का नाम ले कर एक कपड़े की दूकान खोल ली। अल्लाह पर भरोसा कर के मैं उस दूकान में बैठ गया और अपनी किस्मत से सन्तुष्ट रहा।

हालाँकि मेरे भाइयों ने मेरे साथ बड़ी बेरहमी से व्यवहार किया था फिर भी अल्लाह की मेहरबानी से मेरी दूकान तीन साल में ही खूब चल निकली और बाजार में मेरी अच्छी साख हो गयी। जो भी मुश्किल से मिलने वाले कपड़े और पोशाक किसी अच्छे परिवार को अगर जरूरत पड़ते तो वे सब मेरी ही दूकान से जाते।

मैंने बहुत पैसा कमा लिया था और मैं अब बहुत अमीरी में रह रहा था। अब तो में चौबीसों घंटे बस अल्लाह को ही धन्यवाद देता रहता और आराम से रहता।

अक्सर में ये दोहे गुनगुनाया करता —

राजकुमार को नाखुश क्यों होना चाहिये मुझे तो उससे कोई लेना देना नहीं है
सिवाय तेरे ओ ताकतवर राजकुमार मैं और किस राजा की तारीफ करूँ
मेरा भाई मुझसे नाखुश क्यों न हो वह मुझे कोई नुकसान तो पहुँचा नहीं सकता
अब तो तू ही मेरा सहायक है नहीं तो मैं और किसके पास जाऊँ

दोस्त और दुश्मन क्यों नाखुश न हों सारा दिन बस मैं तेरे चरणों के बारे में ही सोचता रहूँ
दुनियाँ मुझसे भले ही गुस्सा क्यों न हो है पर तू तो उन सबसे ऊँचा है
दूसरे सब मेरा अँगूठा चूम सकते हैं पर मेरी यह इच्छा है कि बस तू मुझसे नाराज न हो

एक बार एक शुक्रवार के दिन कुछ ऐसा हुआ कि मैं घर में बैठा हुआ था और मेरा एक दास बाजार से कुछ जरूरी सामान लेने गया हुआ था। कुछ देर बाद वह रोता हुआ मेरे पास आया। मैंने उससे पूछा क्या हो गया। क्या हुआ है उसे।

उसने गुस्से में भर कर कहा — "आपको इससे क्या मतलब। आप तो आनन्द कीजिये। पर आप जजमैंट के दिन अल्लाह को क्या जवाब देंगे।"

मैंने चिल्ला कर कहा — "ओ अबीसीनियन[155]। तुझ पर कौन सा शैतान चढ़ गया है।"

---

[155] A person from Abyssinia, Abyssinia means Ethiopia.

वह बोला — “परेशानी यह है कि एक ज्यू ने चौक में आपके दोनों भाइयों के हाथों को उनकी पीठ पीछे बॉध दिया है और वह उन्हें कोड़े से मार रहा है।

वह हॅसता जाता है और कहता जाता है “अगर तुम मेरा पैसा नहीं दोगे तो मैं तुम्हें इतना मारूँगा जब तक कि तुम मर न जाओ। और अगर तुम मेरे इस काम से मर भी जाओगे तो यह मेरे लिये बहुत पुन्य का काम होगा।

आपके भाइयों के साथ ऐसा व्यवहार हो रहा है और आप यहॉ ऐसे ही बैठे हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं। क्या यह ठीक है। दुनियॉ क्या कहेगी।”

अपने दास से यह सब सुन कर भाइयों के प्रेम से मेरा खून खौलने लगा। मैंने दासों से पैसा लाने के लिये कहा और मैं खुद नंगे पॉव चौक की तरफ भागा। जब मैं वहॉ पहुॅचा तो मैंने देखा कि मेरा दास बिल्कुल ठीक कह रहा था।

मेरे भाइयों पर कोड़े की मार बराबर पड़ रही थी। मैं मजिस्ट्रेट के पहरेदारों पर चिल्लाया “अल्लाह के लिये ज़रा रुको तो। मुझे ज्यू से पूछने तो दो कि मेरे भाइयों ने ऐसा क्या गुनाह किया है जिसकी वजह से वह उन्हें इतना मार रहा है।”

यह कह कर मैं ज्यू के पास गया और बोला — “आज तो पवित्र दिन है। तुम इनको बराबर क्यों मारे जा रहे हो।”

ज्यू बोला — “आओ अगर तुम भी इनका एक हिस्सा बनना चाहते तो आओ। हिस्सा ही क्यों इनकी पूरी जिम्मेदारी लो। इनका पूरा पैसा दो नहीं तो अपने घर का रस्ता नापो।”

मैंने पूछा कितना पैसा है। मुझे उसका कागज दिखाओ मैं वह सारा पैसा तुम्हें दे दूँगा। उसने कहा कि वह कागज उसने अभी मजिस्ट्रेट को दे दिया था।

इसी समय मेरे दास दो थैले भर कर पैसा ले आये। मैंने उनमें से 1000 चाँदी के सिक्के ज्यू को दे दिये और अपने भाइयों को उससे छुड़ा लिया।

उनकी यह हालत थी कि वे भूखे प्यासे और नंगे थे। मैं उनको अपने साथ अपने घर ले आया। तुरन्त ही उनको नहलाया धुलाया कपड़े पहनाये और पेट भर कर खाना खिलाया।

मैंने उनसे यह कभी नहीं पूछा कि उन्होंने हमारे पिता की सम्पत्ति का ऐसा क्या किया जो उनको उस ज्यू से पैसा उधार लेने की जरूरत पड़ी कहीं ऐसा न हो कि उन्हें शर्मिन्दगी महसूस हो।

ओ राजा। ये दोनों यहा खड़े हैं आप इनसे पूछ सकते हैं कि मैंने यह सब सच कहा है या फिर इसमें से कुछ भी झूठ है।

कुछ समय बाद जब ये लोग अपने पिटे जाने से हो जाने वाले घावों से ठीक हो गये तो मैंने एक दिन इनसे कहा — “भाइयो अब आपकी तो साख इस शहर से बिल्कुल ही खत्म हो चुकी है सो

अच्छा हो कि कुछ दिनों के लिये आप लोग शहर से बाहर घूम आयें।"

यह सुन कर ये दोनों बोले तो कुछ नहीं पर मुझे ऐसा लगा जैसे ये मेरी बातों से सहमत हों। सो मैंने उनकी यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। उनके लिये तम्बू सवरियाँ आदि यात्रा का सब सामान इकट्ठा करने के बाद मैंने उनको लिये करीब **20** हजार रुपये तक का कुछ सामान खरीदा। एक काफिला बुखारा[156] की तरफ जा रहा था सो मैंने उनको उस काफिले के साथ भेज दिया।

एक साल के बाद वह कारवाँ लौटा पर मुझे अपने भाइयों की कोई खबर नहीं मिली। फिर मैंने एक दोस्त को कसम दे कर उनके बारे में बताने के लिये कहा तो उसने बताया कि जब वे बुखारा पहुँचे तो उनमें से एक ने तो अपने हिस्से का सारा पैसा एक जुआघर में गँवा दिया और अब वहीं झाड़ू लगाने का काम करता है।

वह उन जुआ खेलने वालों की सेवा करता है जो वहा जुआ खेलने आते हैं और वे जुआ खेलने वाले भी उसको दान के तौर पर कुछ दे देते हैं जिससे वह अपना गुजारा करता है।

दूसरा भाई एक शराब बेचने वाले की बेटी के प्रेम में पड़ गया और अपनी सारी सम्पत्ति उस पर लुटा दी। अब वह भी एक शराब की दूकान पर काम करता है। काफिले के लोगों ने यह सब बातें

---

[156] An important city in Uzbekistan (Asia), Tartary, situated on Silk Route.

तुमको इसलिये नहीं बतायीं ताकि इन सबको सुन कर तुमको शर्मिन्दगी महसूस न हो।

उस आदमी के मुँह से उनका यह हाल सुन कर मेरा तो बस अजीब ही हाल हो गया। चिन्ता के मारे मेरी भूख और नींद दोनों गायब हो गयीं। मैं तुरन्त ही बुखारा चल दिया।

वहाँ पहुँच कर मैंने उन्हें सब जगह ढूँढा और उन दोनों को ढूँढ कर अपनी उस जगह ले कर आया जहाँ मैं ठहरा हुआ था। पिछली बार की तरह से मैंने इन्हें नहलाया धुलाया नये कपड़े पहनाये पेट भर खाना खिलाया। डर के मारे ये लोग बहुत शर्मिन्दा थे। पिछली बार की तरह से मैंने इनको इस बार भी कुछ नहीं कहा।

मैंने फिर इनके लिये कुछ सामान खरीदा और इनके साथ घर लौटा। जब हम नायशापुर पहुँचने वाले थे तो मैंने इनको सामान के साथ गाँव में ही छोड़ दिया और छिप कर घर आ गया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि मेरे आने का पता किसी को चले।

दो दिन के बाद ही मैंने सबको बताया कि मेरे भाई घर लौट आये हैं और मैं सुबह को उनसे मिलने जाऊँगा। अगली सुबह जब मैं उनको लाने के लिये जाने को तैयार हुआ कि एक किसान मेरे पास आया और बहुत ज़ोर ज़ोर से शिकायतें करने लगा और रोने लगा।

उसकी इतनी ऊँची आवाज सुन कर मैं बाहर आया और उसे रोते हुए देख कर मैंने उससे इतनी ज़ोर से चिल्लाने की वजह पूछी — "यह तुम इतनी ज़ोर ज़ोर से रो क्यों रहे हो।"

"हमारे घर लूट लिये गये हैं और वे तुम्हारे भाइयों ने लूटे हैं। तुम्हें अल्लाह का वास्ता अगर तुम यह कहो कि तुमने उन्हें वहाँ नहीं छोड़ा था।"

मैंने फिर पूछा — "मगर हो क्या गया है।"

वह बोला — "रात को डाकुओं का एक गिरोह आया और उनकी सम्पत्ति और सामान लूट कर ले गया। साथ में वह गिरोह मेरा घर भी लूट कर ले गया।"

मुझे उसके ऊपर दया आ गयी। मैंने उससे पूछा "तो अब वे दोनों कहाँ हैं।"

वह बोला — "वे लोग शहर के बाहर बैठे हैं बिल्कुल नंगे और बहुत दुखी।"

मैंने तुरन्त ही दो जोड़ी कपड़े लिये और उनके पास चल दिया। वहाँ पहुँच कर मैंने उनको कपड़े पहनाये और उनको अपने साथ घर ले कर आया।

गाँव वालों ने जब डाके की बात सुनी तो वे उनको देखने के लिये आने लगे पर वे शर्म के मारे बाहर ही नहीं निकल रहे थे। इस तरह से फिर तीन महीने निकल गये।

मैंने अपने मन में सोचा कि इस तरह से ये लोग कब तक कोने में छिपे बैठे रहेंगे। अगर ये मान जायें तो मैं इनको किसी समुद्री यात्रा पर ले चलता हूँ।

सो मैंने यह बात जा कर उन्हें सुझायी और कहा कि अगर आप लोग चलेंगे तो मैं भी आपके साथ चलूँगा। वे फिर चुप थे। मैंने एक बार यात्रा की फिर से तैयारी की। व्यापार के लिये कुछ सामान खरीदा अपनी शुभ यात्रा के लिये गरीबों को कुछ भीख दी सामान जहाज़ में लादा लंगर उठाया और नदी में चल दिये।

यह कुत्ता जहाज़ में सो रहा था। जब वह उठा तो जहाज़ को बीच नदी में देख कर आश्चर्यचकित रह गया। यह बहुत ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगा और फिर नदी में कूद गया। यह हमारे पीछे पीछे नदी में तैरने लगा। मैंने इसको पकड़ने के लिये एक नाव भेजी। अल्लाह की मेहरबानी से उन्होंने इसको पकड़ लिया और हमारे जहाज़ पर ले आये।

नदी में सुरक्षित रूप से यात्रा करते हुए हमें एक महीना बीत गया। इस बीच मेरे दूसरे भाई को मेरी दासी से प्यार हो गया। एक दिन उसने हमारे सबसे बड़े भाई से कहा — "हमारे छोटे भाई के उपकारों का हमारे ऊपर बहुत बोझ है जो हमारे लिये बड़ी शर्मनाक बात है। हम इस बुराई से कैसे बचें।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "मेरे पास एक प्लान है अगर यह कामयाब हो जाये तो बस फिर मजा आ जाये।"

उसके बाद काफी देर तक दोनों आपस में सलाह करते रहे और तय किया कि वे मुझे मार देंगे और मेरी सम्पत्ति और जायदाद सब हड़प लेंगे।

एक दिन मैं अपने केबिन में सो रहा था और मेरी दासी हमारा शराब पीने वाला कमरा साफ कर रही थी कि तभी मेरा दूसरा भाई जल्दी जल्दी आया और मुझे जगाया। मैं हड़बड़ा कर उठा और डैक पर आया। यह कुत्ता भी मेरे पीछे पीछे आ गया।

मैंने देखा कि मेरा सबसे बड़ा भाई जहाज़ के एक तरफ अपनी बाँहें लटका कर खड़ा है और बड़ी तल्लीनता से नदी के आश्चर्य देख रहा है साथ में उनको देखने के लिये मुझे भी बुला रहा है।

मैं उसके पास तक गया और उससे पूछा "सब ठीक तो है न।"

वह बोला — "यह सुन्दर दृश्य देखो। मरमैन नदी में नाच रहे हैं। उनके हाथों में मोती हैं सीपी हैं मूँगे की डालियाँ हैं।"

अगर यह बात मुझसे किसी और ने कही होती तो मैं उससे बहस करता। मुझे उसके ऊपर विश्वास ही नहीं होता पर यह बात तो मेरा भाई कह रहा था सो मैंने उसे सच समझ लिया और उन सबको देखने के लिये मैंने अपना सिर नीचे किया।

मैंने अपना सिर कितना भी नीचे कर के यह देखने की कोशिश की कि वे मरमैन कहाँ हैं पर मुझे तो वहाँ कुछ भी दिखायी नहीं दिया। और वह बराबर कहता ही रहा "अब दिखायी दिया। अब दिखायी दिया।"

अब अगर वहाँ कुछ होता तो मुझे दिखायी दे गया होता। मुझे लापरवाह देख कर मेरा छोटा भाई मेरे पीछे से आया और मुझे एक ऐसा धक्का मारा कि मैं नदी में गिर पड़ा। इस पर मेरे भाइयों ने चिल्लाना शुरू कर दिया — "भागो भागो। हमारा भाई पानी में गिर पड़ा है।"

इस बीच जहाज़ भी चलता ही रहा और मैं लहरों के साथ बहता रहा। मैं पानी में डुबकियाँ खा रहा था और जहाज़ से दूर होता जा रहा था। अब तक मैं बहुत थक भी गया था।

मैंने अल्लाह को अपनी सहायता के लिये पुकारा पर कोई फायदा नहीं हुआ। लो अचानक ही मेरे हाथ ने कुछ छुआ। मैंने देखा तो वह यह कुत्ता था। शायद जब उन लोगों ने मुझे नदी में धक्का दिया होगा तो वह भी मेरे पीछे पीछे पानी में कूद गया होगा और मेरे साथ साथ बहता रहा होगा।।

मैंने उसकी पूँछ पकड़ ली और अल्लाह ने उसके द्वारा मेरी मुक्ति करा दी। इस तरह से सात रातें गुजर गयीं। आठवें दिन हम किनारे पहुँचे। मेरे अन्दर तो ज़रा सी भी ताकत नहीं थी जो कुछ भी थी उसी के सहारे मैं किनारे की तरफ लुढ़क गया और जमीन पर जा कर पड़ गया।

मैं पूरे एक दिन वहाँ बेहोश पड़ा रहा। दुसरे दिन मुझे कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनायी पड़ी। मैंने अल्लाह को बहुत बहुत धन्यवाद दिया। मैंने अपने चारों तरफ देखा तो मुझे वहाँ से कुछ

दूरी पर एक शहर सा दिखायी दिया। पर मेरे अन्दर इतनी ताकत कहाँ थी जो मैं वहाँ तक जा सकता।

पर मेरे पास और कोई चारा भी नहीं था सो मैं धीरे धीरे शहर की तरफ खिसकने लगा। मैं दो कदम खिसकता और फिर आराम कर लेता। दो कदम खिसकता और फिर आराम कर लेता। इस तरह से एक कोस[157] पहुँचने के लिये मैंने सारा दिन ले लिया। मैं जब वहाँ पहुँचा तो शाम हो गयी थी।

यहाँ एक पहाड़ था। वहाँ मैं फिर सारी रात पड़ा रहा। अगली सुबह मैं शहर पहुँचा। जब मैं बाजार में आया तो मैंने वहाँ बेकरी की दूकानें देखीं उनको देख कर मेरा दिल धड़कने लगा क्योंकि मेरे पास खरीदने के लिये कोई पैसा नहीं था और माँगना मैं चाहता नहीं था पर भूख मुझे बहुत तेज़ लगी थी।

इस तरह से मैं यह कहते कहते आगे बढ़ता रहा कि "मैं अगली दूकान से माँगूँगा। मैं अगली दूकान से माँगूँगा।"

आखिरकार मेरी ताकत जवाब दे गयी और भूख के मारे मेरा पेट ऐंठने लगा। मुझे ऐसा लगा कि जैसे मेरी जान निकलने वाली है। इत्तफाक से मैंने दो आदमी ऐसे दिखायी दिये जो अपनी पोशाकों से फारस के लगते थे। वे दोनों आपस में एक दूसरे के हाथों में हाथ डाले जा रहे थे। उनको देख कर मेरी कुछ जान में जान आयी

---

[157] One Kos = 2 English Milea (15 Furlong); 1 Furlong = 220 yards; 8 Furlong = 1 Mile

वे मेरे अपने देश के से ही लग रहे थे। हो सकता है कि वे मेरे जानने वालों में से ही कोई हों जिनसे मैं अपने बारे में कुछ बात कर सकूँ। जब वे मेरे पास आये तब मैंने देखा कि वे तो वास्तव में मेरे भाई ही थे।

यह देख कर तो मैं बहुत खुश हो गया। अल्लाह ने मेरी इ़ज़्ज़त बचा ली थी। अब मुझे खाने के लिये किसी दूसरे के सामने हाथ फैलाना नहीं पड़ रहा था। मैं उनके पास गया और उनको सलाम किया और अपने सबसे बड़े भाई का हाथ चूमा।

मुझे देखते ही उन्होंने शोर मचाना शुरू कर दिया। मेरे दूसरे वाले भाई ने मेरे सिर पर इतनी ज़ोर से मारा कि मैं लड़खड़ा गया और नीचे गिर पड़ा। मैंने इस आशा में अपने सबसे बड़े भाई के कपड़े पकड़ लिये कि शायद वह मेरी तरफदारी करेगा पर उसने भी मुझे एक ज़ोर की ठोकर मारी।

थोड़े में कहो तो दोनों ने मुझे बहुत मारा और मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जैसे जोसेफ के भाइयों ने जोसेफ के साथ किया था। हालाँकि मैंने उन्हें अल्लाह का वास्ता भी दिया और अपने ऊपर दया करने के लिये भी कहा फिर भी उन्होंने मेरे ऊपर कोई दया नहीं दिखायी।

हमारे चारों तरफ भीड़ इकट्ठी हो गयी। हर आदमी यही पूछ रहा था "इस आदमी का अपराध क्या है।"

तो मेरे भाइयों ने कहा — "यह गधा हमारे भाई का नौकर था। इसने हमारे भाई को जहाज़ में से पानी में से फेंक दिया और उसकी सारी सम्पत्ति और जायदाद ले ली। हम लोग इसे बहुत दिनों से ढूँढ रहे हैं। आज हमको यह इस वेश में मिला है।"

तब उन्होंने मुझसे पूछा — "तेरे मन में क्या है कि तूने हमारे भाई का कत्ल किया। उसने तेरा क्या नुकसान किया था। क्या उसने तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार किया था या तुझे सारे मामलों का इन्चार्ज बना दिया था।"

इसके बाद उन दोनों ने अपने कपड़े फाड़ने शुरू कर दिये और अपने भाई की याद में बहुत ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। मुझे उन्होंने मारना जारी रखा।

इस बीच गवर्नर के सिपाही आ गये। उन्होंने धमकी भरे शब्दों में कहा — "यह तुम लोग किसको मार रहे हो।" और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे उठाते हुए मुझे मजिस्ट्रेट के सामने ले गये। ये दोनों भी मेरे साथ ही गये।

वहॉ पहुॅच कर इन्होंने अपनी वही कहानी फिर से कह दी जिसे उन्होंने भीड़ को सुनाया था। वहॉ इन्होंने उनको कुछ रिश्वत दे कर न्याय की मॉग की – खून का बदला खून।

मजिस्ट्रेट ने मुझसे भी पूछा कि मैं अपनी सफाई में क्या कहना चाहता था। भूख और पिटाई की वजह से मैं इतना कमजोर था कि

मैं अपनी सफाई में एक शब्द भी नहीं बोल सका। सिर नीचा किये हुए बस खड़ा ही रह गया। मेरे मुँह से कोई जवाब नहीं निकला।

मजिस्ट्रेट को विश्वास हो गया था कि खून मैंने ही किया है। उसने मुझे मैदान में ले जाने का हुक्म दिया और वहॉ ले जा कर मुझे एक खम्भे से बॉध दिया जाये।

ओ जहॉपनाह। मैंने पैसे दे कर इन दोनों को ज्यू से छुड़वाया था और बदले में इन्होंने पैसे दे कर मेरी जान लेने की कोशिश की। ये दोनों यहॉ मौजूद हैं। आप इनसे पूछें कि क्या मैंने बाल भर भी गलत कहा है।

सो मजिस्ट्रेट के लोग मुझे मैदान ले गये और जब मैंने वहॉ खम्भा खड़ा देखा तो मुझे लगा कि बस मेरी ज़िन्दगी अब इतनी ही है तो मैंने अपनी जिन्दगी से हाथ धो लिये।

इस कुत्ते के अलावा मेरे पास मेरे लिये और कोई नहीं था। उसकी हालत यह थी कि वह हर किसी के पैरों पर लोटता था और भौंकता था। कुछ उसको डंडी से मारते थे दूसरे उसे पत्थरों से मारते थे पर वह वहॉ से हिलता भी नहीं था।

मैं अपना मुँह क़िबला की तरफ कर के खड़ा हो गया और अल्लाह से कहा — "इस पल में मेरा तेरे सिवा और कोई नहीं है। मेहरबानी कर के आ और इस निर्दोष को बचा। अब अगर तू मुझे बचा लेता है तब तो मैं बच जाऊँगा नहीं तो में तो गया।"

इसके बाद मैंने शहादत[158] की प्रार्थना कही। फिर मैं लड़खड़ा गया और गिर गया।

अब अल्लाह की मेहरबानी से कुछ ऐसा हुआ कि उस देश के राजा के पेट में बहुत दर्द हुआ। कुलीन लोग और डाक्टर इकट्ठा हुए। सबने अपनी अपनी दवाऐं बतायीं पर किसी से कुछ फायदा नहीं हुआ।

एक पवित्र आदमी ने कहा कि इसकी सबसे अच्छी दवा यही है कि किसी अकेले और दुखी आदमी को दान दिया जाये और सारे बन्दी छोड़ दिये जायें क्योंकि दुआ में दवा से ज़्यादा ताकत होती है। तुरन्त ही नौकर लोग जेल की तरफ भागे।

इत्तफाक से एक आदमी मैदान की तरफ आ निकला जहॉ मैं खड़ा हुआ था। वहॉ बहुत सारी भीड़ को देख कर उसने सोचा कि लगता है कि यहॉ किसी को खम्भे से बॉध कर मौत की सजा दी जा रही थी। भीड़ में खड़े एक आदमी ने भी यही कहा।

तुरन्त ही वह अपना घोड़ा कुदाता हुआ वहॉ आया और उसने मेरी रस्सी अपनी तलवार से काट दी। उसने मजिस्ट्रेट के सिपाहियों को धमकी दी और कहा — "ऐसे समय में जब राजा की यह हालत हो रही है और तुम लोग अल्लाह के एक बन्दे को मारने जा रहे हो।" और इस तरह से उसने मुझे छुड़ा लिया।

[158] Qibla means Kaba. When Muslims pray they pray facing Kaba. Shahadat means the prayer which they read befor going against Muslims, such as Christians or Pagans.

यह देख कर मेरे भाई फिर से मजिस्ट्रेट के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि मुझे मार दिया जाये। क्योंकि इस अफसर ने पहले से ही उन लोगों से रिश्वत खा रखी थी इसलिये इसको वही करना पड़ा जो उन्होंने चाहा।

मजिस्ट्रेट ने उनसे कहा — "अब तुम लोग शान्त हो जाओ। अब मैं इसको ऐसे बन्द करूँगा कि यह अपने आप ही भूख प्यास और थकान से मर जायेगा और किसी को इस बात का पता भी नहीं चलेगा।"

उन्होंने मुझे फिर से पकड़ लिया और एक कोने में बिठा दिया। शहर से करीब एक कोस बाहर एक पहाड़ था जिस पर सोलोमन के समय में देवों ने एक बहुत ही गहरा और तंग कुँआ खोद लिया था। लोग इसे सोलोमन की जेल बोलते थे।

जिस किसी को भी राजा के गुस्से का सामना करना होता था उसको इस कुँए में फिंकवा दिया जाता था वहाँ वह भूख प्यास से अपने आप ही मर जाता था।

थोड़े में कहो तो ये मेरे दोनों भाई और मजिस्ट्रेट के सिपाही मुझे रात के शान्त वातावरण में उसी पहाड़ पर ले कर चले। वहाँ पहुँच कर मुझे उस कुँए में फेंक कर ही इन लोगों के दिमाग को शान्ति मिली। मुझे वहाँ कुँए में फेंक कर ये लोग वापस आ गये।

ओ राजा। यह कुत्ता मेरे साथ गया। जब वे मुझे कुँए में फेंक रहे थे तो यह उस कुँए के किनारे लेटा रहा। मैं भी कुँए में कुछ देर

तक बेहोश सा पड़ा रहा। कुछ देर बाद मुझे कुछ होश सा आया तो मुझे लगा कि मैं तो मरा हुआ हूँ और वह जगह मेरी कब्र है।

इसी समय मैंने दो आदमियों की आवाज सुनी जो वे आपस में बात कर रहे थे। मैंने सोचा कि ये जरूर ही नाकिर और मुनकिर[159] होंगे जो मुझसे सवाल करने आये हैं। उसी समय मैंने एक रस्सी सरकने की आवाज सुनी जैसे किसी ने उसे ऊपर से नीचे डाला हो।

मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने अपने आपको जमीन पर महसूस किया। मेरे हाथ में कुछ हड्डियाँ थीं।

एक पल के बाद ही मेरे कानों को कुछ ऐसी आवाज आयी जैसे मेरा मुँह कुछ चबा रहा हो। मैं डर गया और बोला — ओ अल्लाह के बन्दो। अल्लाह के लिये मुझे यह तो बताओ कि तुम लोग हो कौन।”

वे हँसे और बोले — “हा हा हा हा। यह सोलोमन की जेल है और हम उसके बन्दी हैं।”

मैंने उनसे पूछा — “क्या मैं अभी ज़िन्दा हूँ।”

वे फिर बहुत ज़ोर से हँस पड़े और बोले — “अभी तक तो तुम ज़िन्दा हो पर जल्दी ही मर जाओगे।”

मैंने कहा — “तुम कुछ खा रहे हो। क्या हो अगर तुम मुझे भी कुछ खाने को दो।”

---

[159] According to the Muhammadan belief, Nakir and Munkir are two angels who attend at the moment of death, and call to an account the spirit of the deceased.

इस बात पर वे गुस्सा हो गये और उन्होंने मुझे सूखा सा जवाब पकड़ा दिया और कुछ नहीं। खा पी कर वे सो गये और मैं बेहोशी और थकान की वजह से बेहोश सा हो गया। मैं रोता रहा और अल्लाह को याद करता रहा।

ओ ताकतवर राजा। मैं सात दिन समुद्र में रहा और इतने दिनों से भूखा था अपने इन भाइयों के केवल झूठे इलजामों की वजह से। बजाय इनसे खाना मिलने के मुझे इनसे केवल पिटाई ही मिली और अब इस जेल में पड़ा था। मेरे दिमाग में वहाँ से निकलने का कोई भी तरीका नहीं आ रहा था।

आखिर मैं मरने पर आ गया। कभी ज़िन्दगी मेरे पास से चली जाती तो कभी आ जाती। समय समय पर आधी रात को कोई आदमी वहाँ आता था और कुँए में रस्सी के सहारे कुछ रोटी और एक लोटा पानी उतारता था और पुकारता था। वे दो आदमी जो मेरे साथ ही वहाँ बन्द थे उसे पकड़ लेते थे और खा लेते थे।

कुत्ता यह सब बराबर देख रहा था। उसने अपनी अक्ल कुछ इस तरह से लड़ाई कि जिस तरीके से यह आदमी अपने मालिक के लिये रोटी और पानी नीचे लटकाता था उसी तरीके से कोई एक और अकेले दुखी आदमी को लिये भी लटकाये जो मेरा मालिक है ताकि उसकी ज़िन्दगी भी बच जाये।

यह सोच कर वह शहर गया। वहाँ उसने एक बेकर की दूकान की मेज पर बहुत सारी गोल गोल रोटियाँ रखी देखीं। उछल कर

उसने उसने उसमें से एक रोटी उठा ली और उसे ले कर दौड़ लिया। कुछ लोगों ने उसका पीछा किया और पत्थर भी मारे पर उसने रोटी नहीं छोड़ी।

वे उसका पीछा करते करते थक गये थे सो लौट गये। शहर के कुत्ते भी उसके पीछे दौड़ रहे थे। उसने उनसे रोटी बचा कर कुँए तक ले आया और उसे कुँए में डाल दी।

कुँए में इतनी रोशनी थी जिसमें मैं अपने पास पड़ी वह रोटी देख सकता। मैंने कुत्ते के भौंकने की आवाज भी सुनी। रोटी फेंकने के बाद कुत्ता मेरे लिये पानी ढूँढने चला गया।

एक गाँव के बाहर की तरफ एक बुढ़िया अपनी झोंपड़ी में रहती थी। कुछ छोटे बड़े पानी से भरे बर्तन उसकी झोंपड़ी के दरवाजे पर रखे थे और बुढ़िया सूत कात रही थी।

कुत्ता उसके पानी से भरे बर्तनों के पास तक गया और उनमें से एक बर्तन पकड़ने की कोशिश की। बुढ़िया ने उसे धमकी की हुँकार से डराया तो पानी का बर्तन कुत्ते के मुँह से फिसल गया और एक मिट्टी के बर्तन पर जा गिरा जिससे वह मिट्टी का बर्तन टूट गया। बचे हुऐ बर्तन भी इधर उधर हो गये और उनका पानी बिखर गया।

बुढ़िया ने एक डंडी उठायी और कुत्ते को मारने के लिये उठी। कुत्ते ने उसका स्कर्ट पकड़ लिया और अपना मुँह उसके पैरों पर मलने लगा और पूँछ हिलाने लगा।

फिर वह पहाड़ की तरफ भागा। लौट कर वह फिर वह बुढ़िया की तरफ भागा। कभी वह अपने मुँह में रस्सी पकड़ लेता और कभी बर्तन पकड़ लेता फिर कभी उसका स्कर्ट पकड़ लेता पर वह उसको बराबर खींचता ही रहा।

अल्लाह ने बुढ़िया के दिल में कुछ शक पैदा किया तो उसने रस्सी और पानी का एक बर्तन उठाया और उसके साथ साथ चल दी। वह उसके कपड़े पकड़े पकड़े झोंपड़ी के बाहर तक आया फिर उसके आगे आगे चलने लगा।

आखिर वह उसको रास्ता दिखाते दिखाते पहाड़ पर ले आया। कुत्ते के व्यवहार से बुढ़िया ने सोचा कि इसका मालिक कुँए में बन्द है और शायद यह अपने मालिक को पानी पिलाना चाहता है। बुढ़िया को रास्ता दिखाता हुआ वह उसको कुँए तक ले आया।

बुढ़िया ने अपनी बालटी पानी से भरी और उसको रस्सी के सहारे कुँए में नीचे लटका दिया। मैंने बर्तन पकड़ लिया। मैंने पहले रोटी का एक टुकड़ा खाया और फिर उसके ऊपर दो तीन घूँट पानी पिया। इस तरह से मैंने अपनी भूख और प्यास शान्त की।

मैंने अल्लाह को इस सहायता के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और एक कोने में बैठ गया। धीरज के साथ मैंने अल्लाह के फिर से बीच में आने का इन्तजार करते हुए कहा — "अब देखते हैं कि अब और आगे क्या होता है।"

इस तरह से इस बेजुबान जानवर मेरे लिये रोटी लाता रहा और बुढ़िया के द्वारा पानी लाता रहा।

जब बेकर ने देखा कि यह कुत्ता इस तरह से रोज ही रोटी ले जाता है तो उसको उस पर दया आ गयी। अब वह जब भी उसे देखता तो वह अपने आप ही उसकी तरफ एक रोटी फेंक देता।

और अगर वह बुढ़िया कभी पानी लाना नहीं चाहती तो यह कुत्ता उसके बर्तन तोड़ देता। इससे वह मजबूर हो कर उसको एक बालटी पानी लाने देती।

इस तरह से इस जानवर ने मेरी रोटी और पानी की कमी को पूरा किया। इसके अलावा यह हमेशा उस जेल के पास ही लेटा रहता।

इस तरह से छह महीने गुजर गये।[160] पर ज़रा यह सोचिये कि इतने दिनों तक इस तरह से रहने पर ऐसे बन्दी की क्या हालत होगी जिसके पास स्वर्ग की हवा कभी नहीं पहुँच सकती थी।

मेरी केवल खाल और हड्डियाँ ही बची हुई थीं। ज़िन्दगी मेरे लिये एक बोझ बन गयी थी। मैं अपने दिल में अल्लाह से बराबर यही प्रार्थना करता कि बस अब तुम मुझे उठा लो।

[160] [My Note : It is very unnatural that in spite of knowing that somebody was in the well, both the baker and the old woman did not inform any body to take the merchant out of the well, and he had to live in it there for six months.]

एक रात दोनों बन्दी सो रहे थे। मेरे दिल को बहुत दुख हुआ मैं बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा और अपने दुश्मनों को खत्म करने के लिये जमीन पर नाक रगड़ने लगा।

सुबह होने से कुछ देर पहले रात के पिछले प्रहर में मैं क्या देखता हूँ कि अल्लाह की मेहरबानी से एक रस्सी कुँए में लटक रही थी। मैंने सुना कि कोई बहुत ही धीमी आवाज में कह रहा था — "ओ अभागे नीच। इस रस्सी से तू अपने हाथ थोड़े ढीले बाँध और इस जगह से बाहर भाग जाना।"

पहले तो मुझे लगा कि शायद मेरे भाइयों के दिल में मेरे लिये कुछ दया आ गयी हो और क्योंकि हमारा खून का रिश्ता है इसलिये अपनी जिम्मेदारी पर मुझे यहाँ से निकालने के लिये आ गये हों। खुशी से मैंने वह रस्सी अपनी कमर में बाँध ली और किसी ने मुझे ऊपर खींचना शुरू किया।

रात बहुत अँधेरी थी इसलिये मैं उस आदमी को पहचान नहीं सका जिसने मुझे ऊपर खींचा था। जब मैं बाहर आ गया तो वह बोला — "आओ जल्दी आओ देर करने का समय नहीं है।"

मेरे अन्दर ताकत तो थी नहीं पर डर के मारे मैं पहाड़ पर से जितनी अच्छी तरह से मुझसे हो सकता था लुढ़कता हुआ सा चला जा रहा था।

नीचे पहुँच कर मैंने देखा कि वहाँ दो घोड़े तैयार खड़े थे। उस आदमी ने एक घोड़े पर मुझे बिठाया और दूसरे पर खुद बैठ गया

और हम चल दिये। आगे बढ़ कर हम एक नदी के किनारे पहुँच गये।

सुबह हो गयी थी और हम लोग **10–12** कोस शहर से दूर चले गये थे। तब मैंने उस आदमी को ठीक से देखा। वह आदमी पूरे तरीके से हथियारबन्द था। उसके शरीर पर वर्दी थी। उसके चारों तरफ यानी आगे पीछे और दोनों बगलों की तरफ चमकता हुआ लोहा लगा हुआ था। उसके घोड़े ने भी लोहे का जिरहबख्तर पहना हुआ था। वह मुझे गुस्से की नजर से देख रहा था।

गुस्से से अपने होठ काटते हुए उसने अपनी म्यान में से तलवार निकाली और मेरी तरफ कूदते हुए मेरे शरीर पर घाव का एक निशान बनाया। मैं घोड़े से नीचे गिर गया और मैंने उससे दया की भीख माँगी।

मैंने कहा — "मैं निर्दोष हूँ। तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो। ओ मेहरबान जनाब। आपने मुझे एक ऐसे जेल से निकाला है जहाँ से शायद में कभी नहीं निकल पाता और फिर आपने तलवार से घाव भी कर दिया है अब आप मेरे साथ यह ऐसे निर्दयी काम क्यों कर रहे हैं।"

उसने मुझसे पूछा — "तुम मुझे सच सच बताओ कि तुम कौन हो।" मैंने जवाब दिया कि मैं एक यात्री हूँ और बहुत सारी मुसीबतों में फँस गया हूँ। केवल आपकी सहायता से मैं कम से कम ज़िन्दा निकल आया हूँ। मैंने उससे कई चापलूसी वाले शब्द भी कहे।

अल्लाह की दुआ से उसका मन भी मेरे लिये दया से भर गया। उसने अपनी तलवार अपनी म्यान में रख ली और बोला — "जैसा अल्लाह चाहता है वैसा होता है। जाओ मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बख्शता हूँ। तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो जाओ। यह जगह कोई देर करने की नहीं है।"

हमने अपने अपने घोड़े दौड़ा दिये और सड़क पर आगे बढ़ते चले गये। वह बार बार असन्तुष्टि की साँसें लिये जा रहा था जैसे उसे किसी बात का दुख हो।

दोपहर तक हम एक टापू के पास तक पहुँच गये थे। यहाँ आ कर वह नौजवान अपने घोड़े से उतरा और उसने मुझे भी उतारा। उसने घोड़ों की पीठ से उनकी जीन उतारी और उन्हें चरने के लिये छोड़ दिया। उसने अपने शरीर से हथियार भी निकाले और बैठ गया।

बैठ कर वह मुझसे बोला — "ओ बदकिस्मत। अब तुम अपनी कहानी बताओ ताकि मैं यह जान सकूँ कि तुम कौन हो।"

मैंने उसे अपना नाम बताया अपने रहने की जगह बतायी और जो कुछ अपने बारे में बता सकता था बताया।

6 आज़ाद बख्त की कहानी–दूसरा भाग[161]

जब उस नौजवान ने मेरी पूरी कहानी सुनी तो वह रो पड़ा। वह बोला — "अब तुम मेरी कहानी सुनो। मैं ज़रबाद देश[162] के राजा की बेटी हूँ। और वह नौजवान जो इस सोलोमन की जेल में बन्द था उसका नाम है बहरामन्द।[163] वह मेरे पिता के वजीर का बेटा है।

एक दिन महाराज ने हुक्म दिया कि सारे राजा और कुँवर यानी राजकुमार मैदान में इकट्ठा हों जो जनानखाने की जालियों के पास ही था। वहाँ निशाना लगाने और चौगान[164] के खेल खेले जायेंगे ताकि लोगों की घुड़सवारी और निशाना लगाने की होशियारी जाँची जाये।

मैं रानी यानी अपनी माँ के पास बैठी हुई थी सबसे ऊँची मंजिल की जाली के पीछे दासियाँ और नौकर घूम रहे थे। मैं वहाँ से खेल देख रही थी।

वजीर का बेटा उन सबमें सुन्दर था और बहुत ही बढ़िया तरीके से अपने घोड़े को घुमा रहा था। वह मुझे बहुत अच्छा लग रहा

[161] Tale of Azad Bakht-Part Two (Tale No 3) – taken from : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/04_azadbakht_b.html

[162] The name of the countries which lie, as the people of Hindustan term it, below Bengal, i.e., to the south-east of it; the name includes the kingdoms of Ava and Pegu.

[163] Baharamand

[164] The chaugan is a Persian sport performed on horseback, with a large ball like a foot-ball, which is knocked about with a long stick like a shepherd's crook; it is precisely the game called in Scotland "shintey," and in England "hockey," only that the players are mounted.

था। मैं उसको अपना दिल दे बैठी थी। मैंने यह बात काफी दिनों तक छिपा कर रखी।

आखिर जब मैं बहुत बेचैन हो गयी तो मैंने यह बात अपनी निजी दासी से कही और उसकी सहायता लेने के लिये मैंने उसको बहुत सारी चीज़ें दीं। किसी तरह से वह उसे मेरे कमरे तक लाने में सफल हो गयी। इस तरह से वह भी मुझे प्यार करने लगा। इस प्यार के देने लेने में कई दिन बीत गये।

एक दिन आधी रात को एक सन्तरी ने उसको हथियारबन्द मेरे महल की तरफ आते देख लिया। उसने उसे पकड़ लिया और राजा से जा कर सारा मामला कहा। राजा ने उसको मौत की सजा सुना दी पर राज्य के सारे औफीसर आदि की विनती पर उसकी ज़िन्दगी तो बख्श दी गयी पर उसको सोलोमन की जेल में फेंक दिया गया।

और दूसरा आदमी जो उसके साथ जेल में फेंका गया वह उसका भाई है। वह जिस दिन पकड़ा गया था तो उसके साथ उसका भाई भी था सो दोनों ही को कुॅए में फेंक दिया गया था।

जब से वे कुॅए में फेंके गये थे तबसे आज तक उनको तीन साल हो गये हैं पर किसी को आज तक यह पता नहीं चल सका कि वह नौजवान राजा के महल में क्यों घुसा था। अल्लाह ने मेरा चरित्र सॅभाल कर रखा हुआ है।

पर उसकी अच्छाइयों के बदले में मैं अपना काम ठीक से कर रही हूॅ कि मैं उन दोनों के लिये खाना पानी ले कर आती हूॅ। जब

से वे कुँए में फेंके गये हैं तभी से मैं वहाँ हर आठवें दिन जाती हूँ और आठ दिन का खाना पानी उनको दे आती हूँ।

पिछली रात में मैंने एक सपना देखा कि मुझे कोई सलाह दे रहा है कि "जल्दी उठ। एक घोड़ा ले एक पोशाक ले रस्सी की एक सीढ़ी ले खर्चे के लिये कुछ पैसे ले और सोलोमन की जेल जा कर वहाँ रह रहे बन्दियों को छुड़ा ले।"

यह सुन कर मैं नींद से जाग गयी और बड़ी ख़ुशी से मैं एक आदमी की पोशाक पहन कर तैयार हुई। एक छोटे से बक्से में जवाहरात और कुछ सोने के सिक्के भरे एक घोड़ा ले कर और कुछ पोशाक ले कर मैं वहाँ चल दी ताकि मैं उनको रस्सी की सीढ़ी की सहायता से बाहर निकाल सकूँ।

पर इस तरीके से कुँए में से बाहर निकलना तो केवल तुम्हारी किस्मत में था। किसी को नहीं पता कि मैंने क्या किया है। शायद वह कोई रक्षा करने वाला दूत था जिसने मुझे तुम्हें इस तरह से आज़ाद करने के लिये भेजा। खैर जो मेरी किस्मत में था वही हो रहा है।"

इतना सुनाने के बन्द उसने अपने कपड़े में से कुछ नमकीन मठरी गेहूँ की रोटी दाल माँस निकाला। एक गिलास में उसने पानी में कुछ चीनी मिलायी और मुझे पीने के लिये दिया। मैंने पानी पिया कुछ नाश्ता किया।

कुछ देर के बाद उसने एक कपड़े का टुकड़ा निकाला और मेरी कमर में बॉध दिया और फिर मुझे नदी की तरफ ले चली। उसने कैंची से मेरे बाल काटे नाखून काटे नहलाया और कपड़े पहनाये। इस तरह से उसने मुझे एक नया आदमी बना दिया। मैंने क़िबला की तरफ मुॅह कर के अल्लाह की प्रार्थना की। वह सुन्दर लड़की भी जो कुछ मैं करता रहा उसे देखती रही।

जब मैंने अपनी प्रार्थना खत्म कर ली तो उसने पूछा — "यह तुम इस तरीके से क्या कर रहे थे।"

मैं बोला — "मैं अल्लाह की पूजा कर रहा था जिसने इस सारी दुनियॉ को बनाया और जिसने एक सुन्दर लड़की के द्वारा मुझे इस जेल से बचाया। उसके बराबर का कोई नहीं है। मैं उसी की पूजा कर रहा था और उसे धन्यवाद दे रहा था।"

यह सुन कर वह बोली — "तो तुम मुसलमान हो।"

मैं बोला — "अल्लाह का धन्यवाद है कि हॉ मैं हूू।"

वह बोली — "तुम्हारा इस तरह से पवित्र रहना मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे भी सिखाओ। मुझे भी सिखाओ कि कलमा कैसे पढ़ते हैं।"

मैंने अपने दिल में कहा "अल्लाह का लाख लाख धन्यवाद है कि यह भी हमारा धर्म अपनाना चाह रही है।"

मैंने उसको फिर अपना धर्म बताया — "और कोई अल्लाह नहीं है सिवाय अल्लाह के। मुहम्मद अल्लाह का धर्मदूत है।" और

उससे यह बार बार कहलवाया। फिर अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर हम वहाॅ से चल दिये।

रात को जब हम रुके तो उसने केवल हमारे धर्म के बारे में ही बातें कीं और किसी बारे में नहीं। वह ये बातें कर के बहुत खुश थी। इस तरह से हम दो महीनों तक दिन रात बराबर यात्रा करते रहे।

आखिर हम एक देश में पहुॅचे जो ज़रबाद और सरनदीप[165] की हदों के बीच में पड़ता था। वहाॅ हमें एक शहर दिखायी दिया जिसमें कौन्सटैनटिनोपिल से भी ज़्यादा लोग रहते थे। उसकी जलवायु बहुत अच्छी थी।

जब हमें यह पता चला कि वहाॅ का राजा बहुत न्यायशाली था और वह उसी के लिये नौशेरवाॅ से भी ज़्यादा मशहूर था। और साथ में वह अपनी जनता की रक्षा भी बहुत करता था। यह सुन कर मेरा दिल बहुत खुश हो गया।

वहाॅ हमने एक घर खरीदा और उसमें रहने लगे। कुछ दिन बाद जब हमारी यात्रा की थकावट दूर हो गयी तो मैंने कुछ जरूरी चीज़ें खरीदीं और उस सुन्दर लड़की से मुसलमानी रीति रिवाजों से शादी कर ली।

---

[165] Sarandip is the name for the island of Ceylon among the Arabs and Persians, as well as the Musalmans of India. Its ancient Hindu name was Lanka, applied both to the island and its capital.

तीन साल में ही मैं वहाँ की छोटी बड़ी सब चीज़ों को जान गया। मैंने अपनी साख भी जमा ली और बहुत अच्छी तरह से अपने व्यापार में लग गया। आखीर में मैं वहाँ के सब सौदागरों से आगे निकल गया।

एक दिन मैं वहाँ के वजीर को सलाम करने गया तो मैंने मैदान में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा देखी। मैंने वहाँ किसी से पूछा कि यह भीड़ वहाँ क्यों लगी हुई थी। तो पता चल कि दो लोग चोरी में लगे थे और शायद उन्होंने कत्ल भी किया था। इसलिये वे यहाँ लाये गये थे कि उनको तब तक पत्थर मारने थे जब तक वे मर न जायें।

यह सुन कर मुझे अपना मामला याद आ गया। मैं भी इसी तरह से ले जाया गया था और तब अल्लाह ने मुझे बचाया था। मैंने अपने मन में सोचा कि ये दो कौन हो सकते हैं जो इस तरह की मुसीबत में पड़े हुए हैं।

मुझे तो यह भी पता नहीं था कि उनको न्याय से सजा मिल रही थी या फिर मेरी तरह उन पर भी झूठा इलजाम लगा हुआ था। भीड़ में से घुसते हुए मैं उस जगह पहुँचा जहाँ वे खड़े थे तो मैंने देखा कि लो वे तो मेरे भाई थे।

उनके दोनों हाथ पीछे बँधे हुए थे और उनके सिर और पैर दोनों नंगे थे। उनको वहाँ देख कर मेरा खून खौल उठा और मेरा जिगर जलने लगा। मैंने पहरेदारों को कुछ सोने के सिक्के दिये और उनसे विनती की कि वह उनके मारने के समय को थोड़ा पीछे हटा

दें। ऐसा कर के मैं अपने घोड़े को तेज़ी से भगा कर गवर्नर के घर ले गया।

मैंने गवर्नर को एक बहुत ही कीमती लाल जिसकी कोई कीमत नहीं लगा सकता था भेंट में दिया और उन्हें छोड़ने की विनती की।

वह बोला — "एक आदमी ने उनकी शिकायत की है और उनके अपराध साबित किये जा चुके हैं। राजा का हुक्म सुनाया जा चुका है अब मेरे पास कोई रास्ता नहीं है।"

आखिर बहुत विनती करने पर गवर्नर ने शिकायत करने वाले को बुला भेजा और उसको पॉच हजार चॉदी के सिक्के दे कर उससे अपना कत्ल का इलजाम वापस लेने के लिये कहा।

मैंने उसको वह पैसा गिन दिया और उनकी सजा का कागज वापस करा दिया। इस तरह उनको उस भारी मुसीबत से बचा लिया। जहॉपनाह। आप इनसे पूछ लें कि मैंने सच कहा है या झूठ।

दोनों भाई चुपचाप खड़े थे। उन दोनों ने अपने अपने सिर झुका रखे थे जैसे वे कह रहे हों कि "हॉ यह आदमी सच कह रहा है।" और वे इन सब बातों पर शर्मिन्दा हों।

खैर मैं उनको छुड़ाने के बाद उनको अपने घर ले आया। उन्हें नहलाया धुलाया नये कपड़े पहनाये पेट भर खाना खिलाया और उनको दीवानखाने में ठहरा दिया गया।

मैंने उस समय तक उनको अपनी पत्नी से नहीं मिलवाया था। उनकी सारी जरूरतें मैं पूरी करता था। मैं उन्हीं के साथ खाता पीता भी था केवल सोने के लिये ही अपने कमरे में जाता था।

इस तरह से उनकी सेवा करते करते मुझे तीन साल बीत गये। उनकी तरफ से भी कोई ऐसा बुरा काम नहीं हुआ जो मुझे नाखुश करता। जब कभी मैं घोड़े पर सवार हो कर बाहर जाता तो वे घर पर ही रहते।

एक दिन ऐसा हुआ कि मेरी पत्नी नहाने के लिये गयी। जब वह दीवानखाने में आयी तो वहाॅ किसी आदमी को न देख कर उसने अपने चेहरे से अपना परदा उठा दिया। पर शायद मेरा दूसरा भाई वहाॅ लेटा हुआ था और जागा हुआ था सो जैसे ही उसने उसको देखा तो वह उस पर मोहित हो गया।

उसने यह घटना बड़े भाई को बतायी तो दोनों ने मिल कर एक बार फिर मेरे मारने का प्लान बनाया।

उधर मैं इन सब हालातों से बिल्कुल अनजान था। मैं कहा करता था "अल्लाह का लाख लाख धन्यवाद है कि इस बार सब ठीक चल रहा है। इन्होंने कोई ऐसा बुरा काम नहीं किया जैसा ये लोग पहले करते थे। लगता है कि इनका व्यवहार अब कुछ ठीक हो गया है। इनको कुछ शर्म आ गयी है।"

एक दिन शाम को खाना खाने के बाद मेरा बड़ा भाई अपने देश को और ईरान[166] के आनन्द को याद कर के रोने लगा। मेरा दूसरा भाई भी आहें भरने लगा। तो मैंने कहा कि अगर तुम घर वापस जाना चाहते हो तो जाओ। मैं तो केवल तुम्हारी खुशी चाहता हूॅ। वैसे मेरी भी इच्छा यही है कि हम अपने देश वापस चलें। अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं भी तुम्हारे साथ ही चलूॅगा।"

मैंने अपने भाइयों का दुख और साथ में अपना इरादा भी अपनी पत्नी से कहा। मेरी समझदार पत्नी ने कहा — "तुम ऐसा सोच सकते हो पर मुझे लगता है कि वे तुम्हारे खिलाफ फिर से कोई जाल रच रहे हैं। वे तुम्हारी जान के दुश्मन हैं।

वे तुम्हारी आस्तीन का सॉप हैं। तुम अपनी आस्तीन में सॉप का एक जोड़ा पाल रहे हो। जैसा तुम्हें अच्छा लगे तुम वैसा करो पर ऐसे नीच लोगों से सॅभल कर रहना चाहिये।"

खैर यात्रा की सब तैयारियॉ की गयीं। मैदान में तम्बू लगाये गये। एक बहुत बड़ा काफिला तैयार हो गया। और सबने मुझे काफिले का सरदार मान लिया। शुभ मुहूर्त निकाला गया और उस समय काफिला चल दिया।

[166] Iran is the ancient name of Persia in its more extended sense, that is, the Persian Empire. Fars is sometimes used in the same sense. Strictly speaking, it denotes Persia proper, which is only a province of Iran. [Iran means Persia in its limited sense--i.e., Persia proper.]

जहाँ तक मेरा सवाल था मैं हमेशा अपने भाइयों की तरफ से सावधान रहा। हालाँकि मैं उनकी सब बातें मानता रहा और वही करता रहा जो उन्हें अच्छा लगता था।

जब हम अपनी जगह आ पहुँचे तो मेरा दूसरा भाई बोला कि यहाँ से एक फरसाख[167] दूर एक सलसाबिल[168] जैसा फव्वारा है जहाँ के मैदान में बहुत बहुत दूर तक लिली गुलाब ट्यूलिप आदि फूल खिले हुए हैं। वह जगह घूमने के लिये बहुत अच्छी है। अगर हम सबकी राय हो तो हम कल वहाँ घूमने चलें और अपने दिल खुश करें। इससे थोड़ी थकान भी दूर हो जायेगी।"

मैंने कहा — "तुम लोग यहाँ मालिक हो। अगर तुम कहो तो कल हम लोग वहीं रुक जायेंगे। थोड़ा इधर उधर घूमेंगे।"

वे बोले "इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है।"

मैंने हुक्म दिया कि सारे काफिले को कह दो कि कल हम रुकेंगे। फिर मैंने अपने रसोइये को नाश्ता बनाने का हुक्म दिया जिसमें मैंने उससे कई चीज़ें बनवायीं। क्योंकि हम लोग आनन्द मनाने के लिये जा रहे थे।

जब सुबह हुई तो मेरे दोनों भाइयों ने कपड़े पहने अपने अपने हथियार सँभाले और मुझसे भी जल्दी करने के लिये कहा ताकि हम लोग वहाँ ठंड ठंड में पहुँच कर आराम से घूम सकें।

---

167 Farsakh is the measure of distance in Persia – about 3 ¾ miles.
168 Salsabil is the name of a fountain of Paradise, according to Muhammadan belief.

मैंने अपने घोड़े को तैयार करने का हुक्म दिया पर यह उन्होंने देख लिया तो बोले उसका आनन्द तो उसको पैदल घूम कर देखने में ही है। क्या वही आनन्द घोड़े पर सवार हो कर घूमने में भी लिया जा सकता है। इसलिये इसके बजाय सईसों को हुक्म दो कि वह हमारे पीछे पीछे घोड़े ले आयें। दो नौकर हुक्का और कौफी का बर्तन लिये आ रहे थे।

जब हम सड़क पर जा रहे थे तो आनन्द के लिये तीर भी चलाते जा रहे थे। जब हम काफिले से थोड़ा दूर चले गये तो उन्होंने एक नौकर को किसी काम पर भेज दिया। हम और आगे बढ़े तो उन्होंने दूसरे नौकर को पहले वाले नौकर को लाने के लिये भेज दिया।

मेरी बदकिस्मती कि मैं चुप ही रहा। मेरा बोल ही नहीं निकला जैसे किसी ने मेरे होठों पर सील लगा दी हो। और उनकी जो इच्छा हुई वे वह करते रहे। मेरा ध्यान बात करने में बॅटाते रहे। वे बराबर मुझसे आगे चलते रहे। खैर यह कुत्ता मेरे साथ ही रहा।

जब हम लोग काफी दूर निकल आये तो न तो मुझे कोई फव्वारा दिखायी दिया और न ही कोई बागीचा। वहॉ तो बस एक मैदान पड़ा हुआ था जिसमें कॉटे ही कॉटे थे।

वहॉ मुझे पेशाब लगी तो मैं वहीं बैठ गया। तभी मैंने अपने पीछे एक तलवार जैसी कोई चीज़ चमकती देखी तो मैंने पीछे देखा। जैसे ही मैंने पीछे देखा तो मेरे दूसरे भाई ने मेरे ऊपर तलवार

से इतने ज़ोर से वार किया कि मुझे लगा कि मेरे सिर के दो टुकड़े हो गये।[169]

इससे पहले कि मैं यह कहता कि "ओ जंगलियों। तुम लोग मुझे क्यों मारते हो।" मेरे बड़े भाई ने मुझे मेरे कन्धे पर मारा। दोनों घाव बहुत गहरे थे। मैं कॉपा और गिर गया। तब इन दोनों बेरहमों ने आराम से मुझे काटा पीटा और मुझे फिर मेरे ही खून में लिपटा वहीं छोड़ कर चले गये।

यह कुत्ता मुझे इस हालत में देख कर उन दोनों पर कूद पड़ा पर उन्होंने इसको भी घायल कर दिया।

इसके बाद इन्होंने अपने शरीर पर कुछ घाव किये और कैम्प की तरफ नंगे सिर और नंगे पैर भाग गये। वहाँ जा कर इन्होंने बोला कि मैदान में कुछ डाकू मिल गये थे जिन्होंने इनके भाई को मार दिया और इनके साथ भी कुछ वैसा ही व्यवहार किया पर ये केवल घायल ही हुए।

अब तुम लोग यहाँ से जल्दी चलो नहीं तो वे कारवाँ पर भी हमला बोल सकते हैं और फिर हम लोगों को भी परेशान कर सकते हैं। यह सुन कर वे बहुत डर गये उन्होंने जल्दी जल्दी सब सामान बाँधा और वहाँ से चल दिये।

मेरी पत्नी को इनके पहले कामों का इनके अनमोल गुणों का और बुरे कामों का जो इन्होंने मेरे साथ किये थे पहले से ही पता था

[169] It is an exaggeration, but it means "hitting my head a little too strongly"

सो वह यह समझ गयी कि ये लोग झूठ बोल रहे हैं उसने अपने सीने में छुरा मार कर अपने आपको खत्म कर लिया और अल्लाह के पास चली गयी।"

आज़ाद बख्त आगे बोला — "ओ दरवेश। जब कुत्ता पूजने वाला ख्वाजा अपनी बदकिस्मती की कहानी यहाँ तक सुना चुका तो मेरी आँखों से आँसू निकल आये।

सौदागर ने जब मेरा दुख देखा तो बोला — "जहाँपनाह। अगर आपकी बेइज़्ज़ती न हो तो मैं अपने कपड़े उतारना चाहूँगा और आपको अपना सारा शरीर दिखाना चाहूँगा।"

इसके बाद यह दिखाने के लिये कि वह सच बोल रहा था या नहीं उसने अपने कपड़े कन्धे पर से फाड़ दिये और अपना सारा शरीर दिखा दिया।

उसके सारे शरीर कहीं चार अंगुल जगह भी नहीं थी जहाँ घाव न हो। इसके अलावा उसकी खोपड़ी पर एक इतना गहरा गड्ढा था कि उसमें पूरा का पूरा अनार रखा जा सकता था।

यह देख कर राज्य के जितने भी औफीसर वहाँ मौजूद थे सबने अपनी आँखें बन्द कर लीं। उनके अन्दर इतनी भी ताकत नहीं थी कि वे इस दृश्य को दोबारा देखने की हिम्मत कर सकें।

इसके बाद ख्वाजा ने फिर अपना हाल बताना शुरू किया — "योर मैजेस्टी। जब मेरे इन भाइयों ने जैसा कि ये सोचते थे अपना काम खत्म कर लिया तो ये वहाँ से चले गये। मैं वहीं उसी जगह

अधमरा सा लेटा रहा। मेरे साथ मेरा कुत्ता भी घायल हुआ पड़ा था।

मेरे शरीर से मेरा इतना सारा खून बह चुका था कि मेरे अन्दर ज़रा सी भी उठने बैठने की ताकत तो थी ही नहीं यहाँ तक कि महसूस करने की ताकत भी नहीं थी। मैं सोच ही नहीं सका कि मैं ज़िन्दा कैसे था।



जिस जगह मैं लेटा हुआ था वह सरनदीप की सीमा के पास थी और एक बहुत बड़ा शहर उसके पास ही था। उस शहर में एक पगोडा था। उस देश के राजा की एक बेटी थी जो बहुत सुन्दर थी।

बहुत सारे राजा और राजकुमार उससे शादी करने के इच्छुक थे। वहाँ परदे का कोई रिवाज नहीं था सो वह राजकुमारी अपनी साथिनों के साथ वहाँ ऐसे ही खुले मुँह शिकार करती घूमती रहती थी।

उस जगह के पास जहाँ मैं लेटा हुआ था वहाँ एक शाही बागीचा था। उस दिन उसने अपने पिता से छुट्टी ली और इस बागीचे में घूमने के लिये आ गयी।आनन्द के साथ घूमते हुए वह इधर मैदान की तरफ निकल आयी जहाँ मैं लेटा हुआ था।

कुछ दासियाँ भी उसके साथ थीं। वे जहाँ मैं लेटा हुआ था उस जगह के पास तक आयीं तो वहाँ उन्होंने कुछ कराहने की आवाजें

सुनी। इधर उधर देखा तो मुझे वहाँ पड़ा पाया। इस दशा में मुझे वहाँ पड़ा देख कर वे इस बात को राजकुमारी को बताने गयीं।

उन्होंने कहा कि हमने एक बदकिस्मत को उसके ही खून में लिपटा पड़ा देखा है। उसके साथ एक कुत्ता भी वहीं पड़ा हुआ है। यह सुन कर राजकुमारी खुद मेरे पास आयी। मुझे देख कर वह खुद भी दुखी हो गयी और बोली देखो यह ज़िन्दा भी है या नहीं।

उसकी दो तीन साथिनें घोड़े से नीचे उतरीं और मेरी जाँच पड़ताल कर के बोलीं — "इसकी साँस तो अभी भी चल रही है।"

राजकुमारी ने उनको मुझे सावधानी से एक कालीन पर उठाने और बागीचे ले कर जाने के लिये कहा।

वे जब मुझे बागीचे में ले आयीं तो राजकुमारी ने शाही चीर फाड़ वाले डाक्टर को बुलवा भेजा। उसने मुझे और मेरे कुत्ते दोनों को ठीक होने के लिये कई इन्जैक्शन लगाये और हमें तसल्ली दी। डाक्टर ने मेरा शरीर धोया पोंछा घावें को सिला और प्लास्टर लगाया।

उसने फिर बदमुश्क विलो का सत्त[170] मँगवाया और पानी की जगह मेरे गले में वही डलवाया। राजकुमारी खुद मेरे बिस्तर के सिरहाने बैठी रहती थी और मेरी हर जरूरत का ख्याल रखती थी।

---

[170] The spirit drawn from the leaves of an aromatic tree which grows in Kashmir, called Bed-Mushk; it is a tonic and exhilarating.

दिन और रात में दो चार बार मुझे वह शर्बत बना कर देती और अपने हाथ से पिलाती।

आखिर जब मैं अपने होश में आया तो मैंने राजकुमारी को दुख के साथ कहते सुना — "क्या खूनी किस्म की यह बदकिस्मती तेरे ऊपर आ पड़ी है। किसने यह बेरहमी दिखायी है। क्या वह उस बड़ी मूर्ति[171] से भी नहीं डरा।"

दस दिन के बदमुश्क और शर्बतों के असर से मेरी आँखें कुछ खुलीं। मैंने अपने चारों तरफ देखा तो मुझे लगा कि मेरे चारों तरफ इन्द्र का दरबार लगा हुआ है। राजकुमारी मेरे बिस्तर के सिरहाने खड़ी हुई है। मैंने एक आह भरी और हिलना चाहा पर मेरे अन्दर इतनी ताकत ही नहीं थी कि मैं हिल भी सकता।

राजकुमारी ने दयापूर्वक कहा — "ओ फारस के रहने वाले। अब तुम खुश हो जाओ दुखी मत हो। हालाँकि किसी बेरहम ने तुम्हारा यह हाल किया है फिर भी बड़ी मूर्ति ने मेरे द्वारा तुम पर दया करवा दी है। अब तुम ठीक हो जाओगे।"

"मैं उस अल्लाह की कसम खा कर कहता हूँ जो एक है और उसके जैसा दूसरा कोई नहीं है कि उसको देखने पर मैं फिर से बेहोश हो गया। उसने भी यह बात देखी तो उसने अपने हाथ में पकड़ी एक शीशी से मेरे ऊपर गुलाब जल छिड़का।

[171] Big idol worshipped in Pagans.

बीस दिन बाद मेरे सारे घाव भर गये। जब सब लोग सो जाते राजकुमारी रात को बराबर आती और मुझे खाना खिलाती। चालीस दिन बाद मैंने अपने बिल्कुल ठीक हो जाने की खुशी में पहली नमाज पढ़ी।

राजकुमारी बहुत खुश थी उसने डाक्टर को बहुत इनाम दिया और मुझे कई कीमती कपड़े दिये। अल्लाह की मेहरबानी से और राजकुमारी की देखभाल में अब मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गया था। मेरा कुत्ता भी मोटा हो गया था।

वह मुझे रोज वाइन पिलाती मेरा हाल सुनती और मुझसे खुश थी। मैं भी उसको छोटी छोटी कहानियाँ और भी कुछ कुछ सुना कर उसको खुश रखने की कोशिश करता।

एक दिन उसने मुझसे कहा — "मेहरबानी कर के अपनी यात्रा के हाल सुनाओ। मुझे बताओ कि तुम कौन हो और यह हाल तुम्हारा किसने किया।"

तब मैंने उसको शुरू से ले कर आखीर तक अपनी कहानी सुना दी। मेरी कहानी सुन कर वह रो दी। फिर बोली — "अब मैं तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार करूँगी कि तुम अपनी सारी मुसीबतें भूल जाओगे।"

मैंने कहा — "अल्लाह तुम्हें बनाये रखे। तुमने तो मुझे एक नयी ज़िन्दगी दी है। मैं तो सारा का सारा तुम्हारा हूँ। अल्लाह के लिये मेरे ऊपर मेहरबानियाँ करती हुई हमेशा मुझसे खुश रहो।"

वह सारी सारी रात मेरे पास अकेली बैठी रहती। कभी कभी आया भी उसके साथ रहती और मेरी कहानियाँ सुनती रहती। कभी कभी वह अपनी कहानियाँ भी सुनाती। जब राजकुमारी चली जाती तब मैं अकेला रह जाता। उस समय एक कोने में छिप कर मैं अपनी पूजा करता नमाज पढ़ता।

एक बार ऐसा हुआ कि राजकुमारी अपने पिता के पास गयी हुई थी और मैं सुरक्षित रूप से बैठा हुआ अपनी प्रार्थना कर रहा था कि अचानक राजकुमारी अपनी आया से यह कहती हुई मेरे कमरे में घुसी — "चलो देखते हैं कि यह फारसी क्या कर रहा है। वह जाग रहा है या सो रहा है।"

पर जब वह अन्दर आयी तो उसने देखा कि मैं तो अपनी जगह पर था ही नहीं। यह देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ और उसके मुँह से निकला — "अरे यह कहाँ गया। कहीं ऐसा तो नहीं कि वह किसी और से प्यार करने लगा हो।"

वह मुझे कमरे के हर छेद और कोने में ढूँढने लगी और फिर वहाँ आ पहुँची जहाँ मैं अपनी प्रार्थना कर रहा था। उसने इससे पहले कभी किसी को इस तरह से प्रार्थना करते नहीं देखा था। वह चुपचाप खड़ी रही और मुझे देखती रही।

जब मैंने अपनी प्रार्थना खत्म कर ली तो मैंने अल्लाह को धन्यवाद देने के लिये अपने हाथ उठाये और जमीन पर लेट गया।

यह देख कर उसको हॅसी आ गयी। वह बोली — "अरे यह आदमी क्या पागल हो गया है। यह कैसी कैसी शक्लें बनाता रहता है।"

उसकी हॅसी की आवाज सुन कर मैं चौंक गया। राजकुमारी आगे बढ़ी और उसने मुझसे पूछा — "ओ फारस के रहने वाले। यह तुम क्या कर रहे थे।"

पहली बार तो मैं जवाब ही नहीं दे सका तो आया बोली — "क्या मैं आपकी बुराइयें का जिम्मा ले सकती हू और आपकी बलि बन सकती हॅू। मुझे ऐसा लगता है कि यह आदमी मुसलमान है और लत और मनत[172] का दुश्मन है। यह एक अनदेखे अल्लाह की पूजा करता हैं।"

यह सुनते ही राजकुमारी ने अपने दोनों हाथ एक दूसरे पर मारे और बड़े गुस्से में भर कर बोली — "मुझे नहीं पता था कि यह तुर्क है और हमारे भगवानों में विश्वास नहीं करता इसी लिये तो यह हमारी बड़ी मूर्ति के गुस्से में आ गया है। मैंने इसको गलती से बचा लिया और अपने घर में रखा।" यह कह कर वह वहॉ से चली गयी।

उसके ये शब्द सुन कर मैं तो बहुत ही परेशान हो गया और यह सुन कर मुझको लगा कि अब वह पता नहीं मुझसे किस तरीके का व्यवहार करेगी। डर के मारे मेरी तो नींद ही उड़ गयी। मैं सारी रात रोता रहा और मेरा चेहरा ऑसुओं से नहाता रहा।

---

[172] Lat and Manat were the two great idols of Hindu worship in former times. [See Dow's Hindoostan.]

इस तरह रोते हुए मुझे तीन दिन और तीन रात गुजर गये। एक बार भी मैं पलक नहीं झपका पाया। तीसरी रात को राजकुमारी मेरे कमरे में आयी। उसका चेहरा वाइन के नशे में चमक रहा था। साथ में उसकी आया भी थी।

वह बहुत गुस्से में थी। उसके हाथ में तीर कमान थे। वह कमरे के बाहर ही चमन यानी अपने बागीचे में बैठ गयी। उसने अपनी आया से एक गिलास वाइन माँगी।

उसको पीने के बाद वह बोली — "ओ आया। क्या यह वही फारस का रहने वाला है जिस पर हमारी बड़ी मूर्ति नाराज है। यह मर गया है या अभी ज़िन्दा है।"

आया बोली — "क्या में आपकी बुराइयाँ अपने जिम्मे ले सकती हूँ। अभी आपकी कुछ ज़िन्दगी बाकी है।"

राजकुमारी बोली — "यह तो अब मेरे शक के घेरे में आ गया है। इससे कहो कि यह बाहर निकले।"

आया ने मुझे पुकारा। मैं बाहर की तरफ भागा। मैंने देखा कि राजकुमारी का चेहरा गुस्से से लाल हो कर चमक रहा है। मेरे शरीर में तो जैसे जान ही नहीं थी। मैंने उसको सलाम किया। दोनों हाथ जोड़ कर चुपचाप उसके सामने खड़ा हो गया।

उसने मुझे गुस्से से देखा फिर आया से बोली — "मैं अपने धर्म के इस दुश्मन को तीर मार कर मार दूँगी। क्या हमारी बड़ी मूर्ति फिर मुझे माफ कर देगी। मैंने पहले से इसको अपने घर में रख कर

और इसकी जरूरतों को पूरा कर के एक बहुत बड़ा अपराध किया है।"

आया बोली — "इसमें राजकुमारी जी की क्या गलती है। जब आपने इनको अपने घर में रखा तब आप तो इनको जानती भी नहीं थीं। आपने तो इन पर केवल दया की है। आपको भलाई का बदला भलाई ही मिलेगा। और इस आदमी को बड़ी मूर्ति के हाथों बुराई का फल भोगना पड़ेगा जो इसने की है।"

यह सुन कर राजकुमारी बोली — "इससे बोलो कि यह बैठ जाये।"

आया ने मुझे बैठने का इशारा किया सो मैं बैठ गया। राजकुमारी ने एक गिलास वाइन और पी और आया से कहा — "इस नीच को भी एक गिलास वाइन दो।"

मैं बिना हिचक के उसे एक साँस में ही खाली कर गया और फिर राजकुमारी को सलाम किया। उसने मुझे कभी सीधे नहीं देखा पर वह तिरछी निगाहों से मुझे जरूर देखती रही। जब मुझे वाइन थोड़ी चढ़ गयी तो मैंने कुछ कविताऐं कहनी शुरू कर दीं। मैंने एक कविता कही —

मैं तेरे काबू में हूँ और अगर ज़िन्दा भी हूँ तो क्या
छुरे के नीचे अगर कोई साँस लेता है तो क्या

कविता की ये लाइनें सुन कर वह मुस्कुरायी और आया की तरफ घूम कर बोली — "अरे तू सो गयी क्या।"

आया ने राजकुमारी की बात समझ कर कहा — "हॉ मुझे नींद आ रही है।" फिर उसने राजकुमारी से छुट्टी ली और चली गयी।

कुछ देर बाद राजकुमारी ने मुझसे एक गिलास वाइन के लिये कहा। मैंने तुरन्त ही उसका वाइन का गिलास भर दिया और उसको दे दिया। उसने बड़े सलीके से उसे मेरे हाथ से लिया और सारा पी गयी।

उसके बाद मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा। उसने बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और बोली — "ओ अज्ञानी आदमी। तुमने हमारी बड़ी मूर्ति में ऐसा क्या बुरा देखा जो तुम एक अनदेखे भगवान को पूजने लगे।"

मैंने कहा — "नाराज न हो। सोच कर देखो कि वह जो अकेला ही क्या तारीफ के लायक है जिसने एक बूॅद से तुम जैसे सुन्दर प्राणी को बना दिया और उसे इतनी सुन्दरता और सम्पूर्णता दी कि वह एक पल में ही हजारों आदमियों को अपनी तरफ खींच ले।

लेकिन इस बड़ी मूर्ति में ऐसा क्या जिसकी कोई पूजा करे। पत्थर काटने वालों ने एक पत्थर काट कर इसको एक मूर्ति की शक्ल दे दी है और बेवकूफ लोगों को यह कह कर जाल में फॉस लिया कि इसकी पूजा करो।

हम मुसलमान हैं हम केवल उसी की पूजा करते हैं जिसने हमें बनाया है। जो मूर्ति पूजा करते हैं उनके लिये उसने नरक बना रखा है पर जो उसमें विश्वास रखते हैं उनके लिये उसने स्वर्ग बनाया है।

अगर तुम अल्लाह में विश्वास करोगी तो तुमको स्वर्ग की खुशियाँ मिलेंगी। सच को गलत से अलग कर के देखो तो तुम देखोगी कि तुम्हारी यह भक्ति झूठी है।

काफी देर के बाद ऐसी बातें सुन कर उस पत्थरदिल का दिल कुछ मुलायम हुआ और वह अल्लाह की मेहरबानी से रो पड़ी। वह बोली — "मुझे अपना धर्म सिखाओ।"

तब मैंने उसे कलमा सिखाया। उसने वह अपने दिल से दोहराया और माफी की प्रार्थना की। वह अब सच्ची मुसलमान हो चुकी थी। मैं फिर उसके पैरों पर गिर पड़ा और उसे धन्यवाद दिया। सुबह तक वह कलमा ही पढ़ती रही और माफी माँगती रही।

वह फिर बोली — "मैंने तो तुम्हारा धर्म अपना लिया है पर मेरे माता पिता तो मूर्ति पूजा करने वाले हैं। उनके लिये क्या इलाज है।"

मैंने कहा — "अब तुम्हें उससे क्या। जो जैसा करेगा वह वैसा भरेगा।"

वह बोली — "मेरे माता पिता ने मेरी शादी मेरे चाचा के लड़के से तय कर दी है और वह मूर्ति पूजा करता है। अगर कल मेरी

उससे शादी हो जाती है, अल्लाह न करे, और उस मूर्तिपूजक से मेरे बच्चे होते हैं तो यह तो मेरे लिये बड़ी बदकिस्मती की बात होगी। हमें तुरन्त ही इसका कुछ उपाय सोचना चाहिये ताकि हम इस मुश्किल से बच सकें।"

मैं बोला — "जो कुछ तुम कह रही हो वह बिल्कुल ठीक कह रही हो पर जो तुम ठीक समझो वह करो।"

वह बोली — "अब मैं यहाँ बिल्कुल नहीं रह सकती। अब मैं कहीं और चली जाऊँगी।"

मैंने पूछा — "पर तुम यहाँ से जाओगी कैसे और कहाँ जाओगी।"

वह बोली — "पहली बात तो यह कि तुम मुझे यहीं छोड़ कर सराय में मुसलमानों के साथ ठहर जाओ ताकि सबको इस बात का पता चल जाये और तुम्हारे ऊपर कोई शक न करे।

वहाँ रहते हुए तुम किसी जहाज़ पर नजर रखना और अगर कोई जहाज़ फारस की तरफ जाता हो तो मुझे बताना। इस काम के लिये मैं अपनी आया को तुम्हारे पास अक्सर भेजती रहूँगी।

जब भी तुम मुझे यह बात बताओगे कि सब कुछ तैयार है तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी और जहाज़ पर चढ़ कर यहाँ से भाग जाऊँगी। इस तरह से मुझे इन दूसरे धर्म वालों से छुट्टी मिल जायेगी।"

मैंने कहा — "मैं तुम्हारी ज़िन्दगी और सुरक्षा के लिये अपनी जान भी दे सकता हूँ पर तुम अपनी आया का क्या करोगी।"

वह बोली — "उसका मामला तो मैं आसानी से सुलझा सकती हूँ। उसको तो मैं एक प्याला बहुत तेज़ जहर पिला दूँगी।"

इस तरह से प्लान तैयार कर लिया गया। अगले दिन सुबह ही मैं सराय चला गया। वहाँ मैंने एक कमरा किराये पर ले लिया और उसमें रहने लगा। उससे बिछड़ कर मैं तो बस इसी आशा में था कि अब हम कब मिलेंगे।

इस घटना के होने के दो महीने में जब रम सीरिया और इस्फाहान के सौदागर मिले तो उन्होंने पानी के रास्ते वापस लौट जाने का प्लान बनाया और अपना सामान जहाज़ पर रखना शुरू किया। एक साथ रहने की वजह से मैंने उनसे काफी जान पहचान कर ली थी।

उन्होंने मुझसे पूछा — "जनाब आप हमारे साथ नहीं आयेंगे क्या। आप इन काफिरों के देश में कब तक रहेंगे।"

मैंने जवाब दिया — "मेरे पास क्या है जिसे ले कर मैं अपने देश जाऊँ। मेरी सम्पत्ति तो यही है – एक दासी एक बक्सा और एक कुत्ता। अगर आप लोग मुझे रहने के लिये थोड़ी सी जगह दे सकें तो मुझे उसकी कीमत बता दें। तब मेरे दिमाग में शान्ति हो जायेगी और मैं भी जहाज़ पर चढ़ पाऊँगा।"

सौदागरों ने मुझे एक केबिन दे दिया और मैंने उनको पैसे दे दिये। अब मेरा दिल शान्त था सो मैं आया के घर गया और उससे कहा — "ओ माँ। मैं आपसे विदा लेने आया हूँ। अब मैं अपने देश जा रहा हूँ। अगर आपकी मेहरबानी से मुझे राजकुमारी के एक बार दर्शन हो जायें तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

आया ने किसी तरह से मेरी बात मान ली और बोली — "मैं आज रात को फलाँ फलाँ जगह आऊँगी।"

"ठीक है।" कह कर और जगह तय कर के मैं सराय वापस आ गया। वहाँ से मैंने अपना बक्सा और बिस्तर उठाया और उनको जहाज़ पर ले गया। वहाँ ले जा कर मैंने उनको जहाज़ वालों को सुरक्षित रूप से रखने के लिये दे दिया।

फिर मैंने कहा कि मैं अपनी दासी को कल सुबह ले कर आऊँगा। जहाज़ के मालिक ने कहा — "जल्दी ही ले कर आना क्योंकि हम कल सुबह जल्दी ही निकल जायेंगे।"

मैंने कहा "ठीक है।"

रात को में अपनी तय की हुई जगह पर पहुँचा। रात का एक प्रहर बीतने पर जनानखाने का दरवाजा खुला और राजकुमारी मैले से कपड़े पहन कर आयी। उसके हाथों में जवाहरातों का एक डिब्बा था। उसने वह डिब्बा मुझे दे दिया और मेरे साथ चल दी।

जैसे ही सुबह हुई हम लोग समुद्र के किनारे पहुँच गये और फिर जहाज़ पर चढ़ गये। यह वफादार कुत्ता भी मेरे साथ गया। जब

दिन निकल आया तब हमने लंगर उठा दिया और वहॉ से चल दिये।

हम लोग सुरक्षित रूप से चले जा रहे थे कि किसी एक बन्दरगाह से एक तोप की आवाज सुनायी पड़ी। जहाज़ पर जितने भी लोग सवार थे सबको यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ कि यह तोप की आवाज कहॉ से और क्यों आयी। जहाज़ का लंगर फिर से डाल दिया गया।

लोगों ने आपस में सलाह की कि कहीं ऐसा तो नहीं कि बन्दरगाह के गवर्नर ने कोई शरारत की हो वरना उस तोप को छोड़ने क्या जरूरत थी।

अब हुआ यह कि सभी सौदागरों के पास सुन्दर सुन्दर दासियॉ थीं। इस डर से कि बन्दरगाह का गवर्नर कहीं उनको पकड़ न ले सो उन सबने अपनी अपनी दासियों को बक्सों में बन्द कर दिया। मैंने भी वैसा ही किया। मैंने राजकुमारी को अपने बक्से में बन्द कर दिया और उसमें ताला लगा दिया।

इस बीच गवर्नर और उसके लोग जहाज़ पर चढ़ आये। इस सबका मतलब शायद यह था कि जब आया की मौत और राजकुमारी के गायब होने की खबर चारों तरफ फैली और राजा के पास पहुॅची तो उसने अपनी बदनामी बचाने के लिये उसने यह हुक्म दे दिया —

“मैंने सुना है कि फारस के लोग जहाज़ पर सुन्दर सुन्दर लड़कियाँ ले जा रहे हैं। मुझे अपनी बेटी के लिये कुछ सुन्दर दासियों की जरूरत है और मैं उनको खरीदना चाहता हूँ इसलिये इस जहाज़ को रोको और जितनी भी सुन्दर लड़कियाँ जहाज़ पर हों उन सबको शाही महल में भेजो।

उनको देखने के बाद में मैं उनकी पूरी कीमत दे कर उन्हें खरीद पाऊँगा और बाकी बची हुई लड़कियाँ वापस कर दी जायेंगी।”

सो राजा के हुक्म के अनुसार बन्दरगाह का गवर्नर बेचारा खुद जहाज़ पर आया। मेरे केबिन के बराबर में ही किसी दूसरे की बर्थ थी। उसके पास भी एक सुन्दर दासी थी जो उसने अपने बक्से में बन्द कर रखी थी।

गवर्नर उस बक्से पर बैठ गया और जहाज़ की सारी सुन्दर लड़कियों को इकट्ठा करने लगा जो भी उसको वहाँ दिखायी दीं। मैंने अल्लाह की जय बोली और कहा “राजकुमारी का नाम कहीं नहीं लिया गया है।”

गवर्नर के लोगों ने जो भी दासियाँ उनको मिलीं उन सबको अपने जहाज़ में रख लिया। गवर्नर ने हँसते हुए उस बक्से के मालिक से पूछा जिसके ऊपर वह बैठा हुआ था — “क्या तुम्हारे पास भी कोई दासी है।”

वह खरदिमाग कुछ डर गया और बोला — “मैं आपके पैरों की कसम खा कर कहता हूँ कि इस ढंग से बर्तने वाला मैं अकेला ही

नहीं हूँ हम सबने डर के मारे अपनी अपनी दासियों को अपने अपने बक्सों में बन्द कर रखा है।

यह सुन कर गवर्नर ने सबके बक्से देखने शुरू किये। उसने मेरा बक्सा भी खोल कर देखा तो उसने उसमें से राजकुमारी को निकाल लिया और उसको दूसरों के साथ ही ले गया। मेरी तो अब बहुत ही खराब हालत हो गयी।

मैंने अपने मन में कहा "अब तो हालात कुछ ऐसे हो गये हैं कि तेरी तो ज़िन्दगी तो बेकार ही चली गयी और अब देखना यह है कि वे राजकुमारी के साथ कैसा व्यवहार करेंगे।"

उसकी चिन्ता में मैं अपनी ज़िन्दगी की चिन्ता करनी भूल गया। सारा दिन सारी रात मैं बैठा बैठा प्रार्थना करता रहता। जब अगली सुबह हुई तो वे सब दासियों को अपने जहाज़ में वापस ले आये।

सौदागरों को यह देख कर बहुत खुशी हुई कि कोई उनमें से कोई दासी नहीं खरीदी गयी थी। हर सौदागर अपनी अपनी दासी को ले कर चला गया। सारी दासियाँ वापस आ गयीं थी बस एक राजकुमारी ही वहाँ नहीं थी।

मैंने पूछा — "इसकी क्या वजह है कि मेरी दासी वापस नहीं आयी।"

उन्होंने जवाब दिया — "हमें नहीं पता। हो सकता है कि राजा ने उसे चुन लिया हो।"

सारे सौदागर मुझे तसल्ली दे कर शान्त करने लगे। वे बोले — "जो हो गया वह हो गया। उसके लिये अब तुम दुखी न हो। हम सब मिल कर तुम्हें उसका पैसा दे देंगे।"

पर मेरी इन्द्रियाँ तो बिल्कुल ही बेकार हो गयी थीं। मैं बोला — "मैं फारस नहीं जाऊँगा।"

मैंने जहाज़ चलाने वाले से कहा — "तुम मुझे समुद्र के किनारे ले चलो और वहाँ छोड़ दो।"

वे राजी हो गये। मैंने अपना जहाज़ छोड़ दिया और उनके जहाज़ में चला गया। मेरा कुत्ता भी मेरे साथ ही आ गया।

जब मैं बन्दरगाह पर पहुँचा तो मेरे पास केवल जवाहरातों का डिब्बा था जो राजकुमारी मुझे दे गयी थी। अपना बाकी का सामान मैंने गवर्नर के नौकरों को दे दिया था।

मैं राजकुमारी को ढूँढते हुए बहुत जगह घूमता फिरा कि शायद कहीं से मुझे राजकुमारी की कोई खबर मिल जाये पर न तो मुझे वह ही मिली और न ही उसकी कोई खबर ही मिली।

एक रात मैं चालाकी से राजा के जनानखाने में घुस गया और वहाँ उसको ढूँढता रहा पर वहाँ भी उसकी कोई खबर नहीं मिली। करीब एक महीने तक मैं उसको गली गली दरवाजे दरवाजे घर घर में छानता रहा पर वह नहीं मिली।

दुख की वजह से अब मैं मौत के दरवाजे पर खड़ा था। मैं पागलों की तरह से इधर उधर घूम रहा था। आखिर मुझे कुछ ऐसा

लगा कि मेरी राजकुमारी गवर्नर के घर में होनी चाहिये और कहीं नहीं। सो फिर मैं गवर्नर के घर इस इरादे से पहुँचा कि मुझे उसके घर में घुसने का कोई भी रास्ता मिल जाये मैं उसी से उसमें घुस जाऊँगा।

वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि उसके घर में अन्दर जाने और बाहर निकलने के लिये एक पाइप ऊपर की तरफ जा रहा था। मैंने सोच लिया कि मैं इसी पाइप के सहारे गवर्नर के घर में घुस जाऊँगा।

मैंने कपड़े उतारे और उस गन्दे से पाइप में उतर गया। बहुत मुश्किलें झेल कर मैं उसके चोर महल यानी "निजी महल" में जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर मैंने एक स्त्री का वेश बनाया और चारों तरफ को घूम घूम कर उसे ढूँढने लगा।

एक कमरे से मुझे जल्दी जल्दी कुछ बोलने की आवाज आयी जैसे कोई जल्दी जल्दी प्रार्थना कर रहा हो। मैंने उधर देखा तो वह तो राजकुमारी थी।

राजकुमारी बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी और अपने बनाने वाले के सामने लेटी हुई थी और यह प्रार्थना कर रही थी — "तुम्हें तुम्हारे धर्मदूत और उसके बच्चों[173] की कसम। मुझे काफिरों के इस देश से बाहर निकालो और मुझे उस आदमी की शरण में ले चलो जिसने मुझे इस्लाम धर्म सिखाया।"

---

[173] Prophet and 12 Immam

यह देख कर मैं उसकी तरफ दौड़ पड़ा और उसके पैरों में जा गिरा। राजकुमारी ने उठा कर मुझे अपनी छाती से लगा लिया। उस समय हम दोनों की हालत खोयी खोयी सी हो रही थी। जब हम कुछ होश में आये तो मैंने उससे पूछा कि उसको क्या हुआ था।

उसने जवाब दिया — "जब बन्दरगाह का गवर्नर सब लड़कियों को राजा के पास ले गया तो मैं अल्लाह से यह प्रार्थना कर रही थी कि किसी को मेरा भेद न पता चलने पाये और साथ में तुम्हारी ज़िन्दगी को भी कोई खतरा न हो।

वह इतना बड़ा छिपाने वाला निकला कि किसी को यही पता नहीं चला कि मैं राजकुमारी हूँ। गवर्नर हर लड़की को खरीदने के ख्याल से सबको ध्यान से देख रहा था क्योंकि कुछ उसको अपने लिये भी खरीदनी थीं।

जब मेरी बारी आयी तो उसने मुझे चुन लिया और छिपा कर मुझे अपने घर भेज दिया। बाकी लड़कियों को उसने राजा के पास भेज दिया। जब मेरे पिता ने मुझे उन लड़कियों में नहीं देखा तो उन्होंने सारी लड़कियों को वापस भेज दिया। यह सब मेरी वजह से हुआ था।

अब उन्होंने कह दिया है कि राजकुमारी बहुत बीमार है। अब अगर मैं वहाँ कुछ समय तक नहीं गयी तो फिर सारे देश में मेरे मरने की खबर उड़ा दी जायेगी। तब राजा को शर्मिन्दगी नहीं उठानी पड़ेगी।

पर अब मैं बहुत परेशान हूँ क्योंकि गवर्नर मेरे लिये कुछ और सोच रहा है। हालाँकि वह मुझसे हमेशा अपने साथ रहने के लिये कहता है पर मैं उसकी इच्छाओं को नहीं मानती। पर वह मुझे प्यार बहुत करता है। वह अभी तक मेरी हाँ की इन्तजार में है इसलिये वह अभी तक चुप है।

पर मुझे डर है कि इस तरीके से यह मामला और कितना खींचा जा सकता है इसलिये मैंने यह तय किया है कि जब भी वह मेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करने की कोशिश करेगा तो मैं अपने आपको मार लूँगी। पर अब क्योंकि अब मैं तुमसे मिल ली हूँ तो मैंने एक दूसरा ही तरीका ही सोच लिया है। अल्लाह ने चाहा तो इस तरीके से मैं यहाँ से भाग जाऊँगी।"

मैं बोला — "तुम मुझे बताओ कि तुमने कौन सा तरीका सोचा है।"

वह बोली — "अगर तुम थोड़ी सी मेहनत करो तो हमारा यह प्लान काम कर सकता है।"

मैंने कहा — "मैं तुम्हारा हर हुक्म मानने के लिये तैयार हूँ। अगर तुम कहो तो मैं जलती हुई आग में कूद पड़ूँ। और अगर मुझे सीढ़ी मिल जाये तो मैं उसे लगा कर आसमान तक चला जाऊँ। मैं वही करूँगा जो तुम कहोगी।"

राजकुमारी बोली — “तब तुम ऐसा करो कि बड़ी मूर्ति के मन्दिर जाओ और उस जगह जा कर जहाँ लोग अपने जूते उतारते हैं[174] देखना कि वहाँ काले कैनवास का एक टुकड़ा पड़ा हुआ है।

इस देश का रिवाज यह है कि जो आदमी गरीब हो जाता है या अकेला हो जाता है वह उस काले कैनवास में अपने आपको लपेट कर वहाँ बैठ जाता है। सो जब लोग वहाँ पूजा करने जाते हैं तो वे सब उसको कुछ न कुछ देते हुए जाते हैं।

तीन चार दिनों में जब वह कुछ पैसे इकट्ठा कर लेता है तब वहाँ का पुजारी उसको बड़ी मूर्ति की तरफ से एक खिलात देता है और उसको वहाँ से भगा देता है।

इस तरह से वह थोड़ा पैसे वाला हो कर वहाँ से चला जाता है और किसी को पता भी नहीं चलता कि वह कौन था। तुम उस कैनवास को ओढ़ कर बैठ जाना और जब पुजारी जी और मूर्ति पूजा करने वाले तुम्हें खिलात दे दें और तुमसे जाने के लिये कहें पर तुम वहाँ से हिलना भी नहीं।

जब वे तुमसे बहुत विनती करें तो उनसे कहना कि “मुझे न पैसा चाहिये और न ही मुझे किसी ऐशो आराम की जरूरत है मैं तो एक चोट खाया हुआ आदमी हूँ और शिकायत करने आया हूँ।

---

[174] The threshold of a pagoda or mosque. The oriental people uncover their feet, as we do our heads, on entering a place of worship.

अगर ब्राह्मणों की माँ न्याय करे तब तो ठीक है नहीं तो यह बड़ी मूर्ति मेरे साथ न्याय करेगी। यही बड़ी मूर्ति मेरी सहायता करेगी। यही मुझे दुख देने वाले के खिलाफ मेरी शिकायत सुनेगी।"

जब तक ब्राह्मणों की माँ खुद वहाँ नहीं आ जाती कोई तुमसे वहाँ से जाने के लिये कितनी भी विनती क्यों न करे पर तुम वहाँ से हिलना नहीं।

आखिर मजबूर हो कर उसको खुद वहाँ आना पड़ेगा। वह बहुत बूढ़ी है – **240** साल की उम्र है उसकी और **36** बेटे हैं उसके जो उसी से पैदा हुए हैं। वे मन्दिर के बड़े पुजारी हैं। बड़ी मूर्ति उसकी बहुत इज़्ज़त करती है।

इसी लिये उसके पास इतनी ज़्यादा ताकतें हैं कि इस देश के छोटे बड़े सब उसका कहा मानते हैं। वह जो भी कहती है उसे सब दिल और आत्मा से मानते हैं।

तुम उसके स्कर्ट की झालर पकड़ कर लेट जाना और कहना — "ओ माँ। अगर आप मुझे तकलीफ देने वाले से न्याय नहीं दिलवायेंगी तो मैं बड़ी मूर्ति के सामने अपना सिर पटक पटक कर अपनी जान दे दूँगा। वह मेरे ऊपर दया जरूर करेगा और आपको भी बीच में पड़ने के लिये कहेगा।"

इसके बाद जब वह तुमसे तुम्हारी शिकायत के बारे में पूछे तो उससे कहना — "मैं फारस का रहने वाला हूँ। मैं यहाँ बड़ी मूर्ति की

पूजा करने बहुत दूर से आया हूँ। यहाँ आ कर मैंने आपके न्याय के बारे में बहुत कुछ सुना है।

कुछ दिन मैं यहाँ शान्ति से रहा। मेरी पत्नी भी मेरे साथ आयी है। मेरी पत्नी नौजवान है और बहुत सुन्दर है। मुझे नहीं मालूम कि किस तरह से बन्दरगाह के गवर्नर ने उसको देख लिया पर वह उसे मेरे पास से जबरदस्ती उठा कर ले गया और उसको अपने घर में बन्द कर लिया।

हम मुसलमानों में एक नियम है कि अगर कोई अजनबी हमारी किसी पत्नी को देख ले या उसे उठा कर ले जाये तो उसको मौत के घाट उतार दिया जाता है। यह किसी भी तरीके से पूरा किया जा सकता है और फिर उसकी पत्नी को वापस ले लिया जाता है।

अगर किसी वजह से ऐसा न हो सके तो आदमी को भूखे प्यासे ही रहना पड़ता है जब तक कि उसकी पत्नी अजनबी के पास रहती है। और फिर वह पत्नी अपने पति की भी नहीं रहती। और कोई रास्ता न देख कर मैं यहाँ आया हूँ। देखता हूँ कि आप मेरे साथ कैसा न्याय करती हैं।"

जब राजकुमारी ने मुझे सब कुछ ठीक से समझा दिया तो मैंने उससे इजाज़त ली और उसी पाइप के सहारे बाहर आ गया। और लोहे की जाली उसके मुँह पर लगा दी।

जैसे ही सुबह हुई मैं मन्दिर गया और अपने आपको काले कैनवास से ढक कर वहीं बैठ गया। तीन दिन में ही मेरे पास सोने

चॉदी के सिक्कों का बहुत सारे पैसों का और कपड़ों का ढेर लग गया। ऐसा लग रहा था जैसे कोई छोटी सी दूकान लगी हो।

चौथे दिन पुजारी जी ने पूजा की और मुझे खिलात देने के लिये और मुझे वहॉ से वापस भेजने के लिये आये। पर मैं नहीं मान रहा था। मैं बड़ी मूर्ति को अपनी सहायता के लिये बुला रहा था।

मैंने कहा — "मैं यहॉ भीख मॉगने नहीं आया मैं तो बड़ी मूर्ति और ब्राह्मणों की मॉ से न्याय मॉगने आया हूॅ। और जब तक मुझे न्याय नहीं मिल जाता मैं यहॉ से हिलूॅगा भी नहीं।"

मेरा यह पक्का इरादा सुन कर वे बुढ़िया के पास गये और जो कुछ मैंने उनको बताया वह उन्होंने जा कर उसको बताया। उसके बाद एक ब्राह्मण मेरे पास आया और मुझसे बोला — "आइये मॉ आपको बुला रही हैं।"

मैंने तुरन्त ही उस काले कैनवास में अपने आपको लपेटा और उसके कमरे की देहरी पर जा पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर मैंने देखा कि बड़ी मूर्ति एक जवाहरात जड़े सोने के सिंहासन पर बैठी हैं जिसमें मोती लाल हीरे और मूॅगे आदि जड़े हुए थे।

सोने की एक कुर्सी के ऊपर एक बहुत कीमती कपड़ा बिछा हुआ है जिस पर काले कपड़े पहन कर एक बुढ़िया बड़ी शान के साथ तकियों के सहारे बैठी हुई थी। उसके पास ही **10–12** साल की उम्र के दो लड़के खड़े हुए थे। एक उसके दॉये हाथ को खड़ा था दूसरा उसके बॉये हाथ को।

उसने मुझे अपने सामने बुलाया तो मैं उसकी तरफ आगे बढ़ा और बहुत ही इज़्ज़त के साथ मैंने उसके सिंहासन के पाये को चूम लिया। फिर मैंने उसका स्कर्ट पकड़ लिया।

उसने मेरी कहानी पूछी। मैंने उसे वही कह दिया जो राजकुमारी ने मुझसे उससे कहने को कहा था।

कहानी सुन कर वह बोली — "क्या मुसलमान अपनी पत्नियों को इस तरह छिपा कर रखते हैं?"

"जी। आपके बच्चे अच्छे रहें यह हमारा पुराना रिवाज है।"

वह बोली — "तेरा यह अच्छा धर्म है। मैं तुरन्त ही यह हुक्म देती हूँ कि बन्दरगाह के गवर्नर को तेरी पत्नी के साथ साथ यहाँ लाया जाये। और मैं उस गधे को इस तरीके से सजा दूँगी कि वह ऐसा काम फिर दोबारा कभी नहीं करेगा और सजा देखने वाले भी काँप जायेंगे।"

उसने अपने नौकरों से पूछा — "बन्दरगाह का गवर्नर कौन है। उसकी यह हिम्मत कैसे हुई कि वह किसी दूसरे आदमी की पत्नी को जबरदस्ती उठा कर ले जाये।"

नौकरों ने जवाब दिया — "वह फलाँ फलाँ है।"

उसका नाम सुन कर माँ ने अपने पास खड़े हुए दोनों लड़कों से कहा — "इस आदमी को तुरन्त ही यहाँ से ले जाओ और राजा से जा कर कहो — "माँ का कहना है कि बड़ी मूर्ति का यह हुक्म है कि बन्दरगाह के गवर्नर को लोगों पर बहुत ज़्यादा हिंसा का व्यवहार

करने के लिये, जैसे कि उसने इस आदमी की पत्नी को जबरदस्ती उठा लिया और उसकी यह गलती बहुत बड़ी है, इसके लिये इसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली जाये और इस तुर्क को दे दी जाये नहीं तो तुम हमारे गुस्से के शिकार हो कर आज रात को ही नष्ट हो जाओगे।"

दोनों लड़के वहाँ से चल दिये। दोनों ने अपने अपने घोड़े लिये उस पर सवार हुए। सारे पुजारियों ने अपने अपने शंख बजाये और अपनी अपनी पोशाकें पहन कर वहाँ से चल दिये। घोड़े वालों के घोड़ों के खुरों से जो धूल उठ रही थी उसे शहर के सब छोटे बड़े अपनी आँखों पर लगा रहे थे।

इस तरह से वे सब राजा के पास पहुँचे। राजा ने जब उनके आने की खबर सुनी तो वह नंगे पैर उनके स्वागत के लिये दौड़ा। वह उनको बड़ी इज़्ज़त के साथ अन्दर ले कर आया। उसने उनको अपने सिंहासन पर अपने पास बिठाया।

उसने उनसे कहा कि "आज मुझे किस हुक्म की इज़्ज़त दी जा रही है।"

दोनों ब्राह्मणों ने वही दोहरा दिया जो उन्होंने माँ से सुना था। उनकी सारी बातें सुनी थीं और उसको बड़ी मूर्ति की नाराजगी की धमकी भी सुनायी।

यह सुन कर राजा बोला — "ठीक है। बन्दरगाह के गवर्नर और उस स्त्री को लाने के लिये मैं अभी कुछ न्याय के अधिकारियों

को भेजता हूँ जो उन दोनों को यहाँ ले कर आयेंगे। तब मैं उसके अपराध की जाँच करूँगा और उसके अनुसार उसकी सजा निश्चित करूँगा।"

यह सुन कर मैं बहुत परेशान हो गया। मैंने अपने मन में सोचा कि "यह मामला तो कुछ ठीक नहीं रहा। क्योंकि अगर राजकुमारी को बन्दरगाह के गवर्नर के साथ बुलाया गया तब तो यह मामला खुल जायेगा फिर मेरा क्या होगा।"

मैं अपने मन में बहुत डर गया। मैंने अपने अल्लाह की तरफ देखा पर डर ने भक्ति को दबा लिया और मैं काँपने लगा। लड़कों ने जब मेरा रंग बदलते देखा तो उन्होंने महसूस किया कि शायद यह हुक्म इसको मान्य नहीं है इसकी इच्छा के अनुसार नहीं है इसी लिये यह परेशान है।

वे तुरन्त ही बहुत गुस्सा हो गये और बड़े कठोर शब्दों में राजा से बोले — "क्या तू पागल हो गया है कि तू बड़ी मूर्ति का हुक्म मानने से इनकार करता है और तूने यह सोचा कि जो कुछ हमने कहा वह झूठ है।

तू उन दोनों को यहाँ बुला कर उनके मामले को जाँचना चाहता है पर ध्यान रखना तेरे ऊपर बड़ी मूर्ति पहले से ही बहुत गुस्सा है। हमने अपना काम कर दिया उनका हुक्म सुना दिया। इसके आगे तुझे क्या करना है यह देखना तेरा काम है वरना बड़ी मूर्ति तुझे देख लेगी।"

यह सुन कर तो राजा बहुत ही सावधान हो गया और अपने दोनों हाथ जोड़ कर लड़कों के सामने खड़ा हो गया। बहुत ही नम्रता से उसने उन दोनों को शान्त करने की कोशिश की पर वे बैठे नहीं बस खड़े ही रहे।

इस बीच सब कुलीन लोग जो वहॉ मौजूद थे गवर्नर की बुराई करने लगे कि "वह तो सचमुच बहुत ही नीच आदमी है। वह तो इतना अत्याचार करता है और इतने सारे अपराध करता है कि हम उन्हें शाही दरबार में कह भी नहीं सकते।

ब्राह्मणों की मॉ ने जो कुछ भी कहला कर भेजा है वह सब बिल्कुल सही है। और इसके अलावा यह बड़ी मूर्ति का फैसला है तो यह गलत भी कैसे हो सकता है।

जब राजा ने वही कहानी दूसरे लोगों से सुनी तो उसको अपने कहे हुए पर बहुत शर्म आयी और बहुत पछतावा हुआ। उसने तुरन्त ही मुझे एक बहुत ही कीमती खिलात दिया। उसने अपने हाथ से एक हुक्मनामा लिखा और उसको अपनी निजी सील से बन्द किया[175] और उसे मुझे दिया।

उसने एक नोट ब्राह्मणों की मॉ के नाम भी लिखा। ब्राह्मणों के लड़कों के सामने कई थाल भर कर सोना और जवाहरात रखे और

[175] Asiatics do not sign their names, but put their seals to letters, bonds, paper; on the seal is engraven their names, titles etc.

उनको विदा किया। मैं भी खुशी खुशी मन्दिर लौट आया और बुढ़िया के पास गया।

राजा के पास से जो चिट्ठी आयी थी उसमें साधारण अभिवादन के बाद लिखा था — "योर हाइनैस के हुक्म के अनुसार बन्दरगाह के गवर्नर का मामला इस मुसलमान को सौंप दिया गया है। एक खिलात भी उसको दे दी गयी है।

अब वह गवर्नर को मौत की सजा देने के लिये आज़ाद है। गवर्नर की सारी सम्पत्ति इस मुसलमान को दे दी जाये और यह मुसलमान फिर गवर्नर के साथ जो कुछ भी वह चाहे वह करे। आशा है कि मेरी गलती माफ कर दी जायेगी।"

ब्राह्मणों की मॉ इस चिट्ठी को पढ़ कर बहुत खुश हुई और बोली पगोडा के "नौबतखाने[176] में संगीत का इन्तजाम करो। फिर उसने मेरे साथ 500 हथियारबन्द सिपाही कर दिये जो सभी बहुत अच्छे निशानेबाज थे।

उसने उनको हुक्म दिया कि वे बन्दरगाह के गवर्नर को जा कर पकड़ें और उसे मुझे सौंप दें ताकि मैं उसके साथ जैसा चाहॅू वैसा व्यवहार कर सकॅू। चाहे मैं उसे केवल तकलीफ दॅू या मार दॅू।

इसके अलावा वे यह भी ध्यान रखें कि गवर्नर के जनानखाने में केवल मैं ही जा सकॅू और दूसरा कोई नहीं और वह अपनी सारी सम्पत्ति इस मुसलमान को दे दे।

---

[176] Name of the place where royal musicians sit and play music.

जब यह मुसलमान अपने आप ही उनको वहॉ से भेजे वे वहॉ से तभी जायें और जाने से पहले उससे अपने आज़ाद होने का कागज ले लें। उसके बाद तुम लोग मेरे पास वापस आना।"

तब उसने मुझे बड़ी मूर्ति के कपड़ों में से एक पूरी पोशाक दी और उसको पहना कर मुझे विदा किया।

मैं जब बन्दरगाह पहुॅचा तो मेरे साथ के आदमियों में से एक आदमी मेरे आगे आगे जा रहा था। उसने गवर्नर को मेरे आने की सूचना दी। वह ऐसे बैठा हुआ था जैसे वह बहुत परेशान था।



जब मैं वहॉ पहुॅचा तो मैं तो बहुत पहले से ही गुस्से में था। बस मैंने अपनी तलवार निकाली और एक ही वार में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। उसका सिर मक्के के भुट्टे की तरह से टूट कर जा गिरा।

मैंने सबको हुक्म दे कर उसकी सारी सम्पत्ति अपने कब्जे में कर ली। उसके बाद मैं उसके जनानखाने में घुसा। वहॉ मैं राजकुमारी से मिला तो हम दोनों एक दूसरे को गले लगा कर बहुत रोये। फिर अल्लाह को धन्यवाद देते हुए एक दूसरे के ऑसू पोंछे।

हम लोगों ने मसनद पर बैठ कर बन्दरगाह के औफीसरों को खिलात दी और उनको फिर से उनकी जगहों पर तैनात किया। नौकरों और दासों को मैंने ऊॅचे ओहदे दिये। जो लोग मेरे साथ मन्दिर से आये थे उनको मैंने भेंटें दीं और कपड़े दे कर विदा किया।

उसके बाद मैं कीमती जवाहरात बढ़िया कपड़े शाल ब्रोकेड और बहुत सारा सामान साथ में ले कर राजा के पास गया। उनके कुलीन लोगों के लिये भी कुछ भेंटें थीं और पुजारियों और पुजारिनों के लिये भी।

एक हफ्ते बाद में फिर से बड़ी मूर्ति के मन्दिर गया और वहाँ बुढ़िया को कुछ भेंट दे कर आया। उसने मुझे फिर से एक बहुत ही बढ़िया खिलात दिया और एक खिताब भी।

मैं फिर राजा के पास गया और अपनी पेशकश बतायी। मैंने योर मैजेस्टी से विनती की कि वह बन्दरगाह के इस गवर्नर की बुराइयों के जो नतीजे निकले हैं वह उन सबको दूर करे।

यह सुन कर राजा दरबार के कुलीन लोग और सौदागर सभी बहुत खुश हो गये। इसके लिये राजा ने मुझे भेंटें दीं। एक खिलात दिया एक घोड़ा दिया एक खिताब दिया और एक जागीर दी। और भी कई इज़्ज़तें बख्शीं।

जब मैं दरबार से लौट कर आया तो मैंने नौकरों आदि को सबको इतना दिया कि वे हर समय मेरे भले की इच्छा करने लगे। अब मेरी हालत यहाँ बहुत अच्छी हो गयी थी। यहाँ में कुछ समय बड़े ऐशो आराम से रहा। राजकुमारी से शादी कर के मैं अक्सर इस बात के लिये अल्लाह को दुआ देता रहा।

मेरे शहर के रहने वाले भी मेरे बराबरी के नियमों से से बहुत खुश थे। महीने में एक बार मैं मन्दिर जाया करता था और कभी

कभी राजा के पास भी। राजा ने मुझे बाद में और भी कई तरक्कियाँ दीं।

बाद में राजा ने मुझे अपना निजी सलाहकार बना लिया। अब वह मेरी सलाह के बिना कुछ नहीं करता था। मेरी ज़िन्दगी बड़ी खुशी में कटने लगी।

पर यह तो मेरा अल्लाह ही जानता है कि मैं अपने दोनों भाइयों को कितना याद करता था और उनके बारे में जानने के लिये इच्छुक भी रहता था कि वे कहाँ थे कैसे थे।

दो साल बाद ज़रबाद देश से फारस जाने वाला एक काफिला वहाँ आया। वे सब समुद्र के रास्ते अपने देश जाना चाहते थे। अब बन्दरगाह का नियम यह था कि जब कभी कोई कारवाँ यहाँ आता था तो उसके सरदार मुझे अलग अलग देशों की विचित्र विचित्र चीज़ें भेंट देने के लिये आते थे।

कारवाँ के बन्दरगाह पर आने पर उसके अगले दिन मैं सरदार के पास 10 परसैन्ट टैक्स लेने के लिये जाता था जो उसके सामान पर लगता। टैक्स ले कर मैं उनको वहाँ से जाने की इजाज़त दे देता था।

सो जब यह ज़रबाद वाला कारवाँ आया तो उसका सरदार मेरे पास आया और मेरे लिये बहुत कीमती भेंटें लाया। दूसरे दिन मैं उनके तम्बुओं में गया तो वहाँ मैंने अपने सामने ही दो आदमी देखे जो फटे कपड़े पहने थे।

वे सामान के कुछ डिब्बे अपने सिर पर लादे हुए थे। जब मैंने उन डिब्बों को देख लिया तो वे उनको वापस ले गये। वे बहुत मेहनत कर रहे थे और उन पर निगाह रखी जा रही थी। मैंने उनकी तरफ ध्यान से देखा तो देखा कि वे तो वास्तव में मेरे ही भाई थे।

उस समय तो मेरा ओहदा और शर्म मुझे उनकी तरफ इस हालत में देखने से भी रोक रही थी पर जब मैं घर वापस आया तो मैंने अपने नौकरों से उन दोनों आदमियों को अपने पास बुलवाया। जब वे आ गये तो मैंने उनके लिये कपड़े बनवाये और उनको अपने पास ही रख लिया।

पर इन नीच लोगों ने मुझे मारने का फिर से प्लान बनाना शुरू कर दिया। एक दिन आधी रात के समय जब उनके ऊपर कोई शक नहीं किया जा रहा था तो वे चोर की तरह से मेरे सोने के कमरे में आये और मेरे बिस्तर के सिरहाने की तरफ आ गये।

मेरे सोने वाले कमरे के दरवाजे पर अपनी सुरक्षा के लिये मैंने एक पहरेदार रख रखा था। और यह वफादार कुत्ता मेरे बिस्तर के बराबर में सोया करता था। पर जैसे ही उन्होंने म्यान में से अपनी तलवारें खींची सबसे पहले कुत्ता जागा और वह उनके ऊपर कूद पड़ा।

इससे जो शोर हुआ उससे मैं चौंक कर उठ गया। पहरेदार ने उनको पकड़ लिया और मैंने भी उनको जान लिया कि ये लोग बाज़ नहीं आयेंगे। सब उनको बुरा भला कहने लगे कि मेरे उनके साथ

इतनी मेहरबानी का व्यवहार करने के बाद भी इन लोगों ने मेरे साथ इतना बुरा व्यवहार किया।

ओ राजा आप शान्ति से रहें। अब मुझे अपनी ज़िन्दगी की चिन्ता होने लगी। एक बड़ी सामान्य कहावत है कि एक या दो गलतियाँ तो माफ कर दी जाती हैं पर तीसरी गलती पर तो सजा मिलती ही है।

इसके बाद मैंने अपने दिल में तय किया कि मैं अब उनको बन्द कर के रखूँगा। पर अगर उनको मैंने जेल में रखा तो उनकी परवाह कौन करेगा। वे भूख और प्यास से मर भी सकते हैं या फिर कुछ और शरारत कर सकते हैं।

इसलिये मैंने इनको पिंजरे में बन्द रखने का फैसला किया ताकि ये हमेशा मेरी आँखों के सामने रहें इससे मेरे दिमाग को भी शान्ति रहेगी कि कहीं ऐसा न हो कि मेरी आँखों से दूर रह कर फिर ये मेरे खिलाफ कोई और षड़यन्त्र रचें।

जो इज़्ज़त मैं अपने इस कुत्ते को देता हूँ उसकी वजह है इसकी वफादारी। मैं इससे कभी उऋण नहीं हो सकता। जो एक वफादार से अपनी कृतज्ञता नहीं दिखा सकता वह एक वफादार बेरहम से भी गया बीता है।

ओ अल्लाह यही मेरी कहानी है जो मैंने योर मैजेस्टी को सुनायी। अब आप चाहें तो मुझे मौत की सजा दे दें या मेरी ज़िन्दगी बख्श दें। जैसा आप चाहें।”

राजा आज़ाद बख्त अपनी कहानी सुनाते हुए बोला — "उस आदमी का यह हाल सुन कर मैंने उस इज़्ज़त वाले आदमी की बहुत बड़ाई की और कहा — "तुम्हारी मेहरबानियों की तो कोई सीमा ही नहीं है और वे बीच में कभी टूटी भी नहीं हैं। और इन नीच लोगों के नीच कामों की कोई सीमा नहीं है।

यह सच ही है कि "कुत्ते की पूँछ चाहे 12 बरस गड्ढे में दबा कर रखो पर फिर जब भी निकालोगे तो टेढ़ी ही निकलेगी।"

इसके बाद मैंने ख्वाजा से कहा कि वह मुझे उन 12 लाल की कहानी बताये जो उसके कुत्ते के कौलर में जड़े हुए थे।

वह बोला — "अल्लाह करे योर मैजेस्टी की उम्र 120 साल की हो। जब मुझे वहाँ के गवर्नर का काम करते हुए 3-4 साल हो गये तो एक दिन मैं अपने घर की छत पर बैठा हुआ समुद्र और मैदान देख कर आनन्द ले रहा था। मैं अपने घर के चारों तरफ देख रहा था।

कि मैंने एक तरफ से जंगल से दो आदमी जैसे आते हुए देखे। वहाँ कोई सड़क नहीं थी। मैंने अपना दूरदर्शक यन्त्र उठाया और उनको देखने की कोशिश की तो मुझे उनकी शक्ल कुछ अजीब सी दिखी। मैंने तुरन्त ही अपने कुछ आदमी उनको अपने सामने लाने के लिये भेजे।

जब वे आ गये तो मैंने देखा कि उनमें से एक आदमी था और एक स्त्री थी। स्त्री को तो मैंने राजकुमारी के पास जनानखाने में भेज

दिया और आदमी को मैंने अपने पास बुलवा लिया। मैंने देखा कि वह **20–22** साल का एक नौजवान था।

उसके दाढ़ी मूँछ आनी शुरू हो गयी थीं पर उसके चेहरे का रंग तो बिल्कुल तवे की तरह काला था। उसके सिर के बाल और उँगलियों के नाखून गर्मी की वजह से बहुत बढ़ गये थे। वह एक बिल्कुल ही जंगली किस्म का आदमी लग रहा थे।

उसके कन्धे पर एक **3–4** साल का लड़का बैठा था। उसकी किसी पोशाक की दो बाँहें किसी चीज़ से भरी हुई कौलर की तरह से उसकी गर्दन के दोनों तरफ लटक रही थीं। वह दिखने में बहुत ही अजीब सा लग रहा था और उसने कपड़े भी अजीब से पहने हुए थे। मैं उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गया।

मैंने पूछा — "दोस्त तुम कौन हो। किस देश के रहने वाले हो और किस अजीब से हाल में मैं तुम्हें देख रहा हूँ।"

नौजवान बहुत ज़ोर से रो पड़ा। उसने अपनी गर्दन से वे दोनों आस्तीनें निकालीं और मेरे पैरों के पास रख दीं और बोला — "भूख, भूख मुझे कुछ खाने को दो। मुझे जड़ और पत्ते खाते खाते बहुत दिन हो गये। अब मेरे अन्दर ताकत बिल्कुल नहीं रह गयी है।" मैंने तुरन्त ही उसके लिये कुछ रोटी माँस और वाइन मँगवायी और वह भी उसके ऊपर जल्दी से टूट पड़ा।

इस बीच मेरा एक खास नौकर अन्दर से कई थैले और ले आया जो उस नौजवान की पत्नी के पास थे। मैंने उन्हें खोलने के लिये कहा तो उनमें तो बहुत सारे जवाहरात थे।

उनमें से हर एक की कीमत इतनी थी जितनी कि एक राजा की आमदनी होती है। हर एक एक दूसरे से वजन में शक्ल और चमक में पहले से ज़्यादा था। मेरा पूरा कमरा उनकी रंग बिरंगी रोशनियों से दमक रहा था।

जब नौजवान ने अपना खाना खत्म कर लिया और वाइन भी पी ली तब उसे कुछ होश सा आया। तब मैंने उससे पूछा कि उसको ये जवाहरात कहाँ से मिले।

वह बोला मैं अज़रबजान[177] का रहने वाला हूँ। मैं अपने घर और माता पिता से बचपन में ही अलग हो गया हूँ और जब से मैं अलग हुआ हूँ तबसे मैंने बहुत मुसीबतें झेली हैं। बहुत दिनों तक तो मैं ज़िन्दा ही दफ़न रहा। अक्सर मृत्युदूत के पंजों से बच निकला हूँ।

मैंने कहा — "तुम मुझे अपनी पूरी कहानी सुनाओ ताकि मैं तुम्हारी कहानी पर विचार कर सकूँ।" तब उसने मुझे अपनी यह कहानी सुनायी — "मेरे पिता एक सौदागर थे। वह बराबर हिन्दुस्तान आया करते थे और साथ में मुझे भी लाने की सोचते थे।

---

[177] Azurbaijan till recently was a province of Persia; the northern part of ancient Media. It is now, alas! fallen into the deadly grasp of the unholy Muscovite.

हालाँकि मेरी माँ और मेरी चाची ताइयों ने उनसे बहुत कहा कि यह अभी इतनी दूर जाने के लिये बच्चा है अभी यह यात्रा करने लायक बड़ा नहीं हुआ है। तुम इसे यात्रा पर ले जाओगे तो कब्र में भी पछताओगे पर मेरे पिता ने उनकी कोई बात नहीं सुनी।

उन्होंने उनसे कहा — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ अगर मैं इसको अपनी आँखों के सामने तैयार नहीं कर सका तब मुझे इस बात का पछतावा अपनी कब्र में जरूर रहेगा। यह एक मर्द का बेटा है। अगर यह अब नहीं सीखेगा तो फिर कब सीखेगा।"

यह कह कर उनके कई बार मना करने पर भी उन्होंने मुझे भी साथ में लिया और हम चल दिये। यात्रा में कोई बीमार नहीं पड़ा और हम सुरक्षित हिन्दुस्तान पहुँच गये।

वहाँ पहुँच कर हमने अपना कुछ सामान बेचा और वहाँ से कुछ बहुत ही कीमती चीज़ें ले कर हम ज़रबाद देश के लिये चल दिये।

यह यात्रा भी हमारी सुरक्षित रूप से पूरी हुई। वहाँ भी हमने कुछ बेचा कुछ खरीदा और फिर अपने देश वापस आने के लिये एक जहाज़ पर चढ़े।

हम एक महीने तक चलते रहे फिर एक दिन समुद्र में तूफान आ गया। ऊँची ऊँची लहरें उठने लगीं। बारिश भी बहुत ज़ोर से बरसने लगी। सारी धरती और आसमान अँधेरा हो गया जैसे सारे में धुँआ फैल गया हो। हमारा जहाज़ टूटने लगा। जहाज़ के चलाने वाले और मालिक सभी अपना सिर पीटने लगे।

दस दिन का यह तूफान और हवाऐं हमको वहीं ले गयीं जहॉ इनका दिल चाहा। ग्यारहवें दिन हमारा जहाज़ एक चट्टान से टकरा गया और टुकड़े टुकड़े हो गया। मेरे पिता का उनके नौकरों का और हमारे सब सामान का क्या हुआ मुझे नहीं पता।

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको एक तख्ते पर पाया जो तीन दिन तीन रात तक समुद्र पर तैरता रहा। चौथे दिन जा कर वह किसी किनारे लगा। मैं बस ज़िन्दा था। मैं तख्ते पर से उतरा और किसी तरह घुटनों के बल खिसक खिसक कर सूखी जमीन पर पहॅुचा।

कुछ दूर पर मुझे खेत दिखायी दिये। वहॉ बहुत सारे लोग जमा थे। पर वे सब काले थे और इतने नंगे थे जैसे जन्म के पहले दिन। उन्होंने मुझसे कुछ कहा जो मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आया। उनका वह चने का खेत था।

वहॉ लोगों ने एक बहुत बड़ी आग जलायी और उसमें उन चनों को भूना और खाया। तभी मुझे वहॉ कुछ घर भी दिखायी दिये। लगता था शायद यही उनका खाना था और यहीं वे रहते थे। मैंने भी वहॉ से कुछ चने की बालियॉ तोड़ीं और उनके भून कर खाया और पानी पिया। खा पी कर मैं खेत के कोने में सो गया।

कुछ देर के बाद जब मैं जागा तो उन आदमियों से एक मेरे पास आया और इशारों से मुझे सड़क दिखाने लगा। मुझे अपनी ऑखों के आगे इतना बड़ा एक एकसार मैदान दिखायी दिया जितना

कि जजमैन्ट के दिन[178] होता है। मैं चने खाता हुआ आगे बढ़ने लगा।

चार दिन तक चलने के बाद मुझे एक किला दिखायी दिया। जब मैं उसके पास पहुँचा तो मैंने देखा कि वह तो बहुत ऊँचा किला है। वह किला पूरा का पूरा पत्थर का बना हुआ था। उसका दरवाजा केवल एक पत्थर में से काट कर बनाया गया था। उसमें एक ताला लटका हुआ था।

पर वहाँ कोई आदमी नजर नहीं आ रहा था। मैं वहाँ से आगे बढ़ा तो मुझे एक पहाड़ी नजर आयी। जहाँ की जमीन सुरमे जैसी काली थी। मैं जब उस पहाड़ी पर चढ़ा तो वहाँ मुझे एक बहुत बड़ा शहर दिखायी दिया जिसके चारों तरफ दीवार था।

उसके एक तरफ एक बहुत चौड़ी नदी बह रही थी। आगे चलते चलते मैं एक दरवाजे के पास पहुँच गया था। अल्लाह का नाम ले कर मैं उसमें घुस गया।

वहाँ एक आदमी एक कुर्सी पर बैठा हुआ था जिसने यूरोप के रहने वालों जैसे कपड़े पहने हुए थे। जैसे ही उसने मुझे देखा तो उसे लगा कि कोई विदेशी यात्री उसने मुझे अपने पास बुलाया तो मैं उसके पास चला गया और उसको सलाम किया।

---

[178] The Muhammadans believe that on the day of Judgment all who have died will assemble on a vast plain, to hear their sentences from the mouth of God; now the reader can naturally imagine the size of the plain.

उसने मेरे सामने तुरन्त ही मेज लगवायी जिस पर रोटी मक्खन भुनी हुई बतख और वाइन रखी हुई थी और बोला — "लो पेट भर कर खाओ।" मैंने थोड़ा सा ही खाया थोड़ी सी वाइन पी और सो गया।

जब मेरी ऑख खुली तो रात हो गयी थी। मैंने अपने हाथ पैर धोये। उसने मुझे खाने के लिये फिर से कुछ दिया और कहा — "बेटे। अब तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ।" मैंने उसे जो कुछ हुआ था वह सब बता दिया।

उसने फिर पूछा — "तुम यहॉ आये क्यों हो।"

मुझे कुछ गुस्सा सा आ गया तो मैं बोला — "लगता है कि तुम पागल हो। इतने दिनों तक तकलीफ सहने के बाद तो मैं कोई ऐसी जगह देख पाया हूॅ जहॉ कोई आदमी रहता है। अल्लाह मुझे यहॉ तक ले कर आया है और तुम मुझसे यह पूछ रहे हो कि मैं यहॉ क्यों आया हूॅ।"

वह बोला — "जाओ और जा कर आराम करो। जो कुछ मुझे तुमसे कहना है उसे कहने लिये मैं तुम्हें कल बुलाऊॅगा।"

जब सुबह हुई तो उसने मुझे बुलाया और कहा — "इस कमरे में एक फावड़ा है एक छलनी है और एक चमड़े का थैला है। वे सब यहॉ ले आओ।"

मैंने अपने मन में सोचा कि क्येंकि मैंने उसकी रोटी खायी है इसके लिये पता नहीं वह मुझसे क्या मेहनत करवायेगा। मैंने वे

तीनों चीज़ें उठायीं और ला कर उसके सामने रख दीं। उसके बाद उसने मुझसे काली पहाड़ी पर जाने के लिये कहा जिससे मैं अभी हो कर आया था।

वहाँ जा कर उसने मुझसे करीब एक गज गहरा गड्ढा खोदने के लिये कहा और उसमें से जो कुछ भी निकले उसे छानने के लिये कहा। फिर उसने कहा कि जो कुछ चलनी में से न निकल पाये उसे इस चमड़े के थैले में भर कर तुम मेरे पास ले आना।

मैंने वे तीनों चीज़ें लीं और काली पहाड़ी की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर मैंने एक गज गहरा गड्ढा खोदा और उससे निकली मिट्टी को छलनी में छान लिया। जो उसमें नहीं छन सका उसको मैंने चमड़े वाले थैले में उसके मुँह तक भर लिया और उसके पास ले गया।

उसने थैला मुझे दे कर कहा जो कुछ इस थैले में है वह तुम ले जाओ। और इसे ले कर तुम कहीं और चले जाओ अगर तुम यहाँ इस शहर में रुकोगे तो यह सब तुम्हारे काम नहीं आयेगा।"

मैंने कहा — "योर वरशिप ने अपनी तरफ से मेरे लिये ये पत्थर के टुकड़े मुझे दे कर बहुत बड़ा काम किया है पर ये मेरे किस काम के। जब मुझे भूख लगेगी तब तो मैं इनको खा नहीं सकूँगा तो मैं अपना पेट कैसे भरूँगा। और अगर तुम मुझे ये और भी दे दोगे तो भी ये मेरे किस काम के।"

वह आदमी मुस्कुराया और बोला — "मुझे तुम पर दया आती है क्योंकि तुम भी मेरी तरह फारस के रहने वाले हो। इसी वजह से मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम यहाँ मत रहो नहीं तो ये तुम्हारे पास ही रह जायेंगे।

अगर तुमने पक्का इरादा कर लिया है कि तुम्हें कितनी भी परेशानी क्यों न हो तुम्हें इस शहर में घुसना ही है तब तुम मेरी यह अँगूठी अपने साथ ले जाओ।

जब तुम शहर के बाजार के बीच के हिस्से में पहुँच जाओ तो वहाँ तुम्हें एक सफेद दाढ़ी वाला आदमी बैठा हुआ मिलेगा। उसका चेहरा और शक्ल भी मेरी ही जैसी है।

वह मेरे सबसे बड़े भाई हैं। तुम यह अँगूठी ले जा कर उनको दे देना तो वह तुम्हारी देखभाल करेंगे। जैसा वह कहें वैसा ही करना नहीं तो बेकार ही मारे जाओगे। मेरा अधिकार केवल इसी शहर तक है। मैं उस शहर में नहीं जा सकता।"

मैंने उस आदमी से अँगूठी ली और उसको सलाम करके चल दिया। मैं उस शहर में घुसा तो देखा कि वह तो बड़ी शानदार जगह थी। सड़कें और बाजार सब साफ पड़े थे। स्त्री पुरुष एक दूसरे से छिपाये बिना ही चीज़ें खरीद और बेच रहे थे। सब बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए थे।

मैं अपने दोनों तरफ देखता हुआ बढ़ता चला गया। जब मैं एक चौराहे पर पहुँचा तो वहाँ तो बहुत भीड़ लगी थी। इतनी कि

अगर तुम पीतल की कोई तश्तरी फेंको तो वह तो केवल लोगों के सिर को ही छुएगी नीचे नहीं गिरेगी।

सब लोग इतनी करीब करीब चल रहे थे कि कोई भी उनके बीच से हो कर नहीं निकल सकता था। जब यह भीड़ ज़रा सी कम हुई तो लोगों को थोड़ा हटाता हुआ आगे बढ़ा। आगे चल कर मैंने देखा कि एक सफेद दाढ़ी वाला एक कुरसी पर बैठा हुआ है। उसके पास कीमती जवाहरात का एक चुम्मक[179] का सैट है।

मैं आगे बढ़ा मैंने उसे सलाम किया और उसके भाई की दी हुई अँगूठी उसको दे दी। उसने मेरी तरफ गुस्से से देखा और पूछा — "तुम यहाँ क्यों आये हो। क्या परेशानियों को भुगतने के लिये? क्या मेरे बेवकूफ भाई ने तुम्हें बताया नहीं कि तुमको यहाँ नहीं आना चाहिये था?"

मैंने कहा — "उन्होंने मुझे मना तो किया था पर मैंने ही उनकी बात पर ज़्यादा कुछ ध्यान नहीं दिया।"

फिर मैंने उसको शुरू से ले कर अपना पूरा हाल बता दिया। वह आदमी वहाँ से उठा और मुझे अपने घर ले गया। उसका घर तो राजाओं के महल जैसा था उसके पास बहुत सारे नौकर चाकर थे।

[179] Chummak is the Turkish name for a kind of baton set (thin sticks such as with the orchestra conductor) with precious stones, and used by some of the officers of the palace as an insignia of state, like our rods, wands, etc

जब वह अपने निजी कमरे में जा कर बैठ गया उसने मुझसे बहुत ही मुलायमियत से कहा — "देखो बेटा। जो बेवकूफी तुमने की है उससे अब तुम अपने ही पैरों पर चल कर अपनी कब्र में जाओगे। कोई खरदिमाग ही इस जादुई शहर में आता है।"

मैंने कहा — "मैंने आपको अपनी पूरी कहानी बता दी है। ऐसा लगता है कि मेरी किस्मत ही मुझे यहाँ ले कर आयी है। पर मेहरबानी कर के मुझे यहाँ के रस्मो रिवाज और तौर तरीकों के बारे में बताइये तभी मैं जान पाऊँगा कि क्यों आप लोग यानी आप और आपके भाई ने मुझे यहाँ ठहरने के लिये मना किया है।"

वह भला आदमी बोला — "इस शहर का राजा और सारे कुलीन लोग समाज से निकाल दिये गये हैं क्योंकि इनके व्यवहार तौर तरीके धर्म सब बहुत अलग हैं।

यहाँ एक मूर्ति का मन्दिर है। उस मूर्ति के पेट से शैतान एक नाम बोलता है और उसके साथ उसका धर्म और विश्वास भी बोलता है। जो भी यात्री यहाँ आता है तो राजा के पास उसकी सूचना पहुँच जाती है।

वह उस यात्री को पगोडा ले जाता है और वहाँ ले जा कर उसको मूर्ति के सामने लेटने को कहता है। यहाँ तक तो ठीक है। नहीं तो उस बेचारे को नदी में डुबो दिया जाता है। और अगर वह

नदी में से भागने की कोशिश करता है तो उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है।[180]

अल्लाह ने इस शहर में इसी तरह का विधान बनाया है। इसी लिये मुझे तुम्हारे यहाँ आने पर तुम्हारी नौजवानी पर बहुत दया आती है। पर तुम्हारे लिये मैंने एक तरकीब सोची है ताकि तुम इस परेशानी से बच जाओ और कुछ दिन ज़िन्दा रह सको।"

मैंने पूछा — "वह क्या तरकीब है बताइये।"

वह बोला — "मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी शादी हो जाये। और इसके लिये तुम्हें वजीर की बेटी मिले।"

मैं बोला — "पर वह वजीर मुझ जैसे गरीब और अभागे को अपनी बेटी क्यों देने लगा। और यह सब तब होगा क्या जब मैं उसका धर्म अपनाऊँगा। यह तो मैं कभी नहीं कर सकता।

वह आदमी फिर बोला — "इस शहर की एक रीति और भी है कि जो कोई भी मूर्ति के सामने लेटता है तो चाहे वह भिखारी ही क्यों न हो अगर वह राजा की बेटी ही क्यों न माँगे राजा को उसे उसकी इच्छा पूरी करने के लिये उसे देना पड़ता है। फिर वह उसके लिये दुखी नहीं होता।

मैं आजकल राजा का विश्वासपात्र हूँ और वह मेरी बहुत इज़्ज़त करते हैं। इसी लिये यहाँ के कुलीन और औफीसर लोग भी

---

[180] I give this evil behavior in the footnote so that the main text remains clean. His private parts become elongated to such a degree that he has to drag them along the ground. This ludicrous idea is to be found in the veracious "Voiage and Travaile" of Sir John Maundevile, Kt.

मेरी बहुत इज़्ज़त करते हैं। हर हफ्ते वे पूजा करने के लिये पगोडा दो बार जाते हैं। अब वे लोग वहॉ कल मिलेंगे। कल मैं तुम्हें वहॉ अपने साथ ले जाऊँगा।"

कह कर उसने मुझे कुछ खाना पीना दिया और सोने के लिये कहा। अगली सुबह वह मुझे अपने साथ पगोडा ले गया। जब हम वहॉ पहुँचे तो मैंने देखा कि बहुत सारे लोग वहॉ आ जा रहे थे और अपनी अपनी पूजा कर रहे थे।

राजा और कुलीन लोग पुजारी जी के पास मूर्ति के सामने बड़ी इज़्ज़त से बैठे हुए थे। उनके सिर खुले थे। बिना शादी शुदा लड़कियॉ और सुन्दर लड़के, हूर और गिलमान की तरह से, चारों तरफ लाइन बना कर खड़े हुए थे।

उस भले बूढ़े ने मुझसे कहा — "अब तुम वही करना जो मैं कहूँ।"

मैं बोला — "मैं वही करूँगा जो आप कहेंगे।"

बूढ़ा बोला — "पहले राजा के हाथ और पैर चूमना। फिर वजीर की पोशाक पकड़ना।"

मैंने ऐसा ही किया। राजा ने पूछा — "यह कौन है और क्या कहना चाहता है।"

बूढ़ा बोला — "यह मेरा रिश्तेदार है। यह योर औनर के पैर चूमने के मौके की इज़्ज़त लेने के लिये बहुत दूर से इस आशा के

साथ आया है कि वजीर उसको अपनी सेवा में रख कर इसकी इज़्ज़त बढ़ायेंगे – अगर बड़ी मूर्ति और आपकी मरजी हो तो।"

राजा बोले — "अगर यह हमारा धर्म और हमारे रीति रिवाज स्वीकार कर लेता है तो तब तो यह तो बहुत ही अच्छा रहेगा।

तुरन्त ही पगोडा के नक्कारखाने में ढोलों की आवाज बज उठी और मुझे एक नया खिलात दिया गया। उसके बाद उन्होंने मेरे गले में एक काली रस्सी बाँधी और मुझे घसीटते हुए बड़ी मूर्ति के सामने ले गये। वहाँ मुझे उसके सामने लिटा दिया गय और फिर उठा लिया गया।

बड़ी मूर्ति से एक आवाज आयी — "ओ इज़्ज़तदार नौजवान। यह तूने बहुत अच्छा किया जो मेरी सेवा में आ गया। मेरे प्यार की और मेरी दया पर भरोसा किया।"

यह सुन कर सारे लोग मूर्ति के सामने लेट गये और धरती पर लोटने लगे। और कहने लगे "तुम्हारी उम्र लम्बी हो और तुम बहुत दिनों तक खुशहाल रहो। और ऐसा क्यों न हो।"

जब शाम हुई तो राजा और वजीर अपने अपने घोड़ों पर चढ़े और वजीर के घर पहुँचे और उन्होंने वजीर की बेटी की शादी अपने रस्मो रिवाज के अनुसार कर दी। उसको उन्होंने बहुत दहेज दिया और अपने आपको बहुत खुशनसीब समझा। उन्होंने कहा कि उसको उन्होंने मुझे अपनी बड़ी मूर्ति के कहने पर दिया है।

उन्होंने हमें एक घर में ठहरा दिया। जब मैंने वजीर की बेटी को देखा तो मुझे लगा कि वह तो एक परी जैसी सुन्दर है – ऊपर से ले कर नीचे तक। जितनी भी सुन्दरताऐं हमने सुनी थीं खास करके पद्मिनी[181] की वे सब सुन्दरताऐं उसमें मौजूद थीं। मैं उसके साथ आनन्द से रहने लगा।

सुबह को नहाने के बाद मैं राजा के दरबार में उनका इन्तजार करने लगा तो उन्होंने मुझे शादी की एक खिलात दी और मुझे हुक्म दिया कि मैं हमेशा उनके पुल की देखभाल करूँ। आखिर कुछ दिनों बाद मैं मैजेस्टी का सलाहकार बन गया।

राजा मेरे साथ बहुत आनन्द महसूस करता था। वह अक्सर मुझे खिलात और कई भेंटें दिया करता था। हालाँकि मेरे अपने पास बहुत सारा खजाना था क्योंकि मेरी पत्नी पास इतना सारा सोना था जायदाद थी कीमती जवाहरात थे जिसकी कोई हद नहीं।

इसी खुशी में आनन्द से रहते सहते दो साल बीत गये। अब ऐसा हुआ कि मेरी पत्नी यानी वजीर की बेटी को बच्चे की आशा हो गयी। जब आठ महीने गुजर गये तो उसे एक मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ। उसके जहर ने माँ के शरीर में भी जहर फैला दिया जिससे वह भी मर गयी।

---

[181] Padmini, the highest and most excellent of the four classes of women among the Hindus. The four classes of women are – Padminini (not to be confused with the Queen of Chittod Garh of Rajasthan), Chitrini, Hastini, and Shankhini.

मैं दुख से पागल सा हो गया और बोला “ओह यह कैसी आफत मेरे सिर पर आ कर पड़ी है। मैं उसके बिस्तर के सिरहाने की तरफ बैठा था और रोये जा रहा था। तभी रोने की आवाजें सारे घर में और ज़ोर से फैल गयीं।

स्त्रियों ने मुझे चारों तरफ से मारना शुरू कर दिया। हर स्त्री जैसे ही घर में घुसती अपने हाथ से एक या दो बार मेरे सिर पर मारती और फिर मेरे सामने आ कर खड़ी हो जाती और रोने लगती।

इस तरह से कई स्त्रियॉ मेरे चारों तरफ खड़ी हो गयीं। मैं उन सबसे करीब करीब ढक गया था उनके बीच मेरा दम घुटा जा रहा था।

इस बीच किसी ने पीछे से मेरा कौलर पकड़ लिया और घसीटना शुरू कर दिया। मैंने अपना सिर उठा कर देखा तो वह तो फारस का वही आदमी था जिसने वजीर की बेटी से मेरी शादी करवायी थी।

वह बोला — “ओ खरदिमाग। तू किसलिये रोता है।”

मैं बोला — “ओ बेरहम। यह आप मुझसे कैसा सवाल पूछ रहे हैं। मैंने तो अपनी सारी सम्पत्ति खो दी है अब मैं अपने मकान में रह भी नहीं सकता और आप मुझसे पूछ रहे हैं कि मैं क्यों रो रहा हूॅ।”

उसने मुस्कुराते हुए कहा — "अब तुम अपनी मौत पर रोओ। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि शायद तुम्हारी बदकिस्मती तुम्हें यहाँ खींच लायी है। वैसा ही हो रहा है। सिवाय मौत के अब तुम्हारा और कोई अन्त नहीं है।"

फिर लोगों ने मुझे पकड़ लिया और पकड़ कर पगोडा ले गये। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि राजा, सारे कुलीन लोग, राजा के राज्य की **36** जनजातियाँ सभी वहाँ मौजूद थे। मेरी पत्नी की जायदाद और बाकी सब चीज़ें भी वहीं थी और जो जिसके मन में आ रहा था वह उसकी कीमत नकद में वही लगा रहा था।

उसकी सारी सम्पत्ति पैसे में बदल दी गयी। उस पैसे से कीमती जवाहरात खरीद लिये गये और एक बक्से में बन्द कर दिये गये। फिर उन्होंने एक बक्से में रोटी मिठाई भुना हुआ माँस मेवा फल और कुछ दूसरी खाने की चीज़ें भरीं।

एक और बक्से में उन्होंने मेरी पत्नी की लाश रखी और दोनों बक्सों को ऊँट के ऊपर दोनों तरफ लटकाया। मुझे उस ऊँट पर चढ़ाया जवाहरात का बक्सा मेरी गोद में रखा।



सारे ब्राह्मण मेरे आगे आगे चले। वे प्रार्थनाऐं गाते जा रहे थे शंख बजाते जा रहे थे। मेरे पीछे पीछे भीड़ थी जो मेरे लिये खुशी की कामना करने के लिये चली आ रही थी। इस तरह से मुझे शहर के उसी दरवाजे से बाहर ले जाया गया जिससे मैं पहले दिन इस शहर के अन्दर आया था।

जैसे ही वहाँ के पहरेदार ने मुझे देखा तो वह मुझे देख कर रो पड़ा और बोला — "ओ बदकिस्मत। आखिर तुझे मौत ने पकड़ ही लिया। तूने मेरी बात नहीं मानी। इस शहर में घुस कर तूने अपनी ज़िन्दगी बिना किसी मतलब के खो दी। मेरा इसमें कोई दोष नहीं है। मैंने तो तुझे पहले ही मना किया था।"

उसने यह बात मुझसे यह बात कही पर मैं अपने में इतना खोया हुआ था कि मेरे मुँह से कोई जवाब ही निकला। असल में तो मेरी सारी इन्द्रियाँ ही काम नहीं कर रही थीं। उनको यह पता ही नहीं था कि आखीर में क्या होना था।

वे मुझे उसी किले तक ले गये जिसका दरवाजा मैंने पहले दिन बन्द देखा था। बहुत सारे लोगों ने मिल कर उस दरवाजे के ताले को खोला और वे लाश और खाने के बक्से को अन्दर ले गये।

एक पुजारी मेरे पास आया और मुझे यह कह कर तसल्ली देने लगा "आदमी एक दिन पैदा होता है और एक दिन मरता है। दुनियाँ की यही रीति है। अब ये, यानी तुम्हारी पत्नी और बेटा तुम्हारी सम्पत्ति और **40** दिन के लिये खाना यहाँ रखा जायेगा। जब तक बड़ी मूर्ति तुम्हारे ऊपर मेहरबान न हो जाये तब तक इनको लो और यहाँ रहो।"

अपने गुस्से में मैंने बड़ी मूर्ति को वहाँ के रहने वालों को उनके रीति रिवाजों को उनकी मार को कोसना चाहा पर फारस के उसी आदमी ने अपनी भाषा में मुझे ऐसा करने से मना कर दिया।

उसने कहा — "ध्यान रखना अपने मुँह से कोई शब्द मत निकालना। अगर तुमने कुछ कहा तो ये लोग तुम्हें जला कर भस्म कर देंगे। जो तुम्हारी किस्मत में था वह तो अब हो चुका अब अल्लाह की मेहरबानी पर भरोसा रखो। शायद वही तुम्हें इस जगह से ज़िन्दा निकालेगा।"

मुझे वहाँ अकेले छोड़ कर सारे लोग किले से बाहर चले गये और दरवाजा बन्द कर गये। मैं अपने अकेलेपन और अपनी मजबूर हालत पर फूट फूट कर रो पड़ा और इसी हालत में उस स्त्री की लाश को बार बार पैर से ठोकर मारने लगा।

मैं बोला — "ओ बदकिस्मत लाश। अगर तुझे बच्चे के जन्म के समय ही मरना था तो तूने शादी ही क्यों की और फिर क्यों गर्भवती हुई।"

खूब अच्छी तरह से उसे पीटने के बाद मैं फिर से चुपचाप बैठ गया। दिन आगे बढ़ने लगा और खूब गर्म हो गया। मेरा दिमाग उबलने लगा। इस हालत में मेरी मरने जैसी हालत हो गयी।

मैं जिस तरफ भी देखता मुझे अपने चारों तरफ हड्डियाँ ही हड्डियाँ दिखायी देतीं और जवाहरातों के ढेर दिखायी देते। मैंने कुछ पुराने बक्सों को इकट्ठा कर के उन्हें एक दूसरे पर रखा ताकि उससे मुझे दिन में कुछ छाया मिल सके और रात को ओस से बचाव हो सके।

फिर मैंने पानी ढूँढना शुरू किया तो एक तरफ को मुझे एक झरना दिखायी दे गया जो दीवार में से एक पत्थर काट कर निकल रहा था। उसका एक मुँह भी था। बस मुझे लगा कि मेरी ज़िन्दगी अब बच जायेगी। खाना उन लोगों ने बक्से में रख ही दिया था और पानी मुझे मिल गया था।

आखिर खाना खत्म हो गया था सो मुझे चिन्ता होने लगी और मैंने अल्लाह से इस बात की शिकायत की। अल्लाह मेरे ऊपर इतना मेहरबान हुआ कि उसी समय दीवार में से एक दरवाजा खुला और एक लाश और अन्दर लायी गयी। एक बूढ़ा उसके साथ था।

जब उसको लाने वाले उसको वहाँ छोड़ कर चले गये तो मेरे दिमाग में आया कि मैं उस बूढ़े को जान से मार दूँ और उसका खाना मैं ले लूँ। सो एक पुराने बक्से की एक टाँग उठा कर मैं उसके पीछे गया। वह बेचारा अपने घुटनों पर सिर रखे बैठा था।

मैं उसके पीछे से आया और उसके सिर पर इतनी ज़ोर से मारा कि उसकी खोपड़ी फट गयी और उसका दिमाग बाहर निकल आया। उसकी आत्मा तुरन्त ही अल्लाह के पास चली गयी थी।

अब मैं उसके खाने का अकेला मालिक था। अब मैंने उसमें से खाना खाना शुरू कर दिया था। इस तरह से कुछ दिन और निकल गये। फिर कोई लाश आयी और उसके साथ कोई जिन्दा आदमी लाया जाता मैं उसको मार कर उसका खाना खा लेता। मेरा काम ठीक चल रहा था।

एक दिन एक लाश के साथ एक छोटी लड़की लायी गयी। वह बहुत सुन्दर थी। मेरा दिल उसको मारने का नहीं किया जैसा कि मैं दूसरे लोगों के साथ करता आ रहा था। उसने मुझे देखा तो वह डर के मारे बेहोश हो गयी।

मैंने उसका खाना निकाला और वहाँ ले गया जहाँ मैं रहता था। पर मैंने उसको अकेले नहीं खाया। जब भी मैं भूखा होता तो मैं उसका कुछ खाना उसके पास ले जाता और हम दोनों साथ साथ ही खाते।

जब उस लड़की ने देखा कि मैं उसको परेशान नहीं कर रहा हूँ तो मुझसे उसकी हिचकिचाहट कम होती गयी और उसने मुझसे अपनी जान पहचान बढ़ा ली। अब वह मेरे शेड में भी आने लगी।

एक दिन मैंने उससे उसकी कहानी सुनाने के लिये कहा तो वह बोली — "मैं राजा के वकीलो मुतलक यानी प्रधान मन्त्री की बेटी हूँ। मेरी शादी मेरे चाचा के लड़के से पक्की हो गयी थी।

शादी के दिन उसके पेट में बहुत तेज़ दर्द उठा। वह दर्द से बहुत परेशान था। इस परेशानी से ही वह मर गया। सो लोग मुझे उसकी लाश के साथ यहाँ ले आये हैं और मुझे यहाँ छोड़ गये हैं।"

फिर उसने मुझे मेरी कहानी बताने के लिये कहा। मैंने भी उसे अपनी सारी कहानी बता दी और कहा — "लगता है अल्लाह ने तुम्हें यहाँ मेरे लिये भेजा है।"

वह मुस्कुरायी और चुप रही।

इस तरह से हम दोनों के अन्दर एक दूसरे के लिये प्यार बढ़ने लगा। कुछ ही दिनों में मैंने उसको अपने मुसलमान धर्म की बहुत सारी बातें उसको सिखा दीं। उसको मैंने कलमा बोलना सिखा दिया। फिर हम लोगों ने शादी कर ली। उसको भी बच्चे की आशा हो गयी और उसके भी एक बेटा हो गया।

इस तरह रहते रहते हम लोगों को वहाँ तीन साल गुजर गये। जब उसने बच्चे को खाना खिलाना शुरू किया तो हमने आपस में कहा कि इस तरह से हम लोग यहाँ ज़िन्दगी कब तक गुजारेंगे। और हम यहाँ से बाहर कैसे निकलेंगे।

वह बोली — "जब अल्लाह हमें यहाँ से बाहर निकालेगा तभी हम यहाँ से बाहर निकल पायेंगे नहीं तो किसी दिन हम यहीं मर जायेंगे।"

उसका कहा सुन कर मैं बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा और थोड़ी देर तक रोता रहा। फिर मैं सो गया।

सपने में मैंने एक आदमी देखा जिसने मुझसे कहा — "नाले से हो कर बाहर जाने का रास्ता है सो तुम उससे बाहर निकल सकते हो।"

मैं खुशी के मारे तुरन्त ही जाग गया। मैंने अपनी पत्नी से कहा — "यहाँ जो पुराने बक्से पड़े हुए हैं उनमें लगी पुरानी कीलें और ताले ले आओ ताकि मैं उनकी सहायता से इस नाले की चौड़ाई बढ़ा सकूँ।"

उस नाले के मुँह पर एक बड़ी सी कील लगायी और उस पर पत्थर से उसको मारता रहा जब तक मैं थक नहीं गया। किसी तरह से एक साल के बाद मैं उसका मुँह इतना चौड़ा कर सका जिसमें से एक आदमी बाहर निकल सकता।

मैंने बहुत सारे जवाहरात मरे हुए लोगों के कपड़ों की आस्तीन में भरे और उन सबको अपने साथ ले कर हम तीनों उस नाले से हो कर बाहर निकल आये। मैंने हमको बाहर निकालने के लिये अल्लाह को धन्यवाद दिया बच्चे को अपने कन्धे पर बिठाया और हम बाहर निकल आये।

एक महीने से हमने डर के मारे कोई बड़ी सड़क नहीं ली है। हम केवल छोटी छोटी सड़कों से हो कर या जंगलों आदि से हो कर यहाँ तक आये हैं। हम लोग केवल घास और पत्तियों पर ज़िन्दा हैं। हमारे अन्दर बिल्कुल भी ताकत नहीं है। मैं अब इससे आगे एक शब्द भी नहीं बोल सकता। यही मेरी कहानी है जो आपने अभी सुनी ओ राजा।"

ख्वाजा यह कहानी सुना कर बोला — "मुझे उस पर दया आ गयी। मैंने उसे नहलवाया उसको कपड़े पहनवाये खाना खिलाया और फिर उसको अपना डिपुटी रख लिया।

अपने घर में मेरे राजकुमारी से कई बच्चे हुए पर वे सब एक के बाद एक मर गये। जब मेरा एक बेटा पाँच साल की उम्र तक ज़िन्दा रहा पर फिर वह भी मर गया तो इस दुख में मेरी पत्नी भी चल

बसी। मुझे बहुत ज़्यादा दुख हुआ तो मुझे उस देश में रहने की कोई इच्छा नहीं रही और मैंने फारस लौटने का विचार किया।

मैंने राजा से विदा माँगी और अपना ओहदा उस नौजवान को दे देने के लिये कहा। फिर राजा भी मर गया। मैंने अपना कुत्ता लिया और सारे जवाहरात और पैसा लिया और नायशापुर आ गया ताकि मेरे भाइयों की कहानी कोई न जान सके।

यहाँ आ कर मैं कुत्ते के पुजारी के नाम से मशहूर हो गया। अपनी इसी बदनामी की वजह से मैं फारस के राजा को दोगुना टैक्स देता हूँ।

अब ऐसा हुआ कि यह नौजवान सौदागर नायशापुर गया तो इसी की वजह से मुझे आपके पैर चूमने की खुशकिस्मती मिली।"

आज़ाद बख्त ने ख्वाजा से पूछा — "तो क्या यह तुम्हारा अपना बेटा नहीं है?"

ख्वाजा बोला — "नहीं जहाँपनाह नहीं। यह मेरा बेटा नहीं है। यह तो आप ही के लोगों में से एक है। पर अब यह मेरा मालिक है या समझो कि मेरा वारिस है या फिर जो कुछ भी आप समझें।"

यह सुन कर आज़ाद बख्त ने उस लड़के को बुलाया और उससे पूछा — "तुम किस सौदागर के बेटे हो और तुम्हारे माता पिता कहाँ रहते हैं।"

नौजवान सौदागर यानी राजा आज़ाद बख्त के वजीर की बेटी ने राजा के सामने की जमीन को चूमा और अपनी ज़िन्दगी बख्श देने

की विनती करते हुए राजा से कहा — "यह गुलाम आपके वजीर की बेटी है। मेरे पिता के ऊपर इस ख्वाजा के लालों की वजह से शाही इलजाम था और योर मैजेस्टी का हुक्म था कि अगर एक साल के अन्दर मेरे पिता के शब्दों की सचाई साबित न की गयी तो उनको मौत की सजा दे दी जायेगी।

यह शाही फरमान सुन कर मैंने एक सौदागर का वेश बनाया और नायशापुर गयी। अल्लाह नें मेरी सहायता की और मैं ख्वाजा को उनके लाल और कुत्ते सहित यहाँ ले आयी। आपने सारा हाल सुन ही लिया है। मुझे पूरी आशा है कि अब आप मेरे पिता को छोड़ देंगे।"

वजीर की बेटी से यह सब सुन कर ख्वाजा के मुँह से एक आह निकल गयी और वह नीचे गिर पड़ा। जब उसके चेहरे पर गुलाब जल छिड़का गया तब कहीं वह होश में आया।

वह बोला — "अरे यह तो मेरे साथ बहुत ही बुरा हुआ कि मैं इतनी दूर तक दुख सह कर आया केवल इस आशा में कि मैं इस नौजवान को अपना बेटा बना कर गोद ले लूँगा।

मैंने सोचा था कि मैं इसको अपनी सारी जायदाद सम्पत्ति दे दूँगा ताकि मेरा नाम खत्म न हो सके। सब लोग मुझे ख्वाजा ज़ाद कह सकें। पर अब तो मेरा पूरा सपना ही बेकार हो गया। यह तो सारा मामला ही उलट पलट हो गया।

इसने तो लड़की बन कर इस बूढ़े को बर्बाद कर दिया। मैं तो लड़की के जाल में फँस गया और अब यह कहावत मेरे ऊपर सच बैठती है कि “तू घर में बैठा तीर्थयात्रा के लिये भी नहीं गया फिर भी तेरा सिर मुँड़ गया और तू सबकी हँसी का पात्र बना।”[182]

राजा आज़ाद बख्त आगे बोला — “अब मैं अपनी कहानी को छोटा करता हूँ मुझे ख्वाजा के रोने पर दया आ गयी। मैंने उसको अपने पास बुला कर उसको कुछ खुशी की खबर सुनायी और कहा — “दुखी मत हो। मैं इसकी शादी तुमसे करा दूँगा और अगर अल्लाह की मेहरबानी हुई तो इससे तुम्हारे बच्चे हो जायेंगे और यह तुम्हारी मालिक हो जायेगी।”

ये खुश करने वाले शब्द सुन कर ख्वाजा फिर से बहुत खुश और सामान्य हो गया। तब मैंने वजीर की बेटी को जनानखाने में भेजा। वजीर को जेल से बाहर निकाला।

वजीर को मैंने नहलवाया खिलाते सरफ़राज़ी यानी खास खिलात पहनवाया जो यह बताती थी कि उसकी इज़्ज़त फिर से वापस आ गयी है। और उसको अपने सामने लाने के लिये कहा।

जब वजीर आया तो उसका स्वागत करने के लिये मैं फर्श के आखीर तक गया[183] और उसको अपने से बड़ा मानते हुए मैंने उसे

---

[182] When Musalmans go on pilgrimage to Mecca, they shave their heads on their arrival there; the ridicule here is, to have incurred the shaving without the merit of the pilgrimage.

[183] The farsh is the carpet or cloth which is spread in the room, where company is received, or the king's audience is held; for the king to advance to the end of the farsh to receive the Wazir, is a mark of respect, which Asiatic princes seldom pay, even to their equals.

गले लगाया। मैंने उसको वजीर होने का एक नया लिखने का सामान यानी कलमदान दिया।[184]

ख्वाजा को भी मैंने टाइटिल और जागीरें दीं। शुभ मुहूर्त निकलवा कर मैं वजीर की बेटी की शादी उससे कर दी।

कुछ सालों में उसके दो बेटे और एक बेटी हुई। उसका सबसे बड़ा बेटा मलीकुत तुज्जर और सबसे छोटा बेटा मेरे घर की देखभाल करते हैं।

ओ दरवेश। मैंने अपनी कहानी आप सबको इसलिये सुनायी क्योंकि कल रात मैंने आप में से दो लोगों की कहानी सुनी थी। अब आपमें से दो रह गये हैं। यह सोचते हुए कि मैं अभी भी वहीं हूँ जहॉ मैं कल रात था मैं आपका नौकर हूँ और मेरा घर आपका तकिया[185] है आप अपनी अपनी कहानियॉ बिना किसी डर और हिचक के सुनायें। आप कुछ दिन मेरे पास रुकें।"

जब दरवेशों ने देखा कि राजा बहुत दयालु है तो बोले — "जैसा योर मैजेस्टी चाहें। हम दोनों भी अपनी अपनी कहानी सुनाते हैं। आप सुन कर खुश हों।"

[184] The insignia of the Wazir's office in India and Persia, is the qalumdan.

[185] Abode of a Faqir is called Takiya

7 तीसरे दरवेश के कारनामे[186]

उसके बाद तीसरे दरवेश ने आराम से बैठते हुए अपनी यात्राओं के बारे में बताना शुरू किया —

ओ दोस्तों अब इस तीर्थयात्री की कहानी सुनो
मतलब जो कुछ मेरे साथ हुआ उसकी कहानी सुनो
प्रेम के राजा ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया
वह मैं तुम्हें विस्तार में बताता हूँ सुनो

यह बेचारा फारस का राजकुमार है। मेरे पिता उस देश के राजा थे और मैं उनका अकेला बच्चा हूँ। जब मैं नौजवान हो गया तो मैं अपने साथियों के साथ चौपड़[187] ताश शतरंज और बैकगैमन[188] आदि खेल खेला करता था। मैं घुड़सवारी भी करता था। मुझे शिकार का पीछा करने में बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन मैंने अपने शिकारी साथियों को बुलाया और उनको और अपने दोस्तों को साथ ले कर हम सब मैदान की तरफ निकल पड़े। हमने बाज़ों को बतखों और तीतरों के ऊपर छोड़ दिया। हमने उनका बहुत दूर तक पीछा किया।

---

[186] Adventures of the Third Darwesh (Tale No 4) – Taken from : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/05_thirddarvesh.html

[187] Chaupad is a kind of Dice Game.

[188] Backgammon – a Dice Game

दौड़ते दौड़ते हम एक बहुत सुन्दर जमीन पर आ गये। जहाँ तक हमारी नज़र जाती थी, मीलों दूर तक चारों तरफ हरियाली दिखायी देती थी और उसमें लाल रंग के फूल। वह मैदान बस एक लाल की तरह दिखायी देता है।

इतना सुन्दर दृश्य देख कर हम लोगों ने अपने अपने घोड़ों की रास ढीली कर दी और धीरे धीरे वहाँ की सुन्दरता को देखते हुए इधर उधर घूमते रहे।

अचानक हमको एक काला हिरन दिखायी दे गया। उसके ऊपर एक ब्रोकेड का कपड़ा पड़ा हुआ था और उसकी गर्दन में जवाहरात जड़ा पट्टा पड़ा हुआ था। उस पट्टे से सोने का काम की गयी एक घंटी बँधी हुई थी।

वह वहाँ मैदान में निडरता से घास चरता हुआ घूम रहा था जहाँ शायद कभी कोई आदमी नहीं गया होगा। जहाँ कभी किसी चिड़िया ने भी पर नहीं मारे होंगे।

हमारे घोड़ों की टापों की आवाज सुन कर वह चौंक गया और सिर उठा कर ऊपर देखने लगा। उसने हमें देखा और फिर धीरे धीरे आगे बढ़ गया।

यह देख कर मेरी उत्सुकता बढ़ गयी मैंने अपने साथियों से कहा — "मैं इसको ज़िन्दा पकड़ूँगा। ध्यान रखना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ना और न ही मेरा पीछा करने की कोशिश करना। मैं एक ऐसे तेज़ घोड़े पर चढ़ गया जो मैं अक्सर हिरन का पीछा करते

समय इस्तेमाल करता था। वह उनसे भी तेज़ भागता था और मैं एक के बाद एक उन्हें अपने हाथों से जल्दी ही पकड़ लेता था। मैं उसके पीछे भागा चला जा रहा था।

मुझे अपने पीछे आता देख कर वह तेज़ी से भाग लिया। मेरा घोड़ा भी हवा से बातें कर रहा था पर वह उसके पीछे उड़ती हुई धूल तक भी नहीं पहुँच पा रहा था। घोड़े के शरीर से पसीना बहने लगा और मेरी जबान भी प्यास से ऐंठने लगी।

पर अभी कोई और रास्ता नहीं था। शाम होने आ रही थी और मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं कितनी दूर आ गया हूँ या मैं कहाँ था। यह देख कर कि मैं इस जानवर को नहीं पकड़ पाऊँगा मैंने उसे ज़िन्दा पकड़ने का अपना उद्देश्य बदला और अपने तरकस से एक तीर निकाला।

मैंने अपनी कमान ठीक की और अल्लाह का नाम ले कर एक तीर उसकी जाँघ की तरफ साध कर फेंक दिया। पहला तीर उसकी टाँग में लग गया और वह लँगड़ाता हुआ वह पहाड़ की तलहटी की तरफ भाग गया।



मैं अपने घोड़े से उतरा और पैदल ही उसका पीछा करने लगा। कई बार चढ़ने उतरने के बाद मुझे एक गुम्बद[189] दिखायी दिया।

[189] Gumbad or Dome is essentially a Muslim architecture of the building. See the picture of the Dome above – you can see three Domes there on the top of the building.

जब मैं उसके पास पहुँचा तो मुझे वहाँ एक बागीचा और एक फव्वारा दिखायी दिया पर हिरन मुझे कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। मैं बहुत थका हुआ था सो मैं अपना चेहरा और अपने पाँव फव्वारे के पानी में धोने लगा।

तुरन्त ही मुझे रोने की आवाज सुनायी पड़ी जैसे वह गुम्बद में से आ रही हो। जैसे कोई कह रहा हो "ओ मेरे बच्चे अल्लाह करे मेरे दुख का तीर उसके शरीर में लग जाये जिसने तुझे यह तीर मारा है। अल्लाह करे कि उसको उसको जवानी का फल न मिले। अल्लाह करे कि वह मेरी तरह से दुखी रहे।"

ये शब्द सुन कर मैं उस महल के अन्दर गया तो मैंने देखा कि एक इ़ज़्ज़तदार बूढ़ा वहाँ बैठा हुआ है। उसकी दाढ़ी सफेद है उसने अच्छे कपड़े पहने हुए हैं और वह एक मसनद के सहारे बैठा है। वह हिरन उसके सामने लेटा हुआ है। वह उसकी जाँघ से तीर निकाल रहा है और उसको तीर मारने वाले को कोस रहा है।

अन्दर पहुँच कर मैंने उसे सलाम किया और हाथ जोड़ कर बोला — "जनाब मुझसे यह अपराध अनजाने में हो गया है। मुझे नहीं मालूम था कि यह आपका हिरन है। अल्लाह के लिये आप मुझे माफ कर दें।"

वह बूढ़ा बोला — "तुमने एक बेजुबान जानवर को तकलीफ पहुँचायी है। अगर तुमने इसे अनजाने में मारा है तो अल्लाह तुम्हें माफ करेगा।"

मैं उसके पास ही बैठ गया और उसको हिरन के शरीर से तीर निकालने में सहायता करने लगा। हम लोगों ने उसे बड़ी मुश्किल से निकाला। मैंने उसके घाव पर बालसम का मरहम लगाया और उसको छोड़ दिया।

बाद में हमने हाथ धोये और बूढ़े ने मुझे कुछ खाने के लिये दिया जो तैयार ही था। अपनी भूख प्यास बुझाने के बाद मैं एक चारपाई पर आराम करने के लिये लेट गया।

पेट भर कर खाना खाने के बाद थका हुआ होने की वजह से मुझे बहुत गहरी नींद आयी। सोते में भी मुझे वे रोने की आवाजें आती रहीं। तो मैंने अपनी ऑखें खोल कर उनहें मलते हुए इधर उधर देखा ते उस कमरे में न तो वह बूढ़ा था और न कोई और।

मैं बिस्तर पर अकेला लेटा हुआ था और कमरा बिल्कुल खाली था। मुझे कुछ डर लगा तो मैं चारों तरफ घूम घूम कर देखने लगा। एक कोने में मुझे एक परदा लटका हुआ दिखायी दिया।

मैंने उसको ऊपर उठाया तो देखा कि वहॉ एक सिंहासन रखा हुआ था। उस पर करीब करीब **14** साल की एक देवदूत जैसी सुन्दर लड़की बैठी हुई थी।

उसका चेहरा चॉद जैसा था। उसके घुंघराले बाल उसके सिर के दोनों तरफ लटके हुए थे। उसका चेहरा मुस्कुराता हुआ था। वह एक यूरोपियन लड़की की तरह के कपड़े पहने हुए थी और वह सामने देख रही थी।

वह इज़्ज़तदार बूढ़ा उसके सामने जमीन पर उलटा लेटा हुआ था। बूढ़े की हालत और उस लड़की की सुन्दरता देख कर मैं तो खो ही गया या हो सकता है कि फिर मर ही गया होऊँ। मैं एक लाश की तरह नीचे गिर पड़ा।

बूढ़े ने मुझे इस तरह बेहोश हो जाते देखा तो वह गुलाब जल ले कर आया और उसे मेरे ऊपर छिड़का। जब मैं कुछ होश में आया तो मैं उठा और देवकन्या के पास तक गया और उसे सलाम किया।

उसने मेरे सलाम का न तो कोई जवाब दिया और न अपने होठ ही खोले। मैं बोला — "ओ सुन्दर देवदूत। ऐसा कौन से धर्म में लिखा है कि किसी आदमी को इतना घमंडी होना चाहिये कि वह किसी के सलाम का भी जवाब न दे।"

हालाँकि थोड़ा बोलना अच्छा है तो भी इतना थोड़ा नहीं
कि अगर प्यार करने वाला मर रहा है तो भी होठ न खोले जायें

कम से कम उसके लिये जिसने तुझे बनाया है मैं विनती करता हूँ कि मुझे जवाब तो दो। मैं तो यहाँ इत्तफाक से आ गया हूँ और मेहमान को खुश करना तो किसी का भी फर्ज होता है।"

मैंने उससे बहुत कुछ कहा पर उससे कुछ भी कहना बेकार था। वह मुझे सुन रही थी पर एक पत्थर की मूर्ति की तरह ही बैठी रही।

मैं फिर आगे बढ़ा और उसके पैरों पर अपने हाथ रखे। जैसे ही मेरे हाथों ने उसके पैरों को छुआ तो वे मुझे बहुत सख्त लगे। तब मुझे लगा कि वह सुन्दर चीज़ तो पत्थर की बनी थी। इस मूर्ति को अजुर[190] ने बनाया था।

तब मैंने उस मूर्ति की पूजा करने वाले बूढ़े से कहा — "जब मैंने आपके हिरन की टॉग में तीर मारा तो आपने मुझे प्यार का तीर कह कर कोसा।

आपका शाप काम कर रहा है। मेहरबानी कर के मुझे बताइये कि इन हालातों का क्या मतलब है आपने यह तलिस्मान क्यों बनाया हुआ है और लोगों के रहने की जगह छोड़ कर आप इन जंगलों और पहाड़ों में क्यों रहते हैं। आप मुझे सब कुछ बताइये कि आपके साथ क्या हुआ है।"

जब मैंने उनके ऊपर काफी दबाव डाला तब वह बोले — "इस मामले ने तो मुझे बर्बाद ही कर दिया। क्या तुम भी उसको सुन कर बर्बाद हो जाना चाहते हो।"

मैं बोला — "ज़रा रुकिये। आपने तो पहले से ही उसे बताने से बचने के कई रास्ते निकाल लिये हैं। ऐसा आपने क्यों किया। जवाब दीजिये वरना मैं आपको मार दूँगा।"

---

190 Azur, the father of Abraham, was a famous statuary and idol-worshipper, according to the ideas of Muhammadans.

मुझे बहुत जल्दी गुस्सा देख कर वह बोले — "ओ नौजवान। अल्लाह हर आदमी को प्रेम की जलती हुई आग की गर्मी से बचा कर रखे। देखो तो ज़रा कि इस प्यार ने किस तरह की आफत डाली है। प्यार के लिये एक स्त्री किस तरह अपने पति के साथ जल कर अपनी ज़िन्दगी की बलि दे रही है।

सब लोग मजनू और फरहाद की कहानी जानते हैं। फिर तुम यह कहानी सुन कर क्या करोगे। क्या तुम घर छोड़ दोगे या क्या अपनी किस्मत छोड़ दोगे या फिर अपना देश छोड़ कर इधर उधर घूमते रहोगे।"

मैं बोला — "रुकिये। आप अपनी दोस्ती केवल अपने तक ही रखें। जान लीजिये कि मैं आपका दुश्मन हूँ। और अगर आपको अपनी ज़िन्दगी प्यारी है तो आप मुझे अपनी कहानी साफ साफ बता दें।"

यह देख कर कि अब कोई दूसरा रास्ता नहीं है उनकी आँखों में आँसू आ गये और उन्होंने कहना शुरू किया — "इस अभागे की कहानी यह है। इस नौकर का नाम निमान सैया[191] है।

मैं एक बहुत बड़ा सौदागर था जो इस उम्र तक पहुँचा है। मैंने अपने व्यापार के सिलसिले में दुनियाँ के बहुत सारे हिस्से देखे हैं और इस तरह से बहुत सारे राजाओं से मिल चुका हूँ।

---

[191] Niman Saiyah

एक बार मेरे मन में कुछ ऐसा विचार आया कि मैंने पहले ही दुनियॉ चारों तरफ से देख ली है पर मैं कभी फ़्रैंक टापू[192] नहीं गया। वहॉ के राजा से नहीं मिला। उनके लोग और सेना नहीं देखी। वहॉ के रीति रिवाजों का भी मुझे कुछ पता नहीं है। इसलिये कम से कम एक बार तो मुझे वहॉ भी जाना चाहिये।

मैंने अपने साथियों और दोस्तों से सलाह की तो तय यह हुआ कि हॉ हमको वहॉ जाना ही चाहिये। सो मैंने कुछ मुश्किल से मिलने वाला सामान इकट्ठा किया दूसरे देशों से कुछ बढ़िया भेंटें इकट्ठी कीं जो उस टापू के लायक होतीं।

फिर और सौदागरों का एक काफिला बना कर हम एक जहाज़ पर चढ़े और उस टापू की तरफ चल दिये। हमारी हवाऐं हमारी यात्रा के अनुकूल थीं सो हम जल्दी ही कुछ ही महीने में उस टापू पर पहुँच गये।

वहॉ पहुँच कर मैंने एक ऐसा शानदार शहर देखा जिसकी सुन्दरता के मुकाबले में वैसा कोई शहर नहीं था। उसके सारे बाजार गलियॉ सड़क सभी पक्की बनी हुई थीं और उन पर पानी छिड़का हुआ था। वे सब इतनी साफ थीं कि कहीं भी एक तिनका भी दिखायी नहीं देता था धूल मिट्टी का तो कहना ही क्या।

---

[192] Frank Island - By the Island of the Franks. It is most probable that the author means Britain. The description of the capital is more adapted to London 60 years ago than to any other European city. This, Mir Amman might have learned from some of the resident Europeans, while he filled up the rest from his own luxuriant imagination. [S: I really cannot conceive which Island my author alludes to; it does not relate in the remotest degree to our noble Island, except the lighting of the streets; and thank God the manners he describes are contrary to ours.]

वहॉ कई तरह की इमारतें थीं। रात को वहॉ सड़कों पर रोशनी होती थी। थोड़ी थोड़ी दूर पर रोशनी की दो दो कतारें भी थीं। शहर के बाहर खुश करने वाले बागीचे बने हुए थे जिनमें मुश्किल से मिलने वाले फूल झाड़ियॉ फल लगे हुए थे। वैसे बागीचे कहीं और मिलने मुश्किल थे सिवाय स्वर्ग के।

थोड़े में कहो तो इस शहर की मैं जितनी भी तारीफ करूँ सच से कहीं कम है।

सब लोग वहॉ हम सौदागरों की ही बातचीत कर रहे थे। एक खास आदमी[193] अपने बहुत सारे साथियों के साथ हमारे काफिले के पास आया और सौदागरों से पूछा — "तुम्हारा सरदार कौन है?"

तो सब लोगों ने मेरी तरफ इशारा कर दिया तो वह मेरे पास आया। मैं उठा और उसका इज़्ज़त के साथ स्वागत किया। हम दोनों ने आपस में सलाम किया और मैंने उसे मसनद पर बिठाया और एक तकिया उसको दिया।

यह सब कर के मैंने उससे पूछा कि ऐसा क्या मौका था जिसके लिये मुझे इतनी इज़्ज़त मिली। वह बोला — "राजकुमारी जी ने सुना है कि कुछ सौदागर आये हुए हैं जो काफी सारा सामान ले कर आये हैं। इसलिये उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं उनको ले कर उनके पास ले जाऊँ।

[193] Translated for the word "Eunuch". I have used this word to maintain the decency of the language. The "eunuch" is of course out of place in a Christian city; at least he does not hold the same rank as in the East.

इसलिये आप मेरे साथ अपना वह सब सामान ले कर चलिये जो किसी शाही दरबार के लायक होता है और उनकी देहरी चूमने का आनन्द लीजिये।"

मैं बोला — "मैं आज ही चलता पर आज मैं बहुत थका हुआ हूॅ। कल मैं उनकी सेवा में अपनी जान और सामान के साथ हाजिर होऊॅगा। जो कुछ भी मेरे पास होगा मैं वह उनको भेंट करूॅगा फिर जो कुछ भी हर मैजेस्टी को पसन्द आयेगा वह उनका होगा।"

यह वायदा कर के मैंने उसको गुलाबजल और पान दिया और विदा किया। फिर मैंने अपने सौदागरों को बुलाया और फिर जिस किसी सौदागर के पास जो भी कोई मुश्किल से मिलने वाल सामान था वह सब इकट्ठा किया और जो कुछ मेरे पास था वह सब भी इकट्ठा किया और उन सबको ले कर अगले दन सुबह शाही महल के दरवाजे पर पहॅुच गया।

चौकीदार ने राजकुमारी जी को मेरे आने की खबर दी तो राजकुमारी ने मुझे अपने सामने बुलवाया। वहॅ खास आदमी अन्दर से निकल कर आया और मेरे हाथ पकड़ कर मुझे राजकुमारी जी के पास ले गया।

जब हम लोग दोस्ताना तरीके से बात करते जा रहे थे तो दासियों के कमरे पार करने के बाद वह मुझे एक बहुत ही बढ़िया कमरे में ले गया। ओ मेरे दोस्त तुम विश्वास नहीं करोगे वहॉ का दृश्य इतना सुन्दर था जैसे वहॉ परियों को आज़ाद छोड़ दिया गया

हो। उस कमरे में मैं जिस तरफ भी देखता बस उसी तरफ देखता रह जाता। मेरा सारा शरीर कॉप जाता। मैं अपने आपको बड़ी मुश्किल से सॅभाल पा रहा था।

मैं राजकुमारी जी के सामने जा पहुॅचा। जैसे ही मैंने राजकुमारी जी की तरफ देखा मेरे हाथ पैर सब कॉपने लगे। बड़ी मुश्किल से मैं ठीक से खड़े हो कर उनको सलाम कर पाया। उनके दोनों तरफ बहुत सुन्दर लड़कियॉ लाइन लगा कर खड़ी हुई थीं। उनके हाथ उनके सीने पर एक दूसरे के ऊपर रखे हुए थे।

मैंने राजकुमारी जी के सामने किस्म किस्म के जवाहरात बढ़िया कपड़े और कुछ मुश्किल से मिलने वाला सामान रखा। उन्होंने उनमें से कुछ चीज़ें तो तुरन्त ही चुन कर रख लीं क्योंकि वे थीं ही इस काबिल।

वह उन चीज़ों को देख कर बहुत खुश हुई। उन्होंने उनको चुन कर अपने नौकर को दे दिया। नौकर ने मुझसे कहा कि जितनी कीमत मैंने उनकी बतायी थी उनकी वह कीमत अगले दिन मुझे दे दी जायेगी।

मैंने उसको झुक कर सलाम किया और दिल ही दिल में खुश हो कर वहॉ से चला आया कि अब कम से कम अगले दिन मैं फिर से वहॉ आ सकता हूॅ।

जब मैं राजकुमारी जी से विदा ले कर बाहर आया तो मैं पागलों की तरह से बात कर रहा था। इसी हालत में मैं सराय लौटा। पर

मेरी इन्द्रियॉ अभी भी ठीक से काम नहीं कर रही थीं। मेरे सब दोस्त मुझसे पूछने लगे कि क्या बात है तो मैंने कहा कि आने जाने में जो गर्मी मेरे दिमाग में चढ़ी उसकी वजह से मेरा दिमाग कुछ काम नहीं कर रहा है।

थोड़े में कहो तो उस रात मैं सारी रात सो नहीं सका। सारी रात मैं बिस्तर में इधर उधर करवटें बदलता रहा। अगले दिन सुबह को मैं राजकुमारी जी के पास में फिर से गया। मुझे उनका खास नौकर फिर से मुझे उनके पास ले गया।

उस समय भी कमरे का वही दृश्य था जो मैंने कल देखा था। राजकुमारी जी ने बड़ी नर्मी से मेरा स्वागत किया। वहॉ जो कोई और था उन्होंने उसको वापस अपने अपने काम पर भेज दिया। तब वह अपने प्राइवेट कमरे में चली गयीं और मुझे भी उन्होंने वहीं बुला लिया।

जब मैं अन्दर गया तो उन्होंने मुझसे बैठने के लिये कहा। मैंने उनको सिर झुका कर सलाम किया और बैठ गया। वह बोलीं — अब क्योंकि तुम आ गये हो और तुम मेरे लिये यह सामान ले कर आये हो तो तुम क्या सोचते हो कि तुमको इसके ऊपर कितना फायदा होना चाहिये।"

मैं बोला — "मेरी तो केवल आपको देखने की ही इच्छा थी योर हाइनैस जो मुझे अल्लाह ने पूरी कर दी। मुझे तो दोनों दुनियॉ की दौलत मिल गयी।

जो कुछ कीमतें मेरे परचे में लिखी हैं उसमें आधा पैसा उनकी कीमत है और बाकी आधा उसका फायदा है।"

वह बोली — "नहीं तुमने जितनी भी कीमत उस परचे में लिखी है तुम्हें उतना ही पैसा दिया जायेगा। इसके अलावा तुमको भेंटें भी मिलेंगी पर एक शर्त पर कि तुम मेरा एक काम करोगे जो मैं तुमसे अभी कहने जा रही हूँ।"

मैंने कहा — "आपके लिये इस गुलाम की जान और माल सभी हाजिर है मैं इसको अपनी खुशकिस्मती समझूँगा कि अगर इनमें से कुछ भी आपके काम आ जाये तो।"

यह सुन कर उसने कलम दान मँगवाया और एक कागज पर एक नोट लिखा कागज को एक मोती के छोटे से बटुए में बन्द किया उसे मलमल के रूमाल में रखा और मुझे दिया।

इसी तरह से उसने मुझे एक अँगूठी भी दी जिसे उसने अपनी हाथ की उँगली में से उतारा था। वह उसने मुझे अपनी एक निशानी के रूप में दी थी ताकि मैं पहचाना जा सकूँ।

ये दे कर उन्होंने मुझसे कहा — "शहर के सामने ही एक बहुत बड़ा बाग है उसका नाम है दिलकुशा यानी दिल को खुश कर देने वाला। तुम वहाँ जाओ। वहाँ एक आदमी है कैखुसरो[194] जो उस बागीचे की देखभाल करता है। यह अँगूठी उसके हाथ में देना उसको मेरा आशीर्वाद देना और इस नोट का जवाब ले कर आना।

[194] Kai-Khusru

वहाँ से तुम इतनी ही जल्दी लौट कर आना जैसे खाना तुमने वहाँ खाया और पानी यहाँ आ कर पिया। तुम देखना कि इस सेवा के लिये मैं तुम्हें क्या इनाम देती हूँ।"

मैंने उनसे विदा ली और अपना रास्ता पूछते हुए चल दिया। जब मैं करीब दो कोस चल चुका तब मुझे वह बागीचा दिखायी पड़ा। जब मैं उसमें घुसा तो एक हथियारबन्द आदमी ने मुझे पकड़ लिया और मुझे बागीचे के दरवाजे से अन्दर ले गया।



वहाँ मैंने एक नौजवान सोने के स्टूल पर बैठा देखा जो बिल्कुल शेर की तरह से लग रहा था। वह उस स्टूल पर बड़ी शान से बैठा था। उसने दाऊद का बनाया हुआ जिरहबख्तर पहन रखा था। उसके सीने पर प्लेटें लगी हुई थीं और उसने लोहे का एक हैल्मैट पहना हुआ था।

उसके पास ही **500** सिपाही तलवार और ढाल ले कर और तीर कमान ले कर खड़े हुए थे। लगता था कि वे उसके हुक्म का इन्तजार कर रहे थे।

मैंने उसके सामने जा कर उसको सलाम किया तो उसने मुझे बुलाया। मैंने उसको अँगूठी दी और उसकी बहुत तारीफ की। फिर मैंने उसको रूमाल दिखाया और अपने वहाँ आने के हालात बताये।

जैसे ही उसने मेरी बात सुनी तो उसने तो अपने दाँतों तले उँगली काट ली और अपने सिर पर हाथ मारते हुए बोला —
"लगता है तुम्हारी बदकिस्मती तुम्हें यहाँ ले आयी है। खैर तुम

बागीचे में जाओ। वहाँ साइप्रस के पेड़ पर लोहे का एक पिंजरा लटक रहा है। उसमें एक नौजवान बन्द है। यह नोट तुम उसको देना वह तुमको इसका जवाब दे देगा। जवाब ले कर तुरन्त लौट कर आओ।"

मैं तुरन्त ही बागीचे में गया। अल्लाह कसम क्या बागीचा था वह। तुम यह कह सकते हो कि मैं जैसे मैं ज़िन्दा ही स्वर्ग में पहुँच गया था। हर पेड़ पर अलग अलग रंगों के फूल खिले हुए थे। इधर उधर फव्वारे चल रहे थे। पेड़ों पर चिड़ियें चहचहा रही थीं।

मैं सीधा उसी पेड़ की तरफ चला गया जहाँ वह पिंजरा लटका हुआ था। वहाँ मुझे पिंजरा टँगा हुआ दिखायी दे गया। मैंने देखा कि उस पिंजरे में एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बन्द था।

मैंने उसको बड़ी इज़्ज़त के साथ सिर झुकाया सलाम किया और वह बन्द किया हुआ नोट उसको पिंजरे की जाली में से थमा दिया। उस नौजवान ने वह नोट खोला और मुझसे राजकुमारी के बारे में पूछा।

अभी हमारी बात खत्म भी नहीं हुई थी कि नीग्रो लोगों की एक सेना वहाँ आ पहुँची और आ कर मुझे चारों तरफ से घेर लिया। तुरन्त ही उन्होंने मुझे पीटना शुरू कर दिया। अब उन इतने सारे लोगों के सामने मैं अकेला निहत्था क्या करता। पल भर में ही मेरा शरीर घावों से भर गया।

अब न मुझे कुछ महसूस हो रहा था और न मुझे अपने बारे में ही कुछ याद था। जब मुझे कुछ होश आया तो मैंने अपने आपको बिस्तर पर लेटा पाया। उसे दो सिपाही अपने कन्धों पर रख कर ले जा रहे थे।

वे आपस में बात करते जा रहे थे — "चलो हम इस नौजवान की लाश को मैदान में फेंक देते हैं। जल्दी ही इसे कौए और कुत्ते खा जायेंगे।"

दूसरा बोला — "अगर कहीं राजा ने इस बात का पता करवाया और उनको पता चल गया तो वह हमको तो ज़िन्दा गड़वा देंगे और हमारे बच्चों की चटनी पिसवा देंगे। क्या हमारी ज़िन्दगी हमारे ऊपर इतना ज़्यादा बोझ है जो हम ऐसा करें।"

उन दोनों की यह बात सुन कर मैंने उन दोनों, गौग और मगौग, से कहा — "खुदा के लिये मेरे ऊपर दया करो। मेरे शरीर में अभी जान बाकी है। जब मैं मर जाऊँ तब तुम लोग जो चाहे मेरे साथ कर लेना। मरे हुए लोग तो ज़िन्दा लोगों के हाथ में होते हैं।

पर क्या तुम लोग मुझे बताओगे कि मुझे हुआ क्या है। मुझे क्यों घायल किया गया और तुम लोग कौन हो। तुम लोग मुझे कम से कम इतना तो बता दो।"

यह सुन कर शायद उनके मुझ पर दया आ गयी वे बोले — "ओ नौजवान। जो नौजवान उस पिंजरे में बन्द है वह इस देश के राजा का भतीजा है। पहले इसका पिता ही इस देश का राजा था।

मरते समय उसने अपने छोटे भाई से यह कहा था — “मेरा बेटा जो मेरे बाद मेरी गद्दी पर बैठेगा वह अभी छोटा है और उसको अभी कुछ अनुभव भी नहीं है इसलिये तुम उसको राज्य के मामलों में सलाह देना और रास्ता दिखाना।

जब वह शादी के लायक हो जाये तो अपनी बेटी की शादी उससे कर देना और उसको सारे राज्य और खजाने का मालिक बना देना।

यह कह कर मैजेस्टी मर गये और उनका छोटा भाई राजा बन गया। उन्होंने राजा के दफन में भी हिस्सा नहीं लिया। बल्कि उन्होंने लोगों में यह बात फैला दी कि उनका भतीजा तो पागल हो गया है।

उन्होंने उसको एक पिंजरे में बन्द कर दिया और बागीचे में चारों तरफ से इतने कड़े पहरे में रख दिया जहाँ कोई चिड़िया भी पर नहीं मार सकती।

कई बार उन्होंने अपने भतीजे को बहुत तेज़ जहर भी दिया। पर उसकी ज़िन्दगी जहर से ज़्यादा मजबूत है। वह उसके ऊपर कोई असर ही नहीं करता।

यह राजकुमारी और यह राजकुमार एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं। वह घर में बहुत परेशान रहती हैं और यह यहाँ पिंजरे में। उन्होंने राजकुमार को तुम्हारे हाथ अपना प्रेम पत्र भेजा था। राजा के जासूसों ने तुरन्त जा कर उनको खबर कर दी।

राजा ने अबीसीनिया के रहने वाले एक झुंड को बाहर जाने का हुक्म दिया और उन्होंने तुम्हारे साथ इस तरह का व्यवहार किया। राजा ने इस कैदी राजकुमार को मारने के बारे में अपने वजीर से सलाह ले ली है साथ में उसने राजकुमारी को भी इसे अपने सामने अपने हाथ से मारने के लिये राजी कर लिया है।"

मैंने कहा — "चलो यह दृश्य तो मैं अपनी ऑखों से अपने मरते मरते भी देखना चाहता हूॅ।"

आखिर वे मेरी इस विनती को मान गये और वे दोनों सिपाही और मैं हालॉकि घायल था फिर भी, तीनों एक जगह एक कोने में जा कर खड़े हो गये।

हमने राजा को अपने सिंहासन पर बैठे देखा। राजकुमारी के हाथ में एक नंगी तलवार थी। राजकुमार को पिंजरे से बाहर निकाला गया और ले जा कर राजा के सामने खड़ा करवाया गया।

अब राजकुमारी को तो उसे मारना ही था सो वह नंगी तलवार अपने हाथ में ले कर अपने प्यारे को मारने के लिये आगे बढ़ी। जब वह राजकुमार के पास तक आयी तो अचानक उसने तलवार फेंक दी और उसके गले लग गयी।

राजकुमार बोला — "मैं इस तरह मरने को तैयार हूॅ। वाकई मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूॅ। वहॉ पहुॅच कर भी मैं तुम्हारे भले की ही मनाता रहूॅगा।"

राजकुमारी बोली — "मैं इस बहाने तुम्हें देखने आयी हूॅ।"

राजा यह दृश्य देख कर बहुत गुस्सा हो गया और अपने वजीर से बोला — "क्या तुम मुझे यहाँ यह दृश्य दिखाने के लिये ले कर आये हो?"

राजकुमारी की अपनी दासी ने राजकुमारी को राजुमार से अलग किया और उसको उसके महल में ले गयी। तब वज़ीर ने तलवार उठायी और गुस्से में भर कर राजकुमार की तरफ दौड़ा ताकि वह एक ही वार में राजकुमार की ज़िन्दगी का अन्त कर सके।

जैसे ही वज़ीर ने मारने के लिये अपना तलवार वाला हाथ उठाया एक अनजाना तीर कहीं से आया और उसके माथे पर आ कर लग गया। उसके सिर के दो टुकड़े हो गये और वह नीचे गिर पड़ा।

राजा ने जब यह अजीब सी घटना देखी तो वह अपने महल को चला गया और लोगों ने नौजवान राजकुमार को बागीचे ले जा कर फिर से पिंजरे में बन्द कर दिया।

मैं जहाँ खड़ा था वहाँ से बाहर आ गया और अपने रास्ते चला गया। रास्ते में किसी ने मुझे पुकारा और मुझे राजकुमारी जी के पास ले गया।

राजकुमारी जी ने जब देखा कि मैं तो बहुत बुरी तरह से घायल था तो उन्होंने एक डाक्टर को बुलवाया और उससे कहा कि तुम्हारी भलाई इसी में है कि वह मुझे तुरन्त ही ठीक कर दे और ठीक करने के लिये कहा और कहा इसको ठीक करने के लिये जो कुछ भी

जरूरत हो वह तुरन्त कर दो। अगर तुम इसकी ठीक से देखभाल करोगे तो मैं तुमको बहुत सारी भेंटें और इनाम दूँगी।

थोड़े में कहो तो उस डाक्टर ने मुझे ठीक करने में अपनी सारी होशियारी लगा दी। चालीस दिन के बाद मैं नहा सका। उसके बाद वह मुझे राजकुमारी जी के पास ले गया। उन्होंने डाक्टर से पूछा — "क्या अभी और भी कुछ करना है।"

मैंने जवाब दिया — "आपकी इन्सानियत की वजह से मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ।"

राजकुमारी जी ने मुझे अपने वायदे के अनुसार एक बहुत ही कीमती खिलात दिया और बहुत सारे पैसे दिये। उन्होंने मुझे और भी बहुत कुछ दिया और मुझे विदा किया।

मैंने अपने सब साथियों और नौकरों को साथ लिया वहॉ से अपने घर वापस चल दिया। जब मैं इस जगह आ गया तो मैंने सबको विदा किया और इस पहाड़ पर यह एक मकान बनवा लिया। मैंने राजकुमारी की भी एक मूर्ति बनवायी।

अब मैं यहीं रहता हूँ। मेरे जो दास और मेरे नौकर मेरी सेवा किया करते उनको मैंने यह कह कर विदा कर दिया कि अब जब मैं यहॉ रहता हूँ तो यह तुम्हारा काम है कि तुम मुझे खाना दो। बस अबसे तुम्हारा यही मेरा काम है बाकी के लिये तुम अपनी मर्जी के मालिक हो जो चाहे करो। वे लोग मुझे बड़ी कृतज्ञता से मुझे खाना दे जाते हैं।

मैं यहाँ रह कर इसी मूर्ति की पूजा करता हूँ। जब मैं यहाँ रहता हूँ तो बस इसी की देखभाल करता हूँ।"

यही मेरी यात्रा का हाल था जो तुम सबने अभी सुना।

ओ दरवेश। यह कहानी सुन कर मैंने अपनी कफनी अपने कन्धे पर ओढ़ ली और अपने दरवेश के रूप में आ गया।

मैं फिर से फ्रैंक देश देखने के लिये चल दिया। पहाड़ों और मैदानों में काफी देर तक घूमने के बाद अब मैं मजनूँ फरहाद जैसा लगने लग गया था।

आखिर मेरी इच्छा फिर उसी देश को देखने की हुई जहाँ वह मूर्ति पूजने वाला हो कर आया था। मैं उसकी सड़कों और गलियों में पागलों की तरह से घूमता फिरा। हालाँकि मैं अक्सर राजकुमारी जी के महल के आस पास ही रहता था पर फिर भी मुझे उनसे मिलने का कोई मौका नहीं मिल पाया।

मैं बहुत दुखी था कि इतनी मुश्किलें और परेशानियों को सहने के बावजूद मैं उससे मिल नहीं पा रहा था। एक दिन मैं बाजार में खड़ा था कि अचानक सारे आदमी वहाँ से भागने लगे। दूकानदारों ने भी अपनी अपनी दूकानें बन्द करनी शुरू कर दीं। जो जगह अभी अभी इतनी भीड़ से भरी हुई थी वह देखते देखते उजाड़ हो गयी।

तभी मैंने एक आदमी एक पास आने वाली गली से आता हुआ दिखायी दिया। वह देखने में रुस्तम जैसा लगता था और शेर जैसा

दहाड़ता आ रहा था। उसके दोनों हाथों में दो नंगी तलवारें थीं। उसने जिरहबख्तर पहन रखा था। उसकी कमर से दो पिस्तौलें बँधी हुई थीं। वह पागलों की तरह से अपने आपसे ही कुछ कुछ बड़बड़ाता चला आ रहा था।

उसके पीछे उसके दो दास थे। वे गर्म कपड़े पहने हुए थे। उन्होंने सिर पर कशन[195] की मखमल की टोपियाँ पहने हुए थीं। यह देख कर मैंने आगे बढ़ना ठीक समझा। मैं जिनसे मिला उन्होंने मुझे उससे दूर करने की कोशिश की पर मैं उनकी सुनने वाला कहाँ था।

वह सबको धक्का देता हुआ आगे की तरफ एक बहुत बड़े घर की तरफ चला गया। मैं भी उसके साथ साथ ही चला गया। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो मुझे अपने पीछे पीछे आते देखा तो उसने मुझे तलवार से मार कर मेरे दो टुकड़े करने चाहे तो मैंने उससे कहा "यही तो मैं चाहता था।"

मैंने कहा — "मैं तुम्हें अपना खून माफ करता हूँ। तुम मुझे मेरी ज़िन्दगी के इन दुखों से आज़ाद कर दो क्योंकि मुझे बहुत कष्ट है। मैं जानबूझ कर और अपने आप ही तुम्हारे रास्ते में आया हूँ। बस अब तुम देर मत करो और जल्दी ही मुझे मार दो।"

यह देख कर कि मैं मरने पर उतारू हूँ अल्लाह ने उसके दिल में मेरे लिये कुछ दया भर दी। उसका गुस्सा कुछ ठंडा हो गया। वह

[195] Kashan

बोला — "तू कौन है और अपनी ज़िन्दगी से इतना क्यों थका हुआ है।"

मैंने कहा — "तुम थोड़ा बैठो तो मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाता हूँ। मेरी कहानी थोड़ी लम्बी और मुश्किल है। मैं प्यार के पंजों में जकड़ा हुआ हूँ इसी लिये मैं बहुत निराश हूँ।"

यह सुन कर उसने अपनी कमर की पेटी खोल दी। उसने अपने हाथ मुँह धोये खाना निकाला उसने खाना खुद भी खाया और मुझे भी दिया। जब हम दोनों ने खाना खा लिया तब वह बोला — "अच्छा अब बताओ तुम्हारे ऊपर क्या गुजरी है।"

तब मैंने उसको बूढ़े और राजकुमारी की कहानी सुनायी और अपने यूरोप जाने की वजह बतायी।

यह सब सुन कर पहले तो वह रो पड़ा फिर बोला — "उफ़ इस लड़की ने कितने घर बर्बाद किये हैं। खैर तुम्हारा इलाज मेरे पास है। हो सकता है कि इस अपराधी की वजह से आज तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाये। तुम चिन्ता न करो। भरोसा रखो।"

तब उसने एक नाई बुलवाया मेरी हजामत बनवायी मुझे नहलवाया।[196] उसके नौकर मेरे पहनने के लिये एक बहुत अच्छा जोड़ा ले कर आये जिसे पहन कर मैं तैयार हुआ।



तब वह बोला — "यह लकड़ी का खॉचा जो तुम देख रहे हो यह उस मरे हुए राजकुमार का है

[196] In Asia barbers not only shave a person but give a bath too.

जो उस पिंजरे में बन्द था। बाद में एक और वज़ीर ने उसको धोखे से मार दिया था। हालाँकि वह सब गलत था पर फिर भी वह कम से कम अपनी उस दुखी ज़िन्दगी से आज़ाद हो गया। मैं उसका पाला हुआ भाई[197] हूँ।

मैंने उस वज़ीर को एक ही झटके में अपनी तलवार से मार दिया था और राजा पर भी हमला करने की कोशिश की पर उसने मुझसे दया की भीख माँग ली। उसने कसम खायी कि वह इस बारे में कुछ नहीं जानता। मैंने उसे कायर कहते हुए डाँटा और उसको बच कर भाग जाने दिया।

तभी से यह मेरा धन्धा बन गया है कि मैं यह खाँचा अपने साथ रखता हूँ और हर महीने के पहले बृहस्पतिवार को सारे शहर में उस राजकुमार का दुख मनाते हुए घूमता हूँ।"

उसके मुँह से यह सब सुन कर मुझे थोड़ी तसल्ली हुई। मैंने कहा — "अगर उसकी इच्छा हुई तो मेरी इच्छा जरूर पूरी हो जायेगी। अल्लाह ने मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी की है कि उसने एक ऐसे पागल आदमी को मेरे पास भेज दिया। यह कितना सच है कि अगर अल्लाह की मेहरबानी होती है तो सब कुछ ठीक हो जाता है।"

[197] Translated for the words "Foster Brother"

जब शाम हुई सूरज छिपने लगा उस नौजवान ने अपना खॉचा उठाया और उसको बजाय अपने एक नौकर के सिर पर रखने के मेरे सिर पर रख दिया और मुझे अपने साथ ले कर चल दिया।

उसने मुझसे कहा — "मैं राजकुमारी के पास जा रहा हूँ। मैं उससे तुम्हारे लिये ज़्यादा से ज़्यादा वकालत करने की कोशिश करूँगा। तुम वहाँ कुछ नहीं बोलना। बस चुप रहना और सुनना।"

मैंने कहा "ठीक है जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूँगा। अल्लाह तुम्हारी रक्षा करे क्योंकि तुमने मेरे मामले में दया दिखायी।"

नौजवान अब शाही बागीचे की तरफ जा रहा था। जब हम उस बागीचे में जा रहे थे तो मैंने बागीचे की एक खुली जगह में संगमरमर का एक आठ कोने वाला चबूतरा देखा जिस पर चाँदी के धागों से बुना हुआ और मोतियों की झालर वाला कपड़ा बिछा हुआ था।

वह हीरे जड़े हुए खम्भों पर खड़ा हुआ था और ब्रोकेड के मसनद लगे हुए थे कीमती तकिये लगे हुए थे। वह खॉचा वहाँ रख दिया गया। हम दोनों को एक पेड़ के नीचे बैठने के लिये कह दिया गया था।

थोड़ी ही देर में रोशनी हुई और राजकुमारी जी वहाँ आयीं। उनके साथ उनकी कुछ दासियाँ थीं। दुख और गुस्सा उसके चेहरे पर साफ झलक रहा था। वह पाला हुआ भाई उसके सामने बड़ी इज़्ज़त के साथ खड़ा हुआ था।

बाद में वह फर्श के एक कोने में जा कर बैठ गया। मरे हुए की इज़्ज़त में प्रार्थना की गयी। पाले हुए भाई ने कुछ कहा। मैंने अपने कानों से सुना।

उसने राजकुमारी जी से कहा — “ओ दुनियाँ की राजकुमारी तुम्हारे फारस के राज्य में शान्ति रहे। फारस के राज्य के राजकुमार ने तुम्हारी गैरहाजिरी में तुम्हारी सुन्दरता के चर्चे सुन कर अपनी राजगद्दी छोड़ दी है और इब्राहीम अधम[198] जैसा तीर्थयात्री बन गया है और बहुत मुश्किलें सहते हुए और बहुत मेहनत से यहाँ आया हुआ है।

उसने तुम्हारे लिये बल्ख[199] भी छोड़ा हुआ है। वह कुछ समय से यहाँ इस शहर में घूम रहा है और उसने मरने का इरादा किया हुआ है। वह मेरे पास आया और जब मैंने उसे मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो उसने मेरे सामने अपनी गर्दन कर दी और मुझसे विनती की कि मैं उसे तुरन्त ही मार दूँ। उसने मुझसे कहा कि उसकी यही मर्जी थी।

वह तुम्हारे प्यार में बुरी तरह से फँसा हुआ है। मैंने उसे जाँच कर देख लिया है। वह पूरी तरीके से तुम्हारे लायक है। इसी लिये मैंने उसका नाम तुम्हारे सामने लिया। अगर तुम इस मामले पर ध्यान दो और उस पर मेहरबान हो तो, क्योंकि वह एक अजनबी तो है

[198] Ibarahim Adham – A Prince of Khurasan, who quitted the throne in order to lead a life of piety. A Prince of Persia who became a faqeer from disappointed love.]

[199] A celebrated city of Khurasan, famous in former times for its riches.

ही, तो तुम्हारे लिये यह कोई बड़ी बात नहीं होगी क्योंकि कि तुम अल्लाह से डरती हो और न्याय को प्यार करती हो।"

यह सुन कर राजकुमारी बोली — "कहाँ है वह? अगर वह सचमुच राजकुमार है तो ठीक है। उसको मेरे पास बुलाओ।"

पाला हुआ भाई उठा और मेरे पास आया जहाँ मैं बैठा हुआ था और मुझे अपने साथ ले कर वहाँ चला जहाँ राजकुमारी बैठी हुई थी। मैं राजकुमारी को देख कर खुश तो बहुत हो गया पर मेरी इन्द्रियाँ और तर्क सब खो गये थे।

मेरे मुँह से तो एक शब्द भी नहीं निकला। मेरी तो जबान पर जैसे ताला ही लग गया था। कुछ देर बाद ही राजकुमारी अपने महल की तरफ लौट गयी थी और पाला हुआ भाई अपने महल चला गया था।

जब हम उसके घर आ गये तो वह मुझसे बोला — "मैंने राजकुमारी को तुम्हारे हालचाल शुरू से ले कर आखीर तक सब बता दिये हैं। साथ में तुम्हारी सिफारिश भी की है। अब तुम रोज वहाँ जा सकते हो और जा कर आनन्द ले सकते हो।

मैं उसके पैरों पर गिर गया और उसने मुझे उठा कर अपने सीने से लगा लिया। सारा दिन जब तक शाम होती मैं घंटे गिनता रहा ताकि मैं राजकुमारी के पास जा सकूँ।

जब शाम हुई मैंने उस नौजवान से विदा ली और राजकुमारी के नीचे वाले बागीचे में जा पहुँचा। वहाँ जा कर मैं संगमरमर के चबूतरे पर एक तकिये के सहारे बैठ गया।

करीब एक घंटे के बाद धीरे धीरे राजकुमारी वहाँ आयी। उसके साथ में उसकी एक दासी थी। वह आ कर मसनद पर बैठ गयी। हालाँकि यह दिन मेरे लिये बहुत ही खुशकिस्मती का दिन था क्योंकि इसी दिन को देखने के लिये तो मैं ज़िन्दा था।

मैंने उसके पाँव चूमे। उसने मुझे ऊपर उठा कर अपने गले से लगा लिया और बोली — "इस मौके को अपनी खुशकिस्मती समझो और अगर मेरी सलाह मानो तो किसी और देश चले जाओ।"

मैं बोला — "मेरे साथ चलो।"

इस तरह से बात करने के बाद हम दोनों बागीचे के बाहर चले गये। पर हम आश्चर्य और खुशी से कुछ ऐसे भूले हुए थे कि हम अपने हाथ पैर कुछ भी इस्तेमाल नहीं कर पा रहे थे।

यहाँ तक कि हम रास्ता भी भूल गये थे। हम लोग साथ साथ किसी दूसरी दिशा में चलते रहे और हमको रास्ते में कहीं कोई आराम करने के लिये जगह भी नहीं मिली।

राजकुमारी बोली — "ओह अब मैं थक गयी हूँ। तुम्हारा घर कहाँ है। वहाँ जल्दी चलो नहीं तो फिर तुम बताओ मुझे कि तुम क्या करना चाहते हो। देखो न मेरे पैरों में तो छाले भी पड़ गये हैं। लगता है कि मुझे तो यहीं कहीं सड़क पर ही बैठ जाना पड़ेगा।"

मैंने कहा — "मेरे एक दास का घर यहीं पास में ही है। बस हम वहाँ तक आ गये हैं। थोड़ी दूर और।"

मैंने सचमुच में उससे झूठ बोला था क्योंकि मुझको तो खुद ही नहीं पता था कि मैं उसे कहाँ ले जाऊँ। तभी मुझे सड़क पर एक बन्द दरवाजा दिखायी दिया सो मैंने उसका ताला तोड़ दिया और हम दोनों उस मकान में घुसे।

वह एक अच्छा घर था जिसमें कालीन बिछे हुए थे। बहुत सारी शराब की बोतलें दीवारों में बने छेदों में सजी रखी थीं। रोटी और माँस भी रसोईघर में तैयार रखा था।

हम लोग बहुत थके हुए थे सो हम दोनों ने एक एक गिलास पुर्तगाल की वाइन पी और माँस खाया और रात वहीं आपस में आनन्द के साथ बितायी।

इस आनन्द के समय में जब सुबह हुई तो सारे शहर में शोर मचा हुआ था कि राजकुमारी कहीं गायब हो गयी है। जगह जगह शाही फरमान जारी किये गये बहुत सारे लोग इधर उधर भेजे गये कि जहाँ भी वह उनको दिखायी दे जाये वे उसको पकड़ कर राजा के पास वापस ले आयें।

अब ये चौकीदार तो एक चींटी को भी अपनी आँख से देखे बिना कहीं जाने नहीं दे रहे थे। और जो कोई भी राजकुमारी की खबर ले कर आयेगा उसे एक खिलात और 1000 सोने के सिक्के मिलेंगे। राजा के दूत सब जगह उसको ढूँढते घूम रहे थे।

मैं ऐसा बदनसीब था कि मैंने दरवाजा ही बन्द नहीं किया था। शैतान की चाची एक बुढ़िया जिसके हाथों में मोतियों की एक माला थी और जिसने अपने आपको शाल से ढक रख रखा था हमारा दरवाजा खुला पाया तो वह निडर हो कर उस घर में घुस आयी।

राजकुमारी के सामने खड़े हो कर उसने राजकुमारी को हाथ उठा कर आशीर्वाद दिया कि "अल्लाह तुम्हें एक शादीशुदा स्त्री की तरह से हमेशा ज़िन्दा रखे और तुम्हारे पति की भी इज़्ज़त बनी रहे। मैं तो एक गरीब भिखारिन हूँ। मेरी एक बेटी है जिसका समय पूरा हो चुका है और वह एक बच्चे को जन्म देने वाली है।

मेरे पास इतने साधन भी नहीं हूँ कि मैं उसके लिये लैम्प जलाने के लिये थोड़ा सा तेल भी खरीद सकूँ खाना पीना तो दूर की बात है। अगर वह मर गयी तो उसको दफनाऊँगी भी कैसे। और अगर वह बिस्तर पर लेट गयी तो मैं उसकी दाई और नर्स को क्या दूँगी। उसकी दवा दारू भी कैसे करूँगी।

उसको इस तरह से भूखे प्यासे पड़े हुए दो दिन हो गये। ओ कुलीन स्त्री तुम उसको अपने खाने में से कुछ खाने पीने के लिये दे दो ताकि वह दो चार कौर खा सके और कुछ पानी पी सके।"

राजकुमारी को उस पर दया आ गयी तो उसने उसे चार रोटियाँ और थोड़ा सा भुना हुआ माँस और अपनी छोटी उँगली से निकाल कर एक अँगूठी उसको दे दी।

उसने उससे कहा “यह लो इसको बेच कर अपनी बेटी के लिये कोई गहना बनवा लेना और आराम से रहना। कभी कभी मुझसे मिलती रहना। यह घर तुम्हारा ही है।”

बस जिसको वह ढूँढने आयी थी उसको पा लेने के बाद उसने राजकुमारी को बहुत आशीर्वाद दिये सलाम किया और वहॉ से चल दी।

मॉस और रोटी तो उसने तुरन्त ही बाहर जा कर फेंक दिये पर ॲगूठी उसने यह कहते हुए सॅभाल कर रख ली कि “राजकुमारी के ढूॅढने का सबूत तो अब मुझे मिल ही गया।”

लगता था कि अल्लाह हमें इस मुसीबत से बचाना चाहता था उस बुढ़िया के जाते ही उस मकान का मालिक अपने घर वापस आया। वह एक बहादुर सिपाही था और एक अरबी घोड़े पर चढ़ा हुआ था और उसके हाथ में एक भाला था। एक हिरन उसके घोड़े की जीन से बॅधा हुआ था।

उसने देखा कि उसके घर का दरवाजा खुला हुआ था ताले को तोड़ कर खोला गया था और एक बुढ़िया उसमें से बाहर निकल रही थी उसको बहुत गुस्सा आ गया। उसने उसे बालों से पकड़ लिया और घसीटता हुआ घर ले आया।

उसने उसके हाथ पैर रस्सी से बॉध दिये और उसको उसका सिर नीचे और पैर ऊपर कर के एक पेड़ से लटका दिया। सो वह शैतान बुढ़िया कुछ ही देर में मर गयी।

जैसे ही मैंने सिपाही की शक्ल देखी तो मैं तो डर के मारे पीला ही पड़ गया और मेरा दिल किसी भयानक घटना होने की आशा से कॉप उठा। उस बहादुर आदमी ने जब हमें इतना डरा हुआ देखा तो हमें सुरक्षा का भरोसा दिया। वह बोला "तुम लोगों ने बड़ी बहादुरी से काम लिया है। तुमने बहुत अच्छा काम किया कि दरवाजे को खुला ही छोड़ दिया।"

राजकुमारी मुस्कुराते हुए बोली — "राजकुमार ने कहा था कि यह घर उसके किसी नौकर का है और धोखे से यहॉ ले आया।"

सिपाही समझ गया। वह बोला — "राजकुमार ने ठीक ही कहा था क्योंकि सारे लोग सिपाही भी सब राजकुमार के नौकर तो होते ही हैं क्योंकि वे सब उन्हीं के तो पाले पोसे होते हैं। यह गुलाम आपका बिना खरीदा हुआ गुलाम है।

पर भेद छिपाना अच्छे मजाक का एक हिस्सा है। ओ राजकुमार। आपका और राजकुमारी जी का मेरे गरीब घर पर आना और अपने आने से मुझे इज़्ज़त देना तो मेरे लिये यह खुशी दोनों दुनियॉ के खजाने के बराबर है कि आपने इस तरह से अपने नौकर को इज़्ज़त दी।

मैं आपके लिये अपनी जान भी दे सकता हूॅ। किसी भी तरह से मैं अपनी किसी चीज़ को आपसे बचा कर नहीं रखूॅगा। आप यहॉ भरोसे से रहिये।

अब आपको किसी से कोई खतरा नहीं है। अगर यह स्त्री यहाँ से सुरक्षित चली जाती तो यह आपके ऊपर कोई न कोई मुसीबत जरूर ले कर आती।

अब आप लोग यहाँ आराम से कभी तक रहिये। आप को और जो कुछ चाहिये वह आप अपने इस नौकर को बताइये यह आपको हर चीज़ ला कर देगा। राजा क्या चीज़ है। अल्लाह के दूतों को भी अपके यहाँ होने की खबर नहीं होगी।"

उसने इतने मीठे शब्दों में राजकुमार और राजकुमारी को तसल्ली दी कि हम लोगों का दिमाग बहुत शान्त हो गया। मैंने कहा — "तुमने बहुत अच्छा कहा है। जब मैं इस लायक हो जाऊँगा कि मैं तुम्हें कुछ दे सकूँ तब मैं तुमको इसका बदला जरूर दूँगा। तुम्हारा नाम क्या है?"

वह बोला — "इस गुलाम का नाम बिहज़ाद खान[200] है।"

थोड़े में कहो तो छह महीने बाद तक यह सिपाही तन मन धन से इन दोनों की सेवा में लगा रहा और हमारे दिन वहाँ बहुत आराम से बीते।

X X X X X X X

एक दिन मुझे मेरे देश और मेरे माता पिता की याद आयी तो मैं बहुत दुखी हो गया। बिहज़ाद खान ने जब मुझे दुखी देखा तो

[200] Bihzad Khan

अपने दोनों हाथ जोड़ कर मेरे सामने खड़ा हो गया और बोला — "अगर मेरी तरफ से आपकी सेवा में कोई कमी हुई हो तो मेहरबानी कर के मुझे बतायें।"

मैं बोला — "अल्लाह के लिये ऐसा न कहो। तुम ऐसा क्यों कहते हो। तुमने तो हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया है जिससे हम इस शहर में इतने आराम से रह सके जैसे कोई अपनी माँ के गर्भ में रहता है। क्योंकि मैंने एक ऐसा काम किया है जिससे यहाँ का तिनका तिनका मेरा दुश्मन बन जायेगा।

ऐसा हमारा इतना अच्छा दोस्त कौन था जो हमें इतनी अच्छी तरह से रख सकता। अल्लाह तुम्हें खुश रखे। तुम एक बहादुर आदमी हो।"

बिहज़ाद खान बोला — "अगर आप यहाँ और न रहना चाहें तो आप मुझे कोई दूसरी सुरक्षित जगह बतायें ताकि मैं आपको वहाँ पहुँचा सकूँ।"

तब मैंने कहा — "अगर मैं अपने देश पहुँच सका तो मैं अपने माता पिता से मिल सकता हूँ। मैं यहाँ इस देश में हूँ। अल्लाह ही जानता है कि वे पता नहीं किस हाल में होंगे।

मुझे वह चीज़ तो मिल गयी है जिसके लिये मैंने अपना देश छोड़ा था और मेरे लिये अब यही ठीक होगा कि मैं वापस अपने देश चला जाऊँ। उनको मेरी कोई खबर नहीं है कि मैं मर गया हूँ या ज़िन्दा हूँ। अल्लाह जाने वे मेरे बारे में क्या क्या सोच रहे होंगे।"

वह बहादुर सिपाही बोला — "यह तो आप ठीक कहते हैं। चलिये चलते हैं।" कह कर वह मेरे लिये एक तुर्की घोड़ा ले आया जो एक दिन में **100** कोस जा सकता था।

राजकुमारी के लिये वह एक बहुत तेज़ दौड़ने वाली घोड़ी ले आया। उसने हम दोनों को उन पर बिठाया। उसने अपनी वर्दी पहनी अपने हथियार साथ लिये और बोला — "मैं आगे आगे चलता हूँ आप मेरे पीछे पीछे बिना किसी चिन्ता के चले आइये।"

जब हम शहर के फाटक पर आये तो वह बहुत ज़ोर से चीखा और उसने अपनी गदा से फाटक का ताला तोड़ दिया। चौकीदारों को डरा दिया।

वह उनसे बहुत ज़ोर से बोला — "ओ गधो। जा कर अपने मालिकों को बोल दो कि बिहज़ाद खान राजकुमारी मीरनिगार और कामगर के राजकुमार[201] को जो उनका दामाद है चुपचाप चोरी से लिये जा रहा है। नहीं तो वे उनको यहाँ के महल में रहने दें और रहने का आनन्द लेने दें।"

यह खबर तुरन्त ही राजा के पास पहुँची तो उसने अपने वज़ीर को इन तीनों को पकड़ने का और उनको हाथ पाँव बाँध कर अपने पास लाने का हकुम दिया और फिर राजा के सामने ही उनके सिर काटने का भी हुक्म दिया।

---

[201] Princess Mihrnigar and the Prince of Kamgar

कुछ ही देर में बहुत सारे सिपाही लोग वहाँ आ गये। सारे में आसमान तक धूल उड़ने लगी। बिहज़ाद खान ने हम दोनों को एक पुल की आर्च या मेहराब पर बिठा दिया जो कि जौनपुर के पुल की तरह से **12** मेहराबों का बना हुआ था।

खुद वह वापस घूम गया और सिपाहियों के घोड़ों की तरफ चला गया और उनके बीच में शेर की तरह घुस गया। वहाँ उसने उन सिपाहियों को काई की तरह से फाड़ दिया। वह दो सरदारों की तरफ चल दिया और दोनों के सिर काट दिये।

जब सरदार मर गये तो उनकी सारी सेना भी इधर उधर भाग गयी क्योंकि कुछ ऐसा कहा जाता है कि सब कुछ सिर पर ही निर्भर करता है। अगर वह चला गया तो समझो सब कुछ चला गया।

राजा तुरन्त ही अपनी सेना ले कर उनकी सहायता के लिये आ गया तो बिहज़ाद खान ने उन सबको भी हरा दिया। राजा भी वहाँ से भाग गया इसलिये यही सच है कि अल्लाह अकेले ही सबको जीत देता है।

पर बिहज़ाद खान ने इतनी बहादुरी से यह सब किया कि शायद रुस्तम अगर खुद भी होता तो शायद इतनी अच्छी तरह से इस मामले को नहीं सँभाल पाता।

जब उसने देखा कि लड़ाई का मैदान खाली हो गया और उसका पीछा करने वाला अब वहाँ कोई नहीं रहा। लड़ने के लिये

भी कोई नहीं रहा तो वह छिप कर हमारे पास आया जहॉ हम बैठे हुए थे और वहॉ से हम दोनों को ले कर फिर आगे चल दिया।

उसके बाद हमारी यात्रा छोटी ही थी। कुछ देर में हम अपने देश की सीमा तक पहुँच गये। वहॉ से मैंने एक चिट्ठी अपने पिता राजा को भेजी कि हम आ रहे हैं।

वह वह चिट्ठी पढ़ कर बहुत खुश हुए और अल्लाह को धन्यवाद दिया। जैसे मुरझाये हुए पेड़ पानी देने से हरे भरे हो जाते हैं उसी तरह से मेरे आने की खबर पा कर मेरे पिता भी बहुत खुश हो गये।

उन्होंने अपने सारे अमीरों को अपने साथ लिया और एक बड़ी नदी के किनारे पर मेरा स्वागत करने के लिये आ गये। नदियों की देखभाल करने वाले ने नावों को हुक्म दिया गया कि वह हमें नदी पार करा कर लायें।

मैं नदी के इस पार से उस पार खड़े अपने शाही लोगों के झुंड को देख रहा था कि मैं कब जा कर अपने पिता के पॉव चूमूॅ। मैंने अपना घोड़ा नदी में उतार दिया और नदी तैर कर पार कर पिता के पास पहुँच गया। पिता ने मुझे प्यार से अपने गले से लगा लिया।

इस पल हमारे सामने एक और मुश्किल आ खड़ी हुई। जिस घोड़े पर चढ़ कर मैं वहॉ तक आया था शायद वह उस घोड़ी का बच्चा था जिस घोड़ी पर चढ़ कर राजकुमारी आयी थी। शायद वे हमेशा एक साथ ही रहे होंगे।

तो जैसे ही मेरा घोड़ा नदी में कूदा राजकुमारी की घोड़ी बेचैन हो गयी। वह मेरे घोड़े के पीछे दौड़ी और वह भी नदी में कूद पड़ी और तैरने लगी।

राजकुमारी यह देख कर चौंक गयी। उसने उसकी लगाम खींची। घोड़ी का मुँह कोमल था सो वह पलट गयी।

राजकुमारी ऊपर आने की कोशिश करती रही पर फिर वह भी घोड़ी के साथ ही नदी में डूबती चली गयी। दोनों में से किसी का भी फिर कोई पता नहीं चला।

यह देख कर बिहज़ाद खान राजकुमारी को बचाने के लिये खुद भी घोड़े सहित नदी में कूद गया। वह एक भँवर में फँस गया और उसमें से बाहर नहीं आ सका। उसने बहुत हाथ पैर मारे पर वह भी उसमें से बाहर नहीं आ सका।

राजा ने जब यह सब देखा तो नदी में जाल डलवा दिया और मल्लाहों और तैराकों को नदी छानने का हुक्म दिया। उन सबने सारी नदी छान मारी पर उन्हें कहीं कुछ नहीं मिला।

ओ दरवेशों। इस घटना ने मेरे दिमाग पर इतना असर डाला कि मैं तो बिल्कुल पागल ही हो गया। उसके बाद मैं एक तीर्थयात्री बन गया और इधर उधर घूमता रहा और बस यही कहता रहा "इन तीनों का यही होना था जो तुमने देखा अब दूसरी तरफ का देखो।"

अगर राजकुमारी कहीं गायब हो गयी है या मर गयी है तो मेरे दिल को किसी तरह की तसल्ली हो जायेगी। क्योंकि फिर मैं उसकी

खोज में चला जाता नहीं तो अपने इस नुकसान को तसल्ली से झेलता पर अब जब इतने भयानक ढंग से वह मेरी ऑखों के सामने ही चली गयी तो यह धक्का मुझसे बरदाश्त नहीं हुआ।

आखिर मैंने उसी नदी में डूब कर जान दे देने की ठानी ताकि मैं अपनी प्रिया से मरने के बाद मिल सकूँ।

सो एक रात मैंने उस नदी में डूबने की सोचा। मैं बस उसमें कूदने ही वाला था कि तभी उसी परदे वाले घुड़सवार ने जिसने तुम दोनों को बचाया था आ कर मेरा हाथ पकड़ लिया।

उसने मुझे तसल्ली देते हुए कहा — "तसल्ली रखो। राजकुमारी और बिज़हाद खान दोनों ज़िन्दा हैं। तुम बेकार में ही अपनी जान देने पर क्यों तुले हुए हो। ऐसी घटनायें तो दुनियाँ में हो ही जाती हैं। अल्लाह पर भरोसा रखो।

अगर तुम ज़िन्दा रहे तो तुम उन दोनों से मिल पाओगे जिनके लिये तुम अभी जान देने जा रहे हो। अब तुम यहाँ से रम राज्य[202] चले जाओ। दो और बदकिस्मत दरवेश वहाँ पहले से ही मौजूद हैं। जब तुम उनसे मिलोगे तब तुम्हारी इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी।"

सो ओ दरवेशो। मैं अब यहाँ आ गया हूँ। मेरे दैवीय सलाहकार के कहे अनुसार मुझे पूरा विश्वास ही कि अब हम सबकी इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी।

---

[202] Rum Kingdom

इस तीर्थयात्री की यही कहानी है जिसको उसने तुम लोगों से पूरा पूरा कह दिया है।

8 चौथे दरवेश की कहानी[203]

चौथे दरवेश ने रोते रोते अपनी कहानी सुनायी —

अब मेरी बदकिस्मती की दुखभरी कहानी सुनो
थोड़ा ध्यान दे कर मेरी पूरी कहानी सुनो
कि किन वजहों से दुखी हो कर मैं यहाँ तक आया हूँ
मैं तुम्हें सब बताऊँगा तुम ध्यान दे कर सुनो

ओ अल्लाह का रास्ता बताने वालो। थोड़ा ध्यान दो। यह तीर्थयात्री जो अब इस नीच हालत तक पहुँच चुका है चीन के राजा का बेटा है। मुझे बड़े नाज़ों से पाला गया था। मुझे बहुत अच्छी शिक्षा दी गयी थी। मुझे इस दुनियाँ के अच्छे बुरे किसी का कुछ भी पता नहीं था और सोचता था कि मेरी सारी ज़िन्दगी ऐसे ही गुजर जायेगी।

जब मैंने इसके बारे में कभी सोचा भी नहीं ऐसे समय में यह बुरी घटना मेरे साथ घटी। राजा जो इस लावारिस का पिता था इस धरती को छोड़ गया। जाते समय उन्होंने अपने छोटे भाई यानी मेरे चाचा को बुलाया और कहा — "मैं अब अपना राज्य और सब सम्पत्ति छोड़ कर जा रहा हूँ। मैं तो अब जा रहा हूँ पर तुम मेरी आखिरी इच्छा पूरी कर देना।

[203] Adventures of the Fourth Darwesh (Tale No 5) – Taken from : http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/06_fourthdarvesh.html

तुम अब एक बड़े की तरह से व्यवहार करना। राजकुमार जो मेरा वारिस है जब तक वह बड़ा हो और उसे राज करने की समझ आये तब तक तुम उसकी तरफ से राज करना। सेना और किसानों के साथ अच्छा बर्ताव करना। उनको कभी दबाना नहीं।

जब राजकुमार बड़ा हो जाये तो उसको ठीक से रास्ता दिखाना ठीक से सलाह देना और उसको राजकाज सौंप देना। तुम अपनी बेटी रोशन अख्तर[204] की शादी उससे कर देना और राज काज से आज़ाद हो जाना। तुम अगर इस तरह से काम करोगे तो राज्य अपने परिवार में ही रहेगा और उसे कोई और नहीं ले पायेगा।"

यह कह कर राजा चले गये और मेरे चाचा राजा बन गये। अब वह सरकार चलाने लगे। उन्होंने मुझे जनानखाने में ही रखा और कहा कि मैं जब तक राज करने लायक न हो जाऊॅ मैं वहीं रहॅू।

जब तक मैं **14** साल का हुआ तब तक में राजकुमारियों और दासियों के बीच रह कर बड़ा हुआ। मैं उन्हीं के साथ रह रह कर खेल खेल कर बड़ा हुआ। जब मैंने सुना कि मेरी शादी मेरे चाचा की लड़की से हो रही है तो मैं बहुत खुश हुआ।

इसी आशा में कि इस शादी के बाद मुझे राजगद्दी मिल जायेगी मैं बिल्कुल लापरवाह हो गया। मैं सोचता रहा कि अब मैं राजा बन जाऊॅगा।

---

[204] Roshan Akhtar

यह दुनियॉ तो आशा पर ही जीती है न। मैं फारस से आये हुए एक नीग्रो दास के पास जिसका नाम मुबारक था जा कर बैठ जाया करता था। यह दास मेरे पिता के समय में रहा करता था। हम सबको इसके ऊपर बहुत भरोसा था क्योंकि यह बहुत ही वफादार और समझदार था।

यह मेरी इ़ज़्ज़त भी बहुत करता था और मुझे बड़े होते देख कर बहुत खुश था। वह कहता था — "अल्लाह का लाख लाख धन्यवाद है कि अब तुम एक नौजवान हो गये हो। अल्लाह ने चाहा तो अल्लाह के साये में तुम्हारे चाचा तुम्हारे पिता की इच्छा पूरी करेंगे यानी वह तुम्हें अपनी बेटी भी देंगे और राज्य भी दे देंगे।

एक दिन ऐसा हुआ कि बहुत ही मामूली सी दासी ने मुझे बिना किसी वजह के इतनी ज़ोर का एक थप्पड़ मार दिया जिसकी पॉचों उॅगलियॉ मेरे गाल पर छाप छोड़ गयीं।

मैं रोता हुआ मुबारक के पास गया। उसने मुझे गले लगाते हुए अपनी आस्तीन से मेरे ऑसू पोंछे और कहा — "आइये आज मैं आपको राजा बनाता हूॅ। हो सकता है कि आपको देख कर उनका मन कुछ पिघल जाये। और यह सोच कर कि अब आप राजा बनने के लायक हो गये हैं वह आपको आपके अधिकार दे दें।"

यह कह कर वह मुझे तुरन्त ही मेरे चाचा के पास ले गया। मेरे चाचा ने दरबार के सामने मेरे लिये बहुत प्यार दिखाया। उन्होंने

मुझसे पूछा — "बेटा तुम इतने दुखी क्यों हो। और तुम यहाँ आज किस वजह से आये हो।"

जवाब मुबारक ने दिया — "यह यहाँ आज कुछ कहने आये हैं।"

यह सुन कर उन्होंने अपने आपसे कहा — "मैं बहुत जल्दी ही राजकुमार की शादी कर दूँगा।"

मुबारक बोला — "यह तो बड़ी खुशी का मौका होगा।"

राजा ने तुरन्त ही ज्योतिषियों और भविष्य बताने वालों को बुला भेजा और झूठी रुचि दिखाते हुए उनसे पूछा — "इस साल में कौन सा महीना कौन सा दिन और दिन का कौन सा समय बेटे की शादी के लिये शुभ रहेगा ताकि मैं उसी दिन राजकुमार की शादी कर सकूँ।"

उन्होंने यह सोचते हुए कि राजा अपने बड़े भाई की इच्छा को पूरा कर रहे हैं गुणा भाग किया और बोले — "ओ ताकतवर राजा। इस साल में तो कोई भी दिन मुहूर्त शुभ नहीं है। यह साल अगर किसी तरह से सुरक्षित निकल जाये तब अगले साल बहुत शुभ मुहूर्त है।"

यह सुन कर राजा ने मुबारक की तरफ देखा और कहा — "इसको फिर से जनानखाने में ले जाओ। अगर अल्लाह ने चाहा तो इस साल के बाद मैं अपनी राजगद्दी उसको सौंप दूँगा। उससे कहो कि वह आराम से रहे और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे।"

मुबारक ने राजा को सलाम किया और मुझे साथ ले कर जनानखाने की तरफ चल दिया। दो तीन दिन बाद मैं फिर से मुबारक के पास गया तो मुझे देख कर वह रो पड़ा।

यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ तो मैंने उससे पूछा — "अब्बू जी। सब ठीक तो है न। आप क्यों रो रहे हैं।"

तो मेरा वह भला चाहने वाला जो मुझे अपने दिल और आत्मा से चाहता था बोला — "मैं उस दिन आपको उस अत्याचारी के पास ले कर गया था। अगर मुझे पता होता तो मैं आपको वहाँ कभी नहीं ले जाता।"

यह सुन कर मैं चौंक गया और उससे पूछा — "मेरे वहाँ जाने से क्या नुकसान हो गया। आप मुझे सब कुछ सच सच बताइये।"

वह बोला — "आपको देख कर आपके पिता के समय के सब मन्त्री वजीर दरबारी कुलीन लोग सभी लोग बहुत खुश थे। आपको देख कर उन्होंने यह कहते हुए अल्लाह को धन्यवाद देना शुरू कर दिया "अब हमारा राजकुमार बड़ा हो गया है और राज्य करने के लायक हो गया। कुछ ही समय में राज्य ठीक वारिस को मिल जायेगा और वह हमारे गुणों का बदला ठीक से देगा।"

यह खबर उस नीच राजा के कानों तक पहुँची और उसकी छाती में साँप की तरह से कुंडली मार कर बैठ गयी।

सो उन्होंने मुझे चुपचाप अकेले में बुलाया और मुझसे कहा — "मुबारक। अब तुम कुछ ऐसा करो कि किसी तरह से यह राजकुमार

मर जाये और मेरे दिल में गड़ा यह कॉटा निकल जाये और मैं अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सकूँ।" उस दिन से मैं चुप हो गया हूँ क्योंकि आपका चाचा ही अब आपका दुश्मन बन गया है।"

जब यह भयानक खबर मैंने मुबारक से सुनी तो मैं तो बिना मारे ही मरे जैसा हो गया। मैं अपनी जान के लिये डर कर उसके पैरों पर मरे जैसा पड़ गया। मैं बोला — "अल्लाह के लिये मैं अपनी राजगद्दी छोड़ता हूँ पर मुझे बचा लो।"

उस वफादार गुलाम ने मेरा सिर पकड़ कर मुझे उठाया और अपने गले से लगाते हुए कहा — "आप डरिये नहीं राजकुमार। मेरे दिमाग में एक विचार आया है। अगर वह ठीक से काम कर जाता है तो फिर डरने की कोई जरूरत नहीं है। जब तक हममें जान है तब तक हमारे पास सब कुछ है।

बहुत मुमकिन है कि मेरी इस तरकीब के अनुसार आपकी जान भी बच जाये और आपकी इच्छाऐं भी पूरी हो जायें।"

इस तरह की तसल्ली दे कर वह मुझे अपने साथ ले गया और मेरे मरे हुए पिता के कमरे में ले गया जहॉ वह बैठा और लेटा करते थे और मुझे बहुत तसल्ली दी।

वहॉ एक स्टूल रखा हुआ था। उसने मुझसे उस स्टूल की एक टॉग पकड़वायी और दूसरी टॉग उसने खुद ने पकड़ी और हम दोनों ने उसको वहॉ से हटा दिया।

उसको वहाँ से हटाने के बाद उसने वहाँ बिछा हुआ कालीन हटाया और फर्श को खोदना शुरू किया। जल्दी ही उसमें एक खिड़की दिखायी देने लगी। उस खिड़की में एक जंजीर और एक ताला लगा हुआ था।

मुबारक ने मुझे अपने पास बुलाया तो एक पल को तो मुझे ऐसा लगा जैसे वह मेरा कत्ल करने जा रहा हो और कत्ल कर के वह मुझे यहाँ दफ़न कर देगा। इस तरह मौत मेरी आँखों के सामने नाच रही थी पर मैं क्या करता। कोई और रास्ता न देख कर मैं अल्लाह की प्रार्थना करते हुए चुपचाप उसकी तरफ बढ़ा।

वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि उस खिड़की के नीचे चार कमरों की एक इमारत थी और उसके हर कमरे में सोने के **10** बर्तन जंजीर से बँधे लटक रहे थे। हर बर्तन के मुँह पर एक एक सोने की ईंट रखी हुई थी और हर ईंट पर जवाहरातों से जड़ा एक एक बन्दर बैठा हुआ था।

उन सब कमरों में मैं केवल **39** बर्तन ही गिन पाया। उनमें से एक बर्तन में सोने के सिक्के भरे हुए थे। उस पर न तो कोई ईंट थी और न ही कोई बन्दर। एक बहुत बड़ा बर्तन रखा था जिसमें बहुत सारे कीमती पत्थर भरे हुए थे।

मैंने मुबारक से पूछा — "अब्बू। यह तलिस्मान सा क्या है। और ये जो बन्दरों की शक्लें बनी हुई हैं इनका क्या मतलब है।"

वह बोला — "इन बन्दरों की कहानी यह है —

"तुम्हारे पिता की अपने जवानी के दिनों से ही जिन्नों के राजा मलिके सादिक से जान पहचान थी। इसके लिये हर साल वह मलिकए सादिक के पास जाया करते थे और उसके पास एक महीना रह कर आया करते थे।

वे अपने साथ उनके लिये तरह तरह के इत्र और मुश्किल से मिलने वाली चीज़ें आदि[205] ले जाया करते थे। जब वह मलिक से विदा ले कर घर वापस लौटते थे तो मलिक उनको पन्ने का बना एक बन्दर दिया करता था। वे उसको यहाँ ला कर इन नीचे वाले कमरों में रख दिया करते थे।

इस बात को मेरे सिवा और कोई नहीं जानता था। एक बार मैंने आपके पिता से कहा — "आप उनके लिये हजारों रुपये की इतनी सारी मुश्किल से मिलने वाली चीज़े ले कर जाते हैं और आप उनसे केवल एक बन्दर की पत्थर की मूर्ति ही ले कर आते हैं। आखिर अन्त में इसका क्या फायदा है।"

मेरे इस सवाल के जवाब में उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा — "सावधान रहना और इस भेद को किसी के ऊपर भी नहीं खोलना। इनमें से हर बन्दर की मूर्ति के पास हजारों ताकतवर राक्षसों की ताकत है। वे उसके एक हुक्म पर उसका काम करने को तैयार रहते हैं।

[205] According to the fabulous system of Jinns, Devis, Paris, in Asia, it is supposed that the Jinns and Paris live on essences etc. The Devis are malignant spirits or beings, and live on less delicate food.

पर एक बात और, और वह यह कि जब तक यहाँ 40 बन्दर एक साथ इकट्ठे न हों तो इनकी कोई कीमत नहीं। ये मेरा कोई काम नहीं कर सकते।" सो जब राजा मरे तब इनमें से एक बन्दर कम था। ये केवल 39 ही रहे पूरे 40 नहीं हो पाये थे।

इसलिये ओ राजकुमार। अभी ये सब बेकार हैं। इनको तो दिखाने का भी कोई फायदा नहीं है। आपकी यह हालत देख कर मुझे इस घटना की याद आ गयी कि आपके पिता की तो उस जिन्न के राजा से दोस्ती थी।

सो अगर मैं आपको किसी तरह से मलिके सादिक के पास भेजने में कामयाब हो सकूँ और आप उसको अपने चाचा के अत्याचार के बारे में बतायें तो उनकी दोस्ती को याद कर के शायद वह आपको इन बन्दरों की गिनती 40 करने के लिये एक बन्दर और दे दे

और फिर अगर कुछ और नहीं हो सकता तो उनकी सहायता से कम से कम आप अपना राज्य लेने में कामयाब हो जायें और आप फिर से चीन और मचीन[206] पर राज कर पायें। इस तरह से आपकी जान बच जाये।

मुझे इस समय आपके चाचा के अत्याचार से बचने का इस तरकीब के अलावा जो अभी मेंने आपको बताया और कोई तरीका नजर नहीं आ रहा।

---

[206] Chin and Machin is the general name of China among Persians.

मुबारक से यह सुनने के बाद मैंने उनसे कहा — "मेरे दोस्त। अब तो तुम ही मेरी जान बचाने वाले हो। वही करो जो मेरे लिये सबसे अच्छा हो।"

मुझे अच्छी तरह से तसल्ली दे कर वह बाजार गया। वहाँ से उसने कुछ इत्र और अगरबत्तियाँ खरीदीं। और भी कुछ खरीदा जिनको वह मलिके सादिक के लिये जरूरी समझता था।

अगले दिन वह मेरे नीच चाचा के पास गया जो एक दूसरा अबू जहाल[207] था और बोला — "ओ दुनियाँ की रक्षा करने वाले। राजकुमार को मारने के लिये मैंने अपने मन में एक तरकीब सोच ली है। आप अगर मुझे इजाज़त दें तो मैं कुछ कहूँ।"

मेरा नीच चाचा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "वह कौन सी तरकीब है?"

मुबारक बोला — "इस तरह से मारने पर योर मैजेस्टी हर तरीके से बहुत खुश होंगे। मैं उनको जंगल ले जाऊँगा वहीं उनको मार दूँगा और वहीं दफ़न भी कर के वापस आ जाऊँगा। किसी को पता भी नहीं चलेगा।"

मुबारक की यह तरकीब सुन कर चाचा बहुत खुश हुआ और बोला — "यह तो बहुत अच्छी तरकीब है। मैं ऐसा ही चाहता हूँ कि बस वह किसी तरह से मार दिया जाये।

---

[207] Abu Jahal. Abu-Jahal, or "the father of obstinacy," or "of brutality," was the name of an Arab. He was uncle to the prophet Muhammad, and an inveterate opposer of the latter's new religion.

मुझे उससे बहुत डर लगता है। और अगर तुम मेरी इस चिन्ता को दूर कर दो तो इस सेवा के बदले में मैं तुम्हें बहुत कुछ दूँगा। उसको तुम जहाँ ले जाना चाहो वहाँ ले जाओ पर उसको मार दो और मुझे उसके मारे जाने की खबर ला कर दो।"

राजा को इस तरह सन्तुष्ट कर के मुबारक मुझे और जिन्नों के राजा के लिये भेंट साथ ले कर चला। वह आधी रात के समय शहर से बाहर निकला और उत्तर की तरफ चला। वह बिना रुके लगातार एक महीने तक चलता रहा।

एक रात जब हम चल रहे थे मुबारक ने कुछ महसूस किया और बोला — "अल्लाह की मेहरबानी से बस अब हम अपनी यात्रा खत्म करने वाले हैं।"

यह सुन कर मैंने पूछा — "ओ दोस्त। यह तुम क्या देख कर कह रहे हो।"

मुबारक बोला — "राजकुमार क्या आप यहाँ जिन्नों की सेना नहीं देख रहे।"

मैं बोला — "नहीं तो। मुझे तो यहाँ आपके सिवा और कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

मुबारक ने तब सुलैमानी सुरमा निकाला और एक सलाई से उसे मेरी दोनों आँखों में लगा दिया। तुरन्त ही मुझे वहाँ जिन्नों की सेना दिखायी देने लगी। वहाँ वे अपने अपने तम्बुओं में एक पड़ाव डाले हुए थे। वे सब बहुत सुन्दर थे और बहुत अच्छे कपड़े पहने थे।

उन्होंने मुबारक को पहचान लिया। उन्होंने उसको खुशी खुशी गले से लगाया। वहॉ से हम आगे चले तो शाही तम्बुओं तक पहुॅचे और उनके दरबार में घुसे।

मैंने देखा कि वहॉ बहुत सारी रोशनी हो रही है। कई तरह के स्टूल वहॉ दो दो की लाइनों लगे हुए हैं जिन पर विद्वान लोग दार्शनिक दरवेश कुलीन लोग और भी बहुत सारे औफीसर बैठे हुए थे। कुछ नौकर लोग अपनी छाती पर हाथ बॉधे हुए हुक्म के इन्तजार में खड़े हुए थे।

बीच में एक जवाहरात जड़ा सिंहासन रखा हुआ था जिस पर एक आदमी बड़े शान से बैठा हुआ था। वह राजा मलिके सादिक था। उसके सिर पर ताज था और उसके कपड़ों पर मोती लगे हुए थे। मैं उसकी तरफ बढ़ा और उसे सलाम किया। उसने मुझसे बैठने के लिये कहा।

फिर उसने खाना लाने का हुक्म दिया। खाना खत्म होने के बाद दस्तरख्वान हटा दिया गया। फिर उसने मुबारक की तरफ देखते हुए मेरी कहानी पूछी।

मुबारक बोला — "आजकल राजा की जगह राजकुमार के चाचा राज्य पर राज करते हैं और इस बेचारे राजकुमार की जान के दुश्मन हो गये हैं। इसी लिये मैं वहॉ से इनको साथ ले कर यहॉ योर मैजेस्टी के पास दौड़ा आया हूॅ।

यह अनाथ है। यह सिंहासन इसका है पर कोई इसके लिये कुछ नहीं कर पा रहा क्योंकि आपके सिवाय वहाँ इसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है। यह दुखी नौजवान अपने अधिकार ले सकता है पर बिना आपकी सहायता के नहीं।

इसके पिता की सेवाओं को याद कीजिये और मेहरबानी कर के इसकी सहायता कीजिये। इसको 40वाँ बन्दर दे दीजिये ताकि हमारे राजा के पास रखे बन्दरों की गिनती पूरी हो जाये और राजकुमार उनकी सहायता से अपना अधिकार पा ले।

यह योर मेंजेस्टी के ज़िन्दगी भर गुणगान करेगा और आपकी लम्बी ज़िन्दगी और खुशहाली की दुआ मनाता रहेगा। इसके पास आपके सिवा और कोई इसकी सहायता करने वाला नहीं है।"

यह सब हाल सुन कर मलिके सादिक कुछ देर तक तो चुप रहा फिर बोला — "सच बात तो यह है कि मरे हुए राजा की सेवाऐं और दोस्ती तो मेरे लिये बहुत बड़ी चीज़ थी।

यह सोचते हुए कि यह राजकुमार तो बेचारा बदकिस्मती का मारा हुआ है। इसने अपनी जान बचाने के लिये अपनी पिता की राजगद्दी तक छोड़ दी है और अपनी सुरक्षा ढूँढते हुए यहाँ मेरे पास इतनी दूर तक आया है।

तो न तो मैं उसको उनके बदले में किसी तरह की भी सहायता में कमी करूँगा जो भी मुझसे बन पड़ेगी और न ही मैं उसे अनदेखा करूँगा।

पर मेरे पास एक काम है उसे अगर यह कर सकता है और मुझे धोखा नहीं देगा तो... अगर यह उसको ठीक से और तरीके से कर पाता है तो मैं वायदा करता हूँ कि मैं इसका इसके पिता के दोस्त से ज़्यादा अच्छा दोस्त बन जाऊँगा और फिर मैं इसको वही दे दूँगा जो वह चाहेगा।"

मैंने खुशी से हाथ जोड़ कर उनसे कहा — "आपका यह नौकर आप जो भी कहेंगे वह करेगा। जो भी सेवा योर मैजेस्टी चाहें यह नौकर आपका वही हुक्म बिना धोखा दिये बजा लायेगा। और यह काम उसके लिये दोनों दुनियाओं में सबसे ज़्यादा खुशी का काम होगा।"

जिन्नों के राजा ने कहा — "तुम तो अभी केवल एक लड़के हो इसलिये मैं तुम्हें यह बात बार बार कहता हूँ कि तुम मुझे धोखा मत देना कहीं तुम किसी मुसीबत न पड़ जाओ।"

मैं फिर बोला — "ओ अल्लाह। आपकी खुशकिस्मती मेरे उस काम को आसान बना देगी। और जहाँ तक मेरा सवाल है आपको सन्तुष्ट करने की मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा।"

मलिके सादिक ने मेरे मुँह से जब ये बातें सुनी तो उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और अपनी नोटबुक में से एक कागज निकाल कर मुझे दिखाया और कहा — "इस लड़की जिसकी यह तस्वीर है उसको ढूँढना है। देखो तुम इसे कहाँ ढूँढ सकते हो। इसे ढूँढो और मेरे पास ले कर आओ।

जब तुम उसका नाम और रहने की जगह का पता चला लो तब तुम उसके पास जाना और उससे मेरा बहुत प्यार जताना। अगर तुम मेरा यह काम कर सकते हो तो जिस किसी चीज़ की तुम मुझसे उम्मीद रखते होगे मैं तुम्हें उससे कहीं ज़्यादा दूँगा। नहीं तो तुमको वही मिलेगा जिसके मिलने के अधिकारी तुम होगे।"

मैंने उनसे कागज लिया और उस तस्वीर की तरफ देखा तो मुझे वह किसी बहुत सुन्दर लड़की की तस्वीर लगी। उसको देख कर एक बार तो मैं बेहोश होते होते बचा। मैं डर के मारे कॉप गया और गिरते गिरते बचा।

फिर मैंने उनसे कहा — "ठीक है मैं चलता हूँ। अगर अल्लाह ने चाहा तो योर मैजेस्टी ने जो काम करने के लिये मुझसे कहा है मैं वह कर लाऊँगा।"

यह कह कर मैंने मुबारक को साथ लिया और वहाँ से जंगल की तरफ चल दिया। मैं एक गॉव से दूसरे गॉव एक शहर से दूसरे शहर एक देश से दूसरे देश घूमता फिरा। जो भी मुझे रास्ते में मिलता मैं उस लड़की के बारे में हर एक से पूछता पर किसी ने भी यह नहीं कहा कि "मैं इसे जानता हूँ।" या "मैंने इसके बारे में किसी से सुना तो है।"

इस तरह घूमते घूमते मुझे सात साल निकल गये। इस बीच मैंने बहुत मुश्किलें सहीं। आखिर मैं एक शहर पहुँचा जिसमें बहुत सारे लोग रहते थे।

वहॉ बहुत बड़ी बड़ी इमारतें बनी हुई थीं पर वहॉ का हर आदमी इस्मे आज़म[208] यानी अल्लाह का नाम जप रहा था और उसकी पूजा कर रहा था।



वहॉ मुझे हिन्दुस्तान का एक अन्धा भिखारी भीख मॉगता हुआ मिल गया। कोई उसको एक कौड़ी[209] भी नहीं दे रहा था और न कुछ खाना ही दे रहा था। मुझे आश्चर्य भी हुआ और साथ में उसके ऊपर दया भी आयी।

मैंने अपनी जेब से सोने का एक सिक्का निकाला और उसको दे दिया। उसने उसे ले कर कहा — "ओ यह सिक्का देने वाले। अल्लाह तुम्हें खुशहाल रखे। लगता है तुम यहॉ के रहने वाले नहीं हो कोई यात्री हो।"

मैंने जवाब दिया — "मैं सात साल से घूमता फिर रहा हूॅ। मुझे उस चीज़ का ज़रा सा पता नहीं मिल रहा जिसे मैं ढूॅढने निकला हूॅ। आज मैं इस शहर में हूॅ।"

बूढ़े ने मुझे बहुत सारी दुआऐं दीं और चला गया। मैं भी उसके पीछे पीछे चल दिया। शहर के बाहर एक बहुत ही शानदार इमारत खड़ी थी। वह उस इमारत में घुस गया और उसके पीछे पीछे मैं भी उस इमारत के अन्दर घुस गया। अन्दर जा कर मैंने देखा कि वह

---

[208] Isme Azam – one of the greatnames of Allah.

[209] Cowrie or cowry (plural cowries) is the common name for a group of small to large sea snails. The term porcelain derives from the old Italian term for the cowrie shell (porcellana) due to their similar appearance.

इमारत तो बहुत टूटी फूटी थी। उसको तो बहुत मरम्मत चाहिये थी।

मैंने अपने मन में कहा “अरे वाह यह तो क्या ही बढ़िया इमारत है। जब यह ठीक से बन जाये तब तो यह एक राजकुमारी के रहने लायक जगह है। हालाँकि अभी भी जब यहाँ कोई नहीं रहता फिर भी यह कितनी शानदार है। पर मेरी यह समझ में नहीं आ रहा है कि यह ऐसी खंडहर क्यों पड़ी है और यह अन्धा आदमी यहाँ क्यों रहता है।”

वह अन्धा आदमी अपनी छड़ी से रास्ता ढूँढता ढूँढता चला जा रहा था कि तभी मैंने एक आवाज सुनी जो कह रही थी — “अब्बू आज आप इतनी जल्दी घर कैसे लौट आये सब कुछ ठीक है न।”

यह सवाल सुन कर बूढ़े ने जवाब दिया — “बेटी सब ठीक है। आज अल्लाह ने एक यात्री के मन में दया पैदा कर दी तो उसने मुझे एक सोने का सिक्का दे दिया।

मैंने उससे माँस मसाले घी नमक खरीदा और तेरे लिये कुछ जरूरी कपड़े भी खरीद लिये। उनको काट कर सिल लेना और पहन लेना। अच्छा अब तू खाना बना ले ताकि फिर हम साथ साथ खाना खा सकें और उस दयावान आदमी को धन्यवाद दे सकें जिसने हमारे ऊपर मेहरबान हो कर मुझे एक सोने का सिक्का दिया।

हालॉकि मैं यह तो नहीं जानता कि उसकी क्या इच्छा है पर अल्लाह तो सब कुछ जानता है और देखता है वह हम जैसे गरीब लोगों की प्रार्थना का जवाब जरूर देगा।"

मैंने जब इन लोगों को इतना भूखा देखा तो मेरी बहुत इच्छा हुई कि मैंने इसको **20** सोने के सिक्के क्यों नहीं दे दिये। पर उस रहने की जगह को देखते हुए जहॉ से यह आवाज आ रही थी मैंने देखा कि वहॉ तो उस तस्वीर जैसी ही एक स्त्री खड़ी हुई थी।

तुरन्त ही मैंने अपनी जेब से वह तस्वीर निकाली जो जिन्नों के राजा ने मुझे दी थी तो मैंने देखा कि उस स्त्री की सूरत तो उस तस्वीर से हूबहू मिलती थी। उन दोनों में बाल भर का भी भेद नहीं था। मेरे दिल से एक गहरी आह निकल गयी और मैं बेहोश सा हो गया।

मुबारक ने मुझे अपनी बॉहों में सॅभाल लिया और नीचे बिठाया। वह मुझे हवा करने लगा। जैसे ही मुझे ज़रा सा होश आया तो मैं उस स्त्री को फिर से घूरने लगा।

मुबारक ने पूछा — "अरे आपको क्या हो गया है।"

मैंने अभी तक उसको जवाब भी नहीं दिया था कि उस सुन्दर स्त्री ने कहा — "ओ नौजवान। अल्लाह से डरो और एक अजनबी स्त्री की तरफ इस तरह मत घूरो। कुछ शर्म लिहाज़ करो। यह हर एक के लिये बहुत जरूरी है।"

वह इतने अधिकार के साथ बोल रही थी कि मैं तो उसकी सुन्दरता और तौर तरीके का दीवाना बन गया। मेरे ऊपर तो उसने जैसे जादू सा डाल दिया था। मुबारक ने मुझे तसल्ली तो बहुत दी पर उस बेचारे को मेरे दिल की हालत का क्या पता।

कोई और रास्ता न देख कर मैं बोला — "ओ अल्लाह के बनाये प्राणियों और इस देश के रहने वालो। मैं एक गरीब यात्री हूँ। अगर तुम लोग मुझे अपने पास बुला कर यहाँ ठहरा लो तो मेरे लिये बहुत बड़ी बात होगी।"

बूढ़े ने मुझे अपने पास बुलाया और मेरी आवाज पहचानते हुए मुझे गले से लगा लिया। फिर वह मुझे वहाँ ले गया जहाँ वह सुन्दर स्त्री बैठी हुई थी। वह वहाँ से उठ गयी और एक कोने में जा कर बैठ गयी।

बूढ़े ने मुझसे पूछा — "अब तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ कि तुमने अपना घर क्यों छोड़ा। तुम अकेले इस तरह क्यों घूम रहे हो। तुम किसको ढूँढ रहे हो।"

मैंने मलिके सादिक का नाम भी नहीं लिया और उसके बारे में कुछ कहा भी नहीं पर बस उसको मैंने केवल अपनी कहानी बतायी कि मैं चीन और मचीन के राजा का बेटा हूँ। मेरे पिता अभी भी उस देश के राजा हैं।

मेरे पास यह एक तस्वीर है जिसे उन्होंने चार लाख रुपये में खरीदा था। पर जिस पल से मैंने इसे देखा तो मेरे दिल का चैन खो

गया है। मैंने एक तीर्थयात्री की पोशाक पहनी और इसको ढूँढने निकल पड़ा। अब यह मुझको यहाँ आपके पास मिल गयी है।"

यह सुन कर बूढ़े ने एक भारी सी साँस ली और बोला — "ओ दोस्त। मेरी बेटी तो पहले से ही बदकिस्मती के चंगुल में फँसी हुई है। कोई इसके साथ शादी नहीं कर सकता।"

तो मैंने जवाब दिया — "क्या आप मुझे इस बात को पूरी तरीके से खोल कर समझाने की कोशि करेंगे।"

तब उस बूढ़े ने मुझे अपनी यह कहानी सुनायी —

"सुनो ओ राजकुमार। मैं इस बदकिस्मत शहर का एक बहुत बड़ा सरदार हूँ। मेरे पुरखे यहाँ के एक बहुत बड़े परिवार के और बहुत मशहूर लोग थे।

अल्लाह ने मुझे यह बेटी दी थी। जब यह बड़ी हो गयी तो इसकी सुन्दरता और इसके तौर तरीकों के चर्चे चारों तरफ फैल गये।

देश के सारे लोग यही कहते थे कि जिस किसी के घर में ऐसी बेटी हो जिसकी सुन्दरता के आगे परियाँ और देवदूत भी पानी भरते हों उसके सामने किसी आदमी का क्या मुकाबला।

इस शहर के राजकुमार ने भी उसकी सुन्दरता की कहानियाँ सुनी तो वह तो उसकी केवल कहानियाँ सुन कर ही बिना उसके देखे ही उसके पीछे पागल हो गया। उसने खाना पीना छोड़ दिया और उसके लिये बेचैन हो गया।

आखिर यह बात राजा के कानों तक पहुँची तो एक रात राजा ने मुझे अपने पास बुलाया और अपनी मीठी बातों से मुझे इतना कोंचा कि मैं ना न कह सका और उसने मुझे इस रिश्ते के लिये राजी कर लिया।

मैंने भी सोचा कि क्योंकि मेरे घर में बेटी पैदा हुई है तो एक न एक दिन तो उसे किसी न किसी से शादी कर के जाना ही है तो इससे अच्छा और क्या हो सकता है कि उसकी शादी एक राजकुमार से हो जाये। राजा के बहुत कहने पर मैं उनका प्रस्ताव मान लिया और मैं वहाँ से चला आया।

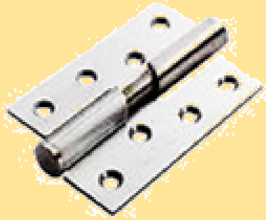
उस दिन से दोनों घरों में शादी की तैयारियाँ शुरू हो गयीं। फिर एक शुभ घड़ी में सारे काज़ी और मुफ्ती[210] जमा हुए। विद्वान लोग कुलीन लोग भी आये और शादी की रस्में पूरी की गयीं।

शादी की सब रस्में पूरी की जाने के बाद दुलहिन को बड़ी शान से दुलहे के घर ले जाया गया। रात को जब दुलहा दुलहिन के कमरे में जाने लगा तो बाहर बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। इतना शोर कि चौकीदारों के अलावा सारे लोग घबरा गये।

उनकी इच्छा हुई कि वह दरवाजा खोल कर यह देखें कि क्या मामला है पर सब कुछ अन्दर से इतना बन्द था कि वे कुछ खोल ही नहीं सके।

---

[210] The qazis and muftis are the judges in Turkey, Arabia, Persia and Hindustan, of all civil and religious causes; they likewise perform marriages, divorces etc.



कुछ देर बाद में जब रोने धोने की आवाज कुछ कम हुई तब दरवाजे को उसके कब्जे तोड़ कर खोला गया। लोगों ने देखा कि दुलहे का सिर उसके शरीर से अलग हुआ पड़ा है और उसके शरीर के दूसरे हिस्से अभी भी कॉप रहे हैं। दुलहिन के मुॅह से झाग निकल रहे हैं और वह अपने पति के खून के साथ धूल में लिपटी पड़ी है।

यह भयानक दृश्य देख कर जो कोई भी वहॉ मौजूद थे वे सब वहॉ से भाग लिये। यह भयानक खबर राजा को दी गयी तो वह बेचारा भी वहॉ अपना सिर पीटते पीटते दौड़ा दौड़ा आया। राज्य के सारे आफीसर भी आये पर कोई भी यह नहीं बता सका कि वहॉ क्या हुआ होगा।

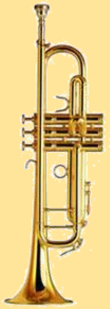
काफी देर के बाद राजा ने इस बदकिस्मत दुलहिन का सिर काटने का हुक्म दिया। जैसे ही राजा के मुॅह से यह हुक्म निकला तो एक बार फिर से शोर उठ खड़ा हुआ।

राजा यह देख सुन कर डर गया और वहॉ से भाग निकला और दुलहिन को महल से बाहर निकाल देने के लिये कहा। दासियों ने इस बदकिस्मत को मेरे घर पहुॅचा दिया।

बहुत जल्दी ही इस घटना का हाल राज्य भर में सब जगह फैल गया। जिसने भी यह सुना उसी को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ। राजकुमार की मौत की वजह से देश के सारे लोग मेरी जान के दुश्मन हो गये।

जब जनता का दुख का समय खत्म हो गया, **40** दिन पूरे हो गये तब राजा ने खुद ने राज्य के सब औफीसरों कुलीन लोगों आदि से सबसे पूछा — "अब हम इसके बाद क्या करें?"

सबने एक सुर में जवाब दिया — "अब इसके आगे क्या किया जा सकता है। हॉ योर मैजेस्टी की दिमागी हालत को शान्त रखने के लिये और धीरज से उसमें जान डालने के लिये लड़की और उसके पिता को मरवा दिया जाये और उनकी हर चीज़ कब्जे में कर ली जाये।



जब मेरा और मेरी बेटी की यह सजा निश्चित हो चुकी और मजिस्ट्रेट को इसको लागू करने का हुक्म दे दिया गया तो वह आया और उसने मेरा घर चारों तरफ से घेर लिया। मेरे घर के चारों तरफ पहरेदार लगा दिये गये। मेरे घर के दरवाजे पर एक भौंपू बजने लगा।

जैसे ही वह राजा का हुक्म बजा लाने के लिये मेरे घर में घुसने लगा तो पता नहीं कहॉ से पत्थर आने शुरू हो गये। वे पत्थर इतने ज़्यादा थे कि वहॉ खड़े हुए सारे लोग कोई भी उनकी मार नहीं सह सका और वे सब इधर उधर भाग गये।

और इस सबके साथ एक इतनी भयानक आवाज आयी कि राजा ने खुद ने भी इसको अपने महल में सुना —

"कौन सी बुरी किस्मत तुझ पर आ पड़ी है। किस राक्षस ने तुझे अपने काबू में कर रखा है। अगर तू अपनी भलाई चाहता है

तो उस सुन्दर लड़की को तू तंग मत कर नहीं तो तू भी अपने बेटे की किस्मत जो उसने उससे शादी कर के भोगी है भोगेगा। अगर तू उसे तंग करेगा तो उसके नतीजे के लिये तैयार भी रह।"

यह सुन कर राजा को डर के मारे बुखार चढ़ गया और उसने अपने लोगों को हुक्म दिया कि कोई भी उन बदकिस्मत लोगों को तंग न करे। कोई उनको कुछ कहे नहीं कोई उनसे कुछ सुने नहीं। उनको जहाँ वे रहें रहने दें। उनको कोई नुकसान न पहुँचाये।

उस दिन के बाद से जादूगरों ने इस घटना को शैतानी घटना समझ कर उसका असर खत्म करने के लिये बहुत सारे जादू टोने आदि इस्तेमाल किये। शहर के सब आदमियों ने कुरान में से बहुत सारी प्रार्थनाऐं कीं अल्लाह के नाम लिये पर सब बेकार।

इस घटना के बहुत समय बाद से ले कर अब तक उस तरह की फिर कोई वैसी घटना नहीं हुई और न मुझे उसके बारे में कुछ पता है।

मैंने एक बार अपनी बेटी से पूछा था कि उस रात उसने अपनी आँखों से क्या देखा या क्या सुना तो वह बोली कि जैसे ही मेरे पति मेरे पास आये तो छत खुल गयी और कीमती जवाहरातों से जड़ा हुआ एक सिंहासन नीचे उतरा जिसमें एक शाही नौजवान राजकुमार बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने बैठा था।

उसके साथ और भी बहुत सारे लोग थे। वे सब कमरे में आये और वे सब राजकुमार को मारने के लिये तैयार थे।

उसी समय वह नौजवान मेरे पास आया और बोला — "अब तुम मुझसे बच कर कहाँ जाओगी।"

उन सबकी आदमियों जैसी शक्ल थी पर उनके पैर बकरे के पैर जैसे थे। मेरा दिल बहुत ज़ोर से धड़क उठा और मैं डर के मारे बेहोश हो गयी। उसके बाद मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ।"

उसके बाद फिर तभी से हम इस खंडहर में रहते हैं। हमारे सब दोस्तों ने हमें छोड़ दिया है। जब मैं भीख माँगने के लिये बाहर जाता हूँ तो कोई मुझे एक कौड़ी भी नहीं देता। इतना ही नहीं मुझे किसी दूकान के सामने भी खड़ा नहीं हुआ देने जाता।

इस बदकिस्मत लड़की के पास अपना शरीर ढकने के लिये कोई फटा कपड़ा भी नहीं है और न भूख शान्त करने के लिये कोई खाना ही है। मैं अल्लाह से केवल यही दुआ माँगता हूँ कि बस किसी तरह हमें मौत आ जाये या फिर यह धरती फट जाये तो यह उसमें समा जाये। इस तरह से ज़िन्दा रहने से तो मौत ही अच्छी है।

अल्लाह ने शायद तुम्हें हमारे भले के लिये भेजा है ताकि तुम हमें देख कर हमारे ऊपर दया कर सको। और तुमने हमको एक सोने का सिक्का दिया जिससे मैं अपनी बेटी के लिये कुछ खाना और कपड़ा खरीद सका।

अल्लह की मेहरबानी है और अल्लाह तुम्हें खुश रखे अगर यह किसी जिन्न के कब्जे में नहीं होती तो मैं इसे तुम्हें तुम्हारी नौकरानी के रूप में तुम्हारी सेवा में दे कर बहुत खुश होता।

यही मेरी बदकिस्मती की कहानी है। तुम इसके बारे सोचना भी नहीं।"

बूढ़े से उसकी यह दुखभरी कहानी सुन कर मैंने बूढ़े से प्रार्थना की कि वह मुझे अपना दामाद समझे। और अगर मेरा भविष्य इतना ही खराब है तो उसे आने दे। पर वह बूढ़ा मेरी प्रार्थना बिल्कुल भी सुनने को तैयार नहीं था। जब शाम हुई तो मैंने उससे विदा ली और सराय चला गया।

मुबारक बोला — "राजकुमार खुश हो जाइये। अल्लाह ने आपकी सुन ली है। वह आप पर मेहरबान है। आपकी मेहनत बेकार नहीं गयी।"

मैंने जवाब दिया — "मैंने आज बहुत सारी सुन्दर बोली इस्तेमाल की हैं पर वह बूढ़ा तो मेरी कोई बात सुन कर ही नहीं दे रहा। अल्लाह ही जानता है कि वह मुझे अपनी बेटी मुझे देगा या नहीं।"

मेरे मन की हालत ऐसी थी कि मैंने रात बड़ी मुश्किल से गुजारी। मैं सारी रात यही दुआ मनाता रहा कि यह रात कब जल्दी से खत्म हो और कब दिन निकले और फिर मैं कब उसे देखने जाऊँ।

कभी कभी मुझे लगता है कि शायद उसका पिता दया कर के मेरी प्रार्थना सुन ले मुबारक और उसे मलिके सादिक के पास ले जाये।

मैंने फिर सोचा "खैर पहले हम उसे अपने काबू में तो कर लें। मुबारक को तो मैं बाद में देख लूँगा। फिर मैं उससे शादी कर लूँगा। मेरा दिल फिर से बहुत सारे विचारों से भर गया "अगर मान लो कि मुबारक मेरे प्लान पर राजी हो भी गया तो क्या जिन्न मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा कि उन्होंने राजकुमार के साथ किया था।

इसके अलावा इस देश का राजा इस बात के लिये कभी राजी नहीं होगा कि उसके बेटे के खून होने के बाद में कोई दूसरा आदमी उसके बेटे की पत्नी से शादी कर ले।"

मेरी सारी रात यही सब सोचते सोचते निकल गयी। जब सुबह दिन निकला तो मैं बाहर निकला और चौक गया और वहाँ से कुछ बढ़िया कपड़े खरीदे लेस खरीदी कुछ सूखे और ताजे फल खरीदे और यह सब ले कर बूढ़े के पास पहुँचा।

वह उन सबको देख कर बहुत खुश हो गया और बोला — "हर एक को अपनी ज़िन्दगी से ज़्यादा और कोई चीज़ प्यारी नहीं है पर अगर मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे किसी काम की हो तो मुझे उसे तुम्हें देने में कोई दुख नहीं होगा। मैं तुम्हें अपनी बेटी देता हूँ पर देते हुए डरता हूँ क्योंकि ऐसा करके मैं तुम्हारी ज़िन्दगी खतरे में डाल रहा हूँ। और इस बात की बदनामी का धब्बा जजमैन्ट के दिन[211] तक मेरे सिर रहेगा।"

---

[211] Judgment Day

मैंने कहा — "मैं अब इस शहर में हूँ। मेरे पास कोई सहायता नहीं है यह सच है। आप हर तरीके से मेरे पिता हैं – दुनियावी तरीके से भी और आध्यात्मिक तरीके से भी।

पर सोचिये कि कितने दुखों मुश्किलों और मेहनतों को झेल कर आज मेरी इच्छा पूरी हुई है। अल्लाह ने भी आपको मेरे लिये दयावान बनाया कि आपने मुझे उससे शादी करने की इजाज़त दे दी है। आप बस मेरी सुरक्षा के लिये डरते हैं।

एक पल के लिये सोचिये कि प्यार की तलवार से हमारे सिरों को बचाने के लिये और उस खतरे से हमारी ज़िन्दगियों को बचाने के लिये किसी भी धर्म में नहीं लिखा है। जो होता है होने दीजिये। अपनी प्यारी चीज़ लेने के लिये जो मेरी ज़िन्दगी है जो मेरा सब कुछ है मैंने तो उसे हर तरीके से खो ही दिया है।

मुझे इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि मैं मरता हूँ या जीता हूँ। इसके अलावा निराशा भी तो मेरी किस्मत की सहायता के बिना मेरी ज़िन्दगी के दिन खत्म कर ही देगी और फिर जजमेंट के दिन मैं आपका दोषी बन कर खड़ा होऊँगा।"

थोड़े में कहो तो ऐसी ही बातें करते करते यानी हॉ ना में एक महीना गुजर गया। यह समय मेरे दिमाग पर बड़ा भारी था। भविष्य की आशाओं और डर के बीच में मैं रोज उस बूढ़े की सेवा में जाता था। उससे चापलूसी भरी बातें करता था और अपनी इच्छा पूरी करने की विनती करता था।

यह सब चल ही रहा था कि बूढ़ा एक दिन बीमार पड़ गया। मैं उसकी बीमारी में सेवा करता रहा। मैं उसके बारे में डाक्टर से बात करता और जो भी दवा वह लिखता मैं उन्हें खरीद कर लाता और उन्हें उसे देता। मैं उसे अपने हाथों से कपड़े पहनाता। उसे दाल चावल खिलाता।

एक दिन वह मुझ पर असाधारण रूप से मेहरबान था। वह बोला — "तुम बहुत जिद्दी हो। मैंने तुमसे कितनी बार उन सब मुश्किलों को बता दिया जो आगे आ सकती हैं पर तुम अपनी प्रिय चीज़ लेने से नहीं हट रहे। तुमको मैंने कितनी बार चेतावनी भी दे दी कि तुम इसके बारे में सोचो भी नहीं पर तुम सुनते ही नहीं।

जब तक हमारी ज़िन्दगी हमारे पास है तब तक हमारे पास सब कुछ है पर तुम तो जान बूझ कर अन्धे कुँए में छलाँग लगा रहे हो। खैर आज मैं तुम्हारे बारे में अपनी बेटी से बात करूँगा। देखें वह क्या कहती है।"

चौथा दरवेश आगे बोला — "सो ओ पवित्र दरवेशो। उसके ये प्यारे शब्द सुन कर मैं खुशी से इतना फूल गया कि मुझे लगा कि मेरे तो कपड़े भी तंग हो गये।

मैं बूढ़े के पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "आज आपने मेरे आने वाले जीवन की और भविष्य की खुशी की नींव रख दी।" फिर मैंने उनसे विदा ली और अपने घर वापस लौट आया।

सारी रात मैं मुबारक से इस बारे में बात करता रहा। उस समय न तो मेरी ऑखों में नींद थी न पेट में भूख।

सुबह सवेरे जल्दी उठ कर मैं फिर से बूढ़े के पास गया जा कर उन्हें सलाम किया। बूढ़ा बोला — "ठीक है मैं तुम्हें अपनी बेटी देता हूॅ। अल्लाह उसके साथ तुम्हें खुशी दे। मैंने तुम दोनों को उसकी रक्षा में सौंप दिया है। जब तक मैं ज़िन्दा हू तुम मेरे साथ रह सकते हो। जब मैं नहीं रहूॅगा तब तुम लोग जो चाहे करना। उस समय तुम लोग अपने कामों के जिम्मेदार अपने आप होगे।"

इस बातचीत के कुछ दिन बाद वह बूढ़ा मर गया। हम लोगों ने उसका दुख मनाया और उसको दफ़ना दिया।

तीजा होने के बाद मुबारक उस सुन्दर लड़की को डोली में बिठा कर सराय में ले आया और बोला — "यह बल्किुल पवित्र है और मलिके सादिक की है। ध्यान रहे कि आप इसके साथ कोई खेल नहीं खेलें। कहीं ऐसा न हो कि आपकी इतनी सारी मेहनत का फल बिल्कुल ही बेकार जाये।"

मैं बोला — "मलिके सादिक यहॉ बीच में कहॉ से आ गया। मेरा दिल नहीं मानता और फिर मुझमें इतना धीरज भी नहीं है। जो होता है होने दो। मैं चिन्ता नहीं करता अभी तो मुझे उसके साथ आनन्द ले लेने दो।"

मुबारक गुस्से में भर कर बोला — "बच्चों की तरह से बर्ताव मत करिये। एक पल में ही सारा खेल बदल सकता है। आप क्या

समझते हैं कि मलिके सादिक बहुत दूर हैं जो आप उसके हुक्म को न मानने की हिम्मत कर सकते हैं।

आपके उससे विदा लेने से पहले ही उसने आपको सारे हालचाल बता दिये थे और चेतावनी भी दे दी थी कि अगर आपने उसे धोखा दिया तो आपके साथ क्या हो सकता है।

इसलिये अच्छा तो यही होगा कि आप इसे सुरक्षित उसके पास पहुँचा दें। वह एक शाही दिमाग का आदमी है। आप जिन जिन परेशानियों से गुजरे है वह उनको समझ सकता है और फिर यह भी हो सकता है कि वह इसे आपको ही दे दे। सोचिये तब यह मामला कितना अलग होगा।

इस वफादारी से आपको उससे अपनी दोस्ती भी वापस मिल जायेगी और अपना प्यार भी वापस मिल जायेगा।"



आखिर इस समझाने और धमकियों के बाद मैं कुछ चुप हो गया। मैंने दो ऊँट खरीदे और हम उनके हौदों[212] पर चढ़ कर मलिके सादिक के घर चल दिये।

चलते चलते हम एक मैदान में पहुँच गये। वहाँ बहुत सारा शोर मच रहा था।

[212] A kind of litter for travelling in Persia and Arabia; two of them are slung across a camel or a mule; those for camels carry up to four persons. Similar to them is shown above to be used to ride on elephant.

मुबारक बोला — "अल्लाह की जय हो। हमारी मेहनत कामयाब हो गयी। क्योंकि लो हमारे जिन्नों की सेना भी आ गयी।"

आखिर वह उनसे मिला और उनसे पूछा कि वे कहाँ जा रहे थे। उन्होंने कहा कि "हमारे राजा ने हमें आपका स्वागत करने के लिये भेजा है। अब आप जो कहेंगे वही हम करेंगे। अगर आप इजाज़त दें तो हम आपको अभी अपने राजा के पास लिये चलते हैं।"

मुबारक ने मेरी तरफ घूमते हुए कहा — "देखो न। कितनी सारी मुसीबतें और खतरे सहने के बाद अल्लाह ने हमारे ऊपर कितनी मेहरबानी दिखायी है। अब हमें जल्दी करने की जल्दी क्या है। अगर कोई बुरी बात हो भी जाती है तो अल्लाह न करे हमारी तो सारी मेरी मेहनत ही बेकार जायेगी और राजा हम लोगों पर गुस्सा होंगे।"

उन्होंने एक साथ जवाब दिया — "अब तो आप ही हमारे मालिक हैं जो आप कहेंगे वही हम करेंगे।"

हालाँकि हम सब तरह से ठीक थे फिर भी हम रोज सुबह शाम चलते रहे। जब हम उस जगह के पास पहुँचे जहाँ राजा रहता था तो एक दिन मुबारक को सोता हुआ देख कर मैं उस लड़की के पैरों पर गिर पड़ा और रोते रोते मैंने उसे उस दिन से अपने दिल का हाल

बताया जिस दिन से मैंने उसकी तस्वीर देखी थी। मलिके सादिक की धमकियाँ भी बतायीं।

मैंने उससे कहा कि मेरी रातों की नींद उड़ गयी है भूख नहीं लगती किसी चीज़ से आराम नहीं मिलता। और अब अल्लाह ने मुझे यह दिन दिखा दिया है तभी भी मैं उसके लिये बिल्कुल अजनबी हूँ।"

उसने जवाब दिया — "मैं भी तुम्हें दिल से चाहती हू क्योंकि मेरे लिये तुमने जो तकलीफें सही हैं जिन खतरों का तुमने मुकाबला कर के मुझे वहाँ से निकाला है। अब अल्लाह को याद रखना और मुझे भूल मत जाना। देखते हैं कि इस रहस्यमय परदे के पीछे से क्या निकलता है।"

यह कह कर वह इतनी ज़ोर से रो पड़ी कि उसका गला रुँध गया। तो ऐसी मेरी हालत थी और ऐसी उसकी हालत थी। इतनी देर में मुबारक उठ गया और हम दोनों को रोते देख कर उस पर बहुत असर पड़ा।

वह बोला — "तसल्ली रखिये। मेरे पास एक मरहम है जो मैं इसके शरीर पर मल देता हूँ। उसकी बू से मलिकए सादिक का दिल इससे फिर जायेगा। हो सकता है कि इसको वैसा देख कर वह इसे तुम्हारे लिये छोड़ दे।"

मुबारक की यह तरकीब सुन कर मैं फिर से खुश हो गया। बड़े प्यार से उसे गले लगाते हुए मैंने कहा — "ओ दोस्त। अब तुम मेरे

पिता जैसे हो गये। तुमने मेरी जान बचा ली। मैं तो तुम्हारा हमेशा के लिये ऋणी हो गया। अब तुम मेरे लिये उसी तरह से काम करो जिससे मैं ज़िन्दा रह सकूँ वरना तो मैं इस दुख से मर ही जाऊँगा।"

उसने मुझे बहुत तरह से तसल्ली दी। जब दिन निकला तो हमने देखा कि मलिकए सादिक के बहुत सारे जिन्न वहाँ आ गये। वे हमारे लिये दो बहुत ही कीमती खिलात लाये थे और साथ में मोतियों की झालर से ढकी एक पालकी ले कर आये थे।

मुबारक ने अपना मरहम लड़की के शरीर पर मल दिया था। उसे बहुत कीमती कपड़े पहना दिये थे। फिर उसने उसको मलिकए सादिक को सौंप दिया। उसको देख कर जिन्नों के राजा ने मुझे बहुत सारा इनाम दिया।

मुझे इज़्ज़त देने के बाद उसने मुझे अपने पास बिठा लिया और कहा — "आज मैं तुम्हारे साथ ऐसा बर्ताव करूँगा जैसा कभी किसी ने किसी के साथ नहीं किया होगा। तुम्हारे पिता का राज्य तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। इसके अलावा यहाँ तुम मेरे बेटे के बराबर हो।"

वह मुझसे इस तरह से शान से बात कर ही रहा था कि वह सुन्दर लड़की उसके सामने आ गयी। अचानक आयी गन्ध की वजह से उसके दिमाग ने काम करना बन्द कर दिया और उसने कुछ और ही सोचना शुरू कर दिया।

वह बाहर गया और उसने मुबारक को बुलाया और उससे कहा — "जनाब यह तो जो कुछ मैंने आपसे कहा था आपने सचमुच में ही उसका पूरा पूरा पालन किया है।

मैंने तुम लोगों से पहले ही कहा था कि अगर तुमने मुझे धोखा देने की कोशिश की तो तुम्हें मेरी नाराजगी का शिकार होना पड़ेगा। पर यह किस तरह की गन्ध है। अब तुम देखो कि मैं तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करता हूँ।"

वह मुबारक से बहुत गुस्सा था। मुबारक तो डर के मारे कॉप गया उसने तुरन्त ही अपना पाजामा खोल कर उसे अपने हालात दिखा दिये।

वह बोला — "ओ ताकतवर राजा। जबसे मैंने यह काम शुरू किया, आपके हुक्म के अनुसार तभी मैंने अपने शरीर का यह हिस्सा कटवा दिया था और उसे एक बक्से में बन्द कर के ताला लगा कर आपके खजॉची को दे दिया था। उसके बाद ही काटे हुए हिस्से पर सोलोमन के मरहम को लगा कर मैं यह काम करने चला था।"

यह सुन कर और देख कर जिन्नों के राजा ने मेरी तरफ देखा और कहा — "इसका मतलब है कि यह सब तुमने किया है।"

और गुस्से में भर कर मुझे कोसना शुरू कर दिया। मुझे उसके शब्दों से तुरन्त ही यह समझ में आ गया कि वह मुझे मार देने वाला है।

जब मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि वह मुझे जरूर ही मार देगा तो मुझे अपनी ज़िन्दगी की आशा जाती रही और इस हालत में मैंने मुबारक की कमर से खंजर निकाला और उसे जिन्नों के राजा के पेट में मार दिया।

जैसे ही खंजर उसके पेट में घुसा तो वह झुका और लड़खड़ाया। मुझे तो लगा कि वह उससे जरूर ही मर गया होगा पर बाद में मैंने देखा कि जैसा कि मैंने सोचा था उससे बना वह घाव उसको मारने के लिये काफी गहरा नहीं था। उसको वह कुछ ज़्यादा महसूस भी नहीं हुआ था।

मुझे तो यह देख कर और भी आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि वह जमीन पर लुढ़क गया और एक टैनिस की गेंद की शक्ल में बदल कर आसमान में उड़ गया। वह इतना ऊँचा उड़ गया कि फिर वह ऑखों से ओझल हो गया।

पर एक पल बाद ही वह बिजली की तेज़ी के साथ गुस्से में भर कर वह बहुत शोर करता हुआ और कुछ बेमतलब शब्द बोलते हुए नीचे उतरा और मुझे एक ऐसी ठोकर मारी कि मैं बेहोश हो कर पीठ के बल गिर पड़ा। मैं बिल्कुल मरा हुआ सा हो गया था।

अल्लाह जाने उस हालत में मैं वहॉ कितनी देर पड़ा रहा पर जब मैं कुछ होश में आया और मैंने अपनी ऑखें खोलीं तो देखा कि मैं तो एक जंगल में पड़ा हूॅ जहॉ केवल कॉटे और झाड़ियॉ थे और कुछ और दिखायी ही नहीं देता था।

उस समय मेरी समझ कुछ काम नहीं कर रही थी। इतनी निराशा की हालत में मैं अभी यही सोच रहा था कि मैं क्या करूँ कहाँ जाऊँ कि मेरे मुँह से एक आह निकल गयी। मुझे जो पहला रास्ता दिखायी दिया मैं वही रास्ता ले कर चल दिया।

अगर मुझे कहीं कोई मिला तो मैंने हर एक से मलिके सादिक का नाम पूछा तो उसने मुझे पागल समझते हुए यही जवाब दिया कि उसने तो यह नाम भी कहीं नहीं सुना था।

X X X X X X X X

एक दिन जब मैं एक पहाड़ पर चढ़ रहा था पिछली बार की तरह से मेरे मन में आया कि मैं इस पहाड़ से कूद कर अपनी जान दे देता हूँ। और जैसे ही मैं वहाँ से नीचे कूदने वाला था कि वही परदे वाला घुड़सवार वहाँ आ गया जिसके पास ज़ुलफ़कर[213] थी।

उसने कहा — "तुम अपनी ज़िन्दगी खोने पर क्यों लगे हुए हो। लोगों के ऊपर अक्सर दुख आते है उन्हें मुश्किलें उठानी पड़ती हैं पर इसका यह मतलब नहीं है कि तुम उनकी वजह से अपनी जान दे दो।

आओ अब तुम्हारे खराब दिन खत्म हुए और तुम्हारी खुशी के दिन अब बहुत जल्दी आने वाले हैं। इसलिये अब तुम रम चले

[213] Zu-l-Faqar - Zu-l-faqar, the name of a famous sword that 'Ali used to wear.

जाओ। वहाँ तीन दुखी लोग तुम्हारे वहाँ पहुँचने से पहले से ही आये हुए हैं।

तुम उनसे मिलना। वहाँ के राजा से भी मिलना और तुम पाँचों की इच्छाऐं वहीं पूरी हो जायेंगी।"

यही मेरी कहानी है जिसे मैंने अभी आप सबको सुनाया। आखीर में हमारी मुश्किलों का हल बताने वाले[214] ने मुझे यह बताया और मैं अब आप सबके पास आया हूँ। राजा जो अल्लाह की परछाँई होता है उसने भी हमारा प्रेम से स्वागत किया है। अब हम सबको सुख मिलना चाहिये।"

X X X X X X X

जब आज़ाद बख्त और चारों दरवेशों में इस तरह की बातें चल रही थीं तभी अजाद बख्त का एक खास नौकर उसके जनानखाने से वहाँ भागा भागा आया और इज़्ज़त के साथ सलाम कर के राजा की खुशी की इच्छा की और बोला — "अभी अभी राजकुमार का जन्म हुआ है जिसकी सुन्दरता के आगे सूरज चाँद भी शर्माते हैं।"

राजा तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसके मुँह से निकला — "अरे देखने में तो किसी को तो बच्चे की आशा नहीं थी फिर यह बच्चा किसके हुआ है।"

---

[214] Ali Mushkil Kusha

खास नौकर बोला — "मेहरू। आपकी वह दासी जिससे योर मैजेस्टी कुछ दिनों से गुस्सा थे। वह अकेली एक कोने में पड़ी रहती थी। आपके डर की वजह से कोई उसके पास उसका हाल पूछने भी नहीं जाता था। उसी पर अल्लाह की मेहरबानी हुई है कि उसने चाँद सा बेटा पैदा किया है।"

राजा यह सुन कर इतना ज़्यादा खुश हुआ कि बस खुशी के मारे मर सा ही गया।

चारों दरवेशों ने उसको बधाइयाँ दीं। उन्होंने कहा — "अल्लाह करे आपका घर हमेशा खुशियों से भरा रहे। आपका बेटा बहुत अमीर बने। वह आपके साये में बढ़ता रहे।"

राजा बोला — "यह सब आपके यहाँ शुभ आगमन से ही मुमकिन हुआ नहीं तो मुझे तो इस घटना का पता ही नहीं था। अगर आप लोग मुझे इजाज़त दें तो अपने बेटे को देख आऊँ।"

दरवेश बोले — "हाँ हाँ क्यों नहीं। अल्लाह का नाम ले कर जाइये।"

राजा अपने महल पहुँचा और अपने बेटे राजकुमार को अपनी गोद में उठाया और अल्लाह को धन्यवाद दिया। अपनी छाती से चिपकाये हुए वह दरवेशों के पास आया और उसे उनके पैरों में डाल दिया। उन्होंने उसको बहुत दुआऐं दीं और उसको बुरी आत्माओं से बचाने के लिये बहुत उपाय किये।

इस खुशी के मौके पर राजा ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया। शाही संगीत गूँज उठा। खजाने का मुँह खोल दिया गया। उसने बहुत सारे गरीबों को बहुत अमीर बना दिया। राज्य के औफीसरों को उसने दोगुने ऊँचे पद दिये उनको बहुत सारी जमीनें दीं। शाही सेना को उसने पाँच साल की तनख्वाह इनाम के रूप में दी।

विद्वानों और पवित्र लोगों को उसने पेन्शन और जमीनें दीं। गरीबों के बटुए सोने चाँदी के सिक्कों से भर दिये गये। खेतों से मिलने वाले अगले तीन साल के टैक्स माफ कर दिये गये और जो कुछ वे उस समय में उगाते वह सब उन्हीं को दे दिया गया।

सारे शहर में सभी बड़े और छोटे लोगों के घरों में हर जगह खुशियाँ मनायी जा रही थीं। इस खुशी में हर आदमी अपने आपको राजकुमार समझ रहा था।

इन खुशियों के बीच जनानखाने से अचानक ही रोने चिल्लाने की आवाजें आने लगीं। दास दासियाँ खास दास आदि सब अपने अपने सिरों पर धूल डालते हुए बाहर की तरफ भागे।

राजा के पूछने पर उन्होंने बताया कि जब वे राजकुमार को नहला धुला कर आया को उसको दूध पिलाने के लिये दे रहे थे तो एक बादल आसमान से उतरा और आया के चारों तरफ लिपट गया। पल भर वाद ही हमने देखा कि आया तो जमीन पर बेहोश

लेटी पड़ी थी और राजकुमार गायब थे। कितनी बुरी घटना हो गयी है हमारे साथ।

यह सुन कर राजा के ऊपर तो जैसे बिजली गिर पड़ी। सारा देश दुख के समुद्र में डूब गया। राजकुमार के इस तरह चले जाने पर किसी ने भी अच्छे कपड़े नहीं पहने बल्कि केवल अपना दुख ही खाया और अपना खून ही पिया।

थोड़े में कहो तो वे सभी लोग अपनी ज़िन्दगियों से हताश हो गये थे। इस तरह से रहते रहते जब दो दिन हो गये तब तीसरे दिन वही बादल फिर से आया। उसमें जवाहरात जड़ा एक पालना था और पालने में था राजकुमार अपना अँगूठा चूसते हुए।

उसकी माँ ने तुरन्त ही उसको दुआऐं देनी शुरू कर दीं। उसने उसको गोद में लिया और प्यार से अपनी छाती से लगा लिया। उसने देखा कि वह मलमल की बनी हुई एक बहुत सुन्दर जैकेट पहने हुए था और उस पर मोती टँके हुए थे।

उसके गले में नौ रत्नों का एक हार पड़ा हुआ था। उसके पास सोने का एक झुनझुना था जिसमें सोने के ही घुँघरू लटके हुए थे। सारी दासियाँ यह खबर ले कर बाहर दौड़ीं और सबने फिर से प्रार्थनाऐं कहनी शुरू कर दीं — "अल्लाह करे तेरी माँ की हर इच्छा पूरी हो और तू बहुत बड़ी उम्र जिये।"

राजा ने एक और नया शानदार महल बनाने का हुक्म दिया जिसमें बहुत बढ़िया कालीन लगवाये गये थे। उसने चारों दरवेशों को उस महल में ठहरा दिया।

जब वह राज्य के काम नहीं कर रहा होता था तो वह उनके पास जा कर बैठा करता था। उनके लिये बहुत सारी तरीकों की चीज़ें ले जाता था और उनका इन्तजार करता था।

लेकिन हर महीने के पहले बृहस्पतिवार को वही बादल ऊपर से आता राजकुमार को दो दिन के लिये ले जाता और फिर उसके पाालने को बहुत कीमती खिलौनों और और भी बहुत सारी अच्छी अच्छी चीज़ों के साथ वापस छोड़ जाता।

जब कोई उसका पालना देखता तो उसका तो आश्चर्य से दिमाग ही घूम जाता। इस तरह से बड़े होते होते राजकुमार ने अपने सातवें साल में कदम रखा।

उसके जन्मदिन के दिन राजा आज़ाद बख्त ने चारों दरवेशों से कहा — "ओ पवित्र लोगों। मैं यह नहीं समझ पाता कि हर महीने के पहले बृहस्पतिवार को राजकुमार को कौन ले जाता है और फिर कौन वापस छोड़ जाता है। यह बहुत आश्चर्यजनक है। देखते हैं कि यह कहाँ तक जाता है।"

दरवेशों ने कहा — "राजा साहब अब आप एक काम कीजिये। आप एक दोस्ताना सन्देश लिखिये और उसे राजकुमार के पालने में रख दीजिये।

आप उसे लिखें — “मेरे बेटे की तरफ आपकी दोस्ती और मेहरबानी देख कर मेरे दिल में यह इच्छा होती है कि मैं ऐसे आदमी से मिलूँ। अगर आप अपने इस मेल जोल के सहारे अपने विचार मुझे बतायें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा और मेरा आश्चर्य भी खत्म हो जायेगा।”

दरवेशों की सलाह के अनुसार राजा ने इस बात का एक नोट कागज पर लिखा उस पर सोने का चूरा छिड़का और उसको राजकुमार के सोने के पालने में रख दिया।

हर बार की तरह से राजकुमार के गायब होने के दिन राजकुमार गायब हो गया। शाम को राजा जब अपने दरवेशों के साथ बैठे हुए बात कर रहे थे कि एक मुड़ा हुआ कागज राजा के पैरों के पास आ कर गिर गया।

उन्होंने वह कागज उठाया और खोल कर पढ़ा तो वह तो उनके नोट का जवाब था। उसमें ये दो लाइनें लिखी थी — “तुम मेरे बारे में भी मुझे तुमसे मिलने के लिये उतना ही उत्सुक समझो जितने कि तुम मुझसे मिलने के लिये हो। एक सिंहासन नीचे आ रहा है।

अच्छा होगा कि तुम अभी आ जाओ ताकि हम एक दूसरे से मिल सकें। खुशी और आनन्द की सब तैयारियाँ की जा चुकी हैं। बस योर मैजेस्टी की जगह खाली है।”

राजा आज़ाद बख्त ने चारों दरवेशों को साथ लिया और उस दैवीय सिंहासन पर चढ़ गया। वह तो क्या सिंहासन था जैसा राजा सोलोमन का सिंहासन[215] था। सबके बैठते ही वह ऊपर उड़ चला।

आगे बढ़ते बढ़ते वह एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ बहुत सारी और बढ़िया बढ़िया स्वादिष्ट खाने की चीज़ें लगी हुई थीं। पर वहाँ कोई था भी या नहीं ऐसा कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

इस बीच किसी ने हम पाँचों की आँखों में सुलेमानी सुरमा लगा दिया। सबकी आँखों से दो दो बूँद आँसू निकल पड़े। उसके बाद सब लोगों ने देखा कि वहाँ तो बहुत सारी परियाँ इकट्ठी थीं। वे सब बहुत अच्छे और कीमती कपड़े पहने हुए थीं और सबके हाथों में गुलाब जल की एक एक शीशी थी।

आज़ाद बख्त हजारों परियों के बीच से हो कर चला। सब परियाँ बड़ी इज़्ज़त से खड़ी हुई थीं। बीच में एक ऊँचा सिंहासन रखा हुआ था जिसमें पन्ने जड़े हुए थे। उस सिंहासन पर बड़ी शान से तकियों के सहारे शाह रुख का बेटा मलिक शाह बल[216] बैठा हुआ था।

परियों की जाति की एक बहुत सुन्दर लड़की उसके सामने बैठी हुई थी और बच्चा राजकुमार बख्तियार[217] के साथ खेल रही थी।

---

[215] Read the account of the wonderful Throne of Solomon in the book "Raja Solomon" by Sushma Gupta in Hindi. Delhi : Prabhat Prakashan. 2019. 144 p.

[216] The son of Shah Rukh – Malik Shah Bal

[217] Azad Bakht's son Bakhtiyar

सिंहासन के दोनों तरफ बैठने के लिये कुर्सियाँ सब बड़ी तरतीब से लगी हुई थीं जिन पर कुलीन परियाँ बैठी हुई थीं।

मलिक शाह बल राजा आज़ाद बख्त को आता देख कर खड़ा हो गया। फिर वह सिंहासन से नीचे उतरा और आज़ाद बख्त को गले से लगा लिया।

फिर वह उसको हाथ पकड़ कर ले गया और अपने साथ अपने सिंहासन पर ही बिठा लिया। फिर वे बहुत देर तक प्रेम से बात करते रहे। इस तरह खाते पीते नाचते गाते सारा दिन बीत गया।

जब राजा शाह बल से मिला तो शाह बल ने राजा से पूछा कि उसके इन चारों दरवेशों को साथ लाने का क्या मतलब था। राजा आज़ाद बख्त ने उसको इन चारों दरवेशों के बारे में सब कुछ बता दिया – उनकी कहानियाँ भी। जैसी कि उन्होंने उसे सुनायी थीं।

उसने उनके लिये यह कहते हुए शाह बल से सिफारिश की — "इन लोगों ने बहुत तकलीफें सही हैं और अगर अब आपकी सहायता से उनकी इच्छाऐं पूरी हो जाती हैं तो यह एक बड़ा पुन्य का काम होगा। और मैं खुद भी आपका ज़िन्दगी भर बहुत आभारी रहूँगा। आपकी मेहरबानी से सबको खुशियाँ मिल जायेंगी।"

मलिक शाह बल ने उनकी कहानियाँ सुन कर कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मैं बहुत खुशी से यह काम करूँगा। मैं आपकी बात मानने में कोई कमी नहीं छोड़ूँगा।"

ऐसा कह कर मलिक शाह ने वहाँ बैठे हुए सभी देवों और परियों की तरफ देखा। फिर उसने उन बड़े बड़े जिन्नों के नाम चिट्ठियाँ लिखी जो अलग अलग जगहों के सरदार थे कि उसका हुक्म मिलते ही वे वहाँ से जल्दी से उसके पास आ जायें। और अगर कोई आने में देर करेगा उसे सजा दी जायेगी। उसको बन्दी बना लिया जायेगा।

इसके अलावा अगर किसी के पास आदमी जाति की चाहे वह आदमी हो या स्त्री वह उसको भी साथ ले कर आयेगा। अगर किसी ने छिपाने की कोशिश की तो वह चोर समझा जायेगा और उसकी पत्नी और परिवार को मार दिया जायेगा और उनका नामो निशान भी नहीं बचेगा।"

यह लिखा हुआ हुक्म ले कर देव वहाँ से चारों दिशाओं में चल दिये। दोनों राजाओं में दोस्ती हो गयी और वे आपस में बहुत देर तक बात करते रहे।

इसके बीच मलिक शाह बल ने चारों दरवेशों की तरफ देखते हुए कहा — "मेरी बहुत इच्छा थी कि मेरे बच्चे हों। अल्लाह से मैंने प्रार्थना की कि वह मुझे एक बेटा या बेटी दे दे जिसको मैं आदमी की जाति में ब्याह सकूँ।

जैसे ही मैंने यह प्रार्थना की कि मुझे पता चला कि मेरी पत्नी को बच्चे की आशा हो गयी। बस उसके बाद से मैं हर पल

उत्सुकता में जीता रहा। समय आने पर उसने एक बेटी को जन्म दिया।

अपने वायदे के अनुसार मैंने जिन्नों को दुनियॉ के चारों कोनों में यह पता लगाने के लिये भेजा कि किसी भी राजा के कोई बेटा हो तो वे मुझे बतायें और उसे मेरे पास ले कर आयें। कुछ दिनों में वे लोग इस राजकुमार को मेरे पास ले कर आये।

मैंने अल्लाह को धन्यवाद दिया बच्चे को अपनी गोद में लिया और उसे अपनी बेटी से भी ज़्यादा प्यार दिया।

मैं उसे अपनी ऑखों से एक पल भी दूर नहीं करना चाहता था पर फिर भी मुझे उसे इसलिये वापस भेजना पड़ता था कि अगर उसके माता पिता उसको नहीं देखेंगे तो उनको बहुत दुख पहुॅचेगा। इसलिये मैं उसको महीने केवल एक बार बुलवा लेता था और दो दिन उसे अपने पास रख कर वापस भेज देता था।

अब अगर अल्लाह खुश हों तो हम लोग आपस में मिल गये हैं अब मैं इन दोनों की शादी कर देता हूॅ। हम सबकी मौत तो होनी ही है तो जब तक हम ज़िन्दा हैं तब तक हम इनको खुश खुश देख लें।"

राजा शाह बल की बात सुन कर और उसके गुण देख कर आज़ाद बख्त ने उसकी बहुत तारीफ की फिर बोला — "पहले तो राजकुमार को गायब होते और फिर दोबारा प्रगट होते देख कर बहुत घबरा गया पर अब आपकी बातें सुन कर मेरा दिमाग शान्त हो

गया है। मैं पूरी तरीके से सन्तुष्ट हूँ। यह बेटा अब आपका है। आप इसको जैसे चाहें रखें।"

इस तरह दोनों राजाओं का मिलन ऐसा हो गया जैसे चीनी और दूध का होता है। वे आपस में बहुत आनन्द से रहे। दस दिन के भीतर भीतर सारे राजा, ईराम के गुलाब के बागीचे[218] के जिन्न और पहाड़ों और टापुओं के राजा मलिक शाह बल के दरबार में इकट्ठे हो गये।

सबसे पहले मलिके सादिक से कहा गया कि जो भी आदमी की जाति का उसके पास हो वह उसको पेश करे। इस बात से वह बहुत दुखी हुआ पर और कोई चारा न देख कर उसने बूढ़े की गुलाबी गालों वाली लड़की को पेश कर दिया।

उसके बाद उमान के राजा[219] से कहा गया कि वह जिन्न की बेटी को पेश करे जिसके लिये बैल पर चढ़ने वाले नीमरोज़ का राजकुमार पागल था। उसने उसको न देने के लाख बहाने बनाये पर आखिर उसको पेश कर ही दिया।

पर जब फ्रैंक्स के राजा की बेटी और बिहजाद खान के बारे में पता किया गया तो सोलोमन की कसम खा कर लोगों ने कहा कि उनको उन दोनों में से किसी का पता नहीं था।

---

[218] Rose Garden from Iram – a famous garden in Arabia Felix; it is also applied to the garden in Paradise, in which all good Mahommedans, according to their belief, are to revel after death.

[219] 'Umman is the name of the southern part of Yaman or Arabia Felix; the country which lies between the mouth of the Persian Gulf and the mouth of the Red Sea; the sea which washes this coast is called the sea of 'Umman in Persia and Arabia, as the Red Sea is called the sea of Qulzum.

आखिर जब कुलजुम सागर यानी लाल सागर के राजा से पूछा गया कि क्या उसको उन दोनों का कुछ पता है तो उसने अपना सिर नीचे कर लिया और चुप रह गया। मलिक शाह बल उसकी बहुत इज़्ज़त करता था से उसने उससे प्रार्थना की कि वह उनको उसे दे दे वह उसे बाद में उसका इनाम देगा। बल्कि फिर उसने धमकी भी दी।

तब कहीं जा कर वह हाथ जोड़ कर बोला — "योर मैजेस्टी। उनके बारे में यह पता है कि जब फारस का राजा कुलजुम सागर पर अपने बेटे से मिलने के लिये आया तो राजकुमार ने उत्सुकता से अपना घोड़ा पानी में घुसा दिया।

इत्तफाक की बात कि मैं उस दिन घूमने के लिये बाहर निकला हुआ था और उस समय उधर से गुजर रहा था तो मैं वहॉ का दृश्य देखने के लिये रुक गया। जब राजकुमारी की घोड़ी उसके पीछे पीछे भागी तो मेरी ऑखें उसकी ऑखों से मिलीं और मैं उसे देखता ही रह गया।

तुरन्त ही मैंने परियों को हुक्म दिया कि वह उसको उसकी घोड़ी सहित पकड़ कर मेरे पास ले आयें। उसके पीछे बिहज़ाद खान अपने घोड़े से पानी में कूद गया। मैंने उसकी बहादुरी और शान की बहुत तारीफ की और उसको भी पकड़ लिया पकड़ कर मैं उसे अपने घर ले आया इसलिये दोनों मेरे पास सुरक्षित हैं।" यह कह कर उसने दोनों को वहीं बुलवा लिया।

इसके बाद सीरिया के राजा की बेटी की ढूँढ की गयी। सबसे उसको ढूँढने के लिये कहा गया पर किसी ने यह नहीं कहा कि वह उसके पास है या वह उसके बारे में यह बता सकता है कि वह कहाँ है।

मलिक शाह बल ने फिर पूछा — " क्या यहाँ कोई राजा गैरहाजिर है या फिर यहाँ सारे राजा हाजिर हैं?"

जिन्नों के राजा ने कहा — "जनाब। यहाँ सब मौजूद है सिवाय एक राजा के और वह है मुसल्सल जादू[220] जिसने काफ़ पहाड़ पर जादू से किला बनवाया है। वह अपनी अकड़ की वजह से नहीं आया हैं।

और हम तो आपके गुलाम है हमारे अन्दर इतनी हिम्मत नहीं है कि हम उनको जबरदस्ती ला सकें। उनका महल बहुत मजबूत है और वह खुद एक बहुत बड़े शैतान हैं।"

यह सुन कर मलिक शाह बल बहुत गुस्सा हुआ। इसने जिन्न और परियों की एक बहुत बड़ी सेना उसको लाने के लिये भेजी कि अगर वह उस लड़की को साथ ले कर अपने आप आता है तो ठीक है वरना उसको गले से ले कर एड़ी तक बाँध कर जबरदस्ती ले आना।

इसके अलावा उसके महल को वहाँ से उठा कर धरती पर रख देना और एक गधे से उसके ऊपर हल चलवा देना।"

---

[220] Musalsal Jadu

जैसे ही उनको यह हुक्म मिला कि इतने सारे लोग वहॉ से उसको लेने के लिये गये कि एक दो दिन में ही वह ताकतवर मलिक शाह बल के सामने लोहे की जंजीरों से बॉध कर ले आया गया।

मलिक शाह बल ने उससे बार बार राजकुमारी के बारे में पूछा पर उस ताकतवर बगावत करने वाले ने कोई जवाब नहीं दिया। आखिर राजा बहुत गुस्सा हो गया तो उसने उसके टुकड़े टुकड़े कर देने का हुक्म दिया और फिर उसकी खाल में भूसा भरने का हुक्म दिया।

एक परियों के झुंड को काफ़ पहाड़ पर जाने के लिये कहा गया कि वह वहॉ उसके महल में राजकुमारी को ढूॅढें। वे लोग वहॉ गये और उसे ढूॅढ लिया और उसे मलिक शाह बल के सामने ले आये।

सारे बन्दी और चारों दरवेश राजा मलिक शाह बल का रौब और उसके राज चलाने का ढंग देख कर बहुत खुश हुए।

इसके बाद मलिक शाह बल ने सब आदमियों को महल में और स्त्रियों को शाही जनानखाने में जाने का हुक्म दिया। सारा शहर खूब सजाया गया और सबको शादी की तैयारी करने का हुक्म दिया गया। यह सब काम एक पल में ही हो गया जैसे बस राजा के हुक्म की देर थी।

एक दिन एक बहुत ही खुश दिन तय किया गया और राजकुमार बख्तियार की शादी राजकुमारी रोशन अख्तर से हो गयी। पहले दरवेश यानी यमन के नौजवान राजकुमार की शादी दमिश्क

की राजकुमारी से हो गयी। दूसरे दरवेश यानी फारस के राजकुमार की शादी बसरा की राजकुमारी से हो गयी।

तीसरे दरवेश यानी अजम के राजकुमार की शादी फ्रैंक्स की राजकुमारी से हो गयी। बिहज़ाद खान की शादी राजा नीमरोज़ की बेटी से हो गयी। और नीमरोज़ के राजकुमार की शादी जिन्न की बेटी से हो गयी। चौथे दरवेश की यानी चीन के राजकुमार की बेटी की शादी हिन्दुस्तान के गरीब भिखारी की बेटी से हो गयी जो मलिके सादिक के कब्जे में थी।

मलिक शाह बल की सहायता से हर निराश राजकुमार की इच्छाऐं पूरी हो गयी। इसके बाद सबने वहॉ **40** दिन खूब खुशी से गुजारे।

आखीर में मलिक शाह बल ने सब राजकुमारों को कीमती और मुश्किल से मिलने वाली चीज़ों की भेंटें दीं और उनको विदा किया। सब बहुत खुश थे सन्तुष्ट थे। सभी अपने अपने घर सुरक्षित पहुॅच गये और अपने अपने राज्य में राज करना शुरू कर दिया।

पर बिहज़ाद खान और यमन के सौदागर का बेटा अपनी इच्छा से राजा आज़ाद बख्त के पास रुक गये। बाद में यमन का नौजवान सौदागर हिज़ मैजेस्टी यानी राजा बख्तियार के नौकरों का सरदार बना दिया गया। और बिहज़ाद खान सेना का जनरल बना दिया गया। जब तक वे वहॉ रहे उन्होंने वहॉ की सारी सुख सुविधाओं का इस्तेमाल किया।

ओ अल्लाह जैसे तूने आज़ाद बख्त और चारों दरवेशों की इच्छाऐं पूरी की इसी तरीके से तू पॉच आत्माओं[221] **12** इमामों और **14** भोलेभालों[222] की सहायता से सबकी इच्छाऐं पूरी कर जो कोई तुझसे कोई इच्छा रखता हो। आमीन।

अनुवादक का नोट ः
अल्लाह की मेहरबानी से जब यह किताब खत्म हो गयी तो मैंने अपने दिमाग में इसको कुछ ऐसा नाम देने की सोचा जिससे इसकी तारीख का पता चल सके।[223]

जब मैंने गुणा भाग किया तो मैंने देखा कि मैंने इसे हिजरी सन् **1215** के आखीर में शुरू किया था और आराम की कमी की वजह से इसे **1217** के शुरू से पहले खत्म नहीं किया जा सका। मैं इस मामले पर काफी विचार करता रहा।

फिर देखा कि "बागो बहार" शब्द इस तरह का नाम रखने के लिये बिल्कुल ठीक बैठता है क्योंकि यह साल की वह तारीख

[221] The five pure bodies are Muhammad, the prophet; Fatima, his daughter; 'Ali, her husband; and Hasan and Husain, their chidren.

[222] The 14 innocents are the children of Hasan and Husain.

[223] By an arithmetical operation called in Persian, Abjad; as Persian letters have arithmetical powers, the letters which compose the words Bagh O Bahar, added up, produce the sum 1217. From the inscription on most Muhammadan tombs, and those on the gates of mosques, the dates of demise and erection can be ascertained. We had the same barbarous custom in Europe about the thirteenth and fourteenth centuries; see the Spectator (No. 60,) on this ridiculous subject, which was considered as a proof of great ingenuity.

बताता था जिस दिन इसे खत्म किया गया था इसलिये मैंने इसे यह नाम दे दिया।

जो भी इसको पढ़ेगा उसको ऐसा लगेगा जैसे वह कोई बागीचे में सैर कर रहा हो। यहाँ यह बागीचा ठंड के मौसम का बागीचा है – पर यह किताब नहीं। अब जैसा कि इसका नाम है बागो बहार यह ठंड के तूफानों में आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। इसमें हमेशा ही वसन्त के मौसम जैसा मौसम रहेगा।

जब यह बागो बहार मैंने खत्म किया था तब **1217** सन् था। अब आप इसे दिन या रात कभी भी पढ़ सकते हैं। यह बहार तो सदाबहार ताजा बहार है। इसे मेरे दिल के खून से सींचा गया है। इसके हिस्से इसके पत्ते और फल हैं।

सब मेरी मौत के बाद मुझे भूल जायेंगे पर इस किताब को सब एक यादगार की तरह से याद रखेंगे। जो भी इसे पढ़ेगा वह मुझे याद करेगा यह मेरा पढ़ने वालों से वायदा है।

अगर इसमें कोई गलती ही तो मुझे माफ करें क्योंकि फूलों के बीच में काँटे तो होते ही हैं। आदमी गलतियों का पुतला है इसलिये उसको हमेशा सावधान रहना चाहिये।

मेरी बस यही एक इच्छा है और यह मेरी दिल से प्रार्थना है कि मैं हमेशा ही तुझे यानी अल्लाह को याद करता रहूँ और इस तरह अपने दिन रात गुजारूँ।

जब मेरा मरने का समय आये तो मुझे बहुत दुख न मिले और मरने के बाद दोनों दुनियाँ मुझ पर फूल बरसायें।

GLOSSARY

Some very common words to understand Arabian literature -

12 Imams

12 Imams were, according to the Shiahs :—
1. Ali, son in -law of Muhammad
2. Hasan, his eldest son
3. Husain, his younger son
4. Ali Zainu' l- abidin, eldest son of Husain
5. Muhammad Bakir, son of Zainu' l- fibidin
6. Jafar Sadik, son of Bakir
7. Musa, son of ll Jafar
8 . Ali Riza, son of Muszi
9. AbuJafar Muhammad, son of Riza
10. Ali Askari, son of the above
11. Hasan Askari, son of the above

The 12th will be Mahdi, who is yet to appear

Cowrie

Cowrie or cowry (plural cowries) is the common name for a group of small to large sea snails. The term porcelain derives from the old Italian term for the cowrie shell (porcellana) due to their similar appearance. Cowries were formerly used as means of exchange in Africa and in India. In Bengal, India, where it required 3840 cowries to make a rupee, the annual importation was valued at about 30,000 rupees.

Dastar-khwan

"Dastar-khwan" literally signifies the "turband of the table". How they manage to make such a meaning out of it is beyond ordinary research; and when done, it makes nonsense. They forget that the Orientals never made use of tables in the good old times. The dastar-khwan is, in reality, both table and table-cloth in one. It is a round piece of cloth or leather spread out on the floor. The food is then arranged thereon, and the company squat round the edge of it, and, after saying Bism-Illah, fall to, with what appetite they may; hence the phrase dastar-khwan par baithna, to sit on, (not at) the table.

Day of Judgment

The Muhammadans believe that on the day of judgment all who have died will assemble on a vast plain, to hear their sentences from the mouth of God; so the reader may naturally conceive the size of the plain.

Qaf Mountain

The mountain of Qaf (or Koh-Qaf), is the celebrated abode of the jinns, parees (fairies), and divs (devis), and all the fabulous beings of oriental romance. The Muhammadans, as of yore all good Christians, believe that the Earth is a flat circular plane; and on the confines of this circle is a ring of lofty mountains extending all round, serving at once to keep folks from falling off, as well as forming a convenient habitation for the jinns, aforesaid. The mountain, (I am not certain on whose trigonometrical authority) is said to be 500 farasangs or 2000 English miles in height.

Karoon

A personage famed for his wealth, like the Croesus of the Greeks, or Kuber in Hindus, etc.

Khil'at

Khilat is a dress of honour, in general a rich one, presented by superiors to inferiors. In the zenith of the Mughal empire these Khil'ats were expensive honours, as the receivers were obliged to make rich presents to the emperor for the Khil'ats they received. The Khil'at is not necessarily restricted to a rich dress; sometimes, a fine horse, or splendid armour etc may also form an item of it.

Masanad

Masanads are round long thick pillows

Shabarat

The Shabarat is a Mahommedan festival which happens on the full moon of the month of Shaban; illuminations are made at night and fire-works displayed; prayers are said for the repose of the dead, and offerings of sweetmeats and viands made to their manes. A luminous night-scene is therefore compared to the Shabrat. Shaban is the eighth Mahomedan month.

Siddi

Ethiopian, or Abyssinian slaves, are commonly called Sidis. They are held in great repute for their honesty and attachment.

All Translations of Tales of Four Derwesh

The list of all its translations is given on the following site :
http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/bibliography.html

1300+ Kissaye Chahar Darwesh
By Amir Khusro. In Persian. Between 1300 and 1325, as he died in 1325.

1770s Nau Tarz-e-Murassa
First translated by Mir Husain Ata Tehseen in Urdu. 1770s. Thickly inlaid with Arabic and Persian

1804 The Tale of the Four Durwesh
Translated by Mir Amman from Mir Husain Ata's Urdu translation in speaking Urdu.

1813 Translation of the Bagh-O-Bahar Or Tales of the Four Darwesh
Translated by Lewis Ferdinand Smith. from Urdu by Mir Amman of Dilhi (1851). 296 p.

1832 Bagh-O-Bahar
Edited by Firoz Ahmed (in Urdu/Persian/Arabic). 1832. 256 p.
https://www.rekhta.org/ebooks/bagh-o-bahar-mir-amman-ebooks-2

1851 Tales of Four Darwesh
Translated by Duncan Forbes in English – (from Mir Amman 's copy). London : Wm H Allen. 1851.

1852 Bagh-O-Bahar Or The Garden and the Spring Being the Adventures of the King Azad Bakht and the Four Darweshes
Literally Translated from Urdu Mir Amman of Dihli by Edward B Eastwick. London : Crosby Lockwood. 1852. 270 p.

1874 Bagh-O-Bahar, or Tales of the Four Derweshes
Translated by Duncan Forbes – (from the Hindustani of Mir Amman of Dilli). 1874.
http://www.gutenberg.org/cache/epub/12370/pg12370-images.html **AND**
http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00urdu/baghobahar/index.html#index
This book in English can be read at and downloaded from this site :
https://archive.org/details/baghobahartale12370gut

1994 A Tale of Four Dervishes (Bagh-o-Bahar)
Translated by Mohammed Zakir in English. Penguin Books India. 1994. 172 p.

2004 किस्सा चार दरवेश : Stories of the Four Dervishes
Translated by Balwant Singh in Hindi. Delhi : Rajkamal Prakashan. 2004. 119 p.

2010 Bagh-O-Bahar
By Meer Amman Dehlavi. Edited by Krishn Kumar Jhari in Hindi. Delhi : Parag Prakashan. 2010. 184 p.

2013 किस्सा चार दरवेश : Stories of Four Dervish
Translated by Ganga Prasad Sharma in Hindi. Delhi : Manoj Publications. 2013. 136 p.

0000 चार दरवेश
Written by Hridayesh. New Delhi : Bhartiya Gyanpith. 172 p. Its year of publication is unknown.

0000 किस्सा चहार दरवेश अर्थात बाग़ बहार
Author unknown. Mathura : Lala Shyamlal Heeralal of Shyam Kashi Press. ND. 386 p.
This book, seems to be the proper translation (from where that is not known), although published in Hindi script, is not in even Khadee Boli, it contains lots of Urdu/Arabic words which are not understood by common people (maybe only by Muslims).
Reading is also not very convenient. No author, no date, but seems published in very old times. Certainly not in this century. I have its E-copy. It is available free at the Web Sites --
https://epustakalay.com/book/3239-kissa-chahar-darvesh-by-unknown/ **AND**
https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.322080/page/n1
Otherwise I have a copy of this book. You may write to hindifolktales@gmail.com

These five books are translated or edited in Hindi. The first three are available in the market, do not seem to me like the full translation of any original book. Athough I have not seen these books myself, but it can be assured from their details that these books are not the translations, because the original book is of 260 pages long. It seems that these people have written these stories in their own words after reading it somewhere.

The 4th book, by Hridayesh, is not available in the market. The 5th book is on Internet at two sites.

2016 Story of the Four Saints
Translated by Muhammad Asim Butt in English. 2016.

2022 किस्सये चहार दरवेश
Translated by Sushma Gupta in Hindi from Duncan Forbes' translation in English.
Available free in PDF form from the translator. Write to : hindifolktales@gmail.com

Films Based on Char Derwesh

1933 Chaar Darwesh. Indian Film. Trilok Kapoor, Kanan Devi. Prafulla Ghosh's film

1964 Char Dervesh. Indian Film. It only vaguely matches with Amir Khusro's "Tale of Char Dervesh", not much.

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi by Sushma Gupta

12th Cen	**Shuk Saptati.**
No 29	By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot". शुक सप्तति — ।
c1323	**Tales of Four Darvesh**
No 24	By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes. किस्सये चहार दरवेश
1868	**Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23	By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889). पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ
1872	**Indian Antiquary 1872**
No 34	A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.
1880	**Indian Fairy Tales**
No 30	By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales. हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ
1884	**Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
	By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.
1887	**Folk-tales of Kashmir.**
No 11	By James Hinton Knowles. 64 Tales. काश्मीर की लोक कथाऐं
1889	**Folktales of Bengal.**
No 4	By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales. बंगाल की लोक कथाऐं
1890	**Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18	By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. 26 Tales सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं
1892	**Indian Nights' Entertainment**
No 32	By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales. भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरेल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस करके एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स करके **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022